श्रमणों के शुभ सूत्र हमें, गुरु बताएँ रे-2
सूत्रों की महिमा हो-3 हमको समझाएँ रे-ऽऽ

(681) मर्यादा को यहाँ लिए, द्रव्य क्षेत्र काल भाव लिए -2
रूपी का जो ज्ञान लिए-ऽऽ
उसको अवधिज्ञान कहें, अथवा सीमा ज्ञान कहें -2
इसके दो भेद हो-3 श्रुत में बतलाये रे-ऽऽ।।3420।।

(682) मन में कई विचार चलें, चिंतित-अर्द्ध विचिन्त्य रहें -2
या फिर कोई अचित्य रहें-ऽऽ
सबके मन की जाने जो, मनपर्यय वह ज्ञान अहो -2
मुनियों को ऐसा हो-3 यह ज्ञान बताये रे-ऽऽ।।3421।।

(683) शुद्ध सकल एकाकी जो, इन्द्रिय नहीं सहायक हों -2
मल कलंक से रहित है जो-ऽऽ
जाने सब ही ज्ञेय यहाँ, केवलज्ञान अनंत यहाँ-2
केवलज्ञान सम हो-3 नहिं कोई बताये रे-ऽऽ।।3422।।

(684) लोकालोक को जाने जो, भूत भविष्यत जाने जो -2
वर्तमान सब जाने जो-ऽऽ
सबका जिसमें ज्ञान यहाँ, उसमें है अज्ञान कहाँ -2
सबमें ही उत्तम हो-3 इसको बतलाये रे-ऽऽ।।3423।।

(685) वस्तु स्वभाव को जाने जो, यथार्थता पहचाने जो -2
सम्यक रूप से जाने जो-ऽऽ
वो है ज्ञेय प्रमाण यहाँ, इसके हैं दो भेद यहाँ-2
प्रत्यक्ष-परोक्ष श्रुत में हो-3 बतलायें रे-ऽऽ।।3424।।

(686) अक्ष से होता ज्ञान यहाँ, अक्ष को इन्द्रिय कहें यहाँ-2
इससे ज्ञान प्रत्यक्ष यहाँ-ऽऽ
अवधि-मन:पर्यय केवल, तीनों हैं प्रत्यक्ष विमल -2
ये ज्ञान भव में हो-3 भव पार करायें रे-ऽऽ।।3425।।

(687) पौद्गलिक द्रव्येन्द्रिय हैं, जीव से सब ही भिन्न रहें -2
इनसे ज्ञान परोक्ष कहें-ऽऽ
धूम से हो अग्नि का ज्ञान, पर निमित्त से हो अनुमान -2
ऐसा सब ज्ञान हो-3 परोक्ष बतायें रे-ऽऽ।।3426।।

(688) पर निमित्त से जो होता, मति श्रुत ज्ञान यहाँ होता -2
तभी ये ज्ञान परोक्ष होता-ऽऽ
इन्द्रिय मन पर वस्तु से, अनुमानिक मति ज्ञान होता-2
कर्मों के कारण हो-3 ये ज्ञान बताये रे-ऽऽ।।3427।।

(689) धूम अग्नि का ज्ञान यहाँ, कहते इसे परोक्ष यहाँ -2
तीन ज्ञान प्रत्यक्ष यहाँ-ऽऽ
इन्द्रिय मन का ज्ञान यहाँ, लोक में कहा प्रसिद्ध यहाँ-2
सांव्यावहारिक हो-3 प्रत्यक्ष बताये रे-ऽऽ।।3428।।

(690) आश्रय जो श्रुतज्ञान करे, वस्तु अंश को ग्रहण करे -2
ज्ञान में कई विकल्प रहे-ऽऽ
ज्ञानी इसको कहते नय, ज्ञानी ही उसको समझे -2
ज्ञान से युक्त हो-3 ज्ञानी कहलाये रे-ऽऽ।।3429।।

श्रमणों के शुभ सूत्र हमें, गुरु बताएँ रे-2
सूत्रों की महिमा हो-3 हमको समझाएँ रे-ऽऽ

(691) मनुष्य को नय बिना यहाँ, स्यादवाद नहिं ज्ञान यहाँ -2
इसके बिन एकांत यहाँ-ऽऽ
गर एकांत त्यागना हो, नय का ज्ञान अवश्य हि हो -2
नय का ही ज्ञान हो-3 एकांत मिटाये रे-ऽऽ।।3430।।

(692) धर्मविहीन मनुष्य यहाँ, चाहे कोई सौख्य यहाँ -2
जल बिन प्यास मिटाये यहाँ-ऽऽ
नय बिन द्रव्य स्वरूप यहाँ, निश्चय करना चाह यहाँ -2
उनको ही मूढ़ हो-3 ये जग बतलाये रे-ऽऽ।।3431।।

(693) हैं सामान्य विशेष यहाँ, तीर्थंकर के वचन यहाँ -2
निश्चय नय-व्यवहार यहाँ-ऽऽ
शेष यहाँ जितने भी नय, वे सब नय के भेद यहाँ -2
द्रव्यार्थिक और हो-3 पर्यायार्थिक गायें रे-ऽऽ।।3432।।

(694) द्रव्यार्थिक नय कहे यहाँ, कथन करे सामान्य यहाँ -2
कहे नहीं विशेष यहाँ-ऽऽ
कहे विशेष पर्यायार्थिक दोनों हैं अतिनिम्न यहाँ -2
अपनी अपनी ये हो-3 दोनों बतलायें रे-ऽऽ।।3433।।

(695) पर्यायार्थिक कहे यहाँ, उपजे वस्तु मिटे यहाँ -2
फिर भी ध्रुवता रहे यहाँ-ऽऽ
द्रव्यार्थिक नय बात कहे, वस्तु न विनशे ना उपजे -2
अविनाशी वस्तु हो-3 सामान्य बताये रे-ऽऽ।।3434।।

(696) द्रव्यार्थिक नय कहे यहाँ, सभी वस्तुएँ द्रव्य यहाँ -2
भिन्न-भिन्न हैं द्रव्य यहाँ-ऽऽ
पर्यायार्थिक नय कहता, भिन्न भिन्न हैं वस्तु यहाँ -2
वस्तु ज्यों देखें हो-3 वैसी नजराये रे-ऽऽ।।3435।।

(697) पर्यायों को गौण करे, द्रव्य ही केवल ग्रहण करे -2
द्रव्यार्थिक नय उसे कहे-ऽऽ
द्रव्य यहाँ जो गौण करे, पर्यय को जो ग्रहण करे -2
पर्यायार्थिक नय हो-3 उसको बतलाये रे-ऽऽ।।3436।।

(698) नैगम संग्रह व्यवहार, ऋजुसूत्र शब्दाकार -2
समभिरूढ़ एवंभूत-ऽऽ
द्रव्य व पर्यायार्थिक नय, सात कहे इनके ही नय
इनको जाने बिन हो-3 व्यवहार न आये रे-ऽऽ।।3437।।

(699) तीन प्रथम द्रव्यार्थिक हैं, चारों पर्यायार्थिक हैं -2
दोनों नय के सात ही हैं-ऽऽ
अर्थ प्रधान प्रथम हैं चार, तीनों शब्द प्रधान हैं द्वार-2
ऐसा तुम जानो हो-3 श्रुत में बतलाये रे-ऽऽ।।3438।।

(700) सामान्य विशेष उभय जाने, भूत भविष्य कथन ठाने -2
नैगम नय उसको जाने-ऽऽ
नैगम नय कहें उसको, विविध रूप जाने उसको
नैगम नय सबको हो-3 त्रयकाल बुलाये रे-ऽऽ।।3439।।

श्रमणों के शुभ सूत्र हमें, गुरु बताएँ रे-2
सूत्रों की महिमा हो-3 हमको समझाएँ रे-ऽऽ

(701) तीन काल का कथन करे, नैगमनय हम उसे कहें-2
वर्तमान में अतीत कहें-ऽऽ
महावीर निर्वाण यहाँ, कार्तिक अमावश्य यहाँ -2
भूत नैगमनय हो-3 ये ही कहलाये रे-ऽऽ।।3440।।

(702) कार्य कभी प्रारंभ किया, कहने में हो पूर्ण हुआ -2
संप्रति नैगम नय कहा-ऽऽ
ज्यों पकने चावल डाले, भात बनाना उसे कहा -2
ये भी नैगमनय हो-3 का भाव बताये रे-ऽऽ।।3441।।

(703) भविष्य में हो कार्य यहाँ, अभी कहें हो गया यहाँ -2
भावी नैगमनय यहाँ-ऽऽ
अभी जा रहा कोई यहाँ, कहना वो तो गया वहाँ-2
ये भी नैगमनय हो-3 की बात बताये रे-ऽऽ।।3442।।

(704) संग्रह नय दो भेद यहाँ, शुद्ध अशुद्ध बताये यहाँ -2
सबको गहे वो शुद्ध यहाँ-ऽऽ
जाति विशेष जो ग्रहण करे, अशुद्ध संग्रहनय कहे -2
दोनों संग्रह नय हो-3 व्यवहार में आयें रे-ऽऽ।।3443।।

(705) संग्रह नय जो ग्रहण करे, शुद्ध अशुद्ध जो भेद करे -2
उसको नय व्यवहार कहे-ऽऽ
दो प्रकार यह कहलाये, शुद्ध-अशुद्ध अर्थ गाये -2
संग्रहनय से ही हो-3 व्यवहार बतायें रे-ऽऽ।।3444।।

(706) एक समय की द्रव्यों में, अध्रुव पर्यय ग्रहण करे -2
सूक्ष्म ॠजुसूत्र नय कहें-ऽऽ
एक समय में भात बने, सूक्ष्म है हम नहिं बता सकें
सूक्ष्म ॠजुसूत्र हो-3 नय ये बतलाये रे-ऽऽ।।3445।।

(707) बाल युवा और वृद्ध यहाँ, अलग-अलग पर्याय यहाँ -2
ये सब हैं स्थूल यहाँ-ऽऽ
वर्ष माह की पर्यायें, कही सभी स्थूल यहाँ -2
स्थूल ॠजु सूत्र हो-3 नय वही कहाये रे-ऽऽ।।3446।।

(708) एक अर्थ के शब्द रहें, लिंग भेद हम उन्हें कहें -2
अर्थ भेद उसमें समझें-ऽऽ
पुण्य को ज्यों नक्षत्र कहें, स्त्रीलिंग में तारिका कहें -2
शब्द के नय से हो-3 ये बात बतायें रे-ऽऽ।।3447।।

(709) शब्द में अर्थ बताया जो, अर्थ को शब्द दिखाये जो
शब्दनय कहते हैं वो-ऽऽ
देव किसी ने शब्द कहा, अर्थ में सुर को जाने वो -2
ऐसा वह शब्द हो-3 नय यहाँ बताये रे-ऽऽ।।3448।।

(710) शब्द को अर्थारूढ़ कहे, अर्थ को शब्दारूढ़ कहे -2
उसको हि समभिरूढ़ कहे-ऽऽ
जैसे इन्द्र पुरंदर और, शक्र यहाँ सच रूप कहे -2
समभिंरूढ़ में हो-3 यह नय बतलाये रे-ऽऽ।।3449।।

श्रमणों के शुभ सूत्र हमें, गुरु बताएँ रे-2
सूत्रों की महिमा हो-3 हमको समझाएँ रे-ऽऽ

(711) जैसा हो शब्दार्थ यहाँ, वैसी समझो वस्तु यहाँ -2
विद्यमान वह अर्थ यहाँ-ऽऽ
अर्थ है जो भिन्न यहाँ, उसको कहें अभूत यहाँ
उसको एवंभूत हो-3 नय बतलाये रे-ऽऽ।।3450।।

(712) जैसी जो भी क्रिया करे, वैसा उसका नाम धरे -2
क्रियायुक्त ही कहें अरे-ऽऽ
पूजा करने वाले को, यहाँ पुजारी सभी कहे -2
एवंभूत नय हो-3 उसको बतलाये रे-ऽऽ।।3451।।

(713) विषय कहाँ सापेक्ष यहाँ, वो है सम्यक् रूप यहाँ -2
नय हो या प्रमाण यहाँ-ऽऽ
जो निरपेक्ष कथन करता, वो इससे विपरीत यहाँ -2
दोनों सापेक्ष हो-3 की बात बतायें रे-ऽऽ।।3452।।

(714) जो एकांत निषेध करे शाश्वत को जो सिद्ध करे -2
स्यात् शब्द ये यहाँ करे-ऽऽ
जो सापेक्ष कथन करता - स्याद्वाद उसको कहता -2
एकांत शाश्वत की हो-3 सिद्धि न लाये रे-ऽऽ।।3453।।

(715) स्यात् लगाकर कथन करें, स्यादवादमय उसे कहें -2
वे ही नय संयुक्त रहें-ऽऽ
जिनमें नय सापेक्ष न हो, उसको दुर्नय सभी कहें
निरपेक्ष भंग हो-3 दुर्नय कहलाये रे-ऽऽ।।3454।।

(716) स्यात् अस्ति स्यात् नास्ति कहें, स्यात् अस्ति नास्ति कहें -2
स्यात् अवक्तव्य को जानें-ऽऽ
स्यात् अस्ति अवक्तव्य है, स्यात् नास्ति अवक्तव्य है -2
स्यात् अस्ति नास्ति हो-3 अवक्तव्य बतायें रे-ऽऽ।।3455।।

(717) स्वद्रव्य और स्वक्षेत्र यहाँ, स्वकाल और स्वभाव यहाँ -2
इनसे अस्तिस्वरूप यहाँ-ऽऽ
पर द्रव्य पर क्षेत्र यहाँ, पर काल पर भाव वहाँ -2
नास्तिस्वरूप हो-3 इनसे बतलाये रे-ऽऽ ।।3456।।

(718) स्व-पर चतुष्टय दोनों से, स्यातअस्ति स्यात् नास्ति से -2
एक साथ द्वय कहने से-ऽऽ
स्यात् अवक्तव्य उसे कहें, इसी तरह ही अन्य कहें -2
इसको जाने बिन हो-3 सही ज्ञान न पाये रे-ऽऽ।।3457।।

(719) जो नय है निरपेक्ष यहाँ, उसको दुर्नय कहें यहाँ -2
जैसे नास्ति ही कहें यहाँ-ऽऽ
उभय रूप ही कहें यहाँ, अवक्तव्य ही कहें यहाँ -2
ये सब मिथ्यात्व हो-3 सब ही बतलाये रे-ऽऽ।।3458।

(720) एक धर्म हम कहें यहाँ, दूजा उसमें रहे यहाँ -2
दोनों वस्तु स्वभाव यहाँ-ऽऽ
सात भंग से कहते हैं, वही नयों में रहते हैं -2
उनकी ही बातें हो-3 सच सभी बतायें रे-ऽऽ।।3459।।

श्रमणों के शुभ सूत्र हमें, गुरु बताएँ रे–2
सूत्रों की महिमा हो–3 हमको समझाएँ रे–ऽऽ

(721) अनेकांतमय कथन करे, अप्रत्यक्ष मय वस्तु कहे –2
संशय से जो रहित रहे–ऽऽ
वो ही है श्रुतज्ञान यहाँ, वो ही सम्यग्ज्ञान यहाँ –2
उसकी ही महिमा हो–3 आगम बतलाये रे–ऽऽ।।3460।।

(722) धर्म वस्तु में कई रहें, एक धर्म से वस्तु कहें –2
उसको ही नय यहाँ कहें–ऽऽ
जितने रहे विकल्प यहाँ – उतने ही नय कहें यहाँ –2
ऐसा जो जाने हो–3 वह ज्ञान बढ़ाये रे–ऽऽ।।3461।।

(723) कई धर्मयुत वस्तु यहाँ, एक धर्म को गहे यहाँ –2
नय का लक्षण वही यहाँ–ऽऽ
जहाँ विवक्षा जैसी हो, वहाँ कथन भी वैसा हो –2
ज्ञाता अपना ही हो–3 अभिप्राय बताये रे–ऽऽ।।3462।।

(724) जितने वचन कहे जग में, उन सबको नय यहाँ कहें –2
व्यक्त अर्थ वो यहाँ करें–ऽऽ
एक धर्म को मुख्य कहे, शेष धर्म सब गौण रहें
ये नय की भाषा हो–3 आगम बतलाये रे–ऽऽ।।3463।।

(725) जो नय हो सापेक्ष यहाँ, उनको कहते सुनय यहाँ –2
कहते थे गुरुदेव यहाँ–ऽऽ
दुर्नय हो निरपेक्ष यहाँ, वे आगम के वचन कहाँ –2
व्यवहार सिद्धि हो–3 नय से हो पाये रे–ऽऽ।।3464।।

(726) नित्य आदि का कथन करें, अनित्य को ही नित्य कहें –2
निरपेक्ष पक्ष बात कहें–ऽऽ
द्रव्यार्थिक नय से कहना, उनका निराकरण करना –2
अज्ञान–द्वेष हो–3 तब ही मिट पाये रे–ऽऽ।।3465।।

(727) नय व्यवहार भी सच्चा है, निश्चय नय भी सच्चा है –2
आरोपित नय झूठा है–ऽऽ
अनेकांत नहिं जाने जो, सच्चा झूठा कहता वो –2
दोनों नय जाने हो–3 वो भटक न पाये रे–ऽऽ।।3466।।

(728) नय निरपेक्ष न सब मानें, उसको सभी न सत्य कहें –2
मानें वे सब गलत रहें–ऽऽ
सब निरपेक्ष यहाँ मानें, तो भी सब नहिं सही रहें –2
निरपेक्ष नय तो हो–3 बैरी कहलाये रे–ऽऽ।।3467।।

(729) राजा के वश सब रहते, साधु के वश सब रहते –2
स्यादवाद वश सब रहते–ऽऽ
जो नय यहाँ विरोधी हों, अथवा सब पर क्रोधी हों
स्यादवाद में सब हो–3 सम्यक हो जाये रे–ऽऽ।।3468।।

(730) पेट पूँछ पैर छुए यहाँ, कहते हाथी ढोल समां –2
लोग हैं ये जन्मान्ध यहाँ–ऽऽ
वस्तु कई धर्मांश सहित, एक अंश से कहें यहाँ –2
ऐसा ही ज्ञान हो–3 मिथ्या कहलाये रे–ऽऽ।।3469।।

श्रमणों के शुभ सूत्र हमें, गुरु बताएँ रे-2
सूत्रों की महिमा हो-3 हमको समझाएँ रे-ऽऽ

(731) सब अवयव गज देख रहे, तब हाथी को वहाँ कहे -2
ढोल खंभ सम नहीं कहे-ऽऽ
वैसे सब धर्मांश लखे, वो ही सम्यक कथन करे -2
उसका ही ज्ञान हो-3 सम्यक् कहलाये रे-ऽऽ।।3470।।

(732) ऐसे कई पदार्थ यहाँ, शब्द से व्यक्त न हुए यहाँ -2
और न वे कह सकें यहाँ-ऽऽ
अनंतवां भाग कहा जाये - अनंतवां श्रुत में दिखे यहाँ-2
कैसे निरपेक्ष हो-3 को सही बतायें रे-ऽऽ।।3471।।

(733) अपने मत को श्रेष्ठ कहें, परमत को जो हीन कहें -2
निज पाण्डित्य प्रदर्श करें-ऽऽ
मिथ्या की चादर ओढ़ें, कर्मों का संग नहिं छोड़ें
भव में ये लोग हो-3 भटके भटकायें रे-ऽऽ।।3472।।

(734) नाना कर्म हैं इस भव में, नाना जीव हैं इस जग में -2
नाना लब्धि हैं दुनियाँ में-ऽऽ
कोई स्वधर्मी-परधर्मी, सब अपने-अपने कर्मी -2
वाद-विवाद हो-3 नहिं उचित बतायें रे-ऽऽ।।3473।।

(735) जो मिथ्यात्व विनाश करे, अमृत रूप प्रदान करे -2
ज्ञानी शीघ्र यहाँ समझे-ऽऽ
ऐसे ये जिनवचन यहाँ, सबको देते ज्ञान यहाँ -2
जिन की श्रुत गंगा हो-3 कल्याण दिलाये रे-ऽऽ।।3474।।

(736) युक्ति और उपयुक्त कहें, कभी प्रयोजनयुक्त कहें -2
नाम-स्थापना रूप कहें-ऽऽ
वस्तु में द्रव्यत्व भाव कहें, उसको ही निक्षेप कहें -2
आगम में ऐसा हो-3 गुरुदेव बतायें रे-ऽऽ।।3475।।

(737) विविध स्वभावी द्रव्य यहाँ, जिसमें सारे भाव यहाँ -2
एक भाव का ध्येय यहाँ-ऽऽ
होता विषय ज्ञान का जो, चार भेद उसके ही हों -2
नाम द्रव्यादि हो-3 के भेद बतायें रे-ऽऽ।।3476।।

(738) चार भेद निक्षेप कहे, नाम स्थापना द्रव्य कहे -2
भाव रूप चउ भेद कहे-ऽऽ
द्रव्य की संज्ञा होती है, संज्ञा को ही नाम कहें -2
उसके दो भेद हो-3 श्रुत में बतलायें रे-ऽऽ।।3477।।

(739) आरोपित इक वस्तु में, अन्य वस्तु का हो जिसमें -2
स्थापना निक्षेप कहें-ऽऽ
उसके हैं दो भेद यहाँ, निराकार, साकार यहाँ -2
प्रतिमा में प्रभु की हो-3 स्थापन बतलायें रे-ऽऽ।।3478।।

(740) वर्तमान को छोड़े जो, भावी को बतलाये जो -2
उसे द्रव्य निक्षेप कहो-ऽऽ
छोटे राजपुत्र को भी, राजा उसको यहाँ कहो -2
द्रव्य निक्षेप हो-3 ऐसा बतलाये रे-ऽऽ।।3479।।

श्रमणों के शुभ सूत्र हमें, गुरु बताएँ रे-2
सूत्रों की महिमा हो-3 हमको समझाएँ रे-ऽऽ

(741) जैसा जो भी कार्य करे, जैसे लक्षण यहाँ दिखे-2
वैसा उसको यहाँ कहें-ऽऽ
कहे द्रव्य निक्षेप उसे, वैसा जानें लोग उसे -2
कोई त्यागी को हो-3 महाराज बतायें रे-ऽऽ।।3480।।

(742) वर्तमान में कार्य करे, वैसा उसको यहाँ कहें -2
उसे भाव निक्षेप कहें-ऽऽ
पूजा कोई करता हो, उसे पुजारी यहाँ कहें -2
भाव निक्षेप हो-3 का भाव बतायें रे-ऽऽ।।3481।।

(743) कोई दान बहुत करता, त्याग यहाँ करता रहता -2
भामाशाह उसे कहता-ऽऽ
इसे भाव निक्षेप कहा, भावों को जो दिखा रहा -2
भाव निक्षेप हो-3 यह बात बताये रे-ऽऽ।।3482।।

(744) ये हित का उपदेश यहाँ, भव्यों को नित दिया यहाँ -2
हो सबका कल्याण यहाँ-ऽऽ
इस वैशाली नगरी में, महावीर ने कहा यहाँ -2
जिसको पाकरके हो-3 भवि मुक्ति सजाये रे-ऽऽ।।3483।।

(745) सर्वज्ञ महावीर यहाँ, दिया धर्म उपदेश यहाँ -2
हमने सुना न उसे यहाँ-ऽऽ
सुना तो नहिं आचरण किया, मिथ्या ही आचरण किया -2
तब ही तो अब तक हो-3 दुख ही दुख पाये रे-ऽऽ।।3484।।

(746) जाना जिसने आतम को, वही जानता इस जग को -2
आगति और अनागति को-ऽऽ
जन्म मरण को वह जाने, शाश्वत क्या यह पहचाने-2
निज को जाने बिन हो-3 ये समझ न पाये रे-ऽऽ।।3485।।

(747) जाने आस्रव-संवर को, सुख दुख और निर्जरा को -2
जन्म मरण उपपादों को-ऽऽ
जो निज आतम को जाने, वो सम्यक्त्व यहाँ ठाने -2
सम्यक आचार हो-3 को वह कह पाये रे-ऽऽ।।3486।।

(748) पहले कभी न मिले हमें, आज मिले जिनवचन हमें -2
अमृतमय शुभ ज्ञान हमें-ऽऽ
सुगति मार्ग स्वीकार किया, जब वचनामृत पान किया -2
मरने का भय अब हो-3 नहिं मुझे सताये रे-ऽऽ।।3487।।

(749) मिले ज्ञान की शरण हमें, दर्शन-चारित शरण हमें -2
तप संयम की शरण हमें-ऽऽ
सबकी शरण को पाकरके वीर प्रभु की शरण मिले -2
तब ही पथ चलकर हो-3 मंजिल मिल पाये रे-ऽऽ।।3488।।

(750) सर्वदर्शी केवलज्ञानी, मूलोत्तर गुण थे ध्यानी -2
विशुद्ध चरित्र है कल्याणी-ऽऽ
धैर्यवान गंभीर यहाँ, अपरिग्रह से युक्त यहाँ-2
कर्मायु रहित हो-3 प्रभु वीर बतायें रे-ऽऽ।।3489।।

श्रमणों के शुभ सूत्र हमें, गुरु बताएँ रे-2
सूत्रों की महिमा हो-3 हमको समझाएँ रे-ऽऽ

(751) सूर्य समां तेजस्वी जो, अनंतज्ञानी दर्शी जो -2
भव से पार लगाते जो-ऽऽ
सत्यस्वरूप प्रकाश करें, तम अज्ञान विनाश करें -2
ऐसे प्रभुवीर हो-3 को शीश झुकायें रे-ऽऽ।।3490।।

(752) हाथी में ऐरावत है, नदियों में गंगा नद है -2
पक्षी में गरुड़ पक्षी है-ऽऽ
मृगों में जैसे सिंह यहाँ, संतों में महावीर यहाँ -2
उत्तम से उत्तम हो-3 महावीर बतायें रे-ऽऽ।।4591।।

(753) अभयदान है दानों में, अनवद्य वचन है वचनों में -2
ब्रह्मचर्य सारे व्रत में-ऽऽ
श्रमणलोक में जो उत्तम, वे थे वीर प्रभु भगवन् -2
उनकी महिमा को हो-3 ये दुनियाँ गाये रे-ऽऽ।।3492।।

(754) सब जीवों को जानें जो, जगतगुरु कहलाये जो -2
जगत बंधु बतलायें वो-ऽऽ
सबको आनंदमयी हैं जो, जगतपिता भगवान हैं जो -2
जयवंत होवे वो हो-3 सुख शांति दिलाये रे-ऽऽ ।।3493।।

(755) द्वादशांग उत्पन्न करें, शिवपथ यहाँ प्रदान करें -2
लोक में उत्तम ज्ञान धरें-ऽऽ
अंतिम तीर्थंकर भगवन, तीन लोक के गुरु परम -2
प्रभुवर महावीर हो-3 जयवंत बतायें रे-ऽऽ।।3494।।

परमेष्ठी मंगलमयी, दें मंगल का दान ।
पंच परम परमेष्ठी, जगती पर भगवान ।।

चार शरण जग में परम, दें सबको वरदान ।
राग-द्वेष मैटें सभी, भेंट करें शुभ ज्ञान ।।

मूलमंत्र नवकार है जिसमें शक्ति महान् ।
भाव सहित जपता यहाँ, पाये आतम ज्ञान ।।

नमोकार सबसे बड़ा, इससे बड़ा न कोय ।
मंत्रों का राजा यही, पाप मैल सब धोय ।।

महामंत्र महिमा परम, नाश करे अज्ञान
जो जपता उसको मिले, उर में ही भगवान ।।

हो रुचिगर तत्त्वार्थ में, तब होता श्रद्धान ।
ज्योंही श्रद्धा हो यहाँ, हो जाता है ज्ञान ।।

ज्ञान बिना नहिं मिल सके, इस जीवन का सार।
ज्ञान नहीं तो जिंदगी, जगती पर है भार ।।

प्रेम करें निस्सार को - उन्हें न मिलता सार ।
सार मिला जिसको यहाँ, उसका बेड़ा पार ।।

दुनियाँ की दौलत मिले, ज्ञान बिना बेकार ।
ज्ञान मिले उसको यहाँ, ये दुनियाँ निस्सार ।।

वही भटकते हैं यहाँ – जो नहिं पाते ज्ञान ।
ज्ञान बिना सुख है नहीं, ये निश्चय से जान ।।

ज्ञाता दृष्टा जो बने, उसमें राग न द्वेष ।
त्यागी बन चाहे सदा वीतरागमय भेष ।।

करे आचरण विनय से जिन वचनों का रोज ।
उसमें ही लहरायेगा, आतम अनुभव ओज ।।

जिसको पाकर पार हों, ये संसार अपार ।
ऐसे उस जिनधर्म को नमहूँ बारम्बार ।।

जिन वचनामृत पान कर, पाते अनुभव ज्ञान ।
वही ध्यान करके यहाँ, हो जाते भगवान ।।

ज्ञान प्रमाण है ज्ञेय के, ज्ञेय प्रमाण है लोक ।
लोकालोक जो जानता, उन्हें नमूँ दे धोक ।।

जो नहिं निश्चय जानता उसे न आतम ज्ञान ।
ज्ञान बिना करता क्रिया, वो भव रागी जान ।।

काम भोग तन की तेरी, पीड़ा करते दूर ।
तू उसको सुख मानता, है अज्ञानी मूढ़ ।।

काम के वश ये आदमी, दिन भर करता पाप ।
भोग विषय की चाह में करता है प्रभु जाप ।।

चाह रखे मन में निरी, करे प्रभु गुणगान ।
ऐसी पूजा क्या तुझे दे दर्शन भगवान ।।

जब तक व्याधि न हों तुम्हें तब तक धारो धर्म ।
बूढ़ेपन में कोई भी, लख नहिं पाता मर्म ।।

ताकत नहिं फिर भी करे, ताकत जैसा काम ।
ताकत मिल जाये उसे, मिलें साथ में राम ।।

भावों से प्रभु नाम ले, उसे मिलें प्रभु राम ।
जग के सारे सुख मिलें फिर पाये विश्राम ।।

पढ़े शास्त्र हमने सभी समझी बात है दोय ।
सुख दोगे सुख पाओगे, दुःख दिये दुख होय ।।

खाया सो तो खो दिया, दिया दान वह साथ ।
जोड़ जोड़ रखकर गया हुआ यहाँ वो नाश ।।

गैरों की निंदा करे ज्ञान उसी का नाश ।
जो निंदा करता नहीं, हो उस पर विश्वास ।।

गुरुवर की ही कृपा से, किया पद्य अनुवाद।
उनके दोनों चरण में, नमूँ झुकाऊँ माथ।।

भूलचकू हो गइ यहाँ, शोध पढ़ें धीमान।
अल्पज्ञान मुझमें रहा, क्षमा करें सब दान।।

वारसाणुवेक्खा

मूल ग्रंथकर्ता : आचार्य कुन्दकुन्द देव
पद्यानुवाद : उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

ये बारह अनुप्रेक्षायें, वैराग्य बढ़ाएँ रे–ऽऽ
इनके चिंतन से हो–3 शक्ति बढ़ जाये रे–ऽऽ

(1) जिनने उत्तम ध्यान किया, दीर्घ भ्रमण को मिटा दिया–2
दीप ज्ञान को जला लिया–ऽऽऽ
उन चौबीसों भगवन् को, नमन करूँ सब सिद्धों को–2
बारह अनुप्रेक्षा हो–3 के भाव बताएँ रे–ऽऽ।।3495।।

(2) अनित्यैकत्व और अशरण, अन्यत्व, अशुचि संसार भ्रमण–2
आस्रव संवर कर्म क्षरण (निर्जरा)–ऽऽऽ
लोक–धर्म के भाव सुलभ, दुर्लभ है बोधि दुर्लभ–2
इनके चिंतन से हो–3 वैराग्य बढ़ाएँ रे–ऽऽ।।3496।।

(3) देव मनुष्य और राजन्, महल जहाज व शैय्यासन–2
मात–पिता संबंधी जन–ऽऽ
धन–वैभव ये नित्य कहाँ? सब ही समझ अनित्य यहाँ–2
इनमें ये जीवन हो–3 नहिं कभी फसाओ रे–ऽऽ।।3497।।

(4) सभी इन्द्रियाँ तन यौवन, बल आरोग्य तेज लावण्य–2
सामग्री सौभाग्य परम–ऽऽऽ
ये सब शाश्वत रूप कहाँ, इन्द्रधनुष के समां यहाँ–2
इनकी सुंदरता हो–3 क्षण में मिट जाये रे–ऽऽऽ।।3498।।

(5) चक्री–इन्द्र व नारायण, बलदाऊ प्रतिनारायण–2
इन्द्र धनुष सम थोड़े क्षण–ऽऽ
जल बुलबुले व बिजली सम, क्षणिक हैं, बादल शोभासम–2
थोड़े समय में हो–3 ये नष्ट हो जायें रे–ऽऽ।।3499।।

(6) दूध व जल के समां यहाँ, देह आत्म संबंध यहाँ–2
होता शीघ्र विनष्ट यहाँ–ऽऽऽ
भोगोपभोग के कारण जो, कैसे हो वो नित्य अहो–2
कुछ भी नहिं शाश्वत हो–3 ये बात बताएँ रे–ऽऽ।।3500।।

(7) देव असुर और मानव से, राजाओं के वैभव से–2
भिन्न आत्मा निश्चय से–ऽऽ
जीव त्रिकाली शाश्वत है, बाकी सभी अशाश्वत हैं–2
ऐसा ही चिंतन हो–3 हम नित्य बढ़ाएँ रे–ऽऽ।।3501।।

(8) मरण समय औषधि मंत्र, मणि, हाथी घोड़े तंत्र–2
विद्यायें सब और तंत्र–ऽऽ
कोई नहीं बचा पाते, दूर खड़े ही रह जाते–2
निश्चय से कोई हो–3 नहिं शरण दिखाये रे–ऽऽ।।3502।।

(9) स्वर्ग किला है इन्द्रों का, पहरा देव व नौकर का–2
वज्र अभेद्य शस्त्र उसका–ऽऽऽ
ऐरावत गज वाहन है, फिर भी मरण यहाँ उसका–2
दुनियाँ में कोई हो–3 नहिं शरण दिखाये रे–ऽऽ।।3503।।

(10) आता है जब काल यहाँ, हो जाता विकराल यहाँ–2
लेकर जाता लाल यहाँ–ऽऽऽ
महारत्न घोड़े हाथी, चतुरंगी सेना साथी–2
मरने से चक्री हो–3 को बचा न पाएँ रे–ऽऽ।।3504।।

ये बारह अनुप्रेक्षायें, वैराग्य बढ़ाएँ रे–SS
इनके चिंतन से हो–3 शक्ति बढ़ जाये रे–SS

(11) जन्म जरामृत रोग यहाँ, रक्षा आतम करे यहाँ–2
जब हो आतम शुद्ध यहाँ–SSS
कर्म रहित शुद्धातम ही, समझो सच्ची शरण यहाँ–2
भव में नहिं कोई हो–3 भी शरण दिखाए रे–SSS।।3505।।

(12) अर्हत् सिद्धाचार्य रहें, उपाध्याय और साधु रहें–2
परमेष्ठी ये पंच कहें–SSS
निज आतम में लीन हैं जो, मुझको शरण कहाँ हैं वो–2
अपनी आतम ही हो–3 इक शरण बताएँ रे–SS।।3506।।

(13) सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित, तप ये आतम में स्थित–2
इनसे हो आतम का हित–SSS
इनकी शरण यहाँ पर हो, आत्म शरण को प्राप्त करो–2
मेरी आतम ही हो–3 मम शरण कहाये रे–SS।।3507।।

(14) जीव अकेला कर्म करे, एकल ही भव भ्रमण करे–2
उनका फल एकल भोगे–SSS
जन्मे–मरे अकेला ही, सुख दुख सहे अकेला ही–2
अच्छे ही कर्म हो–3 सुख दिलवा पायें रे–SS।।3508।।

(15) इन्द्रिय विषयों के वश हो, तीव्र लोभ के कारण वो–2
तीव्र पाप कर जाता जो–SSS
नरक तिर्यंच गति में फिर, दुखमय फल को भोगे वो–2
एकल भ्रम भ्रमकर हो–3 बहु दुक्ख उठाये रे–SS।।3509।।

(16) जीव अकेला धर्म करे, पात्र दान कर पुण्य वरे–2
पैदा सुख के हेतु करे–SSS
देव मनुज गति में जाये, एकल फल का भोग करे–2
एकल गतियों में हो–3 इन्द्रिय सुख भोगे रे–SS।।3510।।

(17) सम्यक् गुण संयम युत् है, उसमें श्रेष्ठ महाव्रत है–2
उत्तम पात्र वो साधु है–SSS
सम्यग्दृष्टि व्रती यहाँ, समझो मध्यम पात्र यहाँ–2
पात्रों का दान हो–3 उत्तम फलदायी रे–SS।।3511।।

(18) अविरत सम्यग्दृष्टि यहाँ, समझो जघन्य पात्र यहाँ–2
कहते हैं जिनदेव यहाँ–SS
सम्यग्दर्श रहित हैं जो, सभी अपात्र कहे हैं वो–2
सम्यक् पात्रों की हो–3 पहचान कराये रे–SS।।3512।।

(19) समदर्शन से भ्रष्ट हैं जो, भ्रष्टों में अतिभ्रष्ट हैं वो–2
उन्हें कभी निर्वाण न हो–SS
चारित से जो भ्रष्ट यहाँ, वो पा सकते मुक्ति यहाँ–2
दर्शन से भ्रष्ट हो–3 नहिं सिद्धि पाये रे–SS।।3513।।

(20) इक हूँ ममता रहित हूँ मैं, दर्शनज्ञान स्वरूपी मैं–2
ज्ञायक शुद्ध स्वभावी मैं–SS
उपादेय ये भाव कहा, करे संयमी भाव सदा–2
ऐसा ही चिंतन हो–3 मन शुद्ध बनाए रे–SS।।3514।।

ये बारह अनुप्रेक्षायें, वैराग्य बढ़ाएँ रे-SS
इनके चिंतन से हो-3 शक्ति बढ़ जाये रे-SS

(21) मात-पिता सब बंधु यहाँ, इनसे मम संबंध कहाँ-2
पुत्र स्त्री निर्बन्ध यहाँ-SSS
स्वारथ के साथी सब हैं, मतलब तक ये अपने हैं-2
स्वार्थी बन करके हो-3 ये साथ निभाएँ रे-SS।।3515।।

(22) कोई जब मर जाता है, तब वह मोह रुलाता है-2
भव में शोक कराता है-SSS
भवसागर में डूबे जो, खुद का शोक करें नहिं वो-2
खुद को भूले हैं हो-3 पर में रुदन मचायें रे-SS।।3516।।

(23) आतम से तन भिन्न यहाँ, बाह्य द्रव्य अति भिन्न यहाँ-2
दर्शन-ज्ञान अभिन्न यहाँ-2
दर्शन ज्ञान स्वभावी मैं, रूप गंधरस पुद्गल में-2
ऐसा चिंतन ही हो-3 अन्यत्व बताए रे-SS।।3517।।

(24) जिन पथ को नहिं स्वीकारे, वो भव में फिरते मारे-2
जन्म जरा मृत में सारे-SSS
पंच परावर्तन करता, काल अनंत भ्रमण करता-2
दुख ही दुक्खों में हो-3 वो समय बिताए रे-SS।।3518।।

(25) पुद्गल परिवर्तन करता, सभी पुद्गलों को गहता-2
छोड़-छोड़ के फिर गहता-SSS
निश्चय से सब पुद्गल को, अनंत बार भोगा करता-2
द्रव्य परिवर्तन हो-3 तब ही हो पाए रे-SS।।3519।।

(26) लोकाकाश प्रदेशों में, सभी क्षेत्र में जीव भ्रमें-2
हर प्रदेश में जन्म धरें-SSS
ऐसा कोई स्थान नहीं, जीव यहाँ नहिं जन्म धरें-2
सारे ही क्षेत्र हो-3 में भ्रम कर आये रे-SS।।3520।।

(27) उत्सर्पिणी अवसर्पिणी में, सारी समयावलियों में-2
कई बार हम जन्मे हैं-SSS
काल बिताया बहुत यहाँ, काल ने छोड़ा नहीं यहाँ-2
काल परिवर्तन हो-3 ये गुरु बताएँ रे-SS।।3521।।

(28) छोटी वय ले नरकों में, बड़ी उम्र ले स्वर्गों में-2
मिथ्यावश चारों गति में-SSS
नंत बार भव धरा यहाँ, अलग-अलग ले उम्र यहाँ-2
भव का परिवर्तन हो-3 ऐसा बतलाएँ रे-SS।।3522।।

(29) मिथ्यावश भवसागर में, कर्मों के कारागर में-2
प्रकृति स्थिति बंधन में-SSS
बंध प्रदेश अनुभाग यहाँ, इनके सब स्थान यहाँ-2
कई बार भव में हो-3 भ्रम भ्रमके आये रे-SS।।3523।।

(30) पुत्र स्त्री के लिये यहाँ, पाप बुद्धि को किये यहाँ-2
कमा रहा धन रोज यहाँ-SSS
दया दान को भूल रहा, कर्तव्यों को छोड़ रहा-2
ऐसा वह जीव हो-3 भव भ्रमण बढाए रे-SS।।3524।।

ये बारह अनुप्रेक्षायें, वैराग्य बढ़ाएँ रे-SS
इनके चिंतन से हो-3 शक्ति बढ़ जाये रे-SS

(31) मेरे स्त्री पुत्र यहाँ, मेरे हैं धन धान्य यहाँ-2
तीव्र इच्छायें धरे यहाँ-SS
धर्म बुद्धि को छोड़ यहाँ, पाप कर्म में लगे यहाँ-2
दीर्घ इस भव में हो-3 वो भ्रमता जाये रे-SS।।3525।।

(32) कर्मोदय मिथ्यात्व रहे, धर्म की निंदा नित्य रहे-2
जिनप्रभु वंदन नहीं करे-SS
मिथ्याधर्म तीर्थ माने, उनको सही धर्म जाने-2
ऐसे ही लोग हो-3 भव भ्रमण बढ़ाएँ रे-SS।।3526।।

(33) जीवों की हिंसा करके, शहद माँस को खा करके-2
सुरापान सेवन करके-SSS
पराया धन पर स्त्री को, हरकर उसे ग्रहण करके-2
पाप कमाये हो-3 वह भ्रमण बढ़ाए रे-SS।।3527।।

(34) मोह तिमिर से युक्त है जो, हरदम हिंसारत है वो-2
इन्द्रिय के विषयार्थ है जो-SSS
यत्नपूर्वक पाप करे, तीव्र दुखों को प्राप्त करे-2
इसके कारण ही हो-3 वह भव भ्रम जाये रे-SS।।3528।।

(35) नित्येतर निगोद को जाते, सबकी योनि सप्त लाख-2
वनस्पति की हैं दस लाख-SSS
विकलेन्द्रिय की हैं छह लाख, देव तिर्यक नर्क चउ लाख-2
मानव की चौदह हो-3 लाख योनि बताएँ रे-SS।।3529।।

(36) हैं वियोग संयोग यहाँ, सुखदुख लाभालाभ यहाँ-2
मान और अपमान यहाँ-SSS
हर प्राणी को मिलें यहाँ, भव-भव में सब रहें यहाँ-2
सुख दुख होना ही हो-3 संसार बताएँ रे-SS।।3530।।

(37) कर्म निमित्त यहाँ पाकर, भटक रहा भव वन जाकर-2
बनता है भव में पामर-SSS
निश्चय से है कर्म रहित, इस भव के सब भ्रमण सहित-2
फिर भी इस भव में हो-3 भव दुक्ख उठाए रे-SS।।3531।।

(37) उपादेय है जीव यहाँ, बाकी सब ही हेय यहाँ-2
ऐसा चिंतन करे यहाँ-SSS
दुख से क्रांत वो हेय समझ, उपादेय तू शुद्ध समझ-2
तब ही चिंतन में हो-3 निज तत्त्व दिखाए रे-SS।।3532।।

(39) छः द्रव्यों का योग यहाँ, कहते हैं त्रय लोक यहाँ-2
ऊर्ध्व अधः है लोक यहाँ-SSS
मध्यलोक संग मिलकरके, हो जाते त्रय लोक यहाँ-2
लोक के भेद हो-3 गुरुदेव बतलाएँ रे-SS।।3533।।

(40) अधोलोक में नरक यहाँ, ऊर्ध्वलोक में स्वर्ग यहाँ-2
द्वीप समुद्र असंख्य यहाँ-SSS
स्वर्गों के त्रेसठ हैं पटल, उसके ऊपर मोक्ष यहाँ-2
ऐसा ही लोक हो-3 का रूप बताएँ रे-SS।।3534।।

ये बारह अनुप्रेक्षायें, वैराग्य बढ़ाएँ रे–SS
इनके चिंतन से हो–3 शक्ति बढ़ जाये रे–SS

(41) इकतीस सात व चार यहाँ, दो–एक–एक हैं पटल यहाँ–2
चार कल्प में पन्द्रह यहाँ–SS
आगे हैं एक–एक पटल, सब मिल त्रेसठ यहाँ पटल–2
इन सबमें देवों हो–3 के भवन बताएँ रे–SS।।3535।।

(42) अशुभ भाव तिर्यंच नरक, शुभ से मानव और स्वर्ग–2
शुद्ध ले चले मुक्ति तक–SS
ऐसा चिंतन करे यहाँ, पापों से दिन बचे यहाँ–2
तब ही कल्याण हो–3 मानव कर पाये रे–SS।।3536।।

(43) देह अस्थि से बना हुआ, माँस से सारा भरा हुआ–2
बाह्य त्वचा से ढका हुआ–SS
कीड़ों का समूह इसमें, भरी अशुद्धि है इसमें–2
ऐसे इस तन से हो–3 नहिं मोह बढ़ाओ रे–SS।।3537।।

(44) दुर्गन्धित वीभत्स ये तन, जिसमें हरदम सड़न गलन–2
गंदे मल से भरा मलिन–SS
मूर्तिक सदा अचेतनमय, देख ले तो फिर घिन ही घिन–2
इसका स्वभाव हो–3 गलता ही जाये रे–SS।।3538।।

(45) सप्त धातुमय है ये तन, मूत्र मवाद है कृमि सघन–2
इसका निश्चित यहाँ पतन–SS
दुर्गन्धित अपवित्र है ये, है अनित्य नित जड़मय ये–2
तन की सेवा से हो–3 भव दुख बढ़ जाये रे–SS।।3539।।

(46) देह से आतम भिन्न यहाँ, सभी कर्म से भिन्न यहाँ–2
ज्ञान से आत्म अभिन्न यहाँ–SSS
अनंत सुख का धाम है ये, शुद्ध तत्त्व मय आत्म यहाँ–2
ऐसा नित भाओ हो–3 जो गुण दिलवाये रे–SS।।3540।।

(47) मिथ्यात्व अविरति योग यहाँ, कषाय के संयोग यहाँ–2
आस्रव के ये योग यहाँ–SSS
पच पच चउ त्रय भेद कहे, ज्ञानी इनसे दूर रहे–2
इनसे बच जाये हो–3 वो शिवपुर पाये रे–SS।।3541।।

(48) एकांत विपरीत कहे, संशय विनय अज्ञान कहे–2
पंच भेद मिथ्यात्व कहे–SSS
अविरति पच हिंसामय है, जिसका फल तो दुखमय है–2
मिथ्यात्व त्याग हो–3 अघ त्याग बताएँ रे–SS।।3542।।

(49) क्रोध मान माया लोभ, करते ये मन में क्षोभ–2
चार कषाय के भेद ये हैं–SSS
मन–वच काय योग त्रय हैं, इनसे ही सब आस्रव हैं–2
इनको जानो तुम हो–3 सब दूर हटाओ रे–SS।।3543।।

(50) योग भेद द्वय कहे यहाँ, एक है शुभ इक अशुभ यहाँ–2
इच्छाएँ सब अशुभ यहाँ–SSS
भय आहार परिग्रह हैं, मैथुन संज्ञा अशुभ यहाँ–2
इनसे बचकरके हो–3 शुभ योग बनाओ रे–SS।।3544।।

ये बारह अनुप्रेक्षायें, वैराग्य बढ़ाएँ रे-ऽऽ
इनके चिंतन से हो-3 शक्ति बढ़ जाये रे-ऽऽ

(51) तीन अशुभ लेश्यायें यहाँ, इन्द्रिय जन्य हैं सौख्य यहाँ-2
शुद्ध रूप परिणाम यहाँ-ऽऽऽ
ईर्ष्या और विषाद यहाँ, अशुभ भाव ये कहे यहाँ-2
इससे अशुभ मन हो-3 गुरुदेव बताएँ रे-ऽऽ।।3545।।

(52) राग-द्वेष मोहादि करे, हास्य रत्यरति शोक धरे-2
नो कषाय परिणाम करे-ऽऽऽ
सूक्ष्म हों या स्थूल रहें, सबमें अशुभ रूप मन है-2
ऐसा जिन भगवन हो-3 हमको बतलाएँ रे-ऽऽ।।3546।।

(53) भोजन-स्त्री-राज कथा, चौथी जानो चोर कथा-2
अशुभ वचनमय करे व्यथा-ऽऽऽ
छेदन, बंधन, मारन की, अशुभ कायमय योग क्रिया-2
इनको त्यागो तुम हो-3 दुख स्वयं मिटाओ रे-ऽऽ।।3547।।

(54) अशुभ भाव को छोड़ यहाँ, अशुभ द्रव्य को त्याग यहाँ-2
पर से नाता तोड़ यहाँ-ऽऽऽ
व्रत संयम और शील समिति, इनसे मिलती उत्तम गति-2
इसमय मन हो तो-3 वह शुभ कहलाए रे-ऽऽ।।3548।।

(55) जन्म मरण को नाश करे, वे सब शुभमय वचन कहें-2
जो भव संतति छेद करें-ऽऽऽ
देव शास्त्र गुरु की भक्ति, करें तभी बढ़ती शक्ति-2
शुभ काय योग हो-3 यह ही कहलाए रे-ऽऽ।।3549।।

(56) कई दोष से युक्त यहाँ, दुखकर दुख से व्याप्त यहाँ-2
जन्म रूप संसार यहाँ-ऽऽऽ
भव सागर में भ्रमण करे, उसका कारण कर्म कहें-2
कर्म नहिं होते हो-3 तो भटकन जाये रे-ऽऽ।।3550।।

(57) कर्मास्रव जब होता है, वह संसार डुबोता है-2
जीव यहाँ तब रोता है-ऽऽऽ
ज्ञान सहित हो क्रिया यहाँ, वही मोक्ष की हेतु यहाँ-2
इक दिन निश्चित ही हो-3 वह मुक्ति पाये रे-ऽऽ।।3551।।

(58) कर्मास्रव जब करता है, गोते खाते फिरता है-2
भव सागर में मरता है-ऽऽऽ
आस्रव मोक्ष न दिलवाये, चारों गति में भरमाए-2
इसको रोके बिन हो-3 मुक्ति नहिं पाये रे-ऽऽ।।3552।।

(59) जब तक आस्रव होवेगा, तब तक भव में रोवेगा-2
निज शुद्धात्म न पायेगा-ऽऽऽ
आस्रव भव का कारण है, दुःख में यहाँ भ्रमाएगा-2
आस्रव है हेय हो-3 ये दूर हटाओ रे-ऽऽ।।3553।।

(60) दो प्रकार के हैं आस्रव, द्रव्यास्रव और भावास्रव-2
मिथ्यात्व अविरति भावास्रव-ऽऽऽ
कर्मरूप हैं द्रव्यास्रव, इन कारण मानव है शव-2
दोनों ही आस्रव हो-3 दुखरूप बताएँ रे-ऽऽ।।3554।।

ये बारह अनुप्रेक्षायें, वैराग्य बढ़ाएँ रे-ऽऽ
इनके चिंतन से हो-3 शक्ति बढ़ जाये रे-ऽऽ

(61) नहिं चलित रूपी ये मन, ऐसा हो सम्यक्त्व सघन-2
चल अगाढ़ नहिं भाव मलिन-ऽऽऽ
सम्यक् आस्रव रोकेगा, कर्म द्वार नहिं आयेगा-2
ऐसा जिनवर ने हो-3 हमको बतलाया रे-ऽऽ।।3555।।

(62) पाँच महाव्रत युक्त रहे, अविरत आस्रव मुक्त रहे-2
ऐसा जग में नियम कहे-ऽऽऽ
क्रोधादि परिणाम न हों, तो उनका आस्रव न हो-2
आस्रव हेतु बिन हो-3 आस्रव रुक जाए रे-ऽऽ।।3556।।

(63) होता शुभ उपयोग यहाँ, रुके अशुभ उपयोग यहाँ-2
संवर का संयोग यहाँ-ऽऽऽ
शुद्धोपयोग है होता जब, हो निरोध शुभयोग यहाँ-2
आस्रव रुक जाये हो-3 संवर पा जाये रे-ऽऽ।।3557।।

(64) होता शुद्ध उपयोग जहाँ, धर्म शुक्ल हो ध्यान वहाँ-2
संवर का स्थान वहाँ-ऽऽऽ
ये संवर का कारण है, ये संसार निवारण है-2
इसके बिन भव से हो-3 नहिं मुक्ति पाये रे-ऽऽ।।3558।।

(65) आस्रव संवर बंध रहित, निश्चय से शुद्धात्म सहित-2
दर्शज्ञानमय भाव सहित-ऽऽऽ
संवर, निर्जरा रहित यहाँ, शुद्ध भावमय आत्म यहाँ-2
ऐसा ही चिंतन हो-3 निश्चय से लाओ रे-ऽऽ।।3559।।

(66) बँधे हुए जब कर्म गलें, कर्म निर्जरा उसे कहें-2
ऐसा श्री जिनदेव कहें-ऽऽऽ
जिस कारण से संवर हो, उस कारण से निर्जरा हो-2
ऐसा ही जानें हो-3 जो कर्म गलाये रे-ऽऽ।।3560।।

(67) द्वयविध है निर्जरा कही, पहली है सविपाक रही-2
दूजी है अविपाक कही-ऽऽऽ
तपकर कर्म खपाते हैं, बिन तप के झर जाते हैं-2
तप से हो निर्जर हो-3 वह श्रेष्ठ बताएँ रे-ऽऽ।।3561।।

(68) सागार-अनगार यहाँ, ग्यारह और दश भेद यहाँ-2
सम्यक् पूर्वक रहे यहाँ-ऽऽऽ
उत्तम सुख से युक्त हैं जो, जिन प्रभु ने ये कहा यहाँ-2
श्रावक मुनि धर्म हो-3 के भेद बताएँ रे-ऽऽ।।3562।।

(69) दर्शन व्रत सामायिक है, प्रोषध सचित्त त्याग है-2
रात्रि भुक्ति त्याग है-ऽऽऽ
ब्रह्मचर्य आरंभ यहाँ, परिग्रह अनुमति त्याग यहाँ-2
उद्दिष्ट त्याग हो-3 ये व्रत बतलाएँ रे-ऽऽ।।3563।।

(70) उत्तम क्षमा मार्दवार्जव, शौच सत्य संयम और तप-2
त्यागाकिंचन ब्रह्म रमण-ऽऽऽ
दश प्रकार हैं धर्म यहाँ, धारण करते श्रमण यहाँ-2
इनको अपनाए हो-3 वह मुक्ति पाये रे-ऽऽ।।3564।।

ये बारह अनुप्रेक्षायें, वैराग्य बढ़ाएँ रे-SS
इनके चिंतन से हो-3 शक्ति बढ़ जाये रे-SS

(71) बाह्य क्रोध के कारण हों, फिर भी मुझमें क्रोध न हो-2
भाव विनम्र सदा ही हो-SSS
क्षमा भाव मन होता है, क्षमा धर्म तब होता है-2
उत्तम क्षमा ही हो-3 मुनि धर्म कहाए रे-SS।।3565।।

(72) कुल जाति और बुद्धि कहें, रूप ज्ञान तप शील कहें-2
इनमें श्रमण न गर्व करें-SSS
भाव विनम्र रहें हरदम, उसको मार्दव धर्म कहें-2
इसके आते ही हो-3 मद सब मिट जाये रे-SS।।3566।।

(73) कुटिल भाव को छोड़े जो, निर्मल भावी होवे वो-2
श्रमण मनस्वी होता वो-SSS
सरल हृदय हो जाता है, आर्जव धर्म जु आता है-2
मुनियों में आये हो-3 आर्जवता पाए रे-SS।।3567।।

(74) गैरों को संताप न हो, ऐसे वचन न बोले जो-2
निज पर हितमय बोले जो-SSS
उसमें सत्यधर्म होता, श्रमण वही सुखमय होता-2
उत्तम हो सत्य हो-3 तो प्रभु मिल जाये रे-SS।।3568।।

(75) इच्छाएँ नहिं जिसमें हो, वैरागी मन उसका हो-2
उसका मन अति निर्मल हो-SSS
शौच धर्म उस मुनि में हो, जिसमें कोई चाह न हो-2
शौच धर्म बिन हो-3 शुद्धात्म न पाए रे-SS।।3569।।

(76) मन वच काय प्रकृति तजें, पाँच इन्द्रिय पर विजय करें-2
व्रत व समिति यहाँ पालें-SSS
ऐसे उत्तम श्रमणों में, संयम धर्म है सभी कहें-2
उत्तम संयम को हो-3 मुनिवर अपनाएँ रे-SS।।3570।।

(77) विषय कषायों को तजकर, स्वाध्याय में नित रमकर-2
ध्यान उपवास को धारण कर-SSS
आत्म भावना करता है, शुद्ध स्वभावी बनता है-2
उत्तम तप धर्म हो-3 उस श्रमण में आये रे-SS।।3571।।

(78) सभी द्रव्य में मोह तजे, भव-तन भोग विराग भजे-2
राग-द्वेष के भाव तजे-SSS
त्याग उसी में होता है, जो कषाय को तजता है-2
उत्तम त्यागी में हो-3 वह धर्म समाए रे-SS।।3572।।

(79) हो करके निस्संग यहाँ, सुख दुख वृत्ति त्याग यहाँ-2
तन से छोड़ ममत्व यहाँ-SSS
सारे इन्द्र हटाता है, एकत्वपना लाता है-2
उत्तम आकिंचन् हो-3 उस श्रमण में आये रे-SS।।3573।।

(80) सबको माता बहिन कहे, सभी स्त्रियों को देखे-2
उनमें राग भाव छोड़े-SSS
वह ही ब्रह्मचर्य धारे, ऐसा जिनवर उच्चारे-2
उत्तम ब्रह्मचर्य हो-3 मुनिवर अपनाएँ रे-SS।।3574।।

ये बारह अनुप्रेक्षायें, वैराग्य बढ़ाएँ रे-ऽऽ
इनके चिंतन से हो-3 शक्ति बढ़ जाये रे-ऽऽ

(81) गृहस्थ धर्म को छोड़ यहाँ, श्रमण धर्म की वृत्ति यहाँ-2
मोक्ष प्राप्त वो करे यहाँ-ऽऽऽ
ऐसा चिंतन रोज करे, रोज स्वयं अभ्यास करे-2
मुनि धर्म पाकर हो-3 सब मुक्ति पायें रे-ऽऽ।।3575।।

(82) नहिं सागार न अनगार, इनसे भिन्न है व्यापार-2
शुद्ध आत्ममय आधार-ऽऽऽ
निश्चय नय से जान यहाँ, द्विविध धर्म से रहित यहाँ-2
एक शुद्धातम हो-3 का चिंतन लाओ रे-ऽऽ।।3576।।

(83) जिससे होवे ज्ञान यहाँ, उसका चिंतन नित्य यहाँ-2
उस उपाय का ध्यान यहाँ-ऽऽऽ
बोधि इसे ही कहते हैं, जो दुर्लभ से दुर्लभ है-2
ऐसा चिंतन ही हो-3 बोधि दिलवाये रे-ऽऽ।।3577।।

(84) कर्मोदय से पैदा हो, क्षायोपशमिक ज्ञानमय हो-2
उपादेय ये कभी न हो-ऽऽऽ
उपादेय निज द्रव्य यहाँ, कर्म उदय हो नहीं जहाँ-2
ऐसा निश्चय ही हो-3 सद्ज्ञान कहाये रे-ऽऽ।।3578।।

(85) मिथ्यात्वादि कर्म यहाँ, मूल व उत्तर प्रकृति यहाँ-2
ये सब ही पर द्रव्य यहाँ-ऽऽऽ
इनसे रहित स्वद्रव्य कहा, आत्म रूप वह द्रव्य यहाँ-2
ऐसा निश्चय नय हो-3 हमको बतलाए रे-ऽऽ।।3579।।

(86) हेय उपादेय ज्ञान यहाँ, हो संकल्प विकल्प यहाँ-2
निज स्वभावमय नहीं यहाँ-ऽऽऽ
क्षायिक केवलज्ञान यहाँ, करते हैं मुनि ध्यान यहाँ-2
उसका ही चिंतन हो-3 हरदम अपनाओ रे-ऽऽ।।3580।।

(87) भावनाएँ ही प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान व आलोचन-2
यही समाधि रूप सघन-ऽऽऽ
इनका चिंतन रोज करो, आतम स्वयं पवित्र करो-2
इनके भाने से हो-3 वैराग्य समाये रे-ऽऽ।।3581।।

(88) अपने में हो शक्ति सघन, प्रत्याख्यान करो निशदिन-2
आलोचन और प्रतिक्रमण-ऽऽऽ
समाधि-सामायिक करना, शक्ति समां करते रहना-2
जीवन में हर दम हो-3 मन शुद्धि बनाओ रे-ऽऽ।।3582।।

(89) अब तक जितने पुरुष गये, अनुप्रेक्षा का भाव किये-2
चिंतन करके मोक्ष गये-ऽऽऽ
ध्यान उन्हीं का करता हूँ, नमस्कार मैं करता हूँ-2
सिद्धों का ध्यान हो-3 भव पार कराये रे-ऽऽ।।3583।।

(90) भूतकाल में गये हैं जो, भविष्य में जायेंगे वो-2
सिद्ध हुए और होंगे जो-ऽऽऽ
अनुप्रेक्षाओं का फल है, इनसे हो जाता बल है-2
इनकी महिमा को हो-3 सब ही बतलाएँ रे-ऽऽ।।3584।।

ये बारह अनुप्रेक्षायें, वैराग्य बढ़ाएँ रे-ऽऽ
इनके चिंतन से हो-3 शक्ति बढ़ जाये रे-ऽऽ

(91) निश्चय से व्यवहार से, कुंद कुंद भगवान ने-2
कहा शुद्ध मन वचन से-ऽऽऽ
भावनाएँ जो भाता है, शुद्ध सिद्ध पद पाता है-2
अनुप्रेक्षाओं का हो-3 वो फल पा जाये रे-ऽऽ।।3585।।

उपसंहार

भावनाएँ भाता है जो, मन को शुद्ध बनाय।
पाता वो वैराग्य को, संयम में चित लाय।।
अनुप्रेक्षा का अनुकरण, अंतस् ज्ञान कराय।
अनुभव नित बढ़ता चले, केवलज्ञान दिलाय।।

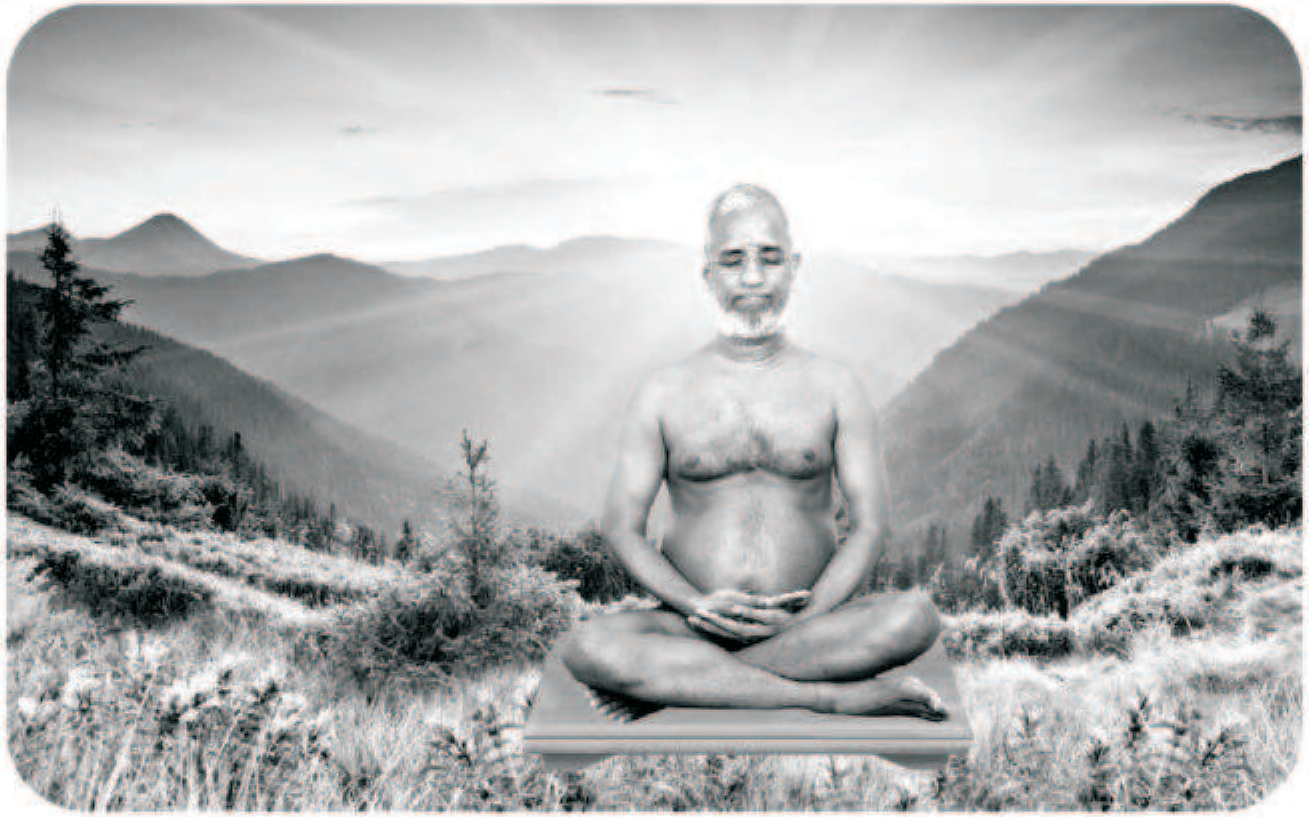

पंचास्तिकाय

मूल ग्रंथकर्ता : आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी

पद्यानुवाद : उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

अस्तिकाय हैं पाँच यहाँ, नहिं काल बताएँ रे-2
भगवन् कुंदकुंद हो-3 सबको समझाएँ रे-ऽऽ

मंगलाचरण

(1) वंदनीय शत इंद्रों से, तीन लोक का हित करते-2
हित-मित-विशद वचन कहते-ऽऽ
अनंत गुण के धारी जो, हुये यहाँ कृतकृत्य हैं जो-2
ऐसे जिनप्रभु को हो-3 नित शीश झुकाए रे-ऽऽ।।3586।।

(2) वीतराग प्रभु से आया, गणधर प्रभु ने बतलाया-2
है प्रमाण सबने गाया-ऽऽ
भव के दुख को नाश करे, आतम का कल्याण करे-2
ऐसे आगम को हो-3 गुरुदेव बताएँ रे-ऽऽ।।3587।।

(3) पाँच द्रव्य जिसमें रहते, उसको यहाँ लोक कहते-2
द्रव्य सभी नभ में रहते-ऽऽ
लोक के बाहर द्रव्य है जो, उसे अलोक यहाँ कहते-2
ऐसा ही जिनवर हो-3 श्रुत में बतलाएँ रे--ऽऽ।।3588।।

(4) पुद्गल, जीव अनंत कहें, धर्म अधर्म को एक कहें-2
नभ को भी प्रभु एक कहें-ऽऽ
इनके हैं अस्तित्व यहाँ, काय रूप सब द्रव्य यहाँ-2
तब ही ये पाँचों हो-3 अस्तित्व बताएँ रे-ऽऽ।।3589।।

(5) तीन लोक उत्पन्न हुआ, पर्यायों से सहित हुआ-2
नाना गुण संयुक्त हुआ-ऽऽ
पाँचों अस्ति स्वभावमयी, गुण पर्यय से युक्त सही-2
इनको जाने बिन हो-3 नहिं तत्त्व दिखाए रे-ऽऽ।।3590।।

(6) पुद्गल परिवर्तन करते, काल द्रव्य उसको कहते-2
तभी काल पर्यय बनते-ऽऽ
भूत भविष्यकाल होते, द्रव्य यहाँ छः सिद्ध होते-2
होते अविनाशी हो-3 जिनदेव बताएँ रे-ऽऽ।।3591।।

(7) छहों द्रव्य संबंध करें, एक दूजे से यहाँ मिलें-2
बाधा कोई नहीं करें-ऽऽ
मिल करके सब भले रहें, शक्ति स्वयं की नहिं छोड़ें-2
अपना स्वभाव हो-3 हरदम अपनायें रे-ऽऽ।।3592।।

(8) एक कहा अस्तित्व यहाँ, दिखता सबमें वही यहाँ-2
बहुत भेदमय वस्तु यहाँ-ऽऽ
व्यय उत्पाद ध्रौव्य युत है, प्रतिपक्षी भावयुत हे-2
अनंत पर्याय हो-3 इसमें बतलाएँ रे-ऽऽ।।3593।।

(9) गुण पर्यय स्वभाव वाली, होती वस्तु यहाँ सारी-2
तन्मय सी रहने वाली-ऽऽ
गुण पर्याय नित द्रव्य रहें, जुदा नहीं ये वस्तु रहें-2
जैसे अग्नि में हो-3 ऊष्णत्व बताएँ रे-ऽऽ।।3594।।

(10) सत्ता जिसकी रहे यहाँ, उसको कहते द्रव्य यहाँ-2
वीतराग जिनदेव यहाँ-ऽऽ
व्यय-उत्पाद-ध्रौव्ययुत जो, गुण पर्यय आधार है जो-2
द्रव्य का लक्षण हो-3 ऐसा बतलाएँ रे-ऽऽ।।3595।।

अस्तिकाय हैं पाँच यहाँ, नहिं काल बताएँ रे-2
भगवन् कुंदकुंद हो-3 सबको समझाएँ रे-SS

(11) द्रव्य त्रिकाल अविनाशी है, नहिं उत्पाद विनाशी है-2
सत्ता रूप प्रकाशी है-SS
नित्यानित्य हैं भाव यहाँ, उससे व्यय उत्पाद यहाँ-2
भावों के कारण हो-3 सत् रूप बताएँ रे-SS।।3596।।

(12) पर्यय बिन नहिं द्रव्य यहाँ, पर्यय नहिं बिन द्रव्य यहाँ-2
दोनों में नहिं भेद यहाँ-SS
पर्यय में नित द्रव्य रहे, द्रव्यों में पर्याय रहे-2
कहते हैं जिनवर हो-3 ये समझ में आये रे-SS।।3597।।

(13) गुण नहिं हों बिन द्रव्य यहाँ, गुण के बिन नहिं द्रव्य यहाँ-2
दोनों रहते संग यहाँ-SS
द्रव्य गुणों से अलग नहीं, गुण द्रव्यों से अलग नहीं
ऐसा द्रव्यों का हो-3 अस्तित्व बताएँ रे-SS।।3598।।

(14) अनेकांतमय वस्तु यहाँ, सप्त भंग से कहें यहाँ-2
अस्ति नास्ति मय रूप यहाँ-SS
अवक्तव्य और उभय समझ, सात रूप से कथन यहाँ
इसको जाने बिन हो-3 कोई ज्ञान न पाये रे-SS।।3599।।

(15) सत् का नाश नहीं होता, असत् उपजना नहिं होता-2
कैसे व्यय उत्पाद होता-SS
गुण पर्यय परिणमन करें, तब ही व्यय उत्पाद बनें-2
ऐसा जो जाने हो-3 वो ही सच पाये रे-SS।।3600।।

(16) द्रव्यों में है जीव प्रमुख, अनुभव करता जो सुख दुख-2
अनुभूति में शुद्धाशुद्ध-SS
चतुर्गति के जीव यहाँ, हैं अशुद्धमय सभी यहाँ
चैतन्य रूप हो-3 को शुद्ध बताएँ रे-SS।।3601।।

(17) मानव पर्यय मिट जाये, देवगति में जन्माये-2
संसारी ये कर जाये-SS
आतम ही मर कर जाये, आतम जन्म यहाँ पाये-2
द्रव्यार्थिक नय से हो-3 नित अमर बताएँ रे-SS।।3602।।

(18) जीव उपजता मरता है, पर्यय नय ये कहता है
द्रव्यार्थिक नहिं कहता है-SS
निश्चय से नहिं जन्म मरण, अविनाशी मय ज्ञान सघन
ऐसा जो जाने हो-3 वो ही सच पाये रे-SS।।3603।।

(19) कर्मजनित हैं भाव यहाँ तो होता है मरण यहाँ-2
होता भी है जन्म यहाँ-SS
स्वभावमय जो जीव यहाँ, जन्म मरण हो उसे कहाँ-2
कर्मों के कारण हो-3 गतियाँ बतलाएँ रे-SS।।3604।।

(20) ज्ञानावरण न कर्म रहें, राग-द्वेष नहिं मोह रहें-2
कर्मबंध का नाश करें-SS
कभी नहीं जो मिला यहाँ, ऐसा पद हो सिद्ध यहाँ-2
ऐसे ही पद को हो-3 हम सब ही चाहें रे-SS।।3605।।

अस्तिकाय हैं पाँच यहाँ, नहिं काल बताएँ रे-2
भगवन् कुंदकुंद हो-3 सबको समझाएँ रे-ऽऽ

(21) कभी मनुष्य यहाँ होता, मरकर देव यहाँ होता-2
देव से फिर मानव होता-ऽऽ
गुण पर्यय संयुक्त यहाँ, शुद्धाशुद्ध से युक्त यहाँ-2
उत्पाद नाश हो-3 द्रव में बतलाएँ रे-ऽऽ।।3606।।

(22) जीव व पुद्गल द्रव्य यहाँ, धर्म अधर्माकाश यहाँ-2
कायवंत ये द्रव्य यहाँ-ऽऽ
स्वभाव से हैं सिद्ध सभी, लोक में ये सब रहें सभी-2
अस्तित्व अपना हो-3 नहिं कोई तज पाये रे-ऽऽ।।3607।।

(23) मिटती बनती वस्तु यहाँ, फिर भी है अस्तित्व यहाँ-2
व्यय उत्पाद संयुक्त यहाँ-ऽऽ
ऐसा जो भी करवाये, वो ही काल कहा जाये-2
देवाधिदेव हो-3 ऐसा बतलाएँ रे-ऽऽ।।3608।।

(24) पाँच वर्ण रस नहिं जिसमें, आठ स्पर्श दो गंध न हैं-2
ऐसा निश्चय काल कहें
हानि वृद्धि गुणयुक्त यहाँ, बाह्य निमित्त है द्रव्य यहाँ-2
उसको कालाणु हो-3 निश्चय बतलाएँ रे-ऽऽ।।3609।।

(25) समय निमिष काष्ठा होती, कला घड़ी नाली होती-2
दिन के साथ रात होती-ऽऽ
काल ये सब व्यवहार कहे, निश्चय की पर्याय कहे-2
तब ही दिन रात हो-3 जग में हो पाये रे-ऽऽ।।3610।।

(26) काल का हो परिणाम नहीं, शीघ्र देर का भेद नहीं-2
कम ज्यादा का कथन नहीं-ऽऽ
पुद्गल का परिणमन नहीं, तो फिर होगा काल नहीं
व्यवहार काल हो-3 पुद्गल से आये रे-ऽऽ।।3611।।

(27) कर्ता भोक्ता जीव यहाँ, देहमात्र है जीव यहाँ-2
मूर्त कर्मयुत् जीव यहाँ-ऽऽ
निश्चय से उपयोगमयी, कर्तापन व्यवहार यहाँ
शुद्ध अशुद्ध हो-3 ये जीव बताएँ रे-ऽऽ।।3612।।

(28) कर्मों से जो मुक्त यहाँ, ज्ञान दर्श से युक्त यहाँ-2
उसका ऊर्ध्व स्वभाव यहाँ-ऽऽ
इन्द्रिय सुख से रहित है जो, सिद्ध रूप में शुद्ध है जो-2
सुख वो अनंत हो-3 आत्मिक पा जाये रे-ऽऽ।।3613।।

(29) शुद्ध रूप जो आतम है, सर्वलोक का दर्शी है-2
सर्वज्ञानमय ज्ञानी है-ऽऽ
अव्याबाध अखंडित जो, अमूर्त आत्मिक सुखमय जो-2
ऐसा परम सुख, हो-3 शुद्धातम पाये रे-ऽऽ।।3614।।

(30) जीता चार प्राण से जो, आगे यहाँ जियेगा जो-2
पहले भी जीता था जो-ऽऽ
इन्द्रिय बल श्वासायु कहे, चार प्राण से यहाँ जिये-2
निश्चय से प्राण हो-3 चैतन्य बताएँ रे-ऽऽ।।3615।।

अस्तिकाय हैं पाँच यहाँ, नहिं काल बताएँ रे-2
भगवन् कुंदकुंद हो-3 सबको समझाएँ रे-ऽऽ

(31) गुण अनंतयुत जीव यहाँ, असंख्यात प्रदेश यहाँ-2
एक जीव में कहे यहाँ-ऽऽ
तन प्रमाण सब जीव कहे, लोक प्रमाण भी जीव यहाँ
ऐसा जिनवर ही हो-3 सबको बतलाएँ रे-ऽऽ।।3616।।

(32) मिथ्यादर्शन युक्त है जो, संसारी वे जीव कहो-2
निज तन उन्हें प्रमाण कहो-ऽऽ
योग रहित जो शुद्ध यहाँ, वे सब ही हैं सिद्ध यहाँ-2
शुद्ध अशुद्ध हो-3 सब जीव बताएँ रे-ऽऽ।।3617।।

(33) पद्मराग महामणि हो, दूध में उसको डाला हो-2
उससे दूध कांतिमय हो-ऽऽ
वैसे तन में जीव रहे, देह समां खुद को समझो-2
तन के बराबर हो-3 आतम कहलाए रे-ऽऽ।।3618।।

(34) भव में जीव यहाँ भ्रमता, कई तरह के तन धरता-2
तन से एकमेव रहता-ऽऽ
निश्चय द्रव्य अलग अलग, शुद्ध भावमय से रहता-2
राग और द्वेष हो-3 से भ्रमण बढ़ाए रे-ऽऽ।।3619।।

(35) जिनसे जीता जीव यहाँ उसको समझो प्राण यहाँ-2
सिद्ध हों या भवरूप यहाँ-ऽऽ
तन से रहित अमूर्तिक जो, महिमा वचनातीत कहो-2
जीने मरने में हो-3 हैं प्रगाण सहायी रे-ऽऽ।।3620।।

(36) नहीं किसी कारण से हों, कार्यरूप भी जो नहिं हों-2
स्वभाव से स्वाभाविक हों-ऽऽ
कारण कार्य रहित हैं जो, ऐसे सारे सिद्ध प्रभो-2
उनकी महिमा को हो-3 सारा जग गाये रे-ऽऽ।।3621।।

(37) मोक्ष जीव को होता है, ज्ञान नष्ट हो जाता है-2
भाव न कोई रहता है-ऽऽ
शून्य भाव से रहते हैं उनको सिद्ध वो कहते हैं-2
बौद्धमत वाले हो-3 ऐसा बतलाएँ रे-ऽऽ।।3622।।

(38) सुख दुख फल अनुभव करती, इष्ट अनिष्ट कार्य करती-2
शुद्ध ज्ञान वेदन करती-ऽऽ
कर्म-कर्मफल ज्ञानमयी, चेतन तीन स्वरूप वही-2
तीनों भेद में हो-3 सब जीव समाए रे-ऽऽ।।3623।।

(39) एक इन्द्रिय सब जीव यहाँ, कर्मफलों में रहें यहाँ-2
कर्मफल चेतना यहाँ-ऽऽ
राग-द्वेष नित मोह करे, कर्म चेतना उसे कहें-2
प्रत्यक्ष ज्ञानी हो-3 ज्ञानात्म कहाये रे-ऽऽ।।3624।।

(40) चेतन के उपयोग हैं दो, ज्ञान और दर्शन हैं जो-2
वस्तु जानता ज्ञान है वो-ऽऽ
जाने जो सामान्य यहाँ, दर्शन उसको कहा यहाँ-2
आतम से ज्ञान हो-3 नहिं भिन्न बताएँ रे-ऽऽ।।3625।।

अस्तिकाय हैं पाँच यहाँ, नहिं काल बताएँ रे-2
भगवन् कुंदकुंद हो-3 सबको समझाएँ रे-SS

(41) मति श्रुत अवधि मनःपर्यय, केवल ये सब सम्यक्मय-2
इनको पाकर मिटते भय-SS
कुमति-कुश्रुत कुअवधि जानो, तीनों ही मिथ्या मानो
ज्ञान के आठ हो-3 गुरु भेद बताएँ रे-SS॥3626॥

(42) आँख से चक्षू दर्श कहा, चार इन्द्रिय मन शेष अहा-2
उससे दर्श अचक्षु कहा-SS
निश्चय अवधिज्ञान यहाँ, समझो अवधि दर्श यहाँ-2
देखे अनंत हो-3 केवल दर्श कहाये रे-SS॥3627॥

(43) आतम एक यहाँ जानो, गुण अनंत उसमें जानो-2
अनंत पर्यय भी मानो-SS
ज्ञान से आत्म अनेक कहा, वस्तु रूप से एक कहा
ऐसा जो जाने हो-3 ज्ञानी कहलाए रे-SS॥3628॥

(44) आतम से गुण भिन्न नहिं, गुण से आतम भिन्न नहीं
ऐसा जानो सभी यहीं-SS
एक आतम में अनेक गुण, गुण में अनेक आतम यहीं
प्रत्येक गुण में हो-3 आतम बतलाएँ रे-SS॥3629॥

(45) गुणी गुणों में भेद कहें, इनको कभी अभेद कहें-2
भावों से ही यहाँ कहें-SS
निश्चय इनमें भेद करे, नहीं भेद व्यवहार करे-2
दोनों को जाने हो-3 वो ज्ञान बढ़ाए रे-SS॥3630॥

(46) संख्या और आकार यहाँ, भाव-विषय व्यवहार यहाँ-2
इनसे होता भेद यहाँ-SS
इन पर नहीं विचार करें, लेकिन वस्तु अभेद कहें-2
भेद-अभेद हो-3 ये वस्तु बताएँ रे-SS॥3631॥

(47) धन से हो धनवान यहाँ, जुदा है धन से धनी यहाँ-2
ऐसा सबको दिखे यहाँ-SS
वैसे ही गुण गुणी कहे, दोनों में ही भेद कहें-2
ऐसा व्यवहार हो-3 जग में बतलाएँ रे-SS॥3632॥

(48) ज्ञानी ज्ञान में भेद करें, यहाँ सर्वथा वही कहें-2
इसमें बहुत ही दोष लगें-SS
कहीं जुड़े कहीं जुड़े नहीं, ऐसा समझें सभी यहीं-2
दोनों ही नय से हो-3 ये बात बताएँ रे-SS॥3633॥

(49) ज्ञात आतम से भिन्न नहीं, निश्चय से यह बात कही-2
दोनों रहें अभिन्न यहीं-SS
जब हम ज्ञानी कहें यहाँ, तब दोनों हैं एक यहाँ-2
ऐसा व्यवहार हो-3 दिखने में आये रे-SS॥3634॥

(50) गुणी व गुण संबंध यहाँ, कहा है ये समवाय यहाँ-2
अनादि से है सिद्ध यहाँ-SS
जैसे मिट्टी स्वर्ण रहे, वैसे ये संबंध रहे-2
ऐसा ही जिनवर हो-3 श्रुत में बतलाएँ रे-SS॥3635॥

अस्तिकाय हैं पाँच यहाँ, नहिं काल बताएँ रे-2
भगवन् कुंदकुंद हो-3 सबको समझाएँ रे-ऽऽ

(51) वर्ण गंध रस स्पर्श यहाँ, परमाणु में रहें यहाँ-2
निश्चय से नहिं पृथक् यहाँ-ऽऽ
अलग कहे व्यवहार यहाँ, संज्ञा से है भेद यहाँ-2
ऐसा आगम में हो-3 गुरुदेव बताएँ रे-ऽऽ।।3636।।

(52) पुद्गल में वर्णादि रहें, निश्चय से नहिं भिन्न रहें-2
संज्ञादिक से भेद कहें-ऽऽ
वैसे दर्शन ज्ञान यहाँ, जीव से रहें अभिन्न यहाँ-2
व्यवहार से ही हो-3 भेदादि बताएँ रे-ऽऽ।।3637।।

(53) स्वभाविक हो भाव यहाँ, सहज शुद्ध त्रयकाल यहाँ-2
अविनाशी है जीव यहाँ-ऽऽ
सादि अनंत व सांत कहें, शुद्ध में काल अनंत यहाँ-2
भावों से जीव हो-3 के भेद बताएँ रे-ऽऽ।।3638।।

(54) द्रव्यार्थिक नय कहता है, जीव शुद्ध ही रहता है-2
जन्म मरण नहिं करता है-ऽऽ
पर्यायार्थिक कहे यहाँ, जन्म मरण में जीव यहाँ-2
दोनों नयों में हो-3 न विरोध दिखाए रे-ऽऽ।।3639।।

(55) नाम कर्म से जीव यहाँ, नये नये तन धरे यहाँ-2
इसी कर्म से मरे यहाँ-ऽऽ
नरक-देव-तिर्यंच बने, या फिर यहाँ मनुष्य बने-2
पर्यायार्थिक नय हो-3 इसको बतलाएँ रे-ऽऽ।।3640।।

(56) कर्मों के उपशम-क्षय से, या दोनों के मिश्रण से
अथवा हों कर्मोदय से-ऽऽ
निज आतम के भावों से, पाँच भाव सामान्य से
जीव में भाव हो-3 होते बतलाएँ रे-ऽऽ।।3641।।

(57) जैसा हो परिणाम यहाँ, कर्म का वैसा उदय यहाँ-2
कर्ता हो उस भाव यहाँ-ऽऽ
कर्तापन से कर्म बँधे, उनके ही फल यहाँ मिलें-2
तत्त्व के ज्ञानी हो-3 ऐसा बतलाएँ रे-ऽऽ।।3642।।

(58) द्रव्यकर्म गर नहिं होते, राग-द्वेष भी नहिं होते-2
उपशम भाव नहीं होते-ऽऽ
क्षायिक और क्षयोपशम भी, भाव यहाँ कैसे होते-2
कर्म बिन ये सब हो-3 हों कभी न पायें रे-ऽऽ।।3643।।

(59) द्रव्य कर्म ही भाव करे, द्रव्य बिना नहिं भाव बने-2
बात सर्वथा यहाँ कहे-ऽऽ
तो फिर आत्म अकर्ता हो, द्रव्य कर्म ही कर्ता हो-2
ऐसा जो माने हो-3 वो दोष लगाये रे-ऽऽ।।3644।।

(60) भाव औदायिक जब होते, कर्म निमित्त जरूर होते-2
कर्मोदय बिन नहिं होते-ऽऽ
द्रव्य न कर्ता कर्मों का, जीव न कर्ता कर्मों का-2
कर्ता बिन कर्म हो-3 हो कभी न पाये रे-ऽऽ।।3645।।

अस्तिकाय हैं पाँच यहाँ, नहिं काल बताएँ रे-2
भगवन् कुंदकुंद हो-3 सबको समझाएँ रे-ऽऽ

(61) परिणामों को जीव करे, कर्तापन में जीव रहे-2
भाव कर्म भी जीव करे-ऽऽ
द्रव्य कर्म नहिं जीव करे, निश्चय से यह बात कहे
ऐसा जाने बिन हो-3 सम्यक्त्व न पाये रे-ऽऽ।।3646।।

(62) जैसा होता कर्म यहाँ, वैसा होता भाव यहाँ-2
कर्ता होता कर्म यहाँ-ऽऽ
जीव स्वयं का भाव करे, निज स्वरूप में सदा रहे-2
दोनों ही अपने हो-3 कर्ता कहलाएँ रे-ऽऽ।।3647।।

(63) कर्म करे परिणाम यहाँ, जब हो उसका उदय यहाँ-2
देता कर्म विपाक यहाँ-ऽऽ
राग-द्वेष तब जीव करे, कर्मबंध फिर नये करे-2
ऐसा क्रम आगे हो-3 चलता ही जाये रे-ऽऽ।।3648।।

(64) लोक में पुद्गल कर्म यहाँ, खूब ठसाठस भरे यहाँ-2
बादर भी हैं सूक्ष्म यहाँ-ऽऽ
जैसे डिब्बी में काजल, भरा हुआ भरपूर यहाँ-2
अनंतानंत ये हो-3 जग में बतलाएँ रे-ऽऽ।।3649।।

(65) रागादिक जब भाव करे, तब कर्मों का बंध करे-2
कर्म ये पुद्गल रूप कहे-ऽऽ
कर्म वर्गणाएँ भव में, भरी हुई अति गाढ़ी है
जीव परिणाम हो-3 से कर्म बनाए रे-ऽऽ।।3650।।

(66) पुद्गल नाना रूप बने, अलग-अलग स्कंध बने-2
ऐसा सबको यहाँ दिखे-ऽऽ
वैसे ही ये जीव यहाँ, निज शक्ति से राग करे-2
कर्म ये पुद्गल हो-3 खुद ही बन जाये रे-ऽऽ।।3651।।

(67) कर्म जीव के साथ यहाँ, एकमेक हो गये यहाँ-2
बंध अवस्था किये यहाँ-ऽऽ
उदयकाल में रस देकर, खुद खिर जाते कर्म यहाँ-2
साता-असाता हो-3 तब फल बन जाये रे-ऽऽ।।3652।।

(68) निश्चय सुख-दुख का भोगे, व्यवहार से पदार्थ भोगे-2
जीव अशुद्ध भाव भोगे-ऽऽ
द्रव्यकर्म परिणाम करे, राग-द्वेष उत्पन्न करे-2
जीव ही भोगे हो-3 पुद्गल नहिं भोगे रे-ऽऽ।।3653।।

(69) अपने कर्म उदय आयें, राग-द्वेष में रम जायें-2
नाना पर्यय तब पायें-ऽऽ
वस्तु यहाँ सत् रूप लखे, हो मदमत्त प्रवृत्ति करे-2
अपना स्वभाव हो-3 फिर याद न आये रे-ऽऽ।।3654।।

(70) जीव अविद्या नाश करे, तब यथार्थ वह ज्ञान लखे-2
कर्ता भोक्ता नहीं बने-ऽऽ
निज स्वरूप का बल पाकर, अंधकार को नाश करे-2
तब वह शुद्धातम हो-3 को खुद पा जाये रे-ऽऽ।।3655।।

अस्तिकाय हैं पाँच यहाँ, नहिं काल बताएँ रे–2
भगवन् कुंदकुंद हो–3 सबको समझाएँ रे–ऽऽ

(81) अविनाशी उपयोगमयी, जीवद्रव्य चैतन्यमयी–2
जीव एक इस कारण ही–ऽऽ
दर्श ज्ञान से भेद कहे, तीन चेतना रूप कहे
गतियों से भेद हो–3 भव चार हो जायें रे–ऽऽ।।3656।।

(82) भाव से पाँच प्रकार कहे, दिशा छः प्रकार कहे–2
सप्तभंग से सात कहें–ऽऽ
आठ गुणों से आठ तरह, नव पदार्थ नौ रूप कहे–2
दश स्थानों से हो–3 दश भेद बताएँ रे–ऽऽ।।3657।।

(83) चार तरह के बंधन से, छूटा आत्म प्रदेशों से–2
जीव शुद्ध हो भावों से–ऽऽ
ऊर्ध्वगमन कर जाता है, सिद्ध गति को पाता है
जीव अशुद्ध हो–3 सब दिशा में जाये रे–ऽऽ।।3658।।

(84) पुद्गल पिण्ड स्कंध यहाँ, दूजा स्कंध देश यहाँ–2
तीजा स्कंध प्रदेश यहाँ–ऽऽ
चौथा है परमाणु यहाँ, ये पुद्गल के भेद यहाँ–2
ऐसा जाने जो हो–3 वह ज्ञान बढ़ाए रे–ऽऽ।।3659।।

(85) अनंत पुद्गल पिण्ड मिले, उसे यहाँ स्कंध कहें–2
आधा स्कंध देश कहें–ऽऽ
स्कंध प्रदेश उसका आधा, पुद्गल के चउ भेद कहें
अंतिम पुद्गल को हो–3 परमाणु बताएँ रे–ऽऽ।।3660।।

(86) बादरबादर बादर हो, तीजा बादर सूक्ष्म हो–2
चौथा सूक्ष्म बादर हो–ऽऽ
पंचम् भेद कहा सूक्ष्म, षष्ठम् सूक्ष्म अति सूक्ष्म कहो–2
पुद्गल के भेद हो–3 ये छः बतलाएँ रे–ऽऽ।।3661।।

(87) शब्द रहित अविनाशी जो, स्कंधों का कारण जो–2
शुद्ध नित्य त्रैकाली जो–ऽऽ
जिसका दूजा भाग नहीं, रूप गंध–स्पर्शी जो
उसको आगम में हो–3 परमाणु बताएँ रे–ऽऽ।।3662।।

(88) जिसको मूर्तिक कहा यहाँ, गुणी और गुण संज्ञादि यहाँ–2
उसे समझ परमाणु यहाँ–ऽऽ
पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, उसकी है पर्याय यहाँ–2
उसका स्वभाव हो–3 परिणमन बताएँ रे–ऽऽ।।3663।।

(89) परमाणु स्कंध बने, स्कंधों से शब्द बने–2
जब स्कंध स्पर्श करे–ऽऽ
संघर्षण जब होता है, शब्द स्वयं ही होता है–2
शब्द पुद्गल की हो–3 पर्याय बताएँ रे–ऽऽ।।3664।।

(80) परमाणु जब गमन करे,तब ही निश्चित काल भरे–2
संख्या भी परमाणु करे–ऽऽ
परमाणु स्कंध करे, परमाणु से लोक बने–2
सब ही दिशा में हो–3 पुद्गल नजराये रे–ऽऽ।।3665।।

अस्तिकाय हैं पाँच यहाँ, नहिं काल बताएँ रे-2
भगवन् कुंदकुंद हो-3 सबको समझाएँ रे-ऽऽ

(81) एक गंध रस वर्ण रहे, दो गुणमय स्पर्श रहे-2
जिससे सारे शब्द बने-ऽऽ
एक प्रदेशी शब्द रहित, स्कंधों से मिल रहे-2
उसको ही ज्ञानी हो-3 परमाणु बताएँ रे-ऽऽ।।3666।।

(82) पंचेन्द्रिय के भोग यहाँ, पाँच प्रकार शरीर यहाँ-2
द्रव्य कर्म नोकर्म यहाँ-ऽऽ
मूर्तिक सभी पदार्थ यहाँ, सभी द्रव्यमन रहे यहाँ-2
ये सब पुद्गल के हो-3 प्रभु भेद बताएँ रे-ऽऽ।।3667।।

(83) पाँच वर्ण-रस-रहित है जो, आठ स्पर्श बिना है जो-2
दो प्रकार की गंध न हो-ऽऽ
तीन लोक में व्याप्त रहे, एक अखंडित काय कहे-2
उसको धर्मास्तिक हो-3 गुरु काय बताएँ रे-ऽऽ।।3668।।

(84) अगुरुलघुक गुण सहित रहे, अविनाशी जो नित्य रहे-2
अनंतगुण संयुक्त रहे-ऽऽ
जीव व पुद्गल गमन करें, उनको यहाँ निमित्त रहे-2
धर्मद्रव्य उसको हो-3 जिनदेव बताएँ रे-ऽऽ।।3669।।

(85) जल में मछली तीव्र चले, मिट्टी में चल नहीं सके-2
मछली को जल निमित्त बने-ऽऽ
जीव व पुद्गल चलें यहाँ, धर्मद्रव्य हो निमित्त यहाँ-2
चलने में धर्म हो-3 सहाय बताएँ रे-ऽऽ।।3670।।

(86) धर्मद्रव्य हो चलने में, अधर्म द्रव्य है रुकने में
निमित्त पुद्गल जीवों में-ऽऽ
जबरन नहीं चलाता है, जबरन नहीं रुकाता है-2
फिर भी सहकारी हो-3 यह द्रव्य बताएँ रे-ऽऽ।।3671।।

(87) चलना-रुकना भेद हुआ, लोक-अलोक विभक्त हुआ-2
धर्म द्रव्य से यहाँ हुआ-ऽऽ
दोनों एक क्षेत्र में हैं, फिर भी अलग अलग ही हैं-2
असंख्यात प्रदेशी हो-3 ये द्रव्य बताएँ रे-ऽऽ।।3672।।

(88) जीव व पुद्गल चलें यहाँ, धर्म सहायी बने यहाँ-2
नहिं बलात् ये करे यहाँ-ऽऽ
उदासीन सहकारी हों, कभी नहीं ये प्रेरक हों
अधर्म रुकने में हो-3 कारण बतलाएँ रे-ऽऽ।।3673।।

(89) जीव व पुद्गल चलते हैं, निमित्त तब ये बनते हैं-2
नहीं बलात् चलाते हैं-ऽऽ
मुख्य हेतु जीवों में है, सहकारी द्रव्यों में है-2
ऐसा ही जान हो-3 श्रद्धान बनाओ रे-ऽऽ।।3674।।

(90) जहाँ रहे सब जीव यहाँ, धर्म अधर्म अजीव वहाँ-2
सारे पुद्गल द्रव्य वहाँ-ऽऽ
सबको जगह यहाँ देता, वो आकाश द्रव्य होता-2
गुरुवर ये बात हो-3 सबको समझाएँ रे-ऽऽ।।3675।।

अस्तिकाय हैं पाँच यहाँ, नहिं काल बताएँ रे-2
भगवन् कुंदकुंद हो-3 सबको समझाएँ रे-ऽऽ

(91) जीव द्रव्य और पुद्गल हों, धर्म अधर्म काल भी हों-2
ये सब ही आकाश में हों-ऽऽ
उसको लोकाकाश कहो, उसके बाहर जो भी हो-3
उसको अलोक हो-3 आकाश बताएँ रे-ऽऽ।।3676।।

(92) धर्म द्रव्य गर नहिं मानें, नभ को गति कारण जानें-2
ऐसा जो जग में मानें-ऽऽ
तो फिर सिद्ध रुके हैं क्यों, आगे नभ है ये जानें-2
धर्म द्रव्य बिन हो-3 आगे नहिं जायें रे-ऽऽ।।3677।।

(93) सिद्ध लोक में सिद्ध रहें, वीतराग प्रभु यहाँ कहें-2
उनकी बातें सही रहें-ऽऽ
गर नभ गति गुण युक्त कहें, सिद्ध लोक क्यों सिद्ध रुकें-2
नभ में गति गुण का हो-3 नहिं भाव बताएँ रे-ऽऽ।।3678।।

(94) जीव अरु पुद्गल गमन करें, सहकारी आकाश बनें-2
ऐसा जो भी यहाँ कहें-ऽऽ
लोकाकाश के बाहर तो, धर्म अधर्म व जीव रहें-2
ऐसा कहने से हो-3 दूषण आ जायें रे-ऽऽ।।3679।।

(95) दोनों धर्म अधर्म रहें, गमन व स्थिरता वहीं बनें-2
नभ नहिं इनमें कारण है-ऽऽ
अवगाहन नभ देता है, जिनवर यही प्रणेता हैं-2
उनकी बातों पर हो-3 श्रद्धान बनाओ रे-ऽऽ।।3680।।

(96) धर्म अधर्माकाश यहाँ, एक क्षेत्र अवगाह यहाँ-2
अलग हैं सबके भाव यहाँ-ऽऽ
लोकाकाश में रहें यहाँ, नहीं अलोकाकाश यहाँ-2
ऐसा ही सबको हो-3 जो जिनदेव बताएँ रे-ऽऽ।।3681।।

(97) धर्म-अधर्म आकाश यहाँ, कालद्रव्य और जीव यहाँ-2
इन्हें अमूर्तिक समझ यहाँ-ऽऽ
पुद्गल मूर्तिक द्रव्य कहा, दर्शज्ञानमय जीव यहाँ-2
जीव ही द्रव्य हो-3 चेतन बतलाएँ रे-ऽऽ।।3682।।

(98) जीव व पुद्गल द्रव्य यहाँ, सक्रिय दोनों कहे यहाँ-2
पर निमित्त जब किये यहाँ-ऽऽ
चार द्रव्य निष्क्रिय जानो, पाँच अचेतन तुम मानो-2
ऐसा आगम में हो-3 गुरुदेव बताएँ रे-ऽऽ।।3683।।

(99) जो इन्द्रिय से ग्रहण करें, वे सब पुद्गल यहाँ कहें-2
पदार्थ वे मूर्तिक ही हैं-ऽऽ
जो पुद्गल से भिन्न यहाँ, उसे अमूर्तिक समझ यहाँ-2
मूर्त-अमूर्त हो-3 लक्षण बतलाएँ रे-ऽऽ।।3684।।

(100) जीव व पुद्गल भाव करे, तभी काल व्यवहार बने-2
निश्चय की पर्याय कहे-ऽऽ
क्षणिक काल व्यवहार कहा, निश्चय को ही नित्य कहा-2
निश्चय काल से हो-3 व्यवहार बताएँ रे-ऽऽ।।3685।।

अस्तिकाय हैं पाँच यहाँ, नहिं काल बताएँ रे-2
भगवन् कुंदकुंद हो-3 सबको समझाएँ रे-ऽऽ

(101) काल को निश्चय काल कहा, जो अविनाशी रूप कहा-2
रात व दिन व्यवहार कहा-ऽऽ
उपजे और विनशता जो, उसे काल व्यवहार कहो-2
दोनों ही काल हो-3 हर समय बताएँ रे-ऽऽ।।3686।।

(102) एक प्रदेशी काल यहाँ, इसीलिए नहिं काय यहाँ-2
कहते हैं वह द्रव्य यहाँ-ऽऽ
पाँचों द्रव्य हैं काय यहाँ, काल द्रव्य है द्रव्य यहाँ-2
ऐसा ही भगवन् हो-3 श्रुत में बतलाएँ रे-ऽऽ।।3687।।

(103) निकट भव्य जो भव में हैं, अस्तिकाय का ज्ञान करें-2
राग-द्वेष तब त्याग करें-ऽऽ
वे भव दुख से दूर रहें, मुक्ती पथ को प्राप्त करें-2
उनको पढ़ने का हो-3 फल झट मिल जाये रे-ऽऽ।।3688।।

(104) शुद्धातम को जाने जो, आतम को पहचाने वो-2
उद्यम को अपनाये वो-ऽऽ
भेदज्ञान वह पा जाये, निज में ही वो रम जाये-2
सारे गुण पाकर हो-3 शिवसुख वो पाये रे-ऽऽ।।3689।।

(105) शीश झुकाकर करूँ नमन, वर्धमान प्रभु को वंदन-2
नहीं पुन: हो जन्म मरण-ऽऽ
नव पदार्थ छः द्रव्य कहूँ, मोक्षमार्ग का कथन करूँ-2
तत्त्वों का ज्ञान हो-3 सम्यक्त्व दिलाये रे-ऽऽ।।3690।।

(106) सम्यग्दर्शन ज्ञान रहे, साथ में सद्चारित्र रहे-2
उसको मुक्ति मार्ग कहे-ऽऽ
इष्ट-अनिष्ट पदार्थों में, समताभाव धरे निज में-2
भेद विज्ञान हो-3 भवि उत्तम पाये रे-ऽऽ।।3691।।

(107) नव पदार्थ और द्रव्य अहो, दृढ़ता तत्त्व प्रतीति हो-2
उसको सम्यग्दर्श कहो-ऽऽ
यथार्थ अनुभव ज्ञान यहाँ, समता है चारित्र यहाँ-2
तीनों से मिलकर हो-3 शिवपथ बन जाये रे-ऽऽ।।3692।।

(108) जीव-अजीव कहें संवर, आस्रव बंध कहे निर्जर-2
पाप-पुण्य और मोक्ष प्रवर-ऽऽ
नव पदार्थ हैं बतलाए, संसारी ने अपनाए-2
इनको जाने बिन हो-3 सम्यक्त्व न पाये रे-ऽऽ।।3693।।

(109) दो प्रकार के जीव यहाँ, संसारी और सिद्ध यहाँ-2
अशुद्ध हैं भवरूप यहाँ-ऽऽ
शुद्ध सभी हैं सिद्ध यहाँ, अविनाशी अशरीर यहाँ-2
तन से जो युक्त हो-3 अरहंत बताएँ रे-ऽऽ।।3694।।

(110) पृथ्वी जलाग्नि वायु कही, वनस्पति की काय कही-2
पंच स्थावर काय कही-ऽऽ
कायाधीन ये जीव रहे, कई अवस्था उसे मिले
इनमें ही राग हो-3 भव भ्रमण बढ़ाये-ऽऽ।।3695।।

अस्तिकाय हैं पाँच यहाँ, नहिं काल बताएँ रे-2
भगवन् कुंदकुंद हो-3 सबको समझाएँ रे-ऽऽ

(111) स्थावर हैं कर्मोदय से, पृथ्वी वनस्पति बनते-2
अग्नि-जल-वायु बनते-ऽऽ
चलन गति से रहित हैं जो, मनोयोग नहिं उनमें हो-2
गुरु का उपदेश हो-3 ये बात बताए रे-ऽऽ।।3696।।

(112) मनोयोग से रहित हैं जो, पाँच भेद वाले हैं जो-2
एकेन्द्रिय कहलाते वो-ऽऽ
पृथ्वी-जल-अग्नि-वायु, वनस्पति कायिक है वो-2
पाँच स्थावर हो-3 जग में कहलाएँ रे-ऽऽ।।3697।।

(113) ज्यों अण्डे में जीव बढ़े, त्यों एकेन्द्रिय जीव बढ़े-2
बाहर से नहिं पता चले-ऽऽ
गर्भ में जैसे जीव बढ़े, बाहर में वो नहीं दिखे-2
मूर्च्छित जैसे ही हो-3 उसमें नजराएँ रे-ऽऽ।।3698।।

(114) दो इन्द्रिय के जीव रहें, शंख कृमि लट आदि कहें-2
पाँव रहित वो यहाँ रहें-ऽऽ
स्वाद स्पर्श यहाँ जानें, अन्य भाव नहिं पहचानें-2
सुख दुख इन्द्रिय से हो-3 वेदन करवाये रे-ऽऽ।।3699।।

(115) स्पर्श गंध रस जो जानें, तीन इन्द्रिय उनको मानें-2
खटमल जूं चींटा जानें-ऽऽ
बिच्छू, मकड़ी, चींटी हैं, इन्द्रिय तीन कहीं इनमें-2
ऐसा गुरुदेव हो-3 श्रुत में बतलाएँ रे-ऽऽ।।3700।।

(116) मक्खी, मच्छर, डाँस यहाँ, कीट पतंगा भौंर यहाँ-2
कीड़े उड़ने वाले यहाँ-ऽऽ
रस-स्पर्श-गंध-वर्ण, चार इन्द्रिय ये जीव यहाँ-2
मन से रहित ये हो-3 सब जीव बताएँ रे-ऽऽ।।3701।।

(117) देव मनुष्य नारकी हैं, पंचेन्द्रिय तिर्यंच कहें-2
जलचर-नभ-पृथ्वीचर हैं-ऽऽ
शब्द गंध रस वर्ण स्पर्श, पाँच विषय अनुभूत करें-2
उनको पंचेन्द्रिय हो-3 श्रुत में बतलाएँ रे-ऽऽ।।3702।।

(118) चार तरह के देव रहें, दो प्रकार के मनुज कहें-2
सभी नारकी जीव रहें-ऽऽ
पंचेन्द्रिय तिर्यंच यहाँ, पंचेन्द्रिय ये सभी यहाँ-2
चारों ही गति में हो-3 पंचेन्द्रिय पायें रे-ऽऽ।।3703।।

(119) गति और आयुकर्म यहाँ,फल देकर खिर जाँय यहाँ-2
नये नये बँध जाँय यहाँ-ऽऽ
कषाय लेश्या जैसी हो, वैसी गति हो आयु यहाँ-2
ऐसा अनादि हो हो-3 उसे चलता जाये रे-ऽऽ।।3704।।

(120) चतुर्गति के जीव यहाँ, देह पलटते रहें यहाँ-2
देह रहित वे सिद्ध यहाँ-ऽऽ
मुक्ति पाने योग्य हैं जो, उनको कहें अभव्य अहो-2
जीव अभव्य हो-3 मुक्ती नहिं पायें रे-ऽऽ।।3705।।

अस्तिकाय हैं पाँच यहाँ, नहिं काल बताएँ रे–2
भगवन् कुंदकुंद हो–3 सबको समझाएँ रे–ऽऽ

(121) पाँचों इन्द्रिय जीव नहीं, छह काया भी जीव नहीं–2
निश्चय से ये बात कही–ऽऽ
तन में ज्ञान स्वरूपी जो, उसको ही तुम जीव कहो–2
ज्ञानीजन ऐसा हो–3 सबको बतलाएँ रे–ऽऽ।।3706।।

(122) सब कुछ जाने देखे जो, सुख की इच्छा करता जो–2
दुख से हरदम डरता जो–ऽऽ
अशुभ और शुभ भाव करे, उनके फल का भोग करे–2
उसको ही जीव हो–3 गुरुदेव बताएँ रे–ऽऽ।।3707।।

(123) ज्ञान दर्श से जान यहाँ, सुख–दुख वेदन करे यहाँ–2
कर्म फलों को भरे यहाँ–ऽऽ
इनसे जानो जीव यहाँ, इससे भिन्न अजीव यहाँ–2
गुरुवर ऐसा ही हो–3 हमको समझाएँ रे–ऽऽ।।3708।।

(124) पुद्गल धर्म अधर्म कहो, काल और आकाश अहो–2
समझो इन्हें अजीव अहो–ऽऽ
जीव के गुण नहिं हैं इनमें, सभी अचेतन इन्हें कहें–2
जीव में चेतन हो–3 के गुण बतलाएँ रे–ऽऽ।।3709।।

(125) सुख दुख का नहिं ज्ञान जिसे, हित का उद्यम नहीं करे–2
अहित का भय नहिं रहे जिसे–ऽऽ
समझो उसे अजीव यहाँ, कोई भी वो रहे यहाँ–2
जीव उद्यम का हो–3 नित भाव बनाए रे–ऽऽ।।3710।।

(126) संस्थान संघात कहा, स्पर्श, गंध, रस, शब्द कहा–2
ये सब गुणयुत वर्ण अहा–ऽऽ
ये पुद्गल की पर्यायें, पुद्गल से बाहर आयें–2
इन सबको ज्ञानी हो–3 पुद्गल बतलाएँ रे–ऽऽ।।3711।।

(127) रूप गंध रस नहीं जहाँ, नहीं शब्द संस्थान यहाँ–2
इन्द्रिय से नहिं ग्राह्य यहाँ–ऽऽ
चेतन गुण वाला है जो, उसको ही सब जीव कहो–2
ये गुण नहिं जिसमें हो–3 नहिं जीव कहाए रे–ऽऽ।।3712।।

(128) संसारी सब जीव यहाँ – राग–द्वेष में रहें यहाँ–2
जिससे बँधते कर्म यहाँ–ऽऽ
कर्म जीव में आते जब, गति में भ्रमण कराते तब–2
कर्मों के कारण, हो–3 गति में भरमाए रे–ऽऽ।।3713।।

(129) गतियों में जब देह मिले, इन्द्रिय उसके साथ चले–2
इन्द्रिय विषय ग्राह्य करे–ऽऽ
विषयों से रति–द्वेष यहाँ, होता रहता खूब यहाँ–2
दुख की संतति की हो–3 ये नींव बताएँ रे–ऽऽ।।3714।।

(130) राग–द्वेष के भाव यहाँ, भव में होते नित्य यहाँ–2
भ्रमण करे तब जीव यहाँ–ऽऽ
भाव अनादि अनंत भी हों, और अनादि सांत हों–2
दोनों ही भाव हो–3 जिनदेव बताएँ रे–ऽऽ।।3715।।

अस्तिकाय हैं पाँच यहाँ, नहिं काल बताएँ रे–2
भगवन् कुंदकुंद हो–3 सबको समझाएँ रे–ऽऽ

(131) मोह राग परिणाम करे, द्वेष रूप के भाव धरे–2
इनमें चित्त प्रसन्न करे–ऽऽ
भाव शुभाशुभ जीव करे, अज्ञानी वह जीव रहे–2
पुण्य और पाप हो–3 ये भाव बताएँ रे–ऽऽ।।3716।।

(132) पुण्य रूप शुभ भाव करे, पाप रूप परिणाम करे–2
तब यह जीव पदार्थ रहे–ऽऽ
इनसे बनते कर्म यहाँ, शुभ हों या फिर अशुभ यहाँ–2
आठों ही कर्म हो–3 इनसे बन जायें रे–ऽऽ।।3717।।

(133) अष्ट कर्म हों उदय जहाँ, सुख दुख फल तब मिले यहाँ–2
इष्ट अनिष्ट पदार्थ यहाँ–ऽऽ
इन्द्रिय मन से भोग करें, कर्मों को तब मूर्त कहें–2
मूर्तिक को मूर्तिक हो–3 अनुभव कर पाये रे–ऽऽ।।3718।।

(134) मूर्तिक सारे कर्म यहाँ, मूर्तिक से स्पर्श यहाँ–2
फिर हो मूर्तिक बंध यहाँ–ऽऽ
जीव कर्म से बँध जाता, फिर कर्मों को उपजाता–2
कर्मों के फल को हो–3 वह जीव हि पाये रे–ऽऽ।।3719।।

(135) दया रूप जो भाव करे, नित परिणाम प्रशस्त धरे–2
चित्त नहीं जो मलिन करे–ऽऽ
भक्ति पूजा दान करे, उसमें ही शुभ भाव कहे–2
जीव के पुण्य हो–3 इनसे ही आये रे–ऽऽ।।3720।।

(136) सिद्ध, साधु, अरहंत यहाँ, शुद्ध धर्म की वृत्ति यहाँ–2
गुरु आज्ञा उर धरे यहाँ–ऽऽ
वंदनादि शुभ भाव करे, भला राग जिनदेव कहे–2
इससे जीवन में हो–3 शुभ ही शुभ आये रे–ऽऽ।।3721।।

(137) भूखा प्यासा कोइ दिखे, पीड़ित रोगी कोइ दिखे–2
दुखी देख दुख होय जिसे–ऽऽ
उसमें होती दया यहाँ, करता वो दुख दूर यहाँ–2
पुण्य का भाव हो–3 इसको बतलाएँ रे–ऽऽ।।3722।।

(137) क्रोध मान हो भावों में, कुटिल भाव परिणामों में–2
इष्ट में लोभ रहे मन में–ऽऽ
इनसे मन आकुलित जहाँ, उसे कलुषता समझ यहाँ–2
ऐसे भावों से हो–3 मन पाप बढ़ाए रे–ऽऽ।।3723।।

(139) क्रिया प्रमादयुक्त लाये, चित्त मलिनता भर जाये–2
विषयों में जो ललचाये–ऽऽ
अन्य जीव को दुख देता, बुरे आचरण युत होता–2
उसमें पापों के हो–3 आस्रव ही आये रे–ऽऽ।।3724।।

(140) चारों हों संज्ञाएँ जहाँ, तीन लेश्या अशुभ जहाँ–2
आर्त रौद्र हो ध्यान जहाँ–ऽऽ
इन्द्रिय के आधीन है जो, मोह रूप ये भाव अहो–2
इन सबसे पाप हो–3 आस्रव ही आये रे–ऽऽ।।3725।।

अस्तिकाय हैं पाँच यहाँ, नहिं काल बताएँ रे-2
भगवन् कुंदकुंद हो-3 सबको समझाएँ रे-ऽऽ

(141) संज्ञा चार कषायें हों, पाँच इन्द्रिय मन रोके जो-2
अघ परिणति को रोके जो-ऽऽ
उसमें संवर मार्ग रहे, पाप छिद्र सब बंद कहे-2
तब ही जीवन का हो-3 कुछ सार दिखाए रे-ऽऽ।।3726।।

(142) पर में राग-द्वेष नहिं हो, तत्त्व में अश्रद्धा नहिं हो-2
सुख-दुख में समभावी हो-ऽऽ
शुभ आस्रव और अशुभ यहाँ, उसको बँधता नहीं यहाँ-2
उसमें ही संवर हो-3 का भाव बताएँ रे-ऽऽ।।3727।।

(143) पर द्रव्यों का त्याग करे, त्रय योगों को शुद्ध करे-2
भाव शुभाशुभ नहीं करे-ऽऽ
द्रव्य कर्म आस्रव नहिं हो, ऐसा मुनि ही श्रेष्ठ कहो-2
कर्मों का संवर हो-3 उसमें बतलाएँ रे-ऽऽ।।3728।।

(144) अंतरंग तप भाव करे, बाहर में तप खूब धरे-2
शुद्धोपयोग भाव करे-ऽऽ
कर्म शुभाशुभ रोके जो, कर्म निर्जरा करता वो-2
भेद ज्ञानी ही हो-3 ऐसा कर पाये रे-ऽऽ।।3729।।

(145) संवर से संयुक्त यहाँ, साधे आत्मस्वभाव यहाँ-2
जाने निजात्म रूप यहाँ-ऽऽ
आत्मतत्त्व का ध्याता वो, सारे कर्म नशाता वो-2
कर्मों का बंध हो-3 नहिं उसे बताएँ रे-ऽऽ।।3730।।

(146) राग-द्वेष नहिं मोह जहाँ, तीनों योग विशुद्ध यहाँ-2
ऐसा है जो संत यहाँ-ऽऽ
भाव शुभाशुभ जलें सभी, ध्यानाग्नि हो उसे यहाँ-2
कर्मों का ईंधन हो-3 तब ही जल पाये रे-ऽऽ।।3731।।

(147) जब होता अज्ञान अरे, जीव शुभाशुभ भाव करे-2
राग-द्वेष उत्पन्न करे-ऽऽ
इन भावों को पाकर के, बाँधे कर्म अनेक अरे-2
कर्मों के कारण हो-3 भव भ्रमण कराये रे-ऽऽ।।3732।।

(147) योगों का संयोग मिले, तभी कर्म को ग्रहण करे-2
पूर्ण प्रदेश में लिप्त करे-ऽऽ
भाव अशुद्धोपयोग से, कर्म ग्रहण हो योगों से
तब ही यह जीव हो-3 भव में बँध जाये रे-ऽऽ।।3733।।

(149) रागादिक जब विभाव रहे, आठ रूप तब कर्म बँधे-2
चारों प्रत्यय कारण कहे-ऽऽ
जब रागादिक भाव मिटें, तब नहिं कोई कर्म बँधे-2
ऐसा जिनवर जी हो-3 श्रुत में बतलाएँ रे-ऽऽ।।3734।।

(150) रागादिक जब भाव न हों, तो फिर आस्रव कर्म न हों-2
निश्चय से वो ज्ञानी हों-ऽऽ
कर्मों का आगमन नहीं, उसको कर्म का बंध नहीं-2
कहते हैं गुरुवर हो-3 ये शास्त्र बताएँ रे-ऽऽ।।3735।।

अस्तिकाय हैं पाँच यहाँ, नहिं काल बताएँ रे-2
भगवन् कुंदकुंद हो-3 सबको समझाएँ रे-ऽऽ

(151) ज्ञानावरण हो नाश जहाँ, दर्शनावरण विनाश जहाँ-2
केवल दर्शन ज्ञान वहाँ-ऽऽ
सर्वलोक दर्शी होता, नहीं इन्द्रियाधीन होता-2
उसको आतम का हो-3 सुख प्राप्त बताएँ रे-ऽऽ।।3736।।

(152) दर्शन ज्ञान पूर्ण हो जब, पर चिंता का विरोध तब-2
कर्म निर्जरा होती तब-ऽऽ
स्वभाव युत् हो साधु जो, उसमें ऐसा ध्यान अहो-2
परद्रव्य भाव हो-3 उसमें नहिं आये रे-ऽऽ।।3737।।

(153) आत्म अनुभव संयुक्त है जो, उसे परम संवर समझो-2
कर्मों का क्षय उसका हो-ऽऽ
नष्ट अघाति कर्म करे, द्रव्य से उसको मोक्ष कहें-2
वो ही इस भव से हो-3 मुक्ति पा जाये रे-ऽऽ।।3738।।

(154) यथार्थ वस्तु ज्ञान कहो, अथवा अखण्ड दर्श कहो-2
दोनों ही चैतन्य अहो-ऽऽ
यही जीव का लक्षण है, स्थिर अस्तित्व स्वरूपी है-2
निर्मल चारित्र हो-3 जिनदेव बताएँ रे-ऽऽ।।3739।।

(155) निश्चय से जीव निश्चल है, पर्ययुत् व्यवहार से है-2
पर समयी व्रत से युत है-ऽऽ
जब यह पाता ज्ञान यहाँ, करता शुद्ध आचरण यहाँ-2
तब ही कर्मों के हो-3 बंधन मिट पाये रे-ऽऽ।।3740।।

(156) मोहकर्म वश राग करे, वही शुभाशुभ भाव करे-2
स्वरूप आचरण नहीं धरे-ऽऽ
पर समयी हो जाता वो, कर्म नये उपजाता वो-2
ऐसे साधु का हो-3 भव नहिं मिट पाये रे-ऽऽ।।3471।।

(157) अशुद्ध हो उपयोग यहाँ, उसे शुभाशुभ कर्म यहाँ-2
होता आस्रव नित्य यहाँ-ऽऽ
ऐसा हो आचरण जहाँ, उसे पर समय कहो यहाँ-2
ऐसा ही जिनवर हो-3 श्रुत में बतलाएँ रे-ऽऽ।।3742।।

(158) शुद्ध भाव को लाये जब, शुद्ध जीव को जाने तब-2
शुद्ध तत्त्व को देखे तब-ऽऽ
सर्व परिग्रह रहित हो जो, उसमें स्वरूप आचरण हो-2
उसको स्वसमयी हो-3 गुरुदेव बताएँ रे-ऽऽ।।3743।।

(159) शुद्ध आचरण धरता जो, ज्ञान दर्श में रमता जो-2
भेद ज्ञान उसको ही हो-ऽऽ
पर द्रव्यों में अहं न हो, निज स्वरूप में रमता वो-2
शुद्ध चारित्र हो-3 उसमें ही आये रे-ऽऽ।।3744।।

(160) ग्यारह अंगों को जाने, चौदह पूर्व को भी जाने-2
ये व्यवहार ज्ञान माने-ऽऽ
चारित तेरह रूप कहा - वो व्यवहार स्वरूप अहा-2
इसको भी मोक्ष हो-3 का मार्ग बताएँ रे-ऽऽ।।3745।।

अस्तिकाय हैं पाँच यहाँ, नहिं काल बताएँ रे-2
भगवन् कुंदकुंद हो-3 सबको समझाएँ रे-ऽऽ

(161) रत्नत्रय से युक्त यहाँ, भाव परम रस युक्त यहाँ-2
निश्चय से जो आत्म यहाँ-ऽऽ
वह परभाव नहीं करता, निज स्वभाव को नहिं तजता-2
मुक्तीपथ रूप हो-3 वह आत्म कहाये रे-ऽऽ।।3746।।

(162) निज से निज को जाने जो, अभेदमय श्रद्धाने जो-2
निज स्वरूप आचरणे जो-ऽऽ
अभेद रत्नत्रय धारी, कहते हैं ये त्रिपुरारी-2
रत्नत्रय सबको हो-3 ये संत दिखाएँ रे-ऽऽ।।3747।।

(163) सर्व ज्ञान दर्शनयुत् जो, मुक्ती सुख अनुभवता वो-2
निकट भव्यता उसमें हो-ऽऽ
वही अनाकुल होता है, परमार्थिक सुख बोता है-2
आतम नहिं जाने हो-3 वो अभव्य होए रे-ऽऽ।।3748।।

(164) दर्शन ज्ञान चरित्र यहाँ, ये ही मुक्तीमार्ग यहाँ-2
सेवन करने योग्य यहाँ-ऽऽ
राग सहित रत्नत्रय हो, तो फिर बंध कर्म का हो-2
बंध और मोक्ष हो-3 इनसे बतलाएँ रे-ऽऽ।।3749।।

(165) सराग सम्यग्दृष्टि रहे, शुभोपयोग से मुक्ति कहे-2
भाव यही अज्ञान कहे-ऽऽ
पर समयी उसको समझो, भव से मुक्ति नहीं उसको-2
जब तक हो राग हो-3 तो मुक्ति न पाये रे-ऽऽ।।3750।।

(166) परमेष्ठि की भक्ति करे, सुति सेवा अनुरक्त रहे-2
ज्ञान से भी सम्पन्न रहे-ऽऽ
कई कर्म शुभ बाँधे जो, कर्मों का क्षय कभी न हो-2
उसको पर समयी हो हो-3 श्रुत में बतलाएँ रे-ऽऽ।।3751।।

(167) किंचित पर में प्रीति करे, पर द्रव्यों को चित्त धरे-2
उसमें होता राग अरे-ऽऽ
सभी शास्त्र का पाठी हो, ज्ञान यथार्थ न उसमें हो-2
ऐसा जो जाने हो-3 ज्ञानी कहलाएँ रे-ऽऽ।।3752।।

(168) जब तक चित्त भ्रमित होगा, तब तक रागभाव होगा-2
तब अशुद्ध उपयोग होगा-ऽऽ
भाव शुभाशुभ ही होंगे, संवर भाव नहीं होंगे-2
कर्मों का बंध हो-3 तब नहिं रुक पाये रे-ऽऽ।।3753।।

(169) मुक्ति का अभिलाषी जो, विभाव भाव का त्यागी वो-2
परमारथ अनुरागी वो-ऽऽ
सभी परिग्रह रहित रहे, पर में ममता नहीं धरे-2
इस ही कारण से हो-3 वो मुक्ती पाये रे-ऽऽ।।3754।।

(170) परमेष्ठी की भक्ति करे, तत्त्व में श्रद्धा बुद्धि धरे-2
संयम तप भी खूब करे-ऽऽ
उसके कर्म नहीं मिटते, मुक्ती पद से दूर रहे-2
राग से युक्त हो-3 नहिं शिवपुर पाये रे-ऽऽ।।3755।।

अस्तिकाय हैं पाँच यहाँ, नहिं काल बताएँ रे–2
भगवन् कुंदकुंद हो–3 सबको समझाएँ रे–ऽऽ

(171) अरहंत सिद्ध की भक्ति करे, चैत्य शास्त्र गुणगान करे–2
संयम तप भी खूब करें–ऽऽ
स्वर्गलोक उसको मिलता, सिद्ध लोक नहिं है मिलता–2
राग प्रशस्त हो–3 स्वर्गादि दिलाए रे–ऽऽ।।3756।।

(172) मुक्ति की जो चाह करे, राग भाव से वही बचे–2
पुण्य पाप के भाव तजे–ऽऽ
वीतराग का भाव करें, तब ही भव को पार करे–2
राग में भव का हो–3 बंधन हो जाये रे–ऽऽ।।3758।।

(173) सभी द्रव्य अस्तित्वमयी, अस्तिकाय हैं पाँच यही
काल बिना सब काय सही–ऽऽ
द्वादशांग अनुराग किया, तभी ग्रंथ ये रचा गया
मैं कुंदकुंद हो–3 निज धर्म बढ़ाए रे–ऽऽ।।3759।।

समाधि तंत्र

मूल ग्रंथकर्ता : पूज्यपाद स्वामी
पद्यानुवाद : उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

आत्म तत्त्व का ज्ञान हमें, हमसे मिलवाये रे-2
अंतिम समाधि हो-3 यह ज्ञान दिलाये रे-ऽऽ

(1) शुद्धातम को शुद्ध लखा, कर्मजनित पर्याय दिखा-2
पुद्‌गल को पर रूप लखा-ऽऽ
अविनाशी नित ज्ञानमयी, अशरीरी सुख नंतमयी-2
उन सब सिद्धों को हो-3 हम शीश झुकाएँ रे-ऽऽ।।3759।।

(2) दिव्यध्वनि के धारी हैं, भव्यों को सुखकारी हैं-2
गुणमय हैं त्रिपुरारी हैं-ऽऽ
सर्वद्रव्य में व्याप रहे, दर्श-ज्ञान अधिकारी हैं-2
ऐसे जिन प्रभु को हो-3 हम शीश झुकाएँ रे-ऽऽ।।3760।।

(3) आगम और अनुमान से, स्थिर चित्त स्वयं करके-2
अच्छी तरह जान करके-ऽऽ
शुद्ध तत्त्व की चाह जिन्हें, उनको लक्ष्य बना करके-2
आत्म तत्त्व को हो-3 मैं कहना चाहूँ रे-ऽऽ।।3761।।

(4) बहिरातम अंतर आतम, कहें तीसरी परमातम-2
कहते हैं गणधर गौतम-ऽऽ
बहिरातम को छोड़ यहाँ, अंतर आतम बनो यहाँ-2
तब ही परमातम हो-3 की तरह दिखाए रे-ऽऽ।।3762।।

(5) तन, सुत तिय को आत्म कहे, खुद में ही जो भ्रांति धरे-2
उसे यहाँ बहिरात्म कहें-ऽऽ
इन सबको जो पर समझे, उसको अन्तर आत्म कहें-2
कर्मों के मल बिन हो-3 परमात्म कहाए रे-ऽऽ।।3763।।

(6) निर्मल केवल शुद्ध कहें, ईश्वर अर्हत प्रभु कहें-2
परमेष्ठी परमात्म कहें-ऽऽ
पर्ययवाची नाम हैं ये, परमातम के गुरु कहें-2
कुछ ही बतलाएँ हो-3 पर बहुत बताए रे-ऽऽ।।3764।।

(7) आत्मज्ञान से विमुख है जो, समझो है बहिरातम वो-2
बाह्य वस्तु में मस्त है वो-ऽऽ
तन को ही आतम समझे, निश्चय से पर में उलझे-2
मिथ्यात्व आये हो-3 वह मूर्ख बनाए रे-ऽऽ।।3765।।

(8) बहिरातम निश्चय जाने, आतम देव मनुज जाने-2
नारक और पशु जाने-ऽऽ
खुद आतम को नहिं जाने, आतम को ऐसा माने-2
ऐसा अज्ञान हो-3 बहिरात्म बनाए रे-ऽऽ।।3766।।

(9) निश्चय से है कर्म रहित, चारों गति पर्याय रहित-2
अनंत दर्शन ज्ञान सहित-ऽऽ
आतम अनुभव गम्य कही, हरदम चेतन भावमयी-2
नारक तिर्यंच हो-3 नहिं देव स्वरूपी रे-ऽऽ।।3767।।

(10) अज्ञानी बहिरात्म यहाँ, पर को कहता आत्म यहाँ-2
निज जन को निज कहे यहाँ-ऽऽ
स्व-पर भेद विज्ञान नहीं, कहे योग को आत्म यहीं-2
ऐसे बहिरातम हो-3 भव में दुख पायें रे-ऽऽ।।3768।।

आत्म तत्त्व का ज्ञान हमें, हमसे मिलवाये रे–2
अंतिम समाधि हो–3 यह ज्ञान दिलाये रे–ऽऽ

(11) आत्म स्वरूप नहीं जाने, वो तन को अपना माने–2
पुत्र–स्त्री अपने माने–ऽऽ
भ्रम करता निज आतम में, फिर हो जाता है पर में–2
भ्रम में सच्चाई हो–3 उसको नजराए रे–ऽऽ।।3769।।

(12) जब विभ्रम हो जाता है, तब ही ज्ञान समाता है–2
संस्कार बन जाता है–ऽऽ
जिससे जनम जनम में भी, खुद को समझ न पाता है–2
फिर वह अज्ञान हो–3 चलता ही जाये रे–ऽऽ।।3770।।

(13) तन में आत्म सुबुद्धि करे, वह तन को ही आत्म कहे–2
निश्चय से बहिरात्म कहे–ऽऽ
आत्म बुद्धि जो रखे यहाँ, तन को समझे भिन्न यहाँ–2
अंतर आतम वो हो–3 भव बुद्धि हटाये रे–ऽऽ।।3771।।

(14) तन में आतम बुद्धि रखे, पुत्र स्त्री खुद के समझे–2
उनकी बुद्धि अपनी समझे–ऽऽ
उनके दुख में दुखी रहे, उनके सुख में सुख समझे–2
ऐसी आतम को हो–3 बहिरात्म बताएँ रे–ऽऽ।।3772।।

(15) तन में आतम बुद्धि करे, ये भव दुख का मूल अरे–2
ज्ञानी गुरु ये बात कहें–ऽऽ
गलत धारणा को छोड़ो, विषयों से मन को मोड़ो–2
अंतर आतम में हो–3 तुम लगन लगाओ रे–ऽऽ।।3773।।

(16) मैं चिरकाल से भटका हूँ, इन्द्रिय विषय में अटका हूँ–2
आसक्तिवश भटका हूँ–ऽऽ
ज्ञान यथार्थ नहीं पाया, आत्म स्वरूप न लख पाया–2
तन में आतम को हो–3 हम समझ न पाये रे–ऽऽ।।3774।।

(17) बाह्य वचन को छोड़ यहाँ, अंतरंग भी छोड़ यहाँ–2
दोनों को ही छोड़ यहाँ–ऽऽ
होगा चित्त निरोध तभी, शुद्धातम का शोध तभी–2
तब ही परमातम हो–3 का रूप दिखाए रे–ऽऽ।।3775।।

(18) दिखता है जो हमें यहाँ, वो नहिं जाने हमें यहाँ–2
वो पुद्‌गल हम जीव यहाँ–ऽऽ
जो जाने सब चीज यहाँ, वो दिखता नहिं कभी यहाँ–2
किससे हम बोलें हो–3 ये समझ न आये रे–ऽऽ।।3776।।

(19) पढ़ता और पढ़ाता हूँ, शिष्यों को समझाता हूँ–2
पागलपन दिखलाता हूँ–ऽऽ
मुझमें नहीं विकल्प यहाँ, वचनों का नहिं जल्प यहाँ–2
इनके हटते ही हो–3 शुद्धात्म दिखाए रे–ऽऽ।।3777।।

(20) ग्रहण न जो पर द्रव्य करे, ज्ञान–दर्श को नही तजे–2
सभी पदार्थ स्वयं जाने–ऽऽ
ऐसा जो शुद्धात्म कहा, वही ग्रहण के योग्य अहा–2
अपने अनुभव में हो–3 चैतन्य स्वरूपी रे–ऽऽ।।3778।।

आत्म तत्त्व का ज्ञान हमें, हमसे मिलवाये रे–2
अंतिम समाधि हो–3 यह ज्ञान दिलाये रे–SS

(11) स्थाणु देखकर पुरुष कहे, भ्रमवश उसको देख डरे–2
चेष्टा में विकृति धरे–SS
वैसे तन को आत्म कहे, भ्रममय चेष्टा जीव करे–2
ज्ञान होते ही हो–3 सब भ्रम मिट जाये रे–SS।।3779।।

(12) ज्ञान ठूँठ का हो जाये, सेवा भाव बदल जाये–2
फिर उपकार न कर पाये–SS
वैसे तन का ज्ञान हुआ, भावों में बदलाव हुआ–2
अब तन की सेवा हो–3 मन में नहिं आये रे–SS।।3780।।

(13) ना मैं पुरुष नपुंसक हूँ, ना स्त्री इक दो बहु हूँ–2
मैं शुद्धात्म स्वरूपी हूँ–SS
निज को निज में निज द्वारा, मैं निज अनुभव करता हूँ–2
तब ही शुद्धातम हो–3 अनुभव में आये रे–SS।।3781।।

(14) नहिं शुद्धात्म स्वरूप मिला, शुद्ध ज्ञान नहिं दीप जला–2
भव निद्रा में पड़ा रहा–SS
इन्द्रिय द्वारा ग्राह्य नहीं, वचन अगोचर कहा यहीं–2
अनुभव के द्वारा हो–3 खुद को लख पायें रे–SS।।3782।।

(15) ज्ञान स्वरूपी जाने जो, यथार्थ में कभी माने जो–2
अनुभव करने वाला वो–SS
राग–द्वेष मद मोह यहाँ, हो जाते सब नष्ट यहाँ–2
शत्रु व मित्र हो–3 फिर नजर न आये रे–SS।।3783।।

(16) ये जग जाने नहीं मुझे, तो फिर शत्रु न मित्र लगे–2
जाने बिन नहिं शत्रु दिखे–SS
आत्म स्वरूप ये जग जाने, शत्रु मित्रता नहिं ठाने–2
निज रूप मित्र हो–3 और शत्रु मिटाए रे–SS।।3784।।

(17) बहिरातम को छोड़ यहाँ, अंतर आतम खोज यहाँ–2
पाओ पद परमात्म यहाँ–SS
परमातम को भाओगे, तभी उसे तुम पाओगे–2
अंतर आतम ही हो–3 परमात्म दिखाए रे–SS।।3785।।

(18) भाव से प्रभु पद हृदय धरे, ज्ञानस्वरूपी आत्म कहे–2
संस्कार ये प्राप्त करें–SS
संस्कार दृढ़ हो जाये, तब स्थिरता आ पाये–2
स्थिरता आते ही हो–3 निज रूप दिखाए रे–SS।।3786।।

(19) शरीर सुत मित्रादि यहाँ, इनका मैं ये मेरे यहाँ–2
मूर्ख करे विश्वास यहाँ–SS
भय के कारण यही कहे, निर्भय वह परमात्म करे–2
उससे तू डरता हो–3 जिससे भय जायें रे–SS।।3787।।

(20) इन्द्रिय विषय विराम करे, अंतस में विश्राम करे–2
क्षणभर अनुभव यहाँ करे–SS
चिदानंदमय भासित हो, वीतराग अनुशासित हो–2
वह ही परमातम हो–3 का रूप बताएँ रे–SS।।3788।।

आत्म तत्त्व का ज्ञान हमें, हमसे मिलवाये रे–2
अंतिम समाधि हो–3 यह ज्ञान दिलाये रे–SS

(31) परमातम है वह मैं हूँ, मैं हूँ वह परमातम है–2
मुझमें उसमें भेद न है–SS
मैं आराध्याराधक हूँ, मैं ही अपना साधक हूँ–2
मेरा उपास्य हो–3 नहिं कोई दिखाए रे–SS||3789||

(32) पंचेन्द्रिय से दूर हुआ, अपने में सम्पूर्ण हुआ–2
ज्ञानानंद स्वरूप हुआ–SS
ऐसा जो भी करे यहाँ, वो अपने में रमे यहाँ–2
अपने ही द्वारा हो–3 वह शुद्ध हो जाये रे–SS||3790||

(33) तन का मरण सुनिश्चित है, आतम अमर ये निश्चित है–2
जो इससे नहिं परिचित है–SS
घोर तपाचारी भी हो, मोक्ष प्राप्त नहिं उसको हो–2
ज्ञानी ही साधु हो–3 मुक्ति को पाएँ रे–SS||3791||

(34) तन–आतम का ज्ञान हुआ, अंतस् भेद विज्ञान हुआ–2
उसको सच आनंद हुआ–SS
दुष्कर्मों का फल पाये, फिर भी कभी न घबराए–2
बाहर तप करके हो–3 मन खेद न लाए रे–SS||3792||

(35) मन में राग–द्वेष नहिं हो, बिन कषाय नहिं चंचल हो–2
उसे सत्य का अनुभव हो–SS
राग द्वेष से कलुषित हो, उसे न आतम अनुभव हो–2
जाने यथार्थ हो–3 ज्ञानी कहलाए रे–SS||3793||

(36) रागादिक नहिं भाव जहाँ, निज में आतमलीन यहाँ–2
यही वास्तविक रूप यहाँ–SS
राग–द्वेष से क्षुब्ध जो मन, भेद ज्ञान से शून्य जो मन–2
ऐसा पापी मन हो–3 की शरण न आओ रे–SS||3794||

(37) तन को स्थिर मान रहा, शुद्ध इसे ही जान रहा–2
संस्कार अज्ञान रहा–SS
राग–द्वेष फिर आता है, ज्ञान ही उसे मिटाता है–2
भेद विज्ञान हो–3 निज रूप दिखाए रे–SS||3795||

(38) चित्त राग परिणमन करे, हो उसका अपमान अरे–2
कोइ नहीं सम्मान करे–SS
चित्त नहीं जब राग करे, कोई नहीं अपमान करे–2
चित्त में प्रभु का हो–3 चिंतन उपजाओ रे–SS||3796||

(39) अन्तर आत्म तपस्वी हो, राग–द्वेष मोहोदय हो–2
उसी समय वह साधु अहो–SS
शुद्धातम का भाव करे, निजानुभव में रमण करे–2
क्षण में दुर्भाव हो–3 खुद ही मिट जायें रे–SS||3797||

(40) जिस तन में मुनि प्रेम करे, उसमें भेद ज्ञान करे–2
तन से आतम अलग करे–SS
ऐसा जो कर जाता है, प्रेम स्वयं मिट जाता है–2
फिर निज आतम में हो–3 अनुभव अपनाए रे–SS||3798||

आत्म तत्त्व का ज्ञान हमें, हमसे मिलवाये रे–2
अंतिम समाधि हो–3 यह ज्ञान दिलाये रे–ऽऽ

(41) तन में आत्म बुद्धि आये, विभ्रम हो दुख आ जाये–2
निजानुभव से मिट जाये–ऽऽ
भेद ज्ञान नहिं पायें जो, दुर्द्धर तप कर जायें वो–2
उनको ये तप भी हो–3 नहिं मुक्ति दिलाए रे–ऽऽ।।3799।।

(42) बहिरातम तप खूब करे, सुंदर तन की चाह करे–2
स्वर्ग भोग का लक्ष्य करे–ऽऽ
ज्ञानी तत्त्व विचार करे, तन छूटे ये भाव करे–2
ज्ञानी अज्ञानी हो–3 में भेद बताएँ रे–ऽऽ।।3800।।

(43) जड़बुद्धि बहिरात्म यहाँ, भ्रष्ट हुआ निजआत्म यहाँ–2
कर्मबंध से बँधा यहाँ–ऽऽ
खुद वो अंतर आत्म बने, बंधन से हो मुक्त यहाँ–2
आतम बुद्धि ही हो–3 भव पार कराए रे–ऽऽ।।3801।।

(44) अज्ञानी बहिरात्म यहाँ, कहे आत्म तन एक यहाँ–2
निश्चय कर ये कहे यहाँ–ऽऽ
ज्ञानी इन त्रयलिंगों को, कहे कर्म के भेद यहाँ–2
ज्ञानी कर्मों में हो–3 नहिं आत्म बताए रे–ऽऽ।।3802।।

(45) अंतरात्म हो जान रहा, शुद्धातम को मान रहा–2
अनुभव भी निज तान रहा–ऽऽ
कभी कभी वह भ्रम जाता, बहिरातम में रम जाता–2
पूर्व संस्कार हो–3 भ्रम में ले जायें रे–ऽऽ।।3803।।

(46) जो भी दिखे पदार्थ यहाँ, वो सब पुद्गल रूप यहाँ–2
सोचे अंतर आत्म यहाँ–ऽऽ
इन्द्रिय से नहिं आत्म दिखे, तो फिर किस पर क्रोध करें–2
मध्यस्थ भाव हो–3 निज आत्म समाए रे–ऽऽ।।3804।।

(47) पदार्थ त्याग व ग्रहण करे, मूर्ख वही बहिरात्म करे–2
राग–द्वेष के भाव धरे–ऽऽ
राग–द्वेष का त्याग करे, अंतरात्मा भाव करे–2
ज्ञान निज भाव हो–3 निज में अपनाए रे–ऽऽ।।3805।।

(48) मन से आतम को जोड़ें, वच तन से आतम छोड़ें–2
फिर मन आतम से जोड़ें–ऽऽ
वचन काय व्यवहार यहाँ, मन से उसको भी छोड़ें–2
छोड़ा है उसमें हो–3 फिर चित्त न लाएँ रे–ऽऽ।।3806।।

(49) तन में आतम दृष्टि रखें, पुत्र स्त्री रमणीय लगें–2
उसको ही बहिरात्म कहें–ऽऽ
आत्म दृष्टि समदृष्टि रखे, पुत्र स्त्री विषकुंभ लगें–2
उसकी तन धन में हो–3 रुचि कभी न जाये रे–ऽऽ।।3807।।

(50) आत्मज्ञान से भिन्न यहाँ, उसमें न हो अभिन्न यहाँ–2
मन से कर दो भिन्न यहाँ–ऽऽ
स्व–पर प्रयोजन वश कोई, कार्य, न हो आसक्ति यहाँ–2
तब ही इस मन में हो–3 निश्चलता आये रे–ऽऽ।।3808।।

आत्म तत्त्व का ज्ञान हमें, हमसे मिलवाये रे-2
अंतिम समाधि हो-3 यह ज्ञान दिलाये रे-ऽऽ

(51) इन्द्रिय से जो देख रहा, उसमें रूप नहीं मेरा-2
अब विषयों को रोक रहा-ऽऽ
इन्द्रिय रहित हूँ ज्ञानमयी, अंतरंग आनंदमयी-2
ऐसा ही रूप हो-3 निश्चय बतलाए रे-ऽऽ।।3809।।

(52) जब आतम अभ्यास करे तब वह दुख महसूस करे-2
पूर्व आदत हैं बुरी अरे-ऽऽ
चिंतन जब निज आत्म करे, फिर विषयों में दुक्ख लगे-2
अपने ही अंदर हो-3 सुख लहर दिखाए रे-ऽऽ।।3810।।

(53) आतम की ही बात करे, पूछे कैसे प्राप्त करें-2
अनुभवी ज्ञानी से पूछे-ऽऽ
पाने का पुरुषार्थ करे, जिससे अन्तर आत्म बने-2
तब ही परमातम हो-3 का रूप दिखाए रे-ऽऽ।।3811।।

(54) बहिरातम तन वचनों में, निज स्वरूप संवेद्य करें-2
भ्रांति पैदा स्वयं करें-ऽऽ
जो नहिं इनमें भ्रांति रखें, वे अनुभव निज आत्म करें-2
तन और वचनों को हो-3 वे भिन्न बताएँ रे-ऽऽ।।3812।।

(55) पाँच इन्द्रिय के विषय यहाँ, आत्म घात नित करें यहाँ-2
चाहें कभी न भला यहाँ-ऽऽ
अनादि से मिथ्यात्व रहा, संस्कार दृढ़ बना रहा-2
मूढ़ी विषयों में हो-3 आसक्ति लगाये रे-ऽऽ।।3813।।

(56) मिथ्यातम का उदय रहे, तभी जीव बहिरात्म रहे-2
कुयोनियों में भ्रमण करे-ऽऽ
संज्ञी हो कभी मनुज हुआ, स्त्री पुत्रों में भाव किया-2
मेरे, मैं इनका हो-3 ये भाव बनाये रे-ऽऽ।।3814।।

(57) निज आतम में स्थिर होकर, तन से यहाँ विमुख होकर-2
अंतरात्मा खुद होकर-ऽऽ
तन को पर को पर समझे, आतम को अपना समझे-2
ऐसा अवलोकन हो-3 भव बुद्धि मिटाये रे-ऽऽ।।3815।।

(58) ये बहिरातम जीव यहाँ, नहिं जानें निज रूप यहाँ-2
सोचे अंतर आत्म यहाँ-ऽऽ
बतलाते, पर नहिं जानें, एक बात भी नहिं मानें-2
उनको बतलाना हो-3 सब व्यर्थ बताएँ रे-ऽऽ।।3816।।

(59) समझाता बतलाता हूँ, इच्छा चेष्टा करता हूँ-2
निश्चय से मैं वह नहिं हूँ-ऽऽ
ज्ञानानंद स्वभावी हूँ, अनुभव आत्म स्वरूपी हूँ-2
कोई आतम को हो-3 नहिं समझा पाये रे-ऽऽ।।3817।।

(60) मोही है बहिरात्म यहाँ, बाह्य वस्तु संतुष्ट यहाँ-2
ज्ञान ज्योति हुई नष्ट यहाँ-ऽऽ
हो मिथ्यात्व अभाव जभी, आतम से अनुराग तभी-2
निज के अनुभव में हो-3 संतुष्टि पाये रे-ऽऽ।।3818।।

आत्म तत्त्व का ज्ञान हमें, हमसे मिलवाये रे–2
अंतिम समाधि हो–3 यह ज्ञान दिलाये रे–SS

(61) सुख दुख अनुभव आत्म करे, तन जड़ है रस गंध भरे–2
जीव जो दण्ड उपवास करे–SS
इस तन का शृंगार करे, देख इसे खुश जिया करे–2
ऐसे मूढ़ी जन हो–3 बहिरात्म कहायें रे–SS।।3819।।

(62) मन वच तन ये योग कहे, इनको ही निज आत्म कहे–2
तब तक तो संसार रहे–SS
जब योगों को भिन्न कहें, तब आतम का रूप लखे–2
भव से यह जीव हो–3 मुक्ति पा जाये रे–SS।।3820।।

(63) मोटा वस्त्र पहन ले जो, खुद को मोटा कहे न वो–2
बुद्धिमान इंसां हैं जो–SS
वैसे तन मोटा होवे, जीव को नहिं मोटा समझे–2
अंतर आतम है हो–3 ज्ञानी कहलाए रे–SS।।3821।।

(64) वस्त्र जीर्ण जब हो जाये, तन नहिं जीर्ण समझ आये–2
अंतरात्मा कहलाये–SS
वैसे ही तन जीर्ण यहाँ, जीर्ण न होता जीव यहाँ–2
ऐसे ही लोग हो–3 ज्ञानी कहलाएँ रे–SS।।3822।।

(65) कपड़ा जब फट जाता है, तो क्या तन फट जाता है–2
कथन समझ में आता है–SS
वैसे ही तन मरता है, तो क्या आतम मरता है–2
अंतर आतम ही हो–3 यह भेद दिखाए रे–SS।।3823।।

(66) कपड़ा होता लाल यहाँ, तन नहिं होता लाल यहाँ–2
अंतर आत्म का ज्ञान यहाँ–SS
तन हो जाये लाल यहाँ, जीव न होता लाल यहाँ–2
ज्ञानी को ये सब हो–3 अनुभव में आये रे–SS।।3824।।

(67) ज्ञानी चेष्टा करे यहाँ, तन ये जग निश्चेष्ट यहाँ–2
पत्थर सम जड़ रूप यहाँ–SS
ज्ञानी सुखानुभव करता, अज्ञानी सुख नहिं वरता–2
बहिरातम भव में हो–3 भ्रम दुख उपजाये रे–SS।।3825।।

(68) आत्म ढका कार्मण तन से, बंधा हुआ भव बंधन से–2
दुखी हुआ बहिरातम से–SS
आत्म स्वरूप न ज्ञान हुआ, भटका है चिरकालों से–2
दुख का झमेला हो–3 अज्ञान बनाए रे–SS।।3826।।

(69) यहाँ जनमते मरते हैं, तनात्म एक समझते हैं–2
उन्हें बहिरातम कहते हैं–SS
जब तक ज्ञान नहीं होगा, भ्रम खुद बढ़ता ही होगा–2
अज्ञानी पुद्गल हो–3 को आत्म बनाये रे–SS।।3827।।

(70) तन में तन्मय नहिं होता, गोरा, मोटा नहिं कहता–2
तन में एक नहीं होता–SS
वह आत्म को ज्ञानमयी, दर्श शक्ति सुख नंतमयी–2
चित्त में धारे हो–3 निज ज्ञान बढ़ाए रे–SS।।3828।।

आत्म तत्त्व का ज्ञान हमें, हमसे मिलवाये रे-2
अंतिम समाधि हो-3 यह ज्ञान दिलाये रे-SS

(81) आत्म स्वरूपी भाव धरे, निश्चल निज परिणाम करे-2
वही मुक्ति को प्राप्त करे-SS
जिसमें निश्चल भाव नहीं, मुक्ति उसको मिले नहीं-2
निज का अनुभव ही हो-3 भव पार कराये रे-SS।।3829।।

(82) लोगों का संसर्ग यहाँ, क्षुभित हो मन हो मोह यहाँ-2
चित्त में चंचल योग यहाँ-SS
तत्त्व चित्त में दिखे तभी, छोड़ तू पर संसर्ग अभी-2
लौकिक संसर्ग हो-3 विकृति ले आये रे-SS।।3830।।

(83) जंगल है ये गाँव यहाँ, अनात्मदर्शी कहें यहाँ-2
यही कल्पना करें यहाँ-SS
आत्मदर्शी जो होते हैं, आतम में वे रहें यहाँ-2
उनका स्थान हो-3 आतम बतलाएँ रे-SS।।3831।।

(84) तन को आतम माने जो, कर्मोदय वश कहता जो-2
भव बंधन का बीज है जो-SS
तन से आतम भिन्न कहे, भव बंधन से मुक्त रहे-2
ऐसे ही ज्ञानी हो-3 मुक्ति पा जायें रे-SS।।3832।।

(85) आतम भव भटकाता है, मुक्ति प्राप्त कराता है-2
सब कुछ आत्म कराता है-SS
दृष्टि यहाँ परमार्थ रखो, आतम का गुरु आत्म अहो-2
निश्चय से आतम हो-3 ही गुरु कहलाए रे-SS।।3833।।

(86) तन में आतम बुद्धि यहाँ, राग-द्वेष भय करे यहाँ-2
मरने से वो डरे यहाँ-SS
योग सगे संबंधी का, छूटेंगे सब भोग यहाँ-2
मिथ्याबुद्धि ही हो-3 भव दुक्ख बढ़ाएँ रे-SS।।3834।।

(87) आत्मस्वरूपी दृष्टि यहाँ, तन को समझे वस्त्र समां-2
तन मरता, नहिं आत्म यहाँ-SS
बाल युवा या बूढ़ापन, तन के हैं तीनों लक्षण-2
आतम इन सबसे हो-3 अति भिन्न दिखाए रे-SS।।3835।।

(88) निज आत्मा में जाग रहा, बाह्य कार्य में सुप्त रहा-2
वह आतम को जान रहा-SS
बाह्य कर्म में जागे जो, वो अंतस में सुप्त रहा-2
आतम में जागे हो-3 तब सम्यक् पाये रे-SS।।3836।

(89) अंतर में जो आत्म लखे, बाहर में जो तन देखे-2
दोनों में फिर भेद करे-SS
दृढ़ विश्वास जब कर जाये, तब ही वह सम्यक् पाये-2
दृढ़ता भव्यों को हो-3 भव पार कराये रे-SS।।3837।।

(80) जिसको आतम दर्श हुआ, उसको जग उन्मत्त लगा-2
प्राणी भ्रमता हुआ दिखा-SS
अंतरंग अभ्यास करे, अच्छे अनुभव प्राप्त करे-2
अनुभव इस जग को हो-3 जंजाल बताए रे-SS।।3838।।

आत्म तत्त्व का ज्ञान हमें, हमसे मिलवाये रे-2
अंतिम समाधि हो-3 यह ज्ञान दिलाये रे-ऽऽ

(81) आत्म स्वरूप है खूब सुना, गुरुओं से भी कई गुना-2
उसको अंतस् नहीं गुना-ऽऽ
गैरों को भी बतलाया, नहीं भावना कर पाया-2
ऐसे वे लोग हो-3 नहिं मुक्ति पायें रे-ऽऽ।।3839।।

(82) अंतरात्मा भाव करे, तन से आतम भिन्न अरे-2
भावना बहुत प्रगाढ़ करे-ऽऽ
टूटे नहीं स्वप्न में भी, ऐसे योजित आत्म करे-2
आतम को तन मय हो-3 फिर समझ न पाये रे-ऽऽ।।3840।।

(83) अव्रत से हो पाप यहाँ, व्रत से होते पुण्य यहाँ-2
द्वय मिटते तो मोक्ष यहाँ-ऽऽ
जो मोक्षार्थी भव्य यहाँ, छोड़ें दोनों कर्म यहाँ-2
तब ही इस भव से हो-3 मुक्ति मिल पाये रे-ऽऽ।।3841।।

(84) पहले छोड़े पाप यहाँ, निष्ठा से व्रत धरे यहाँ-2
धर्मध्यान नित करे यहाँ-ऽऽ
वीतराग पद पा करके, व्रत भी छोड़े सभी यहाँ-2
मुक्ति की मंजिल हो-3 उसको मिल पाये रे-ऽऽ।।3842।।

(85) कल्पनाओं का जाल यहाँ, ये जी का जंजाल यहाँ-2
दुक्खमयी है काल यहाँ-ऽऽ
संकल्पों को खतम करे, हितकर आतम लखे यहाँ-2
उत्तम पद पाना हो-3 तो गुप्ति बढ़ाओ रे-ऽऽ।।3843।।

(86) पाप छोड़ व्रत ग्रहण करे, ज्ञान भाव में लीन रहे-2
धर्म अहिंसा हृदय धरे-ऽऽ
सभी विकल्प हटा करके, केवलज्ञान वो प्राप्त करे-2
सिद्धों का रूप हो-3 उसको मिल जाये रे-ऽऽ।।3844।।

(87) जूट जटा धारण करना, लाल वस्त्र को अपनाना-2
नग्न वेष मय हो जाना-ऽऽ
ये सब तन के आश्रित हैं, इनमें हठ नहिं तुम लाना-2
ऐसे ढोंगी जन हो-3 भव मुक्ति न पायें रे-ऽऽ।।3845।।

(88) जाती तन की बतलाई, इसमें मत उलझो भाई-2
हठ ढोंगी ने अपनाई-ऽऽ
निर्मल भावी तिरता है, जातिवाद तो गिरता है-2
हठ के भावों से हो-3 भव में भ्रम जाये रे-ऽऽ।।3846।।

(89) जाति से जो मुक्ति कहें, ब्राह्मण क्षत्रिय श्रेष्ठ कहें-2
वेष से मुक्ती प्राप्त कहें-ऽऽ
ऐसी हठ जो धरता है, ज्ञान प्राप्त नहिं करता है-2
भव से वो कैसे हो-3 मुक्ति पा पायें रे-ऽऽ।।3847।।

(90) वीतराग पद पाने को, तन का मोह मिटाने को-2
त्याग करें शिव पाने को-ऽऽ
मोही इन्द्रिय विषयों में, प्रीति करें इन पापों में-2
धर्मी से मोही हो-3 नहिं प्रेम अपनाए रे-ऽऽ।।3848।।

आत्म तत्त्व का ज्ञान हमें, हमसे मिलवाये रे–2
अंतिम समाधि हो–3 यह ज्ञान दिलाये रे–SS

(91) लंगड़ा बैठा अंधे पर, रस्ता दिखा रहा पथ पर–2
अंधे में आँखें धरकर–SS
वैसे अज्ञानी भव में, आतम रख देता तन में–2
फिर वो ये जाने हो–3 तन जाने देखे रे–SS।।3849।।

(92) अंधे में आँखें नहिं हैं, लँगड़े में नहिं पैर रहें–2
अंधा देख न चलित रहे–SS
वैसे ये तन नहीं चले, आतम से देखे जाने–2
आतम से ये तन हो–3 अति भिन्न बताएँ रे–SS।।3850।।

(93) सोना और उन्मत्त यहाँ, भ्रम रूपी है समझ यहाँ–2
बहिरातम की सोच यहाँ–SS
मोह की सभी प्रवृत्ति यहाँ, भ्रम सी लगती सभी यहाँ–2
ज्ञानी इन सबको हो–3 भ्रम रूप बताए रे–SS।।3851।।

(94) तन को अपना कहता है, शास्त्र सभी वो पढ़ता है–2
बहिरातम वो रहता है–SS
ज्ञानी हो उन्मत यहाँ, फिर भी होता मुक्त यहाँ–2
अज्ञानी कर्मों हो–3 से छूट न पाये रे–SS।।3852।।

(95) जिस पर बुद्धि लग जाये, वह श्रद्धा पर चढ़ जाये–2
फिर श्रद्धा दृढ़ हो जाये–SS
होता फिर तल्लीन यहाँ, खुद को करे विलीन यहाँ–2
विषयों में फँसकर हो–3 वो जान गँवाये रे–SS।।3853।।

(96) जिस पर बुद्धि नहीं जाये, उस पर चित्त न लग पाये–2
वो श्रद्धा नहिं बन पाये–SS
श्रद्धा बिन उपयोग नहीं, फिर तन्मयता रहे नहीं–2
श्रद्धा ही कदमों हो–3 में ताकत लाये रे–SS।।3854।।

(97) दिया से बाती भिन्न यहाँ, बाती पूजे द्वीप यहाँ–2
दीपमयी हो ज्योति यहाँ–SS
प्रभु आतम से भिन्न यहाँ, आराधन परमात्म यहाँ–2
इक दिन वह आतम हो–3 परमात्म कहाये रे–SS।।3855।।

(98) खुद से रगड़े बाँस यहाँ, पैदा होती आग यहाँ–2
जल जाता है बाँस यहाँ–SS
निज से निज का ध्यान करें, चिदानंद निज रूप वरें–2
उसको परमातम हो–3 पद खुद मिल जाये रे–SS।।3856।।

(99) भेद अभेदी ज्ञान यहाँ, दिलवाये सम्यक्त्व यहाँ–2
रत्नत्रय की निधि यहाँ–SS
ध्यान करे परमातम का, मिलता पद परमात्म यहाँ–2
सिद्धालय जाये हो–3 फिर कभी न आये रे–SS।।3857।।

(100) यत्नसाध्य सम्यक्त्व यहाँ, रत्नत्रय है यत्न यहाँ–2
यत्न ही कहते ध्यान यहाँ–SS
बिन पुरुषार्थ न मोक्ष मिले, और न भव का कूल मिले–2
पहले पुरुषार्थ हो–3 फिर सहज दिखाए रे–SS।।3858।।

आत्म तत्त्व का ज्ञान हमें, हमसे मिलवाये रे–2
अंतिम समाधि हो–3 यह ज्ञान दिलाये रे–ऽऽ

(101) स्वप्न में हम मर जाते हैं, प्रत्यक्ष देखे जाते हैं–2
सचमुच नहिं मर जाते हैं–ऽऽ
वैसे तन का नाश यहाँ, दिखता है प्रत्यक्ष यहाँ–2
फिर भी आतम का हो–3 नहिं नाश बताएँ रे–ऽऽ।।3859।।

(102) भावना भाये सुख में जो, दुख आने पर मिटती वो–2
ज्यादा दिन नहिं टिकती वो–ऽऽ
भावना दुक्ख सहित हो जो, सुख दुख में टिकती है वो–2
अंतिम समय तक हो–3 वह भाव बनाए रे–ऽऽ।।3860।।

(103) राग–द्वेष प्रवृत्ति हो, वायु तभी उत्पत्ति हो–2
फिर वृत्ति निर्वृत्ति हो–ऽऽ
तन इन्द्रिय के यंत्र चलें, पुण्य पाप में यहाँ ढलें–2
वीतराग में हो–3 ये खुद मिट जायें रे–ऽऽ।।3861।।

(104) इन्द्रिय तन को आतम में, बहिरातम एकत्व करें–2
दुक्ख भोगते यहाँ रहे–ऽऽ
ज्ञानी, तन को भिन्न कहे, अंतर आतम स्वयं लखे–2
उसको उत्तम पद हो–3 खुद ही मिल जाये रे–ऽऽ।।3862।।

(105) जान समाधि तंत्र यहाँ, स्वात्मबुद्धि ले मंत्र यहाँ–2
छोड़ सभी परतंत्र यहाँ–ऽऽ
मरण समाधि पाता है, भव से मुक्त हो जाता है–2
ध्यान समाधि हो–3 सुख नंत दिलाए रे–ऽऽ।।3863।।

पर से नाता तोड़कर, निज से नाता जोड़।
अंतर आतम बन यहाँ, बहिरातम को छोड़।।

इन्द्रिय तन का जगत में, चंद समय का योग।
इनको सम्यक् योग से, कर डालो उपयोग।।

बहिरातम को छोड़कर, अंतर आतम होय।
परमातम का ध्यान कर, परमातम ही होय।।

तन व इन्द्रिय जाल में, सारे ही जंजाल।
जो इनमें रमता यहाँ, हो जाता कंगाल।।

तन में आतम बुद्धि को, धारे मिथ्याभाव।
ये नहिं करने दे यहाँ, गुरु से सही लगाव।।

जो आतम में ही यहाँ, शुद्धातम लख लेय।
निश्चय से ज्ञानी वही परमातम ही श्रेय।।

बाल युवा बूढ़ापना, ये तन के आयाम।
इसमें खुद को रोंपता, वो बहिरातम जान।।

जब ही अंतस् दृष्टि हो, मिले ज्ञान भण्डार।
ध्यान करे परमात्म का, हो जाये भव पार।।

दर्शन पाहुड़

मूल ग्रंथकर्ता : आचार्य कुंदकुंद स्वामी
पद्यानुवाद : उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

दर्शन पाहुड़ दर्शन की महिमा बतलाये रे–ऽऽऽ
भाये–अपनाये वह (सम्यक्) दर्शन पाये रे–ऽऽ

मंगलाचरण

(1) आदिनाथ महावीर प्रभो! तीन लोक में श्रेष्ठ हैं जो–2
नमन–नमन द्वय चरण विभो!–ऽऽ
सम्यग्दर्श स्वरूप कहूँ, अनुक्रम से सब भव्यों को–2
दर्शन पाहुड़ में हो–3 दृग महिमा गायें रे–ऽऽ।।3864।।

(2) धर्म मूल सम्यग्दर्शन, शिष्यों को कहते भगवन्–2
जिसको सुनकर तृप्त हो मन–ऽऽऽ
जिसे न हो सम्यग्दर्शन, उसको नहीं करो वंदन–2
वंदन करने से हो–3 उसके गुण जायें रे–ऽऽ।।3865।।

(3) समदर्शन से भ्रष्ट यहाँ, भ्रष्टों में वे भ्रष्ट यहाँ–2
उन्हें न हो निर्वाण यहाँ–ऽऽऽ
चारित से जो भ्रष्ट कहे, वे इक दिन सिद्धत्व लहे–2
सम्यक् से भ्रष्ट हो–3 सिद्धत्व न पाये रे–ऽऽ।।3866।।

(4) सम्यक् रत्न से भ्रष्ट यहाँ, श्रद्धा से वो भ्रष्ट यहाँ–2
जाने सारे शास्त्र यहाँ–ऽऽऽ
धर्मकार्य तो खूब किये, जहाँ थे पहले वहीं रहे–2
चारों गतियों में हो–3 वे भ्रमते जायें रे–ऽऽ।।3867।।

(5) समदर्शन नहिं प्राप्त करे, तपश्चरण वह कठिन करे–2
नहिं रत्नत्रय बोधि वरे–ऽऽऽ
सहस्रकोटि वर्षों में भी, तपकर भटका यहाँ फिरे–2
उसको भटकन से हो–3 कोइ बचा न पाये रे–ऽऽ।।3868।।

(6) सम्यग्दर्शन ज्ञान परम, सुख अनंत बल वीर्य शुभम्–2
निरत बुद्धि को प्राप्त स्वयम्–ऽऽऽ
शीघ्र घातिया कर्म नशें, केवलज्ञानी यहाँ बनें–2
ज्ञानी की महिमा हो–3 ये दुनियाँ गाये रे–ऽऽ।।3869।।

(7) सम्यक् रूपी जल धारा, अविरल बहे हृदय धारा–2
ये सम्यक् सबसे न्यारा–ऽऽऽ
कर्मबंध हों भले उसे, उसे न कोई बाँध सके–2
बाँधे हों कर्म हो–3 वे भी मिट जायें रे–ऽऽ।।3870।।

(8) सम्यग्दर्शन भ्रष्ट हैं जो, ज्ञान चरित से भ्रष्ट हैं वो–2
भ्रष्टों में अतिभ्रष्ट हैं वो–ऽऽऽ
उनके कभी न मित्र बनें, जो मनुष्य को भ्रष्ट करें–2
सम्यग्दर्शन ही हो–3 प्रभु दर्श कराये रे–ऽऽ।।3871।।

(9) धर्मशील जो खुद ही हैं, धर्मी के जो दोष कहें–2
लेकिन वे निर्दोष रहें–ऽऽ
मिथ्या दोष लगाते जो, हैं खुद पतित यहाँ पर वो–2
गैरों से आकर हो–3 दोषीक बनायें रे–ऽऽ।।3872।।

(10) जिनमत से जो भ्रष्ट यहाँ, वे हैं मूल विनष्ट यहाँ–2
सम्यग्दर्शन शून्य यहाँ–ऽऽ
ज्यों तरु जड़ मिट जाती है, तरु वृद्धि रुक जाती है–2
सम्यक् मिटते ही हो–3 चारित रुक जाये रे–ऽऽ।।3873।।

दर्शन पाहुड़ दर्शन की महिमा बतलाये रे–ऽऽऽ
भाये–अपनाये वह (सम्यक्) दर्शन पाये रे–ऽऽ

(11) जड़ युत् तरु की बुद्धि हो, पत्र पुष्प फल सिद्धि हो–2
तरु की छाँव प्रसिद्धि हो–ऽऽ
वैसे जिनमत में दर्शन, वे प्रगाढ़ शिवमार्ग चलन–2
सम्यग्दर्शन ही हो–3 पथ पर चलवाये रे–ऽऽ।।3874।।

(12) भ्रष्ट किया निज समकित को, झुकें न सम्यग्दृष्टि को–2
बना रहे अभिमानी जो–ऽऽऽ
वे लूले, गूँगे होते, कभी संयमी नहिं होते–2
उनको रत्नत्रय हो–3 दुर्लभ बतलाएँ रे–ऽऽ।।3875।।

(13) मिथ्यादृष्टि जान रहा, फिर भी सिर पद झुका रहा–2
लज्जा भय से भरा रहा–ऽऽऽ
करें पाप का अनुमोदन, मिले न रत्नत्रयमय धन–2
रत्नत्रयधारी भी हो–3 भ्रष्ट हो जायें रे–ऽऽ।।3876।।

(14) दोनों ग्रंथि त्याग यहाँ, योगों पर हो धाक यहाँ–2
ज्ञान हमेशा पाक यहाँ–ऽऽ
मन को निर्मल रखते हैं, मुक्ति खड़े हो करते हैं–2
ऐसे मुनियों को हो–3 सम्यक् हो पाये रे–ऽऽ।।3877।।

(15) सम्यक् से हो ज्ञान यहाँ, ज्ञान से सब उपलब्ध यहाँ52
हो विवेक हित अहित यहाँ–ऽऽऽ
श्रेय और अश्रेय यहाँ, जाने रूप विशेष यहाँ–2
सम्यक्त्व के सम हो–3 कुछ नहीं दिखाये रे–ऽऽ।।3878।।

(16) श्रेयाश्रेय विचार करे, दुष्टभाव वो नष्ट करे–2
श्रेष्ठ भाव से युक्त रहे–ऽऽऽ
जग के सब सुख पाता है, फिर वह शिवपुर जाता है–2
श्रेष्ठ भावों की हो–3 महिमा बतलाएँ रे–ऽऽ।।3879।।

(17) जिन वचनों की औषधि ये, विषय सुखों को दूर करे–2
अमृत रूपी कुंड अरे–ऽऽऽ
जरा मरण व्याधी हरती, सारे दुख को क्षय करती–2
जिन श्रुत की महिमा हो–3 श्रुत पुत्र सुनाएँ रे–ऽऽ।।3880।।

(18) एक लिंग है नग्न स्वरूप, कहें आर्यिका दूजा रूप–2
तीजा उत्तम श्रावक रूप–ऽऽ
चौथा लिंग न जिनमत में, कुंदकुंद ये बात कहें–2
मानो–अपनाओ हो–3 श्रद्धान बनाओ रे–ऽऽ।।3881।।

(19) नव पदार्थ छह द्रव्य बताय, सात तत्त्व पंचास्तिकाय–2
इनमें सारा विश्व समाय–ऽऽ
इन पर जो श्रद्धान करे, वो ही सम्यग्दृष्टि अरे–2
गुरुवर हम सबको हो–3 ये बात बताएँ रे–ऽऽ।।3882।।

(20) सात तत्त्व श्रद्धान करें, उसमें ही सम्यक्त्व अरे–2
नय व्यवहारी बात करे–ऽऽ
निश्चय से शुद्धातम पर, श्रद्धा सम्यग्दर्श कहे–2
जिनवर ने सबको हो–3 ये बात बताई रे–ऽऽ।।3883।।

दर्शन पाहुड दर्शन की महिमा बतलाये रे–SSS
भाये–अपनाये वह (सम्यक्) दर्शन पाये रे–SS

(21) भावपूर्वक धारण कर, सम्यग्दर्शन रत्न प्रवर–2
उत्तम क्षमादि गुण धरकर–SS
रत्नों में है श्रेष्ठ रतन, मोक्ष की सीढ़ी यही प्रथम–2
जिनमत को अपने हो–3 जीवन में लाओ रे–SS।।3884।।

(22) शक्ति के अनुसार करे, शक्ति न तो श्रद्धान करे–2
उसको सम्यग्दृष्टि कहे–SS
कहते हैं जिनदेव यही, समदृष्टि को लगे सही–2
सम्यग्दर्शन ही हो–3 मुक्ति दिलवाये रे–SS।।3885।।

(23) गुणियों का गुणगान करे, मुनि में दर्शन ज्ञान अरे–2
चारित तप की विनय करे–SS
वंदनीय वे मुनिवर हैं, जिनमें गुण अति सुंदर हैं–2
उनके वंदन से हो–3 निर्मलता आये रे–SS।।3886।।

(24) यथाजात मुद्रा लखकर, ईर्ष्याभाव रखे उनपर–2
माने नहिं उनको मुनिवर–SS
उसको मिथ्यादृष्टि कहो, भले हि वो मुनि क्षुल्लक हो–2
जिनवर की मुद्रा हो–3 सम्यक्त्व दिलाये रे–SS।।3887।।

(25) वंदनीय इन्द्रों में हैं, भरे हुए शीलों से हैं–2
तीर्थंकर सा रूप धरें–SS
उन्हें देख अभिमान धरें, वे सम्यक् से रहित रहें–2
मुनियों की मुद्रा हो–3 वैभव दिलवाये रे–SS।।3888।।

(26) कुल का नहिं होता वंदन, नहीं हीनगुण आराधन–2
और न तन का अभिनंदन–SS
जो गुणहीन मनुष्य यहाँ, वो श्रावक नहिं मुनी यहाँ–2
गुण की हो पूजा हो–3 जिनधर्म बताये रे–SS।।3889।।

(27) तप से युक्त शीलधारी, कई गुणों के भण्डारी–2
ब्रह्मचर्य के अनुचारी–SS
शिवरमणी के अधिकारी, रत्नत्रय गुण में भारी–2
करता हूँ वंदन हो–3 मन भक्ति सजाये रे–SS।।3890।।

(28) असंयमी को नमन नहीं, द्रव्य लिंग को नमन नहीं–2
दोनों ही संयमी नहीं–SS
संयम सम्यक् सहित अहो, उसको ही नित वंदन हो–2
सम्यक् वंदन में हो–3 निर्मलता लाये रे–SS।।3891।।

(29) चौंसठ चँवर सहित हैं जो, चौतीस अतिशय युक्त अहो–2
हितकारी सब भव्यों को–SS
उन तीर्थंकर भगवन को, शुक्ल ध्यान को पाने को–2
करता नित वंदन हो–3 क्षय कर्म हो जायें रे–SS।।3892।।

(30) सम्यग्दर्शन ज्ञान परम, तप सम्यक् चारित्र धरम–2
कहलाते ये संयम गुण–SSS
चारों जब मिल जाते हैं, मोक्ष यही कहलाते हैं–2
जिनमत मे जानो हो–3 जिनदेव बतायें रे–SS।।3893।।

दर्शन पाहुड दर्शन की महिमा बतलाये रे–ऽऽऽ
भाये–अपनाये वह (सम्यक्) दर्शन पाये रे–ऽऽ

(31) ज्ञान सार नर जीवन में, सम्यक् सार ही ज्ञान में–2
सम्यक् दे चारित्र हमें–ऽऽ
चारित से निर्वाण मिले, यहाँ धर्म का सार मिले–2
सम्यक्त्व के बिन हो–3 कुछ नहिं मिल पाये रे–ऽऽ।।3894।।

(32) सम्यग्दर्शन ज्ञान शुभम्, तप देता चारित्र परम–2
इनसे बनें सिद्ध भगवन्–ऽऽ
इसमें नहिं संदेह यहाँ, कहते हैं जिनदेव यहाँ–2
सम्यक्त्व सबमें हो–3 सम्यक्पन लाये रे–ऽऽ।।3895।।

(33) हो सम्यक् निर्दोष यहाँ, देता है संतोष यहाँ–2
कल्याणक उद्घोष यहाँ–ऽऽ
देव दानवों से सम्यक्, तीन लोक में पूज्य यहाँ–2
सम्यक् से पाँचो हो–3 कल्याणक पायें रे–ऽऽ।।3896।।

(34) उत्तम गोत्र मनुष्य जनम, दुनियाँ में है दुर्लभतम–2
उसमें पाये समदर्शन–ऽऽऽ
अजर–अमर पद वो पाये, जो चारित को अवगाहे–2
सम्यक् ईश्वर को हो–3 नजदीक बुलाये रे–ऽऽ।।3897।।

(35) सहस्त्र आठ हैं शुभ लक्षण, चौंतिस अतिशय हैं भगवन्–2
आर्यखण्ड में करें गमन–ऽऽ
जब विहार प्रभु करते हैं, जंगम प्रतिमा कहते हैं–2
धातु की प्रतिमा हो–3 स्थावर कहलाये रे–ऽऽ।।3798।।

(36) अशोक तरु और दिव्यध्वनि, दुंदुभि चामर सिंहासन–2
छत्र त्राय भामण्डलम–ऽऽ
पुष्पवृष्टि अतिशयकारी, प्रातिहार्य वसु मनहारी–2
अष्ट प्रतिहार्य हो–3 महिमा बतलायें रे–ऽऽ।।3899।।

दर्शन पाहुड दर्श को, करता है मजबूत।
फिर जो भी चिंतन करे, बनते सभी सबूत।।

दर्शन की महिमा परम, कहें कुंद भगवान्।
ज्ञान मिले उनसा हमें, करूँ "विनम्र" प्रणाम।।

देख देख वो दिख गया, जो देखे भगवान्।
पाकर सम्यग्दर्श को, प्रभु को करूँ प्रणाम।।

दर्शन से निजदर्श हो, जहाँ है गुण भण्डार।
दर्शन होते ही यहाँ, मिले सभी गुण सार।।

इति दर्शन पाहुड

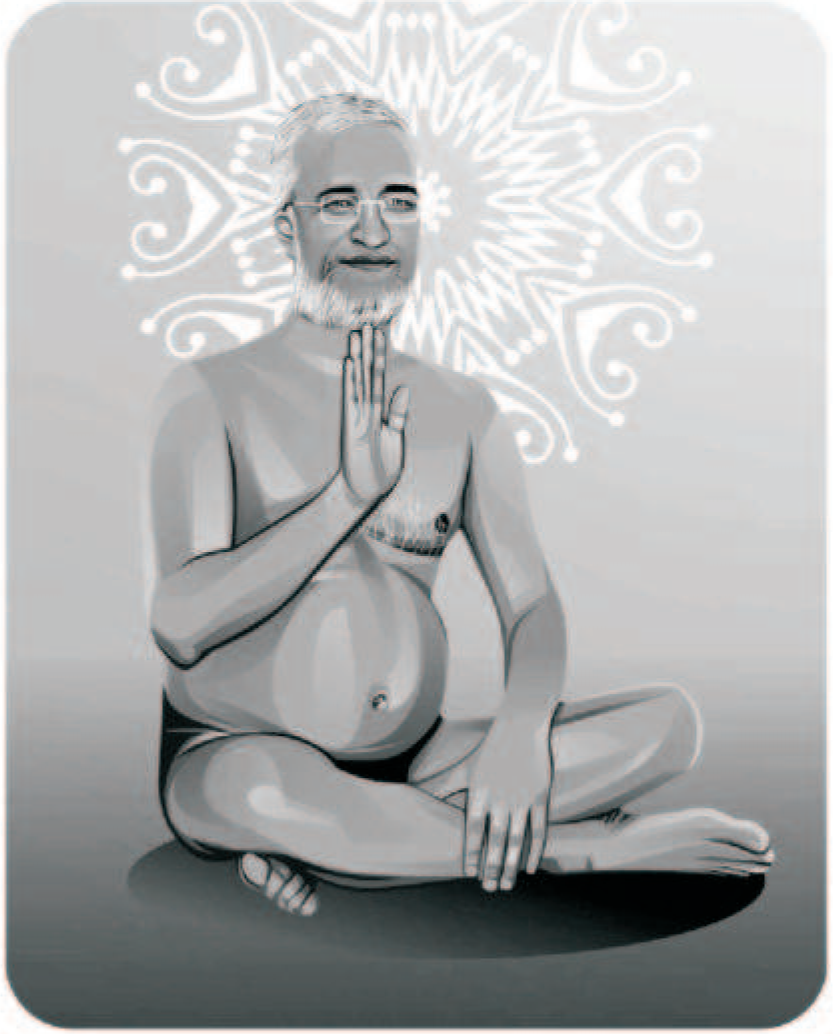

चारित्र पाहुड़

मूल ग्रंथकर्ता : आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी
पद्यानुवाद : उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

चारित्र सम्यग्दर्शन बिन, पंगु बताएँ रे-2
चारित्र की महिमा, सब यहाँ सुनाये रे-SS

मंगलाचरण

(1) सर्वदर्शी सर्वज्ञ प्रभो, वीतराग निर्मोह विभो-2
परमेष्ठी पर राजित जो-SS
तीन लोक में वंदित जो, भव्यों को अरहंत हैं वो-2
उनके चरणों में हो-3 हम शीश झुकाएँ रे-SS||3900||

(2) सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरित, भव्यों का जो करते हित-2
सर्वलोक से हैं वंदित-SSS
वीतराग रत्नत्रय को, नमन मोक्ष को पाने को-2
चारित पाहुड को हो-3 मैं कहना चाहूँ रे-SS||3901||

(3) तीनों भाव हैं अविनाशी, हैं अनंत गुण के वासी-2
कहते हैं शिवपुर वासी-SSS
भाव शुद्धि करने वाले, सारे गुण वरने वाले-2
ऐसा चारित के हो-3 द्वय भेद बताएँ रे-SS||3902||

(4) जाने, उसको ज्ञान कहें, माने, दर्शन उसे कहें-2
अनुकरण चारित्र कहें-SSS
तीनों मिलकर मार्ग बनें, इक दिन मुक्ति प्राप्त करें-2
चारित के बल पर हो-3 मुक्ति मिल जाये रे-SS||3903||

(5) ज्ञान दर्श से शुद्ध यहाँ, है सम्यक्त्वाचरण यहाँ-2
दूजा संयम चरण यहाँ-SSS
दोनो चारित बतलाये, कुंदकुंद ने समझाए-2
दोनों चारित में हो-3 हम भाव बनायें रे-SS||3904||

(6) जिनमत में सम्यक्त्व है फल, ज्ञान चरित उसमें निर्मल-2
जिससे सज्ञीर परिणाम विमल-SSS
मिथ्यात्व शंकादिक हैं मल, इनका त्याग करो हरपल-2
फल में ये मल ही हो-3 बहु दाग लगाएँ रे-SS||3905||

(7) नि:शंकित, निकांक्षित हैं, उपगूहन णिदिकरणं हैं-2
निर्विचिकित्सा अमूढ़ है-SSS
प्रभावना वात्सल्य सुगुण, आठ यही सम्यक्त्वी गुण-2
ये हों जीवन में हो-3 अंगुल हो जाये रे-SS||3906||

(8) नि:शंकित गुण से निर्मल, होता है सम्यक्त्व विमल-2
मोक्ष प्राप्ति में करे पहल-SSS
ज्ञान सहित समदर्शन हो, वो सम्यक्त्व आचरण हो-2
मुनि हो या श्रावक हो-3 दोनों में पायें रे-SS||3907||

(9) दोष रहित सम्यग्दर्शन, अतिप्रसिद्ध संयमाचरण-2
चारित के धारी जुनि जन-SSS
अमूढ़ दृष्टि विवेकी हैं, स्व-पर भेद विज्ञानी हैं-2
शीघ्र वे मुनिवर हो-3 मुक्ति पा जाये रे-SS||3908||

(10) मोह रहित है अमोघ जो, देता उत्तम दान है जो-2
दयालु है विनयी है वो-SSS
वत्सलभाव धरे उर में, गुण की करे प्रशंसा जो-2
उसमें सम्यक् के हो-3 लक्षण नजराएँ रे-SS||3909||

चारित्र सम्यग्दर्शन बिन, पंगु बताएँ रे-2
चारित्र की महिमा, सब यहाँ सुनाये रे-ऽऽ

(11) स्थितिकरण उपगूह करे, अकुटिल ही परिणाम धरे-2
देव-गुरु सम्मान करे-ऽऽऽ
कहा है श्रुत में जिनवर ने, वैसा यहाँ बखान करे-2
सम्यक् आराधन हो-3 इनमें नजराये रे-ऽऽ।।3910।।

(12) मिथ्यात्वी भावना करे, भर उमंग अनुसरण करे-2
स्तुति सेवा अनुमोद करे-ऽऽऽ
अज्ञानी संशंय करता, मोह मोघ श्रद्धा धरता-2
जिनमत सम्यक् से हो-वह दूर हट जाये रे-ऽऽ।।3911।।

(13) कर्म आत्मा अलग कहे, देव-गुरु स्तुति सेव करे-2
समदर्शन में रुचि रखे-ऽऽऽ
भर उमंग वो जिनमत में, सम्यक्मय आचरण करे-2
उससे समदर्शन हो-3 कभी दूर न जाये रे-ऽऽ।।3912।।

(14) ज्ञान हो तो अज्ञान तजो, सम्यक् हो मिथ्यात्व तजो-2
पुण्य करो तो पाप तजो-ऽऽऽ
धर्म अहिंसा पाया तो, मोह तथा आरंभ तजो-2
तब ही पाने का हो-3 कुछ सार दिखाये रे-ऽऽ।।3913।।

(15) ग्रंथि त्याग तो दीक्षा धर, संयम भाव तो तू तप कर-2
निर्मोही तो राग न कर-ऽऽऽ
वीतरागता होने पर, उत्तम ध्यान यहाँ तू कर-2
तब ही जीवन में हो-3 जिनधर्म समाये रे-ऽऽ।।3914।।

(16) मोह और अज्ञान लिए, कुमार्ग के आचरण किये-2
रहे भटकते यहाँ जिये-ऽऽऽ
हो मिथ्यात्व अज्ञान उदय, बंध पाप का ना हो भय-2
अज्ञानी अंधा हो-3 खुद ही हो जाये रे-ऽऽ।।3915।।

(17) दर्शन-ज्ञान से पर्यय को, देखे और जानेगा वो-2
सम्यग्दृष्टि मनुज अहो-ऽऽऽ
वह सम्यक् श्रद्धान करे, चरित दोष का अंत करे-2
धीरे-धीरे वह हो-3 सारे गुण पाये रे-ऽऽ।।3916।।

(18) सम्यग्दर्शन-ज्ञान चरित, ये करते जीवों का हित-2
उनको हों जो मोह रहित-ऽऽऽ
निजगुण का आराधक जो, शीघ्र कर्म क्षय करता वो-2
अल्प समय में हो-3 शिवपुर पा जाये रे-ऽऽ।।3917।।

(19) सम्यक् का करता पालन, संख्याती कर्म क्षालन-2
सम्यक् व्रत पालन पावन-ऽऽऽ
चारित को करते पालन, कर्म असंख्याती गालन-2
कर्म झड़ जाये हों-3 तो दुख मिट जायें रे-ऽऽ।।3918।।

(20) द्वय विध संयमचरण यहाँ, सागार निरागार यहाँ-2
सागार सग्रंथ यहाँ-ऽऽऽ
निरागार निर्ग्रन्थ यहाँ, मुनियों को ये रहे यहाँ-2
श्रावण-श्रमणों के हो-3 ये भेद बताएँ रे-ऽऽ।।3919।।

चारित्र सम्यग्दर्शन बिन, पंगु बताएँ रे–2
चारित्र की महिमा, सब यहाँ सुनाये रे–ऽऽ

(21) दर्शन व्रत का सामायिक है, सचित्त निश भुक्ति त्याग है–2
ब्रह्मचर्य आरंभ त्याग है–ऽऽऽ
परिग्रह अनुमति त्याग यहाँ, उद्दिष्ट त्याग का भाव यहाँ–2
इनको धारे जो हो–3 सागार कहाये रे–ऽऽ।।3920।।

(22) पाँच अणुव्रत त्रय गुणव्रत, चार कहे हैं शिक्षाव्रत–2
श्रावक के ये बारह व्रत–ऽऽऽ
इनका जो अनुकरण करे, देशव्रती सब उसे कहें–2
अणुव्रत जो धारे हो–3 वह सुरगति पाये रे–ऽऽ।।3921।।

(23) स्थूल हिंसा त्याग करे, स्थूल असत्य न कथन करे–2
स्थूल चोरी त्याग करे–ऽऽऽ
पर स्त्री परिहार करे, परिग्रह का परिमाण करे–2
पाँच ये अणुव्रत हो–3 जिनवर बतलाएँ रे–ऽऽ।।3922।।

(24) विदिशा दिशा प्रमाण करें, अनर्थदण्ड का त्याग करें–2
सीमित भोग–उपभोग करें–ऽऽऽ
गुणव्रत ये ही तीन कहे, व्रती इन्हीं पर अमल करे–2
गुणव्रत जीवन में हो–3 गुणवृद्धि करायें रे–ऽऽ।।3923।।

(25) पहला सामायिक व्रत है, दूजा प्रोषध का व्रत है–2
तीजा अतिथि पूजा है–ऽऽऽ
चौथा सल्लेखन धारें, शिक्षाव्रत ये उच्चारे–2
चारों शिक्षाव्रत हो–3 शिक्षा दिलवाये रे–ऽऽ।।3924।।

(26) श्रावक का संयमाचरण, उस संबंधी चरित कथन–2
किया यहाँ उसका वर्णन–ऽऽऽ
शुद्ध और निष्कलंक जो, मुनियों संबंधी चारित जो–2
उसके वर्णन को हो–3 आगे बतलाएँ रे–ऽऽ।।3925।।

(27) पंचेन्द्रिय वश में करना, पंच महाव्रत को धरना–2
पाँच समिति पालन करना–ऽऽऽ
तीन गुप्ति धारण करना, संयम चारित का कहना–2
संवर का रूप हो–3 मुनिराज दिखाएँ रे–ऽऽ।।3926।।

(28) इन्द्रिय विषय मनोज़ लगें, या फिर वे अमनोज़ लगें–2
राग–द्वेष के भाव जगें–ऽऽऽ
चेतन और अचेतन में, इन सबका हम त्याग करें–2
विषयों का त्याग हो–3 संवर कहलाए रे–ऽऽ।।3927।।

(29) हिंसा त्याग अहिंसा व्रत, असत्य–अदत्त विरति हैं व्रत–2
चौथा ब्रह्मचर्य है व्रत–ऽऽऽ
पंचम अपरिग्रह व्रत है, ये ही कहे पाँच व्रत है–2
इनको जो धारे हो–3 वो पुण्य कमाए रे–ऽऽ।।3928।।

(30) ये व्रत स्वयं महान कहे, धारे वो भी महां हुए–2
तभी महाव्रत इन्हें कहें–ऽऽऽ
महापुरुष साधन करते, व्रत धारण कर निज रमते–2
इनको आचरण हो–3 वह धन्य कहाये रे–ऽऽ।।3929।।

चारित्र सम्यग्दर्शन बिन, पंगु बताएँ रे-2
चारित्र की महिमा, सब यहाँ सुनाये रे-ऽऽ

(31) मनो-वचन की गुप्ति यहाँ, चलें तो ईर्यासमिति यहाँ-2
श्रेष्ठ एषणा समिति यहाँ-ऽऽऽ
आदान-निक्षेपण समिति, इन भावों से अच्छी गति-2
पाँचों भावों में हो-3 अहिंसा नजराये रे-ऽऽ।।3930।।

(32) क्रोध भाव से सत्य मिटे, हास्य लोभ से सत्य हटे-2
भय के कारण झूठ कहे-ऽऽऽ
क्रोध लोभ भय हास्य नहीं, मोह हटे तो सत्य यहीं-2
इनको त्यागे तो हो-3 वह सत्य कहाये रे-ऽऽ।।3931।।

(33) शून्य घरों में वास करे, उजड़े में आवास करे-2
शुद्धि सहित जो ग्रहण करे-ऽऽऽ
किसी जीव को नहिं रोके, धर्मी से नहिं बहस करे-2
ये सब अचौर्य हो-3 व्रत भाव बताएँ रे-ऽऽ।।3932।।

(34) स्त्री कथा न कभी सुनें, उनके अंग नहीं देखे-2
पूर्वरती नहिं स्मरणें-ऽऽऽ
गरिष्ठ भोजन नहीं करे, तन को कभी न शृंगारें-2
ब्रह्मचर्य व्रत हो-3 के भाव बताएँ रे-ऽऽ।।3933।।

(35) मनोज्ञ और अमनोज्ञ विषय, पाँचों इन्द्रिय लगें उभय-2
इनके कारण होता भय-ऽऽऽ
इनमें राग न द्वेष करें, यही भावना रोज करें-2
परिग्रह त्यागी में हो-3 ये भाव बताएँ रे-ऽऽ।।3934।।

(36) ईर्या भाषा एषणा, आदान और निक्षेपणा-2
संयम शुद्धि गवेषणा-ऽऽऽ
संयम की ये शुद्धि करें, श्रेष्ठ भाव की सिद्धि करें-2
पाँचों समिति ही हो-3 व्रत श्रेष्ठ बनायें रे-ऽऽ।।3935।।

(37) जैसा ज्ञान स्वरूप कहा, वही आत्मा रूप अहा-2
श्रुत में गुरु ने यही कहा-ऽऽऽ
भव्यों को समझाने को, जिनवर ने उपदेश दिया-2
ज्ञान स्वरूपी हो-3 आतम बतलाएँ रे-ऽऽ।।3936।।

(38) जीव-अजीव यहाँ जाने, द्रव्य रूप वह पहचाने-2
उसको समज्ञानी माने-ऽऽऽ
राग-द्वेष से रहित यहाँ, यही मोक्ष का मार्ग यहाँ-2
मुक्ती के पथ को हो-3 जिनवर बतलाएँ रे-ऽऽ।।3937।।

(39) सम्यग्दर्शन-ज्ञान यहाँ, सम्यक्मय चारित्र यहाँ52
श्रद्धा से ये जान यहाँ-ऽऽऽ
योगी श्रद्धा ज्ञान धरे, उसको शुक्लध्यान मिले-2
इनको पाकर के हो-3 शिवपुर पा जाये रे-ऽऽ।।3938।।

(40) सम्यग्ज्ञानी सुन्दर जल, सम्यग्दर्शन अति निर्मल-2
भाव विशुद्ध करे हर पल-ऽऽऽ
मोक्ष महल के वासी हो, सिद्ध प्रभू अविनाशी हों-2
त्रिभुवन चूड़ामणि हो-3 योगी बन जायें रे-ऽऽ।।3939।।

चारित्र सम्यग्दर्शन बिन, पंगु बताएँ रे–2
चारित्र की महिमा, सब यहाँ सुनाये रे–ऽऽ

(41) ज्ञानहीन इंसान यहाँ, भटके जाने कहाँ–कहाँ–2
इष्ट लाभ नहिं मिले यहाँ–ऽऽऽ
गुण दोषों को जानो अब, जानो सम्यग्ज्ञान यहाँ–2
ज्ञान उपकारी हो–3 सबको बतलाएँ रे–ऽऽ।।3940।।

(42) चारित का अनुसरण करे, पर वस्तु नहिं वरण करे–2
पर भावों का क्षरण करे–ऽऽऽ
अनुपम सुख वह शीघ्र करे, निश्चय से यह जान अरे–2
ज्ञानी शुद्धातम से हो–3 सुख पा जाये रे–ऽऽ।।3941।।

(43) दृग चारित्राचार यहाँ, अल्प शब्द में कहा यहाँ–2
प्रभु ने जो सर्वज्ञ यहाँ–ऽऽऽ
सम्यक् संयम सहित कहे, द्रव्य आचरण विधान कहे–2
ज्ञान स्वभावी हो–3 भगवन बतलाएँ रे–ऽऽ।।3942।।

(44) शुद्ध भाव नित हृदय धरो, चिंतन द्रव्य प्राभृत्त करो–2
उसके फल को प्राप्त करो–ऽऽऽ
चतुर्गति को नाश करो, शीघ्र सिद्ध पद प्राप्त करो–2
ध्यान चिंतन का हो–3 ये फल बतलाएँ रे–ऽऽ।।3943।।

चारित पाहुड ग्रंथ का लिखा पद्य अनुवाद।
इसको पढ़कर साधुजन करते श्रुत संवाद।।

चारित धर चारित्र को कहे तो अनुभव जान।
अनुभव–अनुभव से मिले–दिखलाता विज्ञान।।

चारित स्वयं महान है, धारे, होय महान।
पूज्य पुरुष बनकर यहाँ, कर लेता कल्याण।।

चारितधारी देव हों, इन्द्र–सुरेन्द्र महान।
इक दिन वो चारित्र धर पा जाते निर्वाण।।

चारित से इन्द्रादि हों, फिर तीर्थंकर जान।
सभी सुखों को भोगकर पाते हैं निर्वाण।।

इति चारित्र पाहुड

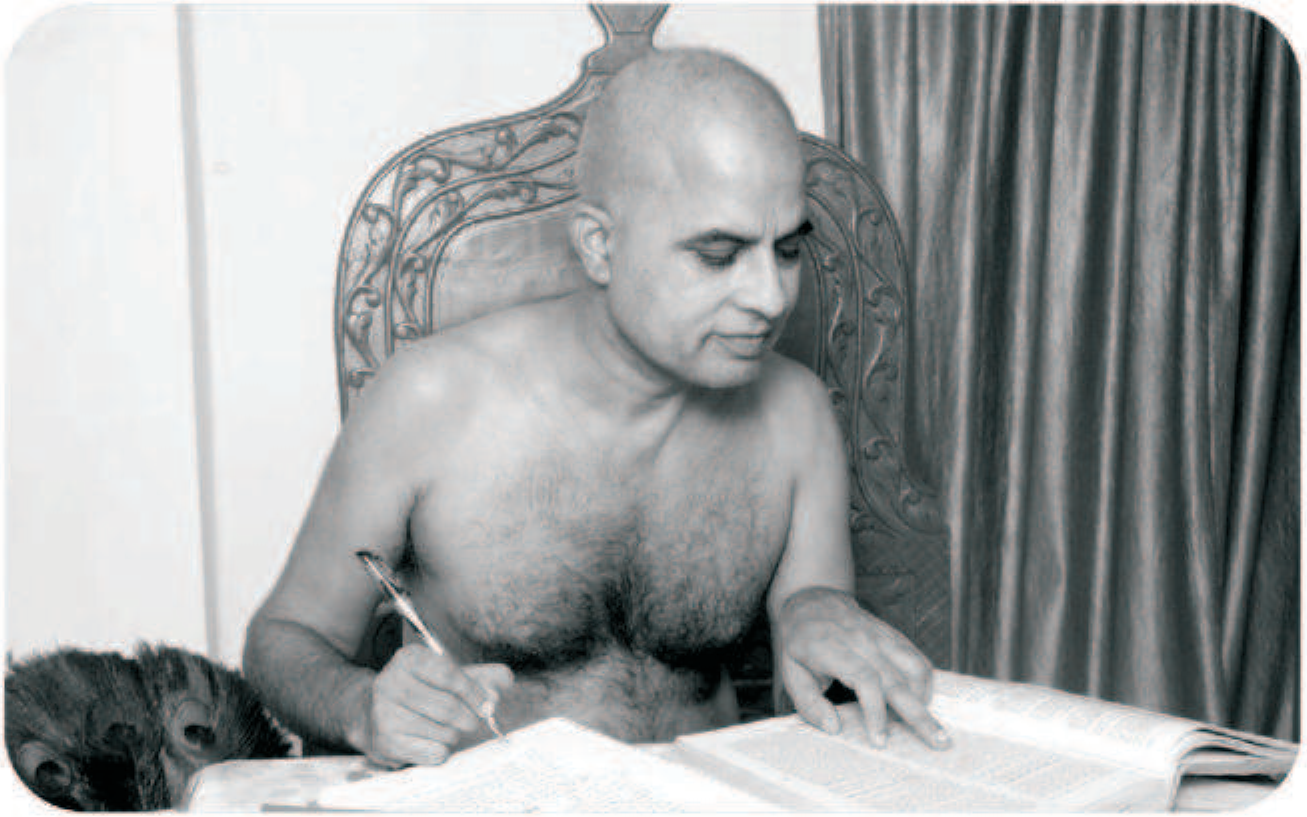

भाव पाहुड़

मूल ग्रंथकर्ता : आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी

पद्यानुवाद : उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

शुद्ध भाव को भायें हम–भव पार कराये रे–ऽऽ
भाव प्राभृत में हो–3 मन शुद्ध करायें रे–ऽऽऽ

मंगलाचरण

(1) सौ इन्द्रों से वंदित हैं, परमदेव तीर्थंकर हैं–2
सिद्ध परम परमेश्वर हैं–ऽऽ
तीन ऊन नवकोटि मुनि, उन्हें भावयुत् वंदन है–2
भाव प्राभृत को हो–3 मैं कहना चाहूँ रे–ऽऽ।।3944।।

(2) भावलिंग परमार्थ यहाँ, द्रव्यलिंग परमार्थ कहाँ–2
भावों से गुण दोष यहाँ–ऽऽ
द्रव्यलिंग हो भाव बिना, उसे मिले नहिं सिद्धि यहाँ–2
भाव ही पहला हो–3 जिनलिंग बताएँ रे–ऽऽ।।3945।।

(3) बाह्य परिग्रह त्याग नहीं, तो अंतस् वैराग्य नहीं–2
कहते हैं यह बात यमी–ऽऽ
अंतस् परिग्रह बैठा हो, बाह्य त्याग बेकार यहीं–2
अंतस् की ज्योति हो–3 रोशन कर जाये रे–ऽऽ।।3946।।

(4) भाव रहित जो त्याग करे, कोटि जनम तपखूब धरे–2
फिर भी सिद्धि न प्राप्त करे–ऽऽ
भले यहाँ मुनि बन जाये, तप करता कर लटकाये–2
भाव बिन मुनि भी हो–3 भव तिर नहिं पाये रे–ऽऽ।।3947।।

(5) जिनको हो संतान यहाँ– उनमें है पुरुषत्व यहाँ–2
पौरुष बिन संतान कहाँ?–ऽऽ
वैसे द्रव्यलिंग नहिं हो, कैसे भावलिंग फिर हो–2
द्रव्य बिन भाव हो–3 हो कभी न पाये रे–ऽऽ।।3948।।

(6) भाव त्याग नहिं आ पाये, द्रव्य त्याग वह कर जाये–2
बाह्य त्याग क्या कर पाये–ऽऽ
जब तक अंतस् त्याग नहीं, तब तक कोई लाभ नहीं–2
भावों की महिमा हो–3 ज्ञानी बतलाएँ रे–ऽऽ।।3949।।

(7) भाव रहित मुनि बन जाये, कभी न वह शिवपुर पाये–2
मुनि बनकर भी भटकाये–ऽऽ
भाव प्रमुख बतलाया है, भेष भाव की छाया है–2
भावों को भूला हो–3 वो भव भ्रम जाये रे–ऽऽ।।3950।।

(8) भाव रहित मुनि पद धारा, नंतों बार ये उच्चारा–2
भटक रहा मारा–मारा–ऽऽ
हे आत्मन्! अब चेत जरा, भाव सहित मुनि बनो जरा–2
वर्ना इस भव से हो–3 मुक्ति नहिं पाये रे–ऽऽ।।3951।।

(9) जिन भावों के बिन भटके, चारों गतियों में अटके–2
कुदेव कुमानुष में पटके–ऽऽ
उन भावों को भावित कर, भव दुक्खों से तौबा कर–2
उत्तम ही भाव हो–3 सुख राह दिखाएँ रे–ऽऽ।।3952।।

(10) अपना हित करने वाले, निज सुख की चाहत वाले–2
क्यों भोगों में मतवाले–ऽऽ
दीर्घकाल दुख भोगे हैं, नरकों में संजोगे हैं–2
अब तो अपना हित हो–3 कर ले हे भाई रे–ऽऽ।।3953।।

शुद्ध भाव को भायें हम–भव पार करायें रे–ऽऽ
भाव प्राभृत में हो–3 मन शुद्ध करायें रे–ऽऽऽ

(11) दुख पाये चिरकाल यहाँ, पशुगति में दुखहाल जहाँ–2
जले–तपे छिद दुक्ख जहाँ–ऽऽ
असहनीय पीड़ा देखी, फिर भी आतम नहिं चेती–2
अब तो वो भाव हो–3 मन ला सुख पाओ रे–ऽऽ।।3954।।

(12) तन मन के बहु दुख पाये, आगंतुक सहसा आये–2
नंतकाल से भटकाये–ऽऽ
अब मनुष्य बन भाव बना, अपने सारे दुक्ख हटा–2
मानव ही भव में हो–3 निज दुक्ख मिटाये रे–ऽऽ।।3955।।

(13) देवगति में देव हुआ, वियोग में दुख खूब हुआ–2
तीव्र मानसिक क्लेश हुआ–ऽऽ
शुभ भावों से रहित रहा, भव में सुख को नहीं लखा–2
अब तो शुभ भावों का हो–3 योग बनाओ रे–ऽऽ।।3956।।

(14) कान्दर्पी, किल्विषी यहाँ, सम्मोही दानवी यहाँ–2
अशुभ भावना धरी यहाँ–ऽऽ
मुनि बन रहा द्रव्यलिंगी, नीच देव फिर हुआ यहाँ–2
अच्छे भावों को हो–3 मन में नहिं लाये रे–ऽऽ।।3957।।

(15) मुनि बन मोही चिंतन कर, नीच भाव उर में धरकर–2
पार्श्वस्थ मुनि सा बनकर–ऽऽ
भावनायें खोटी करके, बीज दुखों का बो करके–2
नीच देवों में हो–3 कई जन्म धराए रे–ऽऽ।।3958।।

(16) गुण विभूति लख देवों की, बहुत हीनता मन में की–2
मरे तो गति तिर्यंच मिली–ऽऽ
हीन देव बन दुक्ख सहे, अच्छे भाव न कभी किये–2
ऐसे मर मरकर हो–3 हमने दुख पाये रे–ऽऽ।।3959।।

(17) की विकथायें चार यहाँ, होकर के मदमत्त यहाँ–2
अशुभ लक्ष्य कर जिया यहाँ–ऽऽ
नीच कुदेव यहाँ होकर, देवगति में रहा यहाँ–2
विकथा के भाव हो–3 दुर्गति करवायें रे–ऽऽ।।3960।।

(18) घृणित और अपवित्र यहाँ, गर्भाशय मलयुक्त यहाँ–2
माँ की कोख वसतिका में–ऽऽ
नंतकाल तक रहा वहाँ, हे मुनि तूने किया यहाँ–2
अब तो शुद्धातम हो–3 का भाव बनाओ रे–ऽऽ।।3961।।

(19) माँ का दूध पिया इतना, सागर बन जाये उतना–2
जो जल से भी अनंतगुना–ऽऽ
शुद्ध भाव बिन भटका तू, कितने भव से अटका तू–2
अब तो निज आतम हो–3 का फूल खिलाओ रे–ऽऽ।।3962।।

(20) कई बार तू मरा यहाँ, दुख से व्याकुल हुई हैं माँ–2
अश्रुधार भी बही यहाँ–ऽऽ
आँसू समुद्र से ज्यादा, बहे हैं माँ के बहुत यहाँ–2
ऐसे कर भाव हो–3 जो मरण मिटायें रे–ऽऽ।।3963।।

शुद्ध भाव को भायें हम–भव पार कराये रे–ऽऽ
भाव प्राभृत में हो–3 मन शुद्ध करायें रे–ऽऽऽ

(21) अनंत तन को धरने से, नख केशों और हड्डी से–2
ढ़ेर मेरु पर्वत जैसे–ऽऽ
अब तो आकर यहाँ संभल, सोच जरा तू अपना कल–2
भाव कर ऐसे हो–3 ये तन मिट जाये रे–ऽऽ।।3964।।

(22) जल थल अग्नि वायु नभ में, जन्म लिये चिरकाल रमे–2
देव कुरु उत्तर कुरु में–ऽऽ
इन्द्रिय मन वश होकर के, भटके हैं इस भव वन में–2
सम्यक्त्व पाने के हो–3 भाव बनाओ रे–ऽऽ।।3965।।

(23) सारे पुद्गल ग्रास बने, फिर भी मन ये नहीं भरे–2
कभी हुआ नहिं तृप्त अरे–ऽऽ
नया समझकर खाता है, भोंदू समझ न पाता है–2
ज्ञानी सब समझे हो–3 नहिं राग बढ़ाए रे–ऽऽ।।3966।।

(24) प्यास से पीड़ित हुआ जिया, पानी इतना यहाँ पिया–2
समुद्र भी लघु रूप दिखा–ऽऽ
तन के लिए हैं पाप किये, खुद के लिए न कभी जिये–2
अब तो निज भाव हो–3 लाकर सुख लाओ रे–ऽऽ।।3967।।

(25) हे मुनि! ये संसार यहाँ, जहां न दुख का पार यहाँ–2
तन धारे कई बार यहाँ–ऽऽ
जनम–मरण के दुक्ख सहे, कहें वे अपरंपार यहाँ–2
अब तो इस भव में हो–3 शुभ भाव बनाओ रे–ऽऽ।।3968।।

(26) विष वेदना व रक्तक्षय, शस्त्र चोट, संक्लेश व भय–2
श्वास आहार निरोधी भय–ऽऽ
अकाल मृत्यु इनसे हो, पाप भाव ये सभी अहो–2
हे मुनि! इन भावों को हो–3 दूर हटाओ रे–ऽऽ।।3969।।

(27) नदी तालाबों में पड़ना, पर्वत पर चढ़ना गिरना–2
अंग भंग फिर हो जाना–ऽऽ
इनसे अकाल मौत अहो, हे मुनि ऐसे भाव तजो–2
तब ही हे ज्ञानी हो–3 भव मुक्ति पाये रे–ऽऽ।।3970।।

(28) मनुष्य वा तिर्यंचों में, कई बार हम जन्में हैं–2
मरे यहाँ अपमृत्यु में–ऽऽ
कितने काल व्यतीत हुए, हे मुनि अब तो चेत अरे–2
पापी भावों में हो–3 मन कभी न लाओ रे–ऽऽ।।3971।।

(29) एक ही अन्तर्मुहूर्त में, जाकर तूने निगोद में–2
मरण सहस्रों धारे हैं–ऽऽ
कहते हैं छियासठ हजार, और तीन सौ छत्तिस बार–2
इनसे बचने को हो–3 सम्यक्त्व सजाओ रे–ऽऽ।।3972।।

(30) द्वि इन्द्रिय के अस्सी भव, त्रय इन्द्रिय के साठ हैं भव–2
चतुरिंद्रिय के चालिस भव–ऽऽ
पंचेन्द्रिय के चौबीस हैं, कहते ऐसा जिनवर हैं–2
मिथ्याभावों से हो–3 ऐसे दुख पाये रे–ऽऽ।।3973।।

शुद्ध भाव को भायें हम–भव पार कराये रे–ऽऽ
भाव प्राभृत में हो–3 मन शुद्ध करायें रे–ऽऽऽ

(31) रत्नत्रय नहिं धारा है, तब ही भ्रमण अपारा है–2
जहाँ न दुख निरवारा है–ऽऽ
अब रत्नत्रय धारण कर, उसी रूप आचरण तू कर–2
ऐसे ही भाव हो–3 भव भ्रमण मिटायें रे–ऽऽ।।3974।।

(32) आतम में जो लीन रहें, उसको सम्यग्दृष्टि कहें–2
जाने, सम्यग्ज्ञान कहें–ऽऽ
आतम में आचरण करे, सम्यक्चारित उसे कहे–2
रत्नत्रय ये ही हो–3 मिलकर कहलायें रे–ऽऽ।3975।।

(33) कुमरण कर कइ बार मरे, इसीलिए जग मरे फिरे–2
सुमरण के अब भाव करे–ऽऽ
जन्म मरण जो नष्ट करे, पंडित पंडित मरण वरे–2
ऐसे ही भाव हो–3 भव पार करायें रे–ऽऽ।।3976।।

(34) परमाणु सम स्थान नहिं, द्रव्यलिंगी जहाँ मरा नहीं–2
भ्रमण करे सब लोक यहीं–ऽऽ
भावलिंग गर धर लेता, भवसागर वह तिर लेता–2
अब तो हे मुनिवर हो–3 शुभ भाव बनाओ रे–ऽऽ।।3977।।

(35) मुनिव्रत धारण यहाँ किया, तत्त्व प्रीति से रहित रहा–2
तपश्चरण भी घोर किया–ऽऽ
मरण अनंतों काल किये, जन्म मरण दुख प्राप्त किये–2
तत्त्व की प्रीति हो–3 भव प्रीत मिटायें रे–ऽऽ।।3978।।

(36) अनंत भव भवसागर में, सभी आयु और पुद्गल में–2
धारण किये यहाँ हमने–ऽऽ
भावलिंग नहिं धर पाया, मर मरकर अति दुख पाया–2
भावलिंगी बन हो–3 भव भ्रम मिट जाये रे–ऽऽ।।3979।।

(37) सर्वलोक में भ्रमण किया, हर प्रदेश पर जन्म लिया–2
दुख ही दुख में रहा जिया–ऽऽ
आज धर्म मुनि पाया हो, पुण्य उदय जब आता हो–2
अच्छे भावों से हो–3 अब संयम लाओ रे–ऽऽ।।3980।।

(38) एक अंगुल में छ्यानवें रोग, कहते हैं जो धरते योग–2
पूरे तन में कितने रोग–ऽऽ
दल–दल में तू फँसा हुआ, रोगों में तू धँसा हुआ–2
इनसे बचने के हो–3 अब भाव बनाओ रे–ऽऽ।।3981।।

(39) पर वश होकर पर भव में, सहे रोग फिर भी उसमें–2
क्यूँ रम रहा है अब इसमें–ऽऽ
महायशस्वी हे मुनिवर! अब तो अपनी करो फिकर–2
रोगों के भाव हो–3 अब दूर हटाओ रे–ऽऽ।।3982।।

(40) खून पीव कृमि जहाँ रहें, पित्त आँत और मूत्र रहे–2
प्लीहा यकृत खरिस रहे–ऽऽ
इनके बीच गर्भ में तू, रहा माह दस भव में तू–2
अब तो इन दुख से हो–3 मन दूर हटाओ रे–ऽऽ।।3983।।

शुद्ध भाव को भायें हम–भव पार कराये रे–ऽऽ
भाव प्राभृत में हो–3 मन शुद्ध करायें रे–ऽऽऽ

(41) माँ का जूठन ग्रहण किया, मल के बीच निवास किया–2
कई दिनों ये दुक्ख सहा–ऽऽ
अब हे मुनिवर! चेत यहाँ, भाव करो नित शुद्ध यहाँ–2
ऐसे कर भाव हो–3 सब जन्म नशाये रे–ऽऽ।।3984।।

(42) विष्ठा में तू पड़ा यहाँ, मल का भक्षण किया यहाँ–2
शिशुकाल में ज्ञान बिना–ऽऽ
हे मुनिवर! अब ज्ञानी बन, भावलिंग का कवच पहन–2
तब ही आगे ये हो–3 दुख नहीं सताएँ रे–ऽऽ।।3985।।

(43) हड्डी, माँस, रुधिर रूपी, पित्त पीव चर्बी रूपी–2
ये तन है मटका रूपी–ऽऽ
दुर्गन्धित मल मूत्र भरा, नहीं है इसमें सार जरा–2
ऐसे इस तन से हो–3 तप भाव बनाओ रे–ऽऽ।।3986।।

(44) बन्ध भाव से मुक्त यहाँ, वही समझना मुक्त यहाँ–2
बाह्य त्याग नहिं मुक्त यहाँ–ऽऽ
आभ्यंतर स्नेह तजो, हे मुनि! आतम भाव भजो–2
अच्छे ही भाव हो–3 भव बंध मिटायें रे–ऽऽ।।3987।।

(45) छोड़ा तन का संग यहाँ, मन में मान कषाय यहाँ–2
मुनि बनकर क्या हुआ यहाँ–ऽऽ
बाहुबली ने योग धरा, ज्यों ही मान कषाय तजा–2
वैसे ही झट से हो–3 कैवल्य सजायें रे–ऽऽ।।3988।।

(46) सब कुछ जिनने त्याग किया, जंगल में आवास किया–2
मन से यहाँ निदान किया–ऽऽ
श्रमणपना नहिं आ पाया, द्रव्यलिंग फिर भरमाया–2
अब तो भावों से हो–3 मुनि पद अपनाओ रे–ऽऽ।।3989।।

(47) मुनि निदान कर दोष करे, ऊपर चढ़ वह अधः गिरे–2
भव में दुखमय भ्रमण करे–ऽऽ
ऐसा कोई स्थान नहीं, जहाँ न जीव ये जन्म धरे–ऽऽ
अब कर वो भाव हो–3 भव पार कराये रे–ऽऽ।।3990।।

(48) भाव रहित तू साधु बना, सभी प्रदेशों पर भटका–2
चौरासी लख तन घूमा–ऽऽ
भावलिंग अब पैदा कर, द्रव्यलिंग से गुजर न कर–2
भावों का फल ही हो–3 भव पार कराये रे–ऽऽ।।3991।।

(49) द्रव्यरूप में मुनि बना, पुण्य बाँधकर देव बना–2
जो चाहा वो नहीं मिला–ऽऽ
अब तू भावलिंग धर ले, इस अपार भव को तिर ले–2
ज्ञानी ही भाव से हो–3 मुनि बन पाये रे–ऽऽ।।3992।।

(50) बाहु मुनि जिनलिंग सहित, क्रोध कषायी दोष सहित–2
पड़े नरक में किया अहित–ऽऽ
नगर भस्म कर दिया यहाँ, दुर्गति में पड़ गया यहाँ–2
द्रव्यलिंगी की हो–3 दुर्दशा बताएँ रे–ऽऽ।।3993।।

शुद्ध भाव को भायें हम–भव पार कराये रे–ऽऽ
भाव प्राभृत में हो–3 मन शुद्ध करायें रे–ऽऽऽ

(51) शिवकुमार मुनि श्रेष्ठ हुए, युवति देख नहिं विहल हुए–2
धीर–वीर गंभीर हुए–ऽऽ
वे ही जम्बूस्वामि हुए, केवलज्ञानी यहाँ हुए–2
भाव श्रमणों को हो–3 शिवमार्ग दिखाए रे–ऽऽ।।3994।।

(52) द्वीपायन इक मुनि हुए, क्रोध में यहाँ प्रसिद्ध हुए–2
रत्नत्रय से भ्रष्ट हुए–ऽऽ
भावलिंग जब नहीं रहा, तो भव में ही भ्रमण किया–2
द्रव्य से भाव हो–3 अब श्रेष्ठ बनाओ रे–ऽऽ।।3995।।

(53) भव्यसेन इक मुनि हुए, सारे श्रुत का ज्ञान लिए–2
फिर भी मिथ्यादृष्टि रहे–ऽऽ
जिनश्रुत पर श्रद्धान नहीं, उसको सम्यग्ज्ञान नहीं–2
भव्यसेन मुनि हो–3 अभव्य कहाए रे–ऽऽ।।3996।।

(54) शिवभूति मुनि श्रेष्ठ हुए, भावों से अतिशुद्ध हुए–2
तुषमास भिन्न विचार किये–ऽऽ
निर्मल थे शुभ भाव यहाँ, पाया केवलज्ञान यहाँ–2
अनपढ़ वे मुनिवर हो–3 सद्भाव बनाएँ रे–ऽऽ।।3997।।

(55) भाव नग्न ही नग्न यहाँ, द्रव्य नग्न नहिं साध्य यहाँ–2
भाव से कर्म विनष्ट यहाँ–ऽऽ
मुनि ही कर्म विनाश करे, शिवपुर का आवास करे–2
हे मुनि भावों को हो–3 अब प्रमुख बनाओ रे–ऽऽ।।3998।।

(56) भाव रहित जो मुनि यहाँ, कार्याकार्य विवेक कहाँ–2
रत्नत्रय हो उन्हें कहाँ–ऽऽ
हे मुनि अब तुम धीर बनो, आत्म भावना नित्य करो–2
भावों की महिमा हो–3 मुनि पद दिखलाये रे–ऽऽ।।3999।।

(57) तन ममत्व से रहित यहाँ, मान कषाय विनष्ट यहाँ–2
आत्मस्वरूप विलीन यहाँ–2
राग–द्वेष नहिं मोह करे, भावलिंग मुनि उसे कहें–2
ऐसे ही मुनिवर हो–3 शिवपथ अनुयायी रे–ऽऽ।।4000।।

(58) छोड़ो भाव ममत्व अरे, निर्ममत्व के भाव करे–2
निज आतम अवलम्ब करे–ऽऽ
पर भावों को छोड़ूँ मैं, निज से निज को जोड़ूँ मैं–2
ऐसे ही मुनिवर हो–3 जगपूज्य बतायें रे–ऽऽ।।4001।।

(59) सम्यग्दर्शन ज्ञान कहो, चारित प्रत्याख्यान कहो–2
संवर या फिर ध्यान कहो–ऽऽ
निश्चय से सब आतम है, सब में मेरी आतम है–2
ये सब भावों में हो–3 अति शुद्धि बढ़ाएँ रे–ऽऽ।।4002।।

(60) लक्षण दर्शन–ज्ञान यहाँ, कर्म रहित है अमर यहाँ–2
मेरा यही स्वरूप यहाँ–2
बाकी सब कर्मों से हैं, अन्य भाव नहिं मेरे हैं–2
मेरी निज आतम हो–3 गुणमयी बताएँ रे–ऽऽ।।4003।।

शुद्ध भाव को भायें हम–भव पार कराये रे–ऽऽ
भाव प्राभृत में हो–3 मन शुद्ध करायें रे–ऽऽऽ

(61) शुद्धातम का ध्यान करो, पर से आतम मुक्त करो–2
अपने भाव विशुद्ध करो–ऽऽ
हे मुनि! गर शिवपद चाहो, तो ये भाव हृदय लाओ–2
शुद्ध ही भाव हो–3 मुनि श्रेष्ठ बनाएँ रे–ऽऽ।।4004।।

(62) उत्तम भाव संयुक्त करे, चिंतन आत्म स्वभाव करे–2
जरा–मरण वह नाश करे–ऽऽ
निज स्वभाव में लीन हुआ, इक दिन वह सिद्धत्व वरे–2
मुनि पद पाने का हो–3 वह फल पा जाये रे–ऽऽ।।4005।।

(63) मुनि हैं ज्ञान स्वभावी जो, हैं चैतन्य स्वरूपी जो–2
ये सब निरुपण है उनको–ऽऽऽ
कर्मों का क्षय करना है, तो ये सभी जानना है–2
तब ही भावों में हो–3 स्थिरता आये रे–ऽऽ।।4006।।

(64) शुद्धात्म अस्तित्व यहाँ, करते जो स्वीकार यहाँ–2
वे पाते सम्यक्त्व यहाँ–ऽऽ
रत्नत्रय को धारण कर, हो जाते वो सिद्ध यहाँ–2
शुद्ध स्वभाव हो–3 सम्यक्त्व दिलाए रे–ऽऽ।।4007।।

(65) रूप गंध, रस वर्ण नहीं, चेतन गुण संयुक्त यहीं–2
संस्थान स्त्री पुरुष नहीं–ऽऽ
गुण अव्यक्त विराजित है, वीतरागमय राजित है–2
ऐसा अनुभव में हो–3 हे मुनि! उर लाओ रे–ऽऽ।।4008।।

(66) पाँच ज्ञान को भाओ तुम, तम अज्ञान हटाओ तुम–2
शीघ्र ये भाव बनाओ तुम–ऽऽ
संस्कार हो भावों का, स्वर्ग मोक्ष का प्राप्त हुआ–2
ज्ञान का भाव हो–3 सुख शांति दिलाए रे–ऽऽ।।4009।।

(67) भाव रहित बहु शास्त्र पढ़ो, खूब सुनाओ और सुनो–2
होगा कुछ नहिं ये सोचो–ऽऽ
भाव शुद्ध उर लाएगा, धर्म स्वयं आ जायेगा–2
श्रावक या मुनि हो–3 सब भाव बनाये रे–ऽऽ।।4010।।

(68) नारक और तिर्यंच यहाँ, द्रव्य से हैं सब नग्न यहाँ–2
भावित नहिं मुनिपना यहाँ–2
द्रव्यलिंग धारी मुनि है, उसमें भी मुनिपना कहाँ–2
भाव से मुनि की हो–3 महिमा सब गायें रे–ऽऽ।।4011।।

(69) बिन सम्यक् मुनि दुक्ख भरे, भाव बिना मुनि भ्रमण करे–2
नंत जन्म और मरण करे–ऽऽ
शुद्धभावना रहित मुनि, रत्नत्रय नहिं प्राप्त करे–2
हे मुनि! भावों को हो–3 तुम शुद्ध बनाओ रे–ऽऽ।।4012।।

(70) हे मुनि! तंत्र मंत्र करके, लौकिकता में लग करके–2
ज्योतिष मंत्र दिखा करके–ऽऽ
अपयश–पाप कमाता है, मुनि पद यहाँ लजाता है–2
ऐसा ये मुनि पद हो–3 भव ताप बढ़ाए रे–ऽऽ।।4013।।

शुद्ध भाव को भायें हम–भव पार करायें रे–ऽऽ
भाव प्राभृत में हो–3 मन शुद्ध करायें रे–ऽऽऽ

(81) अंतर दोष रहित होकर, जिन मुद्रा को धारण कर–2
बन निर्ग्रन्थ यहाँ मुनिवर!–ऽऽ
अंतस में हो दोष अगर, दोषित हो जाता बाहर–2
निर्मल भावों को हो–3 अंतस में लाओ रे–ऽऽ।।4014।।

(82) धर्म में हो विश्वास नहीं, रत्नत्रय हो पास नहीं–2
दोषों का आवास वहीं–ऽऽ
नट सा मुनि बन जाता है, नग्न हो खेल दिखाता है–2
मुनि बन मनुपर्यय हो–3 निष्फल हो जाये रे–ऽऽ।।4015।।

(83) जिन भावना न उर में हैं, राग परिग्रह युक्त जो हैं–2
द्रव्यलिंग धारी मुनि हैं–ऽऽ
बोधि समाधि इन्हें न हो, रत्नत्रय सम्पत्ति न हो–2
जिन के शासन में हो–3 ये भटकन पायें रे–ऽऽ।।4016।।

(84) मिथ्यात्वादि विनष्ट करें, कषाय सारी नष्ट करें–2
द्रव्यलिंग फिर प्रकट करें–ऽऽ
भावलिंग पहले होता, पश्चात द्रव्य लिंग होता–2
दोनों ही लिंग हो–3 इक साथ बताएँ रे–ऽऽ।।4017।।

(85) द्रव्य भावलिंग दोनों हों, स्वर्गों के सुख उसको हों–2
मोक्ष के सुख उसको ही हों–ऽऽ
भावलिंग जिसमें नहिं हो, वो दुर्गति का पात्र अहो–2
हे मुनि! भावों को हो–3 अपने में लाओ रे–ऽऽ।।4018।।

(86) चक्री देव विभूति यहाँ, मिलती है कई बार यहाँ–2
इनमें कोई सार कहाँ–ऽऽ
रत्नत्रय अति दुर्लभ है, भव्यों को ही संभव है–2
दुर्लभ सम्पत्ति हो–3 बोधी बतलाएँ रे–ऽऽ।।4019।।

(87) मिथ्या मोह विनष्ट हुआ, समता भाव प्रकृष्ट हुआ–2
क्रोध मान सब नष्ट हुआ–ऽऽ
रत्नत्रय की बोधि मिले, उसको यहाँ समाधि मिले–2
ऐसे साधु को हो–3 सब कुछ मिल जाये रे–ऽऽ।।4020।।

(88) विषय विरक्त जो साधु हो, सोलहकारण भावे वो–2
कर्म तीर्थंकर बाँधे वो–ऽऽ
रत्नत्रय को पा करके, केवलज्ञानी होता वो–2
विषयों का त्याग हो–3 शुभ भाव बनाये रे–ऽऽ।।4021।।

(89) बारह तप आचरण करो, चरण में तेरह क्रिया धरो–2
मन को वश में यहाँ करो–ऽऽ
ज्ञान का अंकुश साथ रखो, कर्मों को तुम नाश करो–2
तब ही हे मुनिवर! हो–3 संयम फल पाए रे–ऽऽ।।4022।।

(80) पंच वस्त्र का त्याग जहाँ, दोनों संयम धरे यहाँ–2
करता भिक्षा भाव यहाँ–ऽऽ
भूमि पर जो शयन करे, उर में भिक्षा भाव धरे–2
ऐसी जिन दीक्षा हो–3 जिनमत बतलाएँ रे–ऽऽ।।4023।।

शुद्ध भाव को भायें हम–भव पार कराये रे–ऽऽ
भाव प्राभृत में हो–3 मन शुद्ध करायें रे–ऽऽऽ

(81) सब रत्नों में हीरा है, सब वृक्षों में चंदन है–2
सभी मतों में जिनमत है–ऽऽ
सारे कर्म नशाता है, ये संसार मिटाता है–2
उत्तम से उत्तम हो–3 तुम भाव बनाओ रे–ऽऽ।।4024।।

(82) व्रत पूजा शुभ कार्य करो, संयम समिति विधान करो–2
ये सब जानो पुण्य अहो–ऽऽ
मोह क्षोभ से रहित यहाँ, भाव समझना धर्म यहाँ–2
धर्म बिन पुण्य हो–3 भव भ्रमण कराये रे–ऽऽ।।4025।।

(83) पुण्य में श्रद्धा रुचि धरे, प्रीति करे स्पर्श करे–2
अभिलाषा वह मोक्ष करे–ऽऽ
परंपरा से कारण है, साक्षात् नहिं वो कारण हैं–2
पुण्य इस भव में हो–3 सब भोग दिलाए रे–ऽऽ।।4026।।

(84) रागादिक सब दोष रहित, आत्मलीन सम्यक्त्व सहित–2
पार हो आतम धर्म सहित–ऽऽ
धर्म ही कारण एक यहाँ, मिटा सके दुख सभी यहाँ–2
धर्म से प्राणी हो–3 भव को तिर जाये रे–ऽऽ।।4027।।

(85) पुण्य कार्य तो बहुत करे, आत्म भावना नहीं करे–2
भव में वह चिरकाल रहे–ऽऽ
सिद्धि उसे नहिं मिले कभी, भटके वह पर्याय सभी–2
पुण्य इस भव से हो–3 नहिं पार कराये रे–ऽऽ।।4028।।

(86) शुद्धातम श्रद्धान करो, उसका ही नित ज्ञान करो–2
सिद्ध स्वरूपी ध्यान करो–ऽऽ
ऐसा गर कर जाओगे, मोक्ष यहाँ तुम पाओगे–2
शुद्ध भावों से हो–3 सिद्धत्व तू पाये रे–ऽऽ।।4029।।

(87) भाव अशुद्ध वो मत्स्य करे, तभी सातवे नर्क पड़े–2
फिर वो क्रूर तिर्यंच बने–ऽऽ
आत्मस्वरूप भावना कर, सम्यग्दर्शन प्राप्त तू कर–2
शुद्ध हो भाव हो–3 शुद्धात्म दिखाये रे–ऽऽ।।4030।।

(88) भाव रहित सब शास्त्र पढ़े, बाह्य परिग्रह त्याग करे–2
पर्वत वन में योग धरे–ऽऽ
भाव रहित है व्यर्थ यहाँ, कहते जिन गुरुदेव यहाँ–2
भावों से सबका हो–3 उत्तम फल पाये रे–ऽऽ।।4031।।

(89) मन बंदर को शांत करो, इन्द्रिय सेना भग्न करो–2
बाह्य वेष धारक साधो!–ऽऽ
राग–द्वेष बढ़ते जिससे, ऐसा कोइ न काम करो–2
भावों में अपने हो–3 निर्मलता लाओ रे–ऽऽ।।4032।।

(90) गुरु की सच्ची भक्ति करो, श्रुत जिन प्रतिमा भक्ति करो–2
जिनमत के अनुसार करो–ऽऽ
भाव को बहुत विशुद्ध करो, मिथ्या कषाय त्याग करो–2
शुद्ध भावों से हो–3 परमात्म दिखाए रे–ऽऽ।।4033।।

शुद्ध भाव को भायें हम-भव पार कराये रे-ऽऽ
भाव प्राभृत में हो-3 मन शुद्ध करायें रे-ऽऽऽ

(91) तीर्थंकर ध्वनि में आया, गणधर प्रभु ने बतलाया-2
द्वादशांगमय दर्शाया-ऽऽ
अनुपम वो श्रुतज्ञान यहाँ, चिंतन कर शुभ भाव यहाँ-2
भावों की शुद्धि हो-3 चैतन्य दिखाए रे-ऽऽ।।4034।।

(92) ज्ञानामृत जल पान किया, तृषा दाह को नाश किया-2
सबसे उत्तम काम किया-ऽऽ
तीन लोक चूड़ामणि हो, सिद्धालय को प्राप्त किया-2
ज्ञान ही सबको हो-3 गुणसभी दिलाए रे-ऽऽ।।4035।।

(93) बाइस परिषह सहन करो, जिनश्रुत आज्ञा हृदय धरो-2
संयम का नहिं घात करो-ऽऽ
छोड़ प्रमाद अहितकारी, बन जिनवर आज्ञाकारी-2
तब ही जीवन का हो-3 आधार दिखाए रे-ऽऽ।।4036।।

(94) पत्थर डूबा पानी में, छेद-भेद नहिं हो उसमें-2
दीर्घकाल रहे पानी में-ऽऽ
परीषहों उपसर्गों में, क्षुभित न हों नहिं खेद करें-2
उनमें सहने की हो-3 शक्ति बढ़ जाये रे-ऽऽ।।4037।।

(95) बारह अनुप्रेक्षाओं का, पच्चीस भावनाओं का-2
चिंतन कर उन भावों का-ऽऽ
बाह्य लिंग से होगा क्या, लक्ष्य तुझे मिल पाये क्या-2
लक्ष्य जीवन में हो-3 लक्षण ले आये रे-ऽऽ।।4038।।

(96) चौदह जीव समासों का, चौदह गुणस्थानों का-2
नव पदार्थ और तत्त्वों का-ऽऽ
हे मुनि! इनका चिंतन कर, सबसे विरक्त होने पर-2
वरना इस भव में हो-3 तू भटकन पाये रे-ऽऽ।।4039।।

(97) दस भेद अब्रह्म तजो, ब्रह्मचर्य नव भेद भजो-2
निज में ही तुम रमण करो-ऽऽ
मैथुन में आसक्त न हो, वर्ना भव में भटकन हो-2
खुद में रमकर के हो-3 अनुभव शुभ लाओ रे-ऽऽ।।4040।।

(98) चारों आराधन पाये, भाव सहित इनको भाये-2
केवलज्ञान वही पाये-ऽऽ
भाव रहित चिरकाल मुनि, भव में भ्रमते ही जाये-2
भावों से धर्म हो-3 भव पार कराये रे-ऽऽ।।4041।।

(99) भावलिंग धारी हैं जो, पाते हैं कल्याणक वो-2
तीर्थंकर पद मुक्ति वो-ऽऽ
द्रव्यलिंगधारी मुनि जो, पशु, मनु बनें कुदेव जो-2
भावों से मुनि बन हो-3 दुख दर्द मिटाओ रे-ऽऽ।।4042।।

(100) छ्यालिस दोष रहें जिसमें, वो अशुद्ध जो भोजन लें-2
तिर्यंचों में दुक्ख सहें-ऽऽ
अब तू ऐसा भाव न कर, दोष रहित तू भोजन कर-2
तब ही ये दुक्ख हो-3 तेरे मिट पायें रे-ऽऽ।।4043।।

शुद्ध भाव को भायें हम–भव पार कराये रे–ऽऽ
भाव प्राभृत में हो–3 मन शुद्ध करायें रे–ऽऽऽ

(101) बुद्धि विवेकहीन होकर, भोजन की इच्छाएँ कर–2
अहंकार में चूर होकर–ऽऽ
सचित्ताहार किया तूने, तभी हुआ दुख हे पामर–2
ज्ञानी हे आतम हो–3 अब शुद्ध विचारो रे–ऽऽ।।4044।।

(102) कंदमूल पत्ते खाये, बीज सचित्र पुष्प खाये–2
सोच गलत जब उर लाये–ऽऽ
अदयावश इनको खाकर, अनंत भव में भरमाये–2
अभिमानी बनकर हो–3 दुख स्वयं बढ़ाये रे–ऽऽ।।4045।।

(103) दर्शन ज्ञान व चारितमय, तप उपचार है पाँच विनय–2
तीन योग से कर अनुनय–ऽऽ
इससे तीर्थंकर पद हो, स्वर्ग–मोक्ष की प्राप्ति अहो–2
विनयी साधु को हो–3 गुण सब मिल जायें रे–ऽऽ।।4046।।

(104) भक्ति हृदय में ला करके, अपनी शक्ति दिखा करके–2
जिन भक्ति अपना करके–ऽऽऽ
वैयावृत्ति श्रेष्ठ करो, तीर्थंकर का बंध करो–2
वैयावृत्ति से हो–3 निर्मलता आये रे–ऽऽ।।4047।।

(105) मन–वच–काय अशुभ करके, दोष किया गारव धरके–2
पाप किया पापी बनके–ऽऽ
हे मुनि! अब आलोचन कर, गुरु चरणों में गर्हा कर–2
तब इन पापों से हो–3 मुक्ती मिल पाये रे–ऽऽ।।4048।।

(106) निर्ममत्व को प्राप्त हुए, महा दिगम्बर मुनि हुए–2
सम्यक् रूपी भाव किये–ऽऽ
उपसर्गों को सहन करें, दुर्जन के दुर्वचन सहें–2
ऐसे ही मुनिवर! हो–3 मल कर्म हटाएँ रे–ऽऽ।।4049।।

(107) क्षमा धर्म से शोभित हैं, देव नरों से पूजित हैं–2
पुण्यमयी मुनि चर्चित हैं–ऽऽ
पापों का क्षय करता जो, स्वर्ग–मोक्ष को पाता वो–2
धर्म से शोभित हो–3 गुणवान बताएँ रे–ऽऽ।।4050।।

(108) क्षमा धर्म का फल जानो, क्षमा धर्म को पहचानो–2
सबको हे मुनि! क्षमा करो–ऽऽ
क्रोधाग्नि जो पहले की, क्षमा नीर से साफ करो–2
भाव क्षमा का हो–3 बहु प्रेम बढ़ाए रे–ऽऽ।।4051।।

(109) जाना सार – असार यहाँ, रत्नत्रय है सार यहाँ–2
धर्म से हो भव पार यहाँ–ऽऽ
दीक्षा पर जो भाव किया, उसे स्मरण करो यहाँ–2
सम्यक् हो निर्मल हो–3 वो ज्ञान बढ़ाए रे–ऽऽ।।4052।।

(110) भावलिंग को शुद्ध तू कर, लिंग चउ तरह धारण कर–2
पापों से तू तौबा कर–ऽऽ
भाव रहित जो मुनि यहाँ, उनको भव से मुक्ति कहाँ–2
द्रव्यलिंगी को हो–3 फल द्रव्य दिखाये रे–ऽऽ।।4053।।

शुद्ध भाव को भायें हम-भव पार कराये रे-ऽऽ
भाव प्राभृत में हो-3 मन शुद्ध करायें रे-ऽऽऽ

(111) मैथुन परिग्रह, भय भोजन, मोहित हो क्यों करे भ्रमण-2
भव में है अति दुःख सघन-ऽऽ
पराधीनता दिलवाएँ, चारों संज्ञा दुख लायें-2
संज्ञा से बचता हो-3 वह धर्म बढ़ाए रे-ऽऽ।।4054।।

(112) ख्याति लाभ की चाह न कर, शुद्ध भाव तू अपने कर-2
योग आतापन धारण कर-ऽऽ
मूलगुणों का पालन कर, वृक्षमूल में योग तू धर-2
तब ही हे साधो! हो-3 शुभ फल मिल जाये रे-ऽऽ।।4055।।

(113) सात तत्त्व पर श्रद्धा कर, योग शुद्ध कर जीवन भर-2
धर्म अर्थ के भाव तू कर-ऽऽ
शुद्धातम का ध्यान तू कर, अनुभव कर अपने में सुधर-2
निर्मल हो ध्यान हो-3 तो फल पा पाये रे-ऽऽ।।4056।।

(114) तत्त्व भावना नहीं करे, पदार्थ चिंतन नहीं करे-2
द्रव्य दृष्टि भी नहीं करे-ऽऽऽ
तब तक जरा-मरण न मिटे, शिवपद को नहिं प्राप्त करें-2
तत्त्व पदार्थ का हो-3 मयी भाव बनाओ रे-ऽऽ।।4057।।

(115) सारे पाप पचाता है, सारा पुण्य पचाता है-2
शुद्ध भाव कर जाता है-ऽऽ
भाव से होता बंध यहाँ, भाव से होता मोक्ष यहाँ-2
भाव आतम को हो-3 विस्तृत कर जाये रे-ऽऽ।।4058।।

(116) जिनमत से विपरीत रहे, अशुभ कर्म का बंध करे-2
अशुभ लेश्या योग धरे-ऽऽ
कषाय और मिथ्यात्व रहे, असंयमी बन यहाँ जिये-2
ऐसे ही जीव हो-3 भव में दुख पायें रे-ऽऽ।।4059।।

(117) जिनमत पर श्रद्धान करे, वो ही सम्यग्दृष्टि अरे-2
शुभ कर्मों का बंध करे-ऽऽ
कभी शुभाशुभ बंध करे, संयम का नित भाव धरे-2
इक दिन शिवपद को हो-3 वह ही पा जाये रे-ऽऽ।।4060।।

(118) सम्यग्ज्ञान विचार करे, ज्ञानावरण विनाश करे-2
कर्म आच्छादन दूर करे-ऽऽ
सारे कर्म मिटाऊँगा, अनंत गुण प्रकटाउँगा-2
ज्ञानी यह सोचे हो-3 और ज्ञान बढ़ाए रे-ऽऽ।।4061।।

(119) अठदश सहस्र शील के गुण, चौरासी लख उत्तरगुण-2
इनका चिंतन करे निपुण-ऽऽ
हे मुनि! चिंतन-मनन करो, इनका ही अनुकरण करो-2
ज्यादा क्या कहना हो-3 वह सब पा जाये रे-ऽऽ।।4062।।

(120) आर्त्त-रौद्र नित ध्यान करे, इनका चिंतन रोज करे-2
बहुत काल तक यहाँ करे-ऽऽ
इनको अब तू छोड़ यहाँ, धर्मशुक्ल कर ध्यान यहाँ-2
तब ही भव दुख से हो-3 मुक्ति मिल पाए रे-ऽऽ।।4063।।

शुद्ध भाव को भायें हम-भव पार कराये रे-SS
भाव प्राभृत में हो-3 मन शुद्ध करायें रे-SSS

(121) इन्द्रिय सुख में व्याकुल जो, द्रव्य श्रमण नहिं ध्यानी वो-2
तन से मात्र दिगम्बर वो-SS
इन्द्रिय विषय निराकुल हैं, वे ध्यानी मुनि साधु हैं-2
कर्मों के बंधन हो-3 छेदन कर जायें रे-SS।।4064।।

(122) वीतरागमय रहे सफर, दीपक जलता रहे प्रखर-2
ऐसा कहते हैं गुरुवर-SSS
राग रहित हो जीव अगर, ध्यान दीप तब जले प्रवर-2
राग को नित्य हो-3 ये ध्यान मिटाये रे-SS।।4065।।

(123) परमेष्ठी का ध्यान सुमिर, मंगलोत्तम ध्यान तू कर-2
अर्हंतों का चिंतन कर-SS
सभी गुणों के स्वामी हैं, आराधन फल धामी हैं-2
उनका गुणगान हो-3 भव पार कराये रे-SS।।4066।।

(124) ज्ञानामृत जल को पीकर, भक्ति भाव उर में धरकर-2
भव्य जीव रत्नत्रय धर-SS
जन्म-मरण के दुक्खों से, हो जाते हैं अजर-अमर-2
ज्ञान की महिमा हो-3 तब समझ में आये रे-SS।।4067।।

(125) बीज यहाँ जल जाता है, कभी न फिर उग पाता है-2
मिट्टी में मिल जाता है-SS
कर्मनाश हो जाते हैं, भव में जन्म न पाते हैं-2
भेद विज्ञानी हो-3 मुनि जन्म न पायें रे-SS।।4068।।

(126) भाव श्रमण समदृष्टि यहाँ, पाता है सुख सभी यहाँ-2
भाव प्रधानी धर्म यहाँ-SS
द्रव्य श्रमण मिथ्यादृष्टि, पाता है भव दुक्ख यहाँ-2
गुण दोष जानो हो-3 और भाव बनाओ रे-SS।।4069।।

(127) भाव श्रमण भव भंग करे, तीर्थंकर का संग करे-2
स्वर्ग मोक्ष का रंग भरे-SS
भावलिंग धारण कर ले, सारे सुख अपने कर ले-2
हे मुनि! वह भाव हो-3 आचरण में आये रे-SS।।4070।।

(128) भावमुनि हैं धन्य यहाँ, मायाचार न करें यहाँ-2
दृग-बुध-व्रत से शुद्ध यहाँ-SS
तीन न्यून नवकोटि मुनि, उन्हें हमेशा नमन यहाँ-2
उनके वंदन से हो-3 बंधन मिट जायें रे-SS।।4071।।

(129) मुनि तप की महिमा पाकर, पा लेते ऋद्धि आकर-2
मोहित नहिं होते मुनिवर-SS
देव भी ऋद्धि को पाते, वे सब मोहित हो जाते-2
जिनमत से भावित हो-3 मुनि मोह न लाये रे-SS।।4072।।

(130) मोक्षरूप मुनि जान रहा, निज स्वरूप पहचान रहा-2
उसको ही नित चिन्त्य रहा-SSS
ऐसा मुनि है श्रेष्ठ यहाँ, भव सुख करे न चाह यहाँ-2
मानुष देवों के हो-3 क्या सुख वो चाहे रे-SS।।4073।।

शुद्ध भाव को भायें हम–भव पार करायें रे–ऽऽ
भाव प्राभृत में हो–3 मन शुद्ध करायें रे–ऽऽऽ

(131) जब तक नहीं बुढ़ापा हो, रोग न तन में आया हो–2
इन्द्रिय बल नहिं क्षीण अहो–ऽऽ
तब तक अपना हित कर ले, ज्ञान सहित चारित वर ले–2
वर्ना बुढ़ापा हो–3 दुख यहीं दिखाये रे–ऽऽ।।4074।।

(132) अनंत भव में भ्रमण किया, भोग सुखों में भाव किया–2
दश प्राणों का घात किया–ऽऽऽ
अब भोगों का त्याग करो, मन में सम्यक् भाव करो–2
जीवन में संयम हो–3 ले सुख अपनाओ रे–ऽऽ।।4075।।

(133) जीवों पर नित दया करो, अनायतनों का त्याग करो–2
आत्मतत्त्व की चाह करो–ऽऽ
तीनों योगों से ये कर, भावनाएँ उज्ज्वल तू कर–2
तब ही इस मन को हो–3 हित राह दिखाये रे–ऽऽ।।4076।।

(134) प्राणी वध को किया यहाँ, चारों गति में भ्रमा यहाँ–2
मरता फिरता रहा यहाँ–ऽऽऽ
दुख ही दुख में रहा जिया, कभी न सुख का काम किया–2
अब तो हे मानव हो–3 नहिं भ्रमण बढ़ाओ रे–ऽऽ।।4077।।

(135) योगों की तू शुद्धि कर, अभय दान तू सबको कर–2
कल्याणक की भावना कर–ऽऽ
हे मुनि! अभयदान से ही, पाता है पद अजर अमर–2
नंत वर्षों तक हो–3 सुख ही सुख पाये रे–ऽऽ।।4078।।

(136) क्रियावादी इक सौ अस्सी, अक्रियावादी चौरासी–2
अज्ञानी सड़सठ भासी–ऽऽ
वैनयिक बत्तिस भेद यहाँ, ये सब मिथ्यावाद यहाँ–2
इनको तज करके हो–3 सत्यार्थ समाओ रे–ऽऽ।।4079।।

(137) साँप दूध गुड़ पीते हैं, वे निर्विष नहिं होते हैं–2
वैसे ही अभव्य सब हैं–ऽऽ
जिनमत को सुन करके भी, गलत स्वभाव न तजते हैं–2
अमृत को पीकर हो–3 भी मर मर जाये रे–ऽऽ।।4080।।

(137) दृष्टि में मिथ्यात्व यहाँ, अभव्य की दुर्बुद्धि यहाँ–2
ग्रहीत मिथ्या राग यहाँ–ऽऽ
जिनमत श्रद्धा नहीं करे, सत्यरूप नहिं ज्ञान करे–2
रत्नत्रय उसको हो–3 फिर नहिं मिल पाये रे–ऽऽ।।4081।।

(139) हिंसा में अनुराग करे, पाखण्डी की भक्ति करे–2
दिखावटी तप खूब करे–ऽऽ
नीच गति में जाता है, सुख वो कभी न पाता है–2
उसका भव अंत हो–3 हो कभी न पाये रे–ऽऽ।।4082।।

(140) मिथ्यानय में मोह करे, श्रद्धा मिथ्या शास्त्र करे–2
मिथ्याभव में दुखी मरे–ऽऽ
भटक रहा चिरकाल यहाँ, अब तो हे मुनि चेत यहाँ–2
हे धीर मुनिवर हो–3 चिंतन शुभ लाओ रे–ऽऽ।।4083।।

शुद्ध भाव को भायें हम-भव पार करायें रे-ऽऽ
भाव प्राभृत में हो-3 मन शुद्ध करायें रे-ऽऽऽ

(141) उन्मार्गों का त्याग करो, जिनमत से अनुराग करो-2
मन में नित श्रद्धान करो-ऽऽ
तीन सौ त्रेसठ मिथ्यामत, इन सबका तुम त्याग करो-2
गुरुवर का कहना हो-3 ये श्रेष्ठ बनाए रे-ऽऽ।।4084।।

(142) जीव बिना तन शव जानो, सम्यक् बिन चलशव जानो-2
शव अपूज्य है ये जानो-ऽऽ
चल हो अथवा होवे शव, अपूज्य हैं ये जानें सब-2
सम्यग्दृग् चारित हो-3 तन पूज्य बनाए रे-ऽऽ।।4085।।

(143) तारों में है चन्द्र प्रधान, पशुओं में है सिंह प्रधान-2
मुनि श्रावक सम्यक्त्व प्रधान-ऽऽ
सम्यक् बिन मुनि नहिं शोभे, ज्ञान चरित दोनों खोवे-2
सम्यक् संयम में हो-3 चउ चाँद लगाये रे-ऽऽ।।4086।।

(144) सहस्र फण मणि नाग यहाँ, माणिक मणि प्रधान यहाँ-2
जिससे शोभित नाग यहाँ-ऽऽ
वैसे ही सम्यक् मणि है, इससे शोभित भव्य यहाँ-2
इसके बिन भव्य हो-3 नहिं शोभा पाये रे-ऽऽ।।4087।।

(145) निर्मल नभ में तारे हों, उसमें चन्द्र सुशोभित हो-2
वैसे ही ये बात अहो-ऽऽ
निरतिचार व्रत युक्त यहाँ, सम्यग्दर्शन शुद्ध यहाँ-2
तब ही जिनलिंग हो-3 अतिशोभा पाये रे-ऽऽ।।4088।।

(146) गुण दोषों को जान यहाँ, सम्यग्दर्शन धार यहाँ-2
गुण रत्नों में श्रेष्ठ यहाँ-ऽऽ
मोक्ष की पहली सीढ़ी है, कहते ये जिनदेव यहाँ-2
इसको पाने में हो-3 तुम शक्ति लगाओ रे-ऽऽ।।4089।।

(147) जीव ही कर्ता भोक्ता है, तन प्रमाण युत् अमूर्त है-2
दर्श-ज्ञान उपयोगी है-ऽऽ
अनादि अनिधन जीव कहा, जीव में ये अधिकार अहा-2
जिनवर ने ये सब हो-3 हमको बतलाए रे-ऽऽ।।4090।।

(147) सम्यक् का आराधक जो, भव्य जीव गुण साधक वो-2
हो चारित्र उपासक वो-ऽऽ
घाति कर्म क्षय करता वो, वीतरागता पाता वो-2
जिनमत आराधक हो-3 सारे गुण पाये रे-ऽऽ।।4091।।

(149) चार घातिया कर्म मिटे, ज्ञान-दर्श सुख बल प्रकटे-2
सब हैं आराधक उसके-ऽऽ
लोकालोक प्रकाश करे, सब कर्मों का नाश करे-2
सम्यग्दर्शन की हो-3 महिमा दिखलाए रे-ऽऽ।।4092।।

(150) ज्ञानी हो शिवगामी हो, परमेष्ठी जगनामी हो-2
विष्णु चतुर्मुख स्वामी हो-ऽऽ
परमात्मा सर्वज्ञ कहो, बुद्ध कहो या सिद्ध कहो-2
सम्यक् की महिमा हो-3 ये सब बतलाएँ रे-ऽऽ।।4093।।

शुद्ध भाव को भायें हम-भव पार कराये रे-SS
भाव प्राभृत में हो-3 मन शुद्ध करायें रे-SSS

(151) दोष अठारह रहित हैं जो, लोक प्रकाशित दीपक जो-2
परमौदारिक तन में जो-SS
घातिकर्म से मुक्त हुए, केवलज्ञान संयुक्त हुए-2
हे प्रभु अब हमको हो-3 वह ज्ञान दिलाओ रे-SS।।4094।।

(152) श्रेष्ठ भक्ति अनुराग करें, जिनेन्द्र प्रभु पग प्यार करें-2
भक्तिभाव से नमन करें-SS
भव तरु मूल उखाड़े वो, वीतराग ध्वज गाड़ें वो-2
भव के बंधन से हो-3 वे मुक्ति पायें रे-SS।।4095।।

(153) पत्र कमलिनी का होता, जल से लिप्त नहीं होता-2
उसका ये स्वभाव होता-SS
समदृष्टि त्यों स्वभाव हो, विषय कषाय न लिप्त होता-2
जल में कमल सा हो-3 अति भिन्न दिखाये रे-SS।।4096।।

(154) जो मुनि संयमवान यहाँ, शील गुणों के धाम यहाँ-2
उनका है गुणगान यहाँ-SSS
मलिन चित्त दोषी है जो, वे श्रावक सम नहीं यहाँ-2
शील गुणधारी हो-3 मुनि धन्य कहाएँ रे-SS।।4097।।

(155) धीर-वीर वे पुरुष यहाँ, क्षमा हृदय में धरें यहाँ-2
इन्द्रिय जयी महान यहाँ-SS
निज आतम बल को पाकर, जीती सभी कषाय यहाँ-2
ऐसे मुनिवर को हो-3 हम शीश झुकाएँ रे-SS।।4098।।

(156) जिनका दर्शन ज्ञान महान, धन्य हैं वे अर्हत भगवान-2
करते भव्यों का कल्याण-SS
डूबे भवसागर में जो, उन्हें दिलाते मोक्ष निधान-2
ऐसे अर्हत के हो-3 हम सब गुण गायें रे-SS।।4099।।

(157) मोह महातरु पर छायी, विषयी माया भरमायी-2
लता बनी फूली आयी-SS
ज्ञान शास्त्र से छेद करें, वे मुनिगण अति धन्य कहें-2
उनकी महिमा को हो-3 सारा जग गाये रे-SS।।4100।।

(158) गारव मद नहिं मोह यहाँ, दया व करुणा भाव यहाँ-2
ऐसे मुनिवर श्रेष्ठ यहाँ-SS
चारित की तलवार लिये, सभी पाप को नाश किये-2
ऐसे मुनिवर ही हो-3 जग पूज्य बताएँ रे-SS।।4101।।

(159) जैसे नभ मे तारे हैं, उनसे शोभित इन्दु है-2
वैसे ही जिनमत में हैं-SS
गुण रूपी मणिमाला से, चन्द्र समां मुनि शोभित है-2
वे ही भव्यों को हो-3 भव पार लगाएँ रे-SS।।4102।।

(160) मुनि ने भाव विशुद्ध किये, चक्रवर्ती बलभद्र हुए-2
सुरेन्द्र गणधर आदि हुए-SS
चारण ऋद्धि पाकर के, परम सुखों को प्राप्त हुए-2
भावों की शुद्धि हो-3 सब कुछ दिलवाए रे-SS।।4103।।

शुद्ध भाव को भायें हम–भव पार कराये रे–ऽऽ
भाव प्राभृत में हो–3 मन शुद्ध करायें रे–ऽऽऽ

(161) निर्मल सम्यक् भाव किये, जरा मरण से रहित हैं वे–2
अजरामर मंगलमय वे–ऽऽ
वे अनुपम अत्यन्त विमल, उत्तम अतुल्य श्रेष्ठ धवल–2
उत्कृष्ट सिद्धि हो–3 वो प्राप्त कराएँ रे–ऽऽ।।4104।।

(162) तीन लोक से पूजित हैं, नित्य हैं शुद्ध निरंजन हैं–2
जग प्रसिद्ध गुण भंजन हैं–ऽऽ
सिद्ध प्रभु दृगज्ञान वरें, भाव विशुद्धि प्रदान करें–2
श्रेष्ठ हो भाव हो–3 तो प्रभु मिल जाये रे–ऽऽ।।4105।।

(163) धर्म अर्थ और काम यहाँ, श्रेष्ठ है मोक्ष निधान यहाँ–2
भावमयी परिणाम यहाँ–ऽऽ
हो विशुद्धता भावों की, जिस पर देना ध्यान यहाँ–2
अच्छे भावों से हो–3 अच्छा मिल जाये रे–ऽऽ।।4106।।

(164) निकट भव्य मुनि श्रेष्ठ यहाँ, सुने–पढ़े यह ग्रंथ यहाँ–2
प्रभु ने जिसको कहा यहाँ–ऽऽ
भाव प्राभृत को भाये जो, शाश्वत पद को पाये वो–2
कहते कुंदकुंद हो–3 भगवान कहाएँ रे–ऽऽ।।4107।।

भावों से भव भासना, भावों से शिवपान।
समझो भाव स्वभाव को, तो होता कल्याण।।

भावों से भव बंध हो, भावों से निर्बन्ध।
भाव विनिर्मल हो यहाँ, मिले चेतना छंद।।

भाव रहित भक्ति करे, मिले न शुभ परिणाम।
भक्ति में गर भाव हो, मिल जाते भगवान।।

एक भाव भव भ्रमण का, एक भाव भव पार।
एक भाव अज्ञान फल, एक ज्ञान फल सार।।

भावों की महिमा महिम, जानो धरि तुम ज्ञान।
ज्ञानी के हर भाव में, है अपना कल्याण।।

ज्ञान विनिर्मल भाव का, ठोस यहाँ आधार।
राग–द्वेष नहिं भाव में, वही भाव निज सार।।

लिखा भाव पाहुड़ यहाँ, उत्तम भाव प्रधान।
कुंदकुंद भगवान ने, दिया भव्य को ज्ञान।।

सर्वोत्तम वह भाव है, जिसमें आतम ज्ञान।
ज्ञान शुद्ध आतम करे, दिखलाये भगवान।।

सूत्र पाहुड़

मूल ग्रंथकर्ता : आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी
पद्यानुवाद : उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

कुंदकुंद भगवान हमें सूत्र बतायें रे–SSS
सूत्र में आगम हो–3 महिमा बतलाएँ रे–SSS

मंगलाचरण

(1) कहा है जो अरहंतों ने, गूँथा गणधर देवों ने–2
उसे कहा है गुरुओं ने–SS
अल्प शब्द को सूत्र कहें, ज्ञानी उसके अर्थ करें–2
ऐसे सूत्रों से हो–3 परमार्थ दिखाये रे–SS।।4108।।

(2) द्रव्य–भाव श्रुत सूत्र कहे, श्रुत में यहाँ निबद्ध किये–2
सूत्र जान शिवपथिक हुये–SS
गुरु परम्परा जान यहाँ, कर अपना कल्याण यहाँ–2
भव्य भावश्रुत हो–3 से मुनि पद पाये रे–SS।।4109।।

(3) सुई खो जाती धागा बिन, मानव खोता श्रुत के बिन–2
चतुर्गति में सूत्र के बिन–SSS
देव–शास्त्र–गुरु जाने जो, ये संसार विनाशे वो–2
सच्चा ही देव हो–3 भव पार लगाए रे–SS।।4110।।

(4) सूत्र सहित इंसान यहाँ, भव में खोता नहीं यहाँ–2
मुक्ति पाता शीघ्र यहाँ–SS
अप्रसिद्ध वो यहाँ मगर, निजानुभव में करे सफर–2
जल्दी ही भव से हो–3 वह मुक्ति पाये रे–SS।।4111।।

(5) जीव अजीव द्रव्य जाने, हेय उपादेय तत्त्व जाने–2
ये सम्यग्दृष्टि माने–SSS
जिनवर ने जो सूत्र कहे, उनको यथार्थ में जाने–2
वह ही समदृष्टि हो–3 सर्वज्ञ बताएँ रे–SS।।4112।।

(6) जिनवर ने जो उच्चारा, निश्चय मय और व्यवहारा–2
जानो सूत्र वही न्यारा–SS
योगी उसको जान यहाँ, पाते हैं सुख सौम्य यहाँ–2
पाप अनेक हो–3 इससे मिट जायें रे–SS।।4113।।

(7) श्रुत पद अर्थ विनष्ट हुए, वे श्रुत श्रद्धा रहित हुए–2
मिथ्यादृष्टि यहाँ हुए–SS
श्रावक हाथ न आहारे, अपने को नहिं मुनि समझे–2
खेल में ऐसे हो–3 कोई कार्य न लाये रे–SS।।4114।।

(8) सूत्र अर्थ से भ्रष्ट यहाँ, विष्णु रुद्र हों ऋद्धि यहाँ–2
पा सकता है स्वर्ग यहाँ–SS
फिर भटके चारों गति में, दुखी रहे कोटी भव में–2
संसारी है वह हो–3 मुक्ती नहिं पाये रे–SS।।4115।।

(9) श्रेष्ठ यहाँ चारित्र धरें, व्रत–उपवास महान करें–2
निर्भय सिंह समान रहें–SS
पद आचार्य सँभाले हैं, स्वच्छंदी मतवाले हैं–2
आगम उल्लंघन हो–3 मिथ्यात्व कहाये रे–SS।।4116।।

(10) पाणिपात्र में आहारी, नग्नरूप मुद्रा धारी–2
कहते जिनवर उपकारी–SSS
मोक्षमार्ग निर्ग्रन्थ यहाँ, शेष सभी भवमार्ग यहाँ–2
निर्ग्रन्थ पद ही हो–3 सन्मार्ग कहाये रे–SS।।4117।।

सूत्र ग्रंथ समझें ज्ञानी, जैसे तीर्थंकर वाणी–2
ज्ञानी ही सूत्र हो–3 श्रुत के लिख पायें रे–SS

(11) जो मुनि संयम सहित यहाँ, सभी परिग्रह रहित यहाँ–2
देव मनुज से पूज्य यहाँ–SSS
सबसे वंदनीय हैं वो, हैं निर्ग्रन्थ यहाँ पर जो–2
उनकी महिमा को हो–3 सारे जन गायें रे–SS।।4118।।

(12) परिषह बाइस सहन करें, कई शक्तियाँ हृदय धरें–2
कर्म निर्जरा खूब करें–SS
कुशल हैं ध्यान लगाने में, आतम अनुभव पाने में–2
ऐसे मुनिवर को हो–3 नित शीश झुकाएँ रे–SS।।4119।।

(13) सम्यग्दर्शन ज्ञान सहित, क्षुल्लक–ऐलक वस्त्र सहित–2
इच्छामि से जो वंदित–SS
मुनि मुद्रा से अन्य यहाँ, संयम हैं इक देश यहाँ–2
इच्छामि कहकर हो–3 सम्मान दिखाओ रे–SS।।4120।।

(14) आगम को जो जान रहा, आरंभ सारंभ त्याग रहा–2
इच्छामि अर्थ जान रहा–SS
सम्यक् पूर्वक स्थित है, परभव का सुख बढ़ा रहा–2
ऐसे ऐलक भी हो–3 अणुव्रती कहाएँ रे–SS।।4121।।

(15) धर्म कार्य सब खूब करे, व्रत तप भी अनुकरण करे–2
आत्मभावना नहीं करे–SS
भले ही वो सब कार्य करे, लेकिन मुक्ति नहीं मिले–2
अंतस् का लक्ष्य हो–3 साधन दिलवाये रे–SS।।4122।।

(16) शुद्धातम का ज्ञान करो, उसको ही श्रद्धान करो–2
कर प्रयत्न अनुभवी बनो–SS
चारित को अपना करके, मोक्ष प्राप्त भी यहाँ करो–2
तब ही श्रद्धा का हो–3 फल अनुभव पाये रे–SS।।4123।।

(17) बाल समां भी ग्रंथि नहीं, वे निर्ग्रन्थ कहे संयमी–SS
एक भुक्ति लें भोज यहीं–SS
अपने ही कर पात्र गहें, एक स्थान खड़े हो लें–2
ऐसे ही साधु हो–3 गुणधीर कहायें रे–SS।।4124।।

(18) तिलतुष परिग्रह नहीं रखें, उनको ही मुनिराज कहें–2
भवसमुद्र से वहीं तिरें–SS
थोड़े भी परिग्रही बनें, वे निगोद में जन्म धरें–2
परिग्रह पापों की हो–3 जड़ सभी बताएँ रे–SS।।4125।।

(19) मुनि बन रखे परिग्रह को, अप्रभावना करता वो–2
जग में निंदनीय है वो–SS
ग्रंथि रहित ही मुनि कहा, वंदनीय वो मुनि अहा–2
ऐसे ही मुनि से हो–3 जिनधर्म प्रभावी रे–SS।।4126।।

(20) पंच महाव्रत सहित हैं जो, तीन गुप्तियाँ धारें वो–2
ग्रंथि रहित पथ माने जो–SS
वही संयमी होता है, मुक्ती पथ का नेता वो–2
वंदन के योग्य हो–3 वे मुनि बतलाएँ रे–SS।।4127।।

सूत्र ग्रंथ समझें ज्ञानी, जैसे तीर्थंकर वाणी–2
ज्ञानी ही सूत्र हो–3 श्रुत के लिख पायें रे–SS

(21) भिक्षा को जो भ्रमण करे, कर पात्र में भोज करे–2
उत्कृष्ट श्रावक पात्र रहे–SS
भाषा समिति या मौन रहे, लिंग दूसरा इसे कहें–2
इच्छामि इनका हो–3 वंदन कहलाए रे–SS।।4128।।

(22) एक बार जो भुक्ति करे, एक वस्त्र जो ग्रहण करे–2
उन्हें आर्यिका मातृ कहे–SS
तीजा लिंग जिनागम में, जिनवर उनको यहाँ कहे–2
वंदामि इनका हो–3 वंदन कहलाये रे–SS।।4129।।

(23) वस्त्र सहित नहिं मुक्ति मिले, तीर्थंकर हों कोड़ भले–2
नग्न वेष शिवमार्ग चले–SS
तन पर कोई वस्त्र रहे, लज्जा या विकृति रहे–2
निर्मल परिणाम हो–3 शिवमार्ग दिलाए रे–SS।।4130।।

(24) काँख और स्तनों में, स्त्री योनि और नाभि में–2
सूक्ष्म जीव होते उसमें–SS
कैसे उनकी दीक्षा हो, जहाँ बहुत ही हिंसा हो–2
दीक्षा हो उनकी हो–3 उपचार बताएँ रे–SS।।4131।।

(25) शुद्ध है सम्यग्दर्शन से, युक्त है मुक्ति के पथ से–SS
कठिन चरित्र आचरण से–SS
स्वर्ग में हो उत्पन्न यहाँ, फिर भी दिक्षा नहीं यहाँ–2
उनमें महाव्रत हो–3 नहिं पूर्ण बताएँ रे–SS।।4132।।

(26) चित्त शुद्ध नहिं होता है, रुधिर स्राव भी होता है–2
ध्यान नहीं दृढ़ होता है–SS
स्त्रियों के परिणाम शिथिल, मायावी मन होता है–2
निर्भयता उनमें हो–3 नहिं कभी भी आये रे–SS।।4133।।

(27) समुद्र में से थोड़ा जल, लेकर वस्त्र करें निर्मल–2
मुनि त्यों लें आहार व जल–SS
सभी मिटा दी इच्छायें, उनको कभी न दुख आयें–2
अल्प आहार हो–3 मुनिवर बतलाएँ रे–SS।।4134।।

धागा सहित हो सुई यहाँ, खोती नहिं घरबार।
त्यों ही ज्ञान सहित मनुज, भटकें नहिं संसार।।
ज्ञान बिना इंसान ये, मुर्दा पशू समान।
ज्ञान से सुख पाते यहाँ, बन जाते भगवान।।

इति सूत्र पाहुड

लिंग पाहुड़

मूल ग्रंथकर्ता : आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी
पद्यानुवाद : उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

गतियों में तन पाने के, त्रयलिंग बताए रे–2
मुक्ति पाये तो हो–3 ये सब मिट जायें रे–SS

मंगलाचरण

(1) चार घातिया कर्म क्षरण, अर्हत् प्रभु को करूँ नमन–2
सिद्धों को करता वंदन–SSS
मुनि लिंग का करूँ कथन, भाव सहित मुनिलिंग शुभम्–2
ऐसे मुनि लिंग हो–3 की बात बताएँ रे–SS।।4135।।

(2) धर्म से होता लिंग यहाँ, लिंग न देता धर्म यहाँ–2
कहते हैं जिनदेव यहाँ–SS
भाव रहित जो वेष धरें, वेष न उसको लक्ष्य वरे–2
केवल ये भेष हो–3 नहिं मोक्ष दिलाए रे–SS।।4136।।

(3) बुद्धि पाप से मोहित हो, नग्न दिगम्बर भेषी हो–2
हँसी कराने वाला वो–SSS
सच्चे मुनि बदनाम करे, पाप कर्म में राग धरे–2
ऐसा वह साधु हो–3 आदर नहिं पाये रे–SS।।4137।।

(4) जो मुनि होकर नचता है, गाता और बजाता है–2
निंद्य कार्य करवाता है–SS
उसमें मुनि के भाव कहाँ, वो तो नंगा पशू यहाँ–2
कहते हैं जिनवर हो–3 सद्राह दिखाएँ रे–SS।।4138।।

(5) करे प्रयत्न परिग्रह का, फिर उसकी रक्षा करता–2
आर्तध्यान करता रहता–SSS
पाप से मोहित बुद्धि यहाँ, मुनि नहीं वो पशू यहाँ–2
परिग्रह पापों की हो–3 जड़ जिन बतलाएँ रे–SS।।4139।।

(6) गारव धर नित कलह करे, सबसे वाद विवाद करे–2
खेले जुआ कुकृत्य करे–SSS
साधु बन ये कार्य करे, ऐसा मुनि भी नरक पड़े–2
ऐसा ही साधु हो–3 नारकी बताएँ रे–SS।।4140।।

(7) पाप उदय जब हुआ जिया, सत्य भाव तब नष्ट किया–2
ब्रह्मचर्य तब नाश किया–SSS
ऐसा पापी मुनि यहाँ, भ्रमण करे सम्पूर्ण जहाँ–2
ऐसी दुर्बुद्धि हो–3 निर्लज्ज बनाए रे–SS।।4141।।

(8) सम्यग्दर्शन ज्ञान नहीं, चारित का उपधान नहीं–2
मुनि होकर वो मुनि नहीं–SS
आर्तध्यान वह करता है, भव में ही नित भ्रमता है–2
ऐसा वो मुनि भी हो–3 भव में दुख पाये रे–SS।।4142।।

(9) पर विवाह करवाता है, व्यापारी बन जाता है–2
करता घात कराता है–SSS
मुनि बन ऐसे पाप करे, वो नरकों में जन्म धरे–2
मुनि लिंग धारण कर हो–3 दुर्गति वो पाये रे–SS।।4143।।

(10) युद्ध विवाद कराता है, झूठ यहाँ बुलवाता है–2
चौपड़ को खिलवाता हो–SS
हिंसा कार्य कराता है, सट्टा ताश खिलाता है–2
ऐसे ये मुनि सब हो–3 नरकों में जायें रे–SS।।4144।।

गतियों में तन पाने के, त्रयलिंग बताए रे–2
मुक्ति पाये तो हो–3 ये सब मिट जायें रे–ऽऽ

(11) दर्शज्ञान तप संयम में, चारित और कर्तव्यों में–2
हो प्रवृत्त मुनि इन सब में–ऽऽ
जीवों को दुख देता है, जन्म नरक में लेता है–2
मुनि पद धर करके हो–3 नहिं दया दिखाए रे–ऽऽ॥4145॥

(12) होकर मुनि कषाय करे, काम कथा विकथाएँ करे–2
भोजन में आसक्ति धरे–ऽऽ
मायाचारी करे यहाँ, वो पशु है मुनि रहा कहाँ?–2
ऐसे वे मुनि ही हो–3 पशुगति में जायें रे–ऽऽ॥4146॥

(13) ईर्यासमिति नहीं पालें, क्लेशी बन आहार करें–2
ईर्ष्याभाव सदैव करें–ऽऽ
वो ढोंगी मुनि कहलाएँ, मुनिपद लज्जित कर जायें–2
त्यागी होकर भी हो–3 जिनमार्ग न पायें रे–ऽऽ॥4147॥

(14) बिना दी हुई वस्तु यहाँ, करता है जो ग्रहण यहाँ–2
पर की निंदा करे यहाँ–ऽऽ
दोष लगाये गैरों में, मुनि नहीं वो चोर यहाँ–2
कहते हैं गुरुवर हो–3 ये दुर्गति पायें रे–ऽऽ॥4148॥

(15) उछले कभी दौड़ता है, पृथ्वी कभी खोदता है–2
समिति पाल नहिं चलता है–ऽऽ
ऐसा मुनि पशु तुल्य कहा, उसमें संयम नहीं रहा–2
पशु भी अज्ञानी हो–3 नंगा बतलाएँ रे–ऽऽ॥4149॥

(16) वन आश्रम में रहते हैं, तोड़े धान कूटते हैं–2
पृथ्वी आदि खोदते हैं–ऽऽ
वृक्ष लता को छेदे जो, मुनि नहीं पशु ही हैं वो–2
मुनि ये हिंसा को हो–3 कैसे कर पाये रे–ऽऽ॥4150॥

(17) स्त्री से खुद राग करे, निर्दोषों पर दोष मढ़े–2
स्वयं ज्ञान से भ्रष्ट रहे–ऽऽ
दर्शन–ज्ञान रहित हैं जो, वो साधु नहिं पशु हैं वो–2
ऐसे ही साधु हो–3 पशुगति में जायें रे–ऽऽ॥4151॥

(18) गृहस्थों से स्नेह करे, साधु संघ में कलह करे–2
विनय रहित आचार धरे–ऽऽऽ
सुख–दुख में आत्मीय बने, हालचाल पर ध्यान धरे–2
ऐसा वह साधु हो–3 पशु ही कहलाए रे–ऽऽ॥4152॥

(19) खोटी करे प्रवृत्ति यहाँ, रहे संघ में साथ यहाँ–2
भले उसे श्रुत ज्ञान यहाँ–ऽऽ
भावलिंग में नहीं है वो, संयम का नहिं लेश अहो–2
ऐसे ही साधु हो–3 ढोंगी कहलाएँ रे–ऽऽ॥4153॥

(20) स्त्री से सम्पर्क करें, मंत्र तंत्र कर मुग्ध करें–2
पास बिठाकर बात करें–ऽऽ
भावलिंग से शून्य मुनि, करें कलंकित धर्म मुनि–2
पार्श्वस्थ मुनि वे हो–3 पशुतुल्य बताएँ रे–ऽऽ॥4154॥

गतियों में तन पाने के, त्रयलिंग बताए रे–2
मुक्ति पाये तो हो–3 ये सब मिट जायें रे–ऽऽ

(21) व्यभिचारिणी से भोजन ले, उसकी स्तुति रोज करे–2
उसको ही गुणवान कहे–ऽऽ
भ्रष्ट मुनि कहलाए वो, भावलिंग नहिं पाये वो–2
द्रव्यलिंगी वो हो–3 भटका–भटकाए रे–ऽऽ।।4155।।

(22) कष्ट सहन कर धर्म करे, होते हैं वे साधु खरे–2
धर्म की रक्षा वही करे–ऽऽ
भावलिंग वो पाते हैं, भाव सहित जो कार्य करे–2
ऐसे ही साधु हो–3 उत्तम पद पायें रे–ऽऽ।।4156।।

भाव रहित मुनि भेष है, द्रव्यलिंग वह जान।
क्रिया भाव से युक्त हो, भावलिंग पहचान।।

भाव बिना संयम यहाँ, क्या तुझको दिलवाय।
जो मुनि पद दे मोक्ष को, वो ही भव भटकाय।।

द्रव्यलिंग धन धान्य दे, नहिं देता शिवधाम।
भावलिंग निर्वाण दे, होते दुक्ख विराम।।

समिति नहीं जो पालते, करें अनैतिक काम।
ऐसा मुनि का द्रव्यलिंग, सफल करे नहिं काम।।

ज्ञान–भाव पैदा करे, द्रव्यलिंग मिट जाय।
भावलिंग उत्पन्न हो, सारे दुख मिट जाय।।

बोध पाहुड़

मूल ग्रंथकर्ता : आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी
पद्यानुवाद : उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

कर्म रहित शुद्धात्म यहाँ, गुरु बतलाएँ रे–2
बोध कराकर हो–3 बोधि दिलकाएँ रे–ऽऽ

मंगलाचरण

(1) कई शास्त्रों के ज़ाता जो, शुद्ध तपस्या धारक जो–2
कषाय मल के नाशक जो–ऽऽ
संयम सम्यक् धारी हैं, शुद्ध मार्ग उपकारी हैं–2
ऐसे आचार्यों हो–3 को शीश झुकाएँ रे–ऽऽ।।4157।।

(2) जीवों को जो हितकारी, प्राभृत बोध है सुखकारी–2
भव्यों को जो गुणकारी–ऽऽ
जैसा जिन ने कहा यहाँ, संक्षेपित कर कहें यहाँ–2
जिनगुरु को वंदन हो–3 कर शीश झुकाएँ रे–ऽऽ।।4158।।

(3) जिन प्रतिमा, चैत्य गृहायतन, वीतराग जिनबिम्ब परम–2
जिन मुद्रा, जिन का दर्शन–ऽऽ
निज आतम का ज्ञान यहाँ, देता है कल्याण यहाँ–2
बोध प्राभृत में हो–3 क्रम से बतलाएँ रे–ऽऽ।।4159।।

(4) वीतराग अरहंत यहाँ, तिरने वाले तीर्थ यहाँ–2
विशुद्ध दीक्षा रूप यहाँ–ऽऽ
ग्यारह हैं अधिकार शुभम्, बोध पाहुड में जाने हम–2
ज्ञान की बातें हो–3 इनमें बतलाएँ रे–ऽऽ।।4160।।

(5) इन्द्रिय विषय रहित हैं जो, तीनों योग संयमित जो–2
पंच समिति से युक्त हैं जो–ऽऽ
ऐसे मुनिवर का ये तन, कहे जिनागम में आयतन–2
उनके वंदन से हो–3 मन खुश हो जाये रे–ऽऽ।।4161।।

(6) राग–द्वेष–मद मोह नहीं, क्रोध, लोभ का लेश नहीं–2
पंच महाव्रत धरें यहीं–ऽऽ
कहे आयतन ये मुनिवर, कहने वाले हैं जिनवर–2
उनकी महिमा को हो–3 सब वेद बताएँ रे–ऽऽ।।4162।।

(7) सात तत्त्व छह द्रव्य कहे, नव पदार्थ का ज्ञान जिसे–2
निज स्वरूप का भान उसे–ऽऽ
केवलज्ञान से युक्त यहाँ, ध्यान विशुद्ध प्रयुक्त यहाँ–2
उनको सिद्धायतन हो–3 जिनदेव बताएँ रे–ऽऽ।।4163।।

(8) ज्ञानयुक्त आतम ध्यावे, ज्ञान सभी को बतलावे–2
पंच महाव्रत को पावे–ऽऽ
स्वयं ज्ञानमय जो मुनिवर, कहें चैत्यगृह सब गुरुवर–2
जिनवर का भाव हो–3 तन में दिखलाएँ रे–ऽऽ।।4164।।

(9) चैत्य गृह को बुरा कहे, दुख उनको उत्पन्न करे–2
सेवा से वह सुखी करे–ऽऽ
सबको मोक्ष प्रदान करे, रक्षा सबकी यहाँ करे–2
चैत्यगृह सबको हो–3 सुख शांति दिलाए रे–ऽऽ।।4165।।

(10) रत्नत्रय निर्दोष दिखे, जिनशासन का रूप दिखे–2
वीतराग निर्ग्रन्थ दिखे–ऽऽ
जिनका रूप अजंगम है, सुखकर जिनका संगम है–2
उसको जिनमत में हो–3 प्रतिमा बतलाएँ रे–ऽऽ।।4166।।

कर्म रहित शुद्धात्म यहाँ, गुरु बतलाएँ रे-2
बोध कराकर हो-3 बोधि दिलकाएँ रे-ऽऽ

(11) शुद्ध आचरण करे यहाँ, जिनश्रुत जाने शुद्ध यहाँ-2
पाये सम्यक् शुद्ध यहाँ-ऽऽ
ऐसे वे निर्ग्रन्थ मुनि, जंगम प्रतिमा कहे यहाँ-2
चलती-फिरती वो हो-3 प्रतिमा कहलाएँ रे-ऽऽ।।4167।।

(12) अनंत दर्शन-ज्ञान यहाँ, अनंत सुखमय वीर्य यहाँ-2
अविनाशी तन रहित यहाँ-ऽऽ
कर्मबंध से रहित प्रभो-वे परमेष्ठी सिद्ध यहाँ-2
ऐसी ही प्रतिमा हो-3 गुरु सिद्ध बतायें रे-ऽऽ।।4168।।

(13) निरुपम अचल हैं क्षोभ रहित, रूप अजंगम निर्मापित-2
सिद्धशिला पर हैं स्थित-ऽऽऽ
खड्गासन-पद्मासन में, स्थित हैं उनको रोज नमें-2
शाश्वत सिद्धों को हो-3 हम शीश झुकाएँ रे-ऽऽ।।4169।।

(14) सम्यक् संयम दिखलाये, धर्म मोक्ष पथ बतलाए-2
खुद निर्ग्रन्थ रूप पाए-ऽऽ
ज्ञानमयी स्वाभाविक है, देख उसे मन सुख पाए-2
ये ही आगम में हो-3 दर्शन कहलाए रे-ऽऽ।।4170।।

(15) फूल गंधमय होता है, दूध घी मयी होता है-2
दर्श-ज्ञानमय होता है-ऽऽ
यतियों को और श्रावक को, या फिर अविरत श्रावक को-2
सम्यग्दर्शन वह हो-3 इनमें ही पायें रे-ऽऽ।।4171।।

(16) संयम से अतिशुद्ध हैं जो, ज्ञानमयी हैं बुद्ध हैं जो-2
निर्मल वीतराग मय जो-ऽऽऽ
शिक्षा-दिक्षा देते हैं, कर्मक्षरण में कारण जो-2
आचार्य भगवन् हो-3 जिनबिम्ब बताएँ रे-ऽऽ।।4172।।

(17) पूजा करो प्रणाम करो, विनय करो वात्सल्य धरो-2
प्रतिमा सब आचार्य अहो-ऽऽ
सम्यग्दर्शन ज्ञान जिन्हें, निश्चय चेतन भाव अहो-2
ऐसे आचार्य हो-3 भव पार करायें रे-ऽऽ।।4173।।

(18) व्रत-जप-तप से शुद्ध यहाँ, शुद्ध जिन्हें सम्यक्त्व यहाँ-2
जाने वस्तु स्वरूप वहाँ-ऽऽ
अर्हत जैसा रूप यहाँ, शिक्षा दिक्षा देय यहाँ-2
ऐसे आचार्य हो-3 जिनबिम्ब कहायें रे-ऽऽ।।4174।।

(19) संयम दृढ़ मुद्रायुत् हैं, जिन की संकुचित इंद्रियाँ हैं-2
सभी कषाय नियंत्रण हैं-ऽऽ
सम्यग्ज्ञान सहित मुनि हैं, वे मुनि जिनमुद्रा ही हैं-2
जिनमत में ऐसी हो-3 जिनमुद्रा गायें रे-ऽऽ।।4175।।

(20) संयम सहित है ज्ञान यहाँ, निरत है उत्तम ध्यान यहाँ-2
ज्ञान बिना हो ध्यान कहाँ-ऽऽ
ज्ञान ही लक्ष्य बनाता है, जीवन को महकाता है-2
ज्ञान से ज्ञानी हो-3 ज्ञायकपन पाये रे-ऽऽ।।4176।।

कर्म रहित शुद्धात्म यहाँ, गुरु बतलाएँ रे-2
बोध कराकर हो-3 बोधि दिलकाएँ रे-ऽऽ

(21) करता जो अभ्यास नहीं, होता है वो पास नहीं-2
अज्ञ उसे विश्वास नहीं-ऽऽ
अज्ञजनों का लक्ष्य नहीं, मिले न अनुभव उसे कहीं-2
ज्ञान बिन लक्ष्य हो-3 बन कभी न पाये रे-ऽऽ।।4177।।

(22) विनय दिलाता ज्ञान हमें, ज्ञान से चिंतन खूब करें-2
अनुभव के फिर फूल खिलें-ऽऽऽ
ज्ञान पुरुष को होता है, शिवपथ ज्ञान सृजेता है-2
ज्ञानी निज आतम हो-3 अनुभव को पाये रे-ऽऽ।।4178।।

(23) तीव्र धनुष मतिज्ञान यहाँ, प्रत्यंचा श्रुतज्ञान यहाँ-2
रत्नत्रय है बाण यहाँ-ऽऽऽ
बाँधा मुक्ति निशाना है, उसको मंजिल पाना है-2
उसका ही तीर हो-3 नहिं धोखा खाये रे-ऽऽ।।4179।।

(24) धर्म अर्थ और काम यहाँ, देता सबको ज्ञान यहाँ-2
उसको कहते देव यहाँ-ऽऽऽ
धर्म ज्ञान काम अर्थ यहाँ, सभी देव के पास यहाँ-2
जिस पर जो होता हो-3 वह ही दे पाये रे-ऽऽ।।4180।।

(25) दया से धर्म विशुद्ध यहाँ, दीक्षा ग्रंथि रहित यहाँ-2
मोह रहित है देव यहाँ-ऽऽऽ
तीनों का वरदान अरे, भव्यों का कल्याण करे-2
तीनों ही रत्न हो-3 त्रयरत्न दिलायें रे-ऽऽ।4181।।

(26) व्रत सम्यक्त्व विशुद्ध करे, इन्द्रिय को प्रतिबंद्ध करे-2
बाह्य पदार्थ अबद्ध रहे-ऽऽऽ
ज्ञान में नित स्नान करे, शुद्धातम का ध्यान करे-2
दिक्षा शिक्षा में हो-3 निर्मल मन लाये रे-ऽऽ।।4182।।

(27) संयम तप सम्यक्त्व यहाँ, निरतिचार हो धर्म यहाँ-2
शान्त भावमय तीर्थ यहाँ-ऽऽ
क्रोध सहित ये तीर्थ नहीं, जिनमत के ये तीर्थ नहीं-2
क्रोध में तीर्थ हो-3 का भाव न आये रे-ऽऽ।।4183।।

(28) नाम स्थापन द्रव्य कहे, भाव चार निक्षेप अरे-2
स्वकीय गुण-पर्याय कहे-ऽऽ
च्यवन, आगति व संपदा, नौ बातों को चिन्त्य लहे-2
इनसे अर्हत् का हो-3 चिंतन कर जाओ रे-ऽऽ।।4184।।

(29) अनंत दर्शन-ज्ञान सहित, सभी कर्म के बंध रहित-2
अनुपम गुण से हैं शोभित-ऽऽ
भाव मोक्ष को प्राप्त हुए, वे समझो अरहंत हुए-2
जिनकी महिमा को हो-3 सब वेद सुनाएँ रे-ऽऽ।।4185।।

(30) नहीं बुढ़ापा रोग जनम, पुण्य-पाप नहिं जरा-मरण-2
मिटा दिया चउ गती भ्रमण-ऽऽ
ज्ञानमयी जो हुए यहाँ, समझ उन्हें अरहंत यहाँ-2
उनकी महिमा ही हो-3 पूजन कहलाए रे-ऽऽ।।4186।।

कर्म रहित शुद्धात्म यहाँ, गुरु बतलाएँ रे–2
बोध कराकर हो–3 बोधि दिलकाएँ रे–ऽऽ

(31) गुणस्थान मार्गणा यहाँ, पर्याप्ति और प्राण यहाँ–2
जीव स्थान ये पाँच यहाँ–ऽऽ
पाँच तरीके से स्थापन, करें पूज्य अर्हत भगवन्–2
इनसे हो ज्ञान हो–3 जो ध्यान बढ़ाए रे–ऽऽ।।4187।।

(32) चौंतीस अतिशय होते हैं, प्रातिहार्य वसु होते हैं–2
अरहंत केवली होते हैं–ऽऽ
सजोग केवली कहलाते, तेरहवें गुणस्थान आते–2
उनका ही वंदन हो–3 भवपार कराये रे–ऽऽ।।4188।।

(33) गति इन्द्रिय अरु काय कहे, योग वेद कषाय कहे–2
संयम ज्ञान व दर्श कहे–ऽऽ
लेश्या भवि संज्ञित्व कहे, आहारक मार्गणा कहे–2
चौदह मार्गणा से हो–3 संयोजन लायें रे–ऽऽ।।4189।।

(34) आहार शरीरेन्द्रिय भाषा, मन जानो श्वासोच्छ्वासा–2
छह पर्याप्ति गुरु भासा–ऽऽ
इनसे जो समृद्ध यहाँ, देव हैं वे अरहंत यहाँ–2
जिनकी महिमा को हो–3 सारा जग गाये रे–ऽऽ।।4190।।

(35) पाँच प्राण हैं इन्द्रिय के, तीन प्राण बल योगों के–2
आयु, श्वास दस प्राण हैं ये–ऽऽऽ
दशों प्राण हैं संज्ञी के, देव–नारकी मानव के–2
होते हैं वे सब हो–3 भगवन बतलाएँ रे–ऽऽ।।4191।।

(36) होते जो अरहंत यहाँ, पंचेन्द्रिय मनुष्य यहाँ–2
गुण अनंत से युक्त यहाँ–ऽऽ
जब तक वे गुण थानों में, तब तक वे अरहंत यहाँ–2
गुणथानातीत हो–3 वे सिद्ध कहायें रे–ऽऽ।।4192।।

(37) व्याधि–बुढापा दुक्ख रहित, मल नीहार आहार रहित–2
दोष अठारह से वर्जित–ऽऽ
उन्हें कहें अर्हत् भगवन्, जिनकी महिमा महामहिम–2
उनके चरणों में हो–3 सब शीश झुकाएँ रे–ऽऽ।।4193।।

(38) छः पर्याप्ति प्राण हैं दस, एक हजार अठ लक्षण बस–2
श्वेत रुधिर और श्वेत है माँस–ऽऽ
शुभ लक्षण अरहंतों में, अचरज कारी संतों में–2
उनकी ही महिमा हो–3 ये दुनियाँ गाये रे–ऽऽ।।4194।।

(39) कई गुणों से युक्त है तन, परमौदारिक तन भगवन–2
सुगंधि अतिशयकारी गुण–ऽऽ
पुंज गुणों के हैं भगवन्, तीन लोक नित करें नमन–2
उनके वंदन से हो–3 गुण मुझमें आयें रे–ऽऽ।।4195।।

(40) राग–द्वेष–मद रहित यहाँ, नो कषाय न कषाय यहाँ–2
अतिशय युक्त विशुद्ध यहाँ–ऽऽ
क्षायिक भाव विराजित हैं, मन व्यापार रहित जो हैं–2
ऐसे ही संत हो–3 अरहंत कहाएँ रे–ऽऽ।।4196।।

कर्म रहित शुद्धात्म यहाँ, गुरु बतलाएँ रे-2
बोध कराकर हो-3 बोधि दिलकाएँ रे-SS

(41) केवलदर्शन से देखें, केवलज्ञान से सब जानें-2
गुण सम्यक्त्व सुखद जानें-SS
ऐसा जिसमें भाव यहाँ, वो ही है अरहंत यहाँ-2
उनकी ही महिमा हो-3 सारे श्रुत गायें रे-SS।।4197।।

(42) शून्य घरों, उद्यानों में, वृक्षमूल श्मशानों में-2
शिखर, गुफा अथवा वन में-SS
सात्विक शुद्ध वसतिका में, रहते हैं साधु इनमें-2
दीक्षा के बाद हो-3 आवास बनाए रे-SS।।4198।।

(43) सत्व, तीर्थ, जिन आगम का, तत्त्वों का जिनमंदिर का-2
ध्यान करें मुनि आतम का-SSS
शून्य घरों में रहते हैं, जिन मंदिर में रहते हैं-2
मुनिवर भव्यों को हो-3 भव पार करायें रे-SS।।4199।।

(44) पंच महाव्रत सहित हैं जो, इन्द्रिय वश में रखते जो-2
प्रत्युपकार भाव बिन वो-SS
स्वाध्याय नित ध्यान करें, चिंतन में परमार्थ धरें-2
इनमें मुनि खेद हो-3 अभ्यस्त करायें रे-SS।।4200।।

(45) निलय परिग्रह रहित हैं जो, बाइस परिषह जीतें वो-2
पापारंभ रहित हैं जो-SS
सभी कषाय रहित हैं जो, नग्न दिगम्बर रूपी वो-2
ऐसी मुनि दीक्षा हो-3 श्रुत में बतलाएँ रे-SS।।4201।।

(46) धन धान्य वस्त्र का दान, चाँदी सोना खोटा दान-2
इनसे रहित हैं मुनि महान-SS
शैया आसन छत्र यहाँ, दीक्षा इनसे रहित यहाँ-2
ऐसी ही दीक्षा हो-3 भव दुक्ख मिटाए रे-SS।।4202।।

(47) शत्रु-मित्र भाव हों सम, लाभ-अलाभ में नहीं विषम-2
निंदा, दुख में करें न गम-SS
स्वर्ण-प्रशंसा हर्ष न हो, ऐसी दीक्षा कही अहो-2
ये गुण आतम के हो-3 गुण रूप दिखाये रे-SS।।4203।।

(48) उत्तम हों या मध्यम हो, हो धनवान या निर्धन हों-2
सबमें जो निरपेक्ष हों-SS
लें आहार योग्य घर में, भोगाकांक्षा नहीं रखें-2
ऐसी जिनदीक्षा हो-3 गुरुदेव बताएँ रे-SS।।4204।।

(49) तन से जो निर्ग्रन्थ रहें, संग रहित निस्संग रहें-2
अंग उपांग सहित कहें-SS
राग-द्वेष बिन, निर्मम हैं, निरहंकारी गुण युत् हैं-2
ऐसी जिन दीक्षा हो-3 जिनमत दिखलाए रे-SS।4205।।

(50) लोभ मोह स्नेह रहित, निश्चित प्रमाण तर्क सहित-2
आशा और विकार रहित-SS
इच्छा कलुषित भाव रहित, निर्भय विशुद्ध भाव सहित-2
ऐसी जिनदीक्षा हो-3 श्रुत में बतलाएँ रे-SS।।4206।।

कर्म रहित शुद्धात्म यहाँ, गुरु बतलाएँ रे-2
बोध कराकर हो-3 बोधि दिलकाएँ रे-ऽऽ

(51) निर्विकार बालक सम हैं, वस्त्र व शस्त्र रहित जो हैं-2
प्रासुक निर्मल शांत भी हैं-ऽऽ
लोग उपाश्रय बनवाते, उनमें ही जो रहते हैं-2
ऐसी जिनदीक्षा हो-3 भव पार कराए रे-ऽऽ।।4207।।

(52) उपशम क्षमा भाव युत हैं, तन के संस्कार बिन है-2
राग-द्वेष मद के बिन हैं-ऽऽ
इन्द्रिय दमन किया जिनने, रूक्ष शरीर किया जिनने-2
ऐसी जिनदीक्षा हो-3 जिनमत बतलाएँ रे-ऽऽ।।4208।।

(53) मूढ़ताएँ नहिं हैं जिसमें, मिथ्याभाव नहीं जिसमें-2
अष्टकर्म मिटते जिसमें-ऽऽऽ
गुण सम्यक्त्व विशेष जहाँ, रत्नत्रयमय भाव जहाँ-2
ऐसी जिनदीक्षा हो-3 जिनदेव बताएँ रे-ऽऽ।।4209।।

(54) होती छह संहनन में जो, ग्रंथि बिन निर्ग्रन्थ अहो-2
कर्मों का क्षय करती जो-ऽऽ
भव्य पुरुष चिंतन करते, वे अनुकरण इसे करते-2
ऐसी जिन दीक्षा हो-3 श्रुत में गुरु गायें रे-ऽऽ।।4210।।

(55) तिलतुष मात्र न ग्रंथि हो, वही यहाँ निर्ग्रन्थ अहो-2
कहते ये सर्वज्ञ प्रभो!-ऽऽ
परिग्रह में सब पाप छिपे, कहते हैं गुरु ये हमसे-2
ऐसी दीक्षा ही हो-3 कल्याण कराये रे-ऽऽ।।4211।।

(56) परीषहों उपसर्गों में, भवनों या निर्जन वन में-2
शिला, काठ भूमि तल में-ऽऽ
सहन करें और शयन करें, उद्रेकों को शमन करें-2
ऐसी जिन दीक्षा हो-3 गुण सभी दिलाये रे-ऽऽ।।4212।।

(57) पशुओं का आवास जहाँ, स्त्रियाँ नपुंसक रहें जहाँ-2
कुशील लोग निवास जहाँ-ऽऽ
इनका करे न संग यहाँ, विकथाएँ नहिं करे यहाँ-2
स्वाध्याय ध्यान हो-3 दीक्षा करवाये रे-ऽऽ।।4213।।

(58) तप-व्रत-गुण से शुद्ध यहाँ, हो सम्यक्त्व विशुद्ध यहाँ-2
संयम ज्ञान प्रसिद्ध यहाँ-ऽऽ
मूलगुणों में दोष नहीं, शुद्ध दीक्षा वही कही-2
कहते हैं गुरुवर हो-3 गणधर कहलाएँ रे-ऽऽ।।4214।।

(59) सम्यक् से जो शुद्ध कही, सत्यज्ञान अविरुद्ध कही-2
आत्मगुणों परिपूर्ण कही-ऽऽऽ
भाव विशुद्धि जिससे हो, मुनि प्रवज्या उसे कहो-2
संक्षेप में ही हो-3 गुरु यहाँ बताएँ रे-ऽऽ।।4215।।

(60) जिससे जीवों का हित हो, षट्कायिक की रक्षा हो-2
इन्द्रिय मन पर कब्जा हो-ऽऽ
ऐसी जिन दीक्षा ही हो, भव्यों को संबोध अहो-2
कहते हैं भगवन् हो-3 ये बात बताएँ रे-ऽऽ।।4216।।

कर्म रहित शुद्धात्म यहाँ, गुरु बतलाएँ रे–2
बोध कराकर हो–3 बोधि दिलकाएँ रे–ऽऽ

(61) तीर्थंकर ध्वनि में आया, गणधर ने जो बतलाया–2
उसको हमने समझाया–ऽऽ
भद्रबाहु का शिष्य हूँ मैं, मैंने वैसा बतलाया–2
भव्यों का हित हो हो–3 मन भाव ये आये रे–ऽऽ।।4217।।

(62) द्वादशांग के ज्ञान सहित, चौदह पूर्व विधान सहित–2
गुरुओं के गुरु ध्यान सहित–ऽऽ
ऐसे भद्रबाहु भगवंत, रहें हमेशा वो जयवंत–2
जिनने श्रुतवाणी हो–3 दीर्घायु बनाई रे–ऽऽ।।4218।।

दोहा

बोध हमें संबोधता, दे चारित्र महान।
उसी बोध प्राभृत को, करूँ विनम्र प्रणाम।।

बोध हमारे भाव को, शुद्ध करे गुणगान।
जिससे हम सब पा सकें, सम्यग्दर्शन ज्ञान।।

बोध बुद्धि की शुद्धि कर, शुद्ध करे परिणाम।
निर्मलता मन में रहे, अनुभव में भगवान।।

बोध बुद्धि बोधित करे, शोध करे व्यवहार।
चारित में परिणत करे, होय भवोदधि पार।।

बोध करे अनुरोध जब, हो निज–पर उपकार।
मिट जाता प्रतिशोध सब, मिले ज्ञान भंडार।।

पढ़े बोध प्राभृत यहाँ, पाते संयम धार।
जिनमत दीक्षा धारकर, हो जाते भव पार।।

मोक्ष पाहुड़

मूल ग्रंथकर्ता : आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी
पद्यानुवाद : उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

जहाँ नहीं दुख लेश उसे, मोक्ष बताएँ रे-2
मोक्ष बिन प्राणी हो-3 सुख कहीं न पाये रे-ऽऽ

(1) कर्मों का क्षय किया यहाँ, पर द्रव्यों का त्याग यहाँ-2
ज्ञानमयातम प्राप्त यहाँ-ऽऽ
ऐसे सभी सिद्ध भगवन्, भक्तिभाव से उन्हें नमन-2
उनका वंदन कर हो-3 भव राग हटाओ रे-ऽऽ।।4219।।

(2) अनंत दर्शन-ज्ञान यहाँ, निर्मलतामय रूप यहाँ-2
ऐसे प्रभु अरहंत यहाँ-ऽऽ
भक्तिभाव से नमन करूँ, परमातम पद कथन करूँ-2
योगी से पढ़कर हो-3 शिवपद पा जायें रे-ऽऽ।।4220।।

(3) आत्म तत्त्व को जाना है, अनुभव से पहचाना है-2
ध्यानस्थ होकर माना है-ऽऽ
मुनि शाश्वत सुख पाते हैं, अजर अमर हो जाते हैं-2
जन्म जरा से हो-3 मुक्ति पा जायें रे-ऽऽ।।4221।।

(4) बहि-अंतर और परमातम, तीन भेदमय है आतम-2
छोड़ यहाँ तू बहिरातम-ऽऽ
अंतर आतम होकर तू, ध्यान में लाओ परमातम-2
बहिरातम भव में हो-3 भटकन ही पाये रे-ऽऽ।।4222।।

(5) इन्द्रिय मन है बहिरातम, आत्मयोग अंतरातम-2
कर्म रहित है परमातम-ऽऽ
परमातम को देव कहें, दिव्यदृष्टि परमात्म लहें-2
जन्म मरण से हो-3 ये मुक्त कहायें रे-ऽऽ।।4223।।

(6) तन से मन से रहित यहाँ, परमेष्ठी जिन सिद्ध यहाँ-2
शाश्वत विशुद्ध आत्म यहाँ-ऽऽ
शिवशंकर केवल प्रभु हैं, जो अतीन्द्रिय रूप यहाँ-2
सारे सिद्धों को हो-3 हम शीश झुकाएँ रे-ऽऽ।।4224।।

(7) मन वच काय से छोड़ यहाँ, बहिरातम का भाव यहाँ-2
अंतरात्म आरूढ यहाँ-ऽऽ
भेदज्ञान अंतस करके, पा लेता परमात्म यहाँ-2
परमातम पाये हो-3 वो सब पा जाये रे-ऽऽ।।4225।।

(8) बाह्य वस्तु में मूर्छित हो, मन पर में आकर्षित हो-2
निज स्वरूप से जो च्युत हो-ऽऽ
मूढ़ दृष्टि वह बहिरातम, समझे तन को ही आतम-2
ऐसे लोगों को हो-3 संसार सुहाए रे-ऽऽ।।4226।।

(9) अपना तन नहिं अपना है, तो पर का क्यूँ अपना है-2
ज्ञानी को सब सपना है-ऽऽ
ज्ञानी ऐसा सोच रहा, मूढ़ी तन निज समझ रहा-2
पर तन को अपना हो-3 ये मूढ़ बताएँ रे-ऽऽ।।4227।।

(10) मूढ़ बना जग घूम रहा, तन को आतम मान रहा-2
निज को नहिं पहचान रहा-2
इस उल्टे मत के कारण, पुत्र स्त्री में मोह रहा-2
अपने को भूला हो-3 पर निज बतलाए रे-ऽऽ।।4228।।

जहाँ नहीं दुख लेश उसे, मोक्ष बताएं रे-2
मोक्ष बिन प्राणी हो-3 सुख कहीं न पाये रे-SS

(11) मोह उदय जब होता है, पर में वह तब होता है-2
ज्ञान भी झूठा होता है-SS
फिर तन को आतम जाने, आतम को नहिं पहचाने-2
झूठा सारा जग हो-3 सच समझ में आये रे-SS।।4229।।

(12) तन में जो निरपेक्ष यहाँ, द्वन्द्व ममत्व से रहित यहाँ-2
आरंभ-सारंभ रहित यहाँ-SS
निज स्वभाव संलग्न रहे, योगी उसको सभी कहें-2
ऐसा ही योगी हो-3 मुक्ती को पाये रे-SS।।4230।।

(13) पर द्रव्यों में रमण करे, कई कर्म का बंध करे-2
फल भोगे तब दुक्ख भरे-SS
पर से रहे विरक्त यहाँ, वो कर्मों का अंत करे-2
बंध और मोक्ष हो-3 जिनदेव बताएँ रे-SS।।4231।।

(14) स्व-द्रव्य में जो रमण करे, सम्यग्दृष्टि साधु अरे-2
कर्म उसे नहिं बाँध सके-SS
सम्यक् रूप जो परिणत हो, आठ कर्म वह नाश करे-2
इसमें संशय की हो-3 गुंजाइश नहीं अरे-SS।।4232।।

(15) जो साधु पर में रत है, वो तो मिथ्यामत में है-2
ढोंग रचाए साधू है-SS
मिथ्यामत परिणत साधु, कर्मबंध को करता है-2
भव के बंधन से हो-3 वो मुक्ति न पाये रे-SS।।4233।।

(16) पर द्रव्यों से दुर्गति हो, आत्मद्रव्य से शुभगति हो-2
ऐसा जानो सभी अहो-SS
प्रीति करो अब अपने से, हो विरक्त पर द्रव्यों से-2
तब ही जिनमत की हो-3 आज्ञा पल पाये रे-SS।।4234।।

(17) सचित्त अचित्त मिश्र द्रव्य हैं, वे सब समझो पर द्रव्य हैं-2
आत्म स्वभाव निजी द्रव है-SS
सर्व द्रव्य को जानें जो, निज आतम से देखें वो-2
ऐसे केवली ने हो-3 ये हमें बताया रे-SS।।4235।।

(18) आठ कर्म से रहित है जो, ज्ञान शरीरी नित्य है वो-2
शुद्ध आत्म द्रव अनुपम जो-SS
उसे स्वद्रव्य कहा जिन ने, कर्म कलंक रहित है जो-2
अपनी ही आतम हो-3 भव पार कराए रे-SS।।4236।।

(19) स्व-द्रव्य का नित ध्यान करें, पर द्रव्यों से विरत रहें-2
मोक्षमार्ग मे निरत रहें-SS
सम्यक् चारित का हरदम, निरतिचार अनुकरण करें-2
ऐसे ही मुनिवर हो-3 शिवमहल को पायें रे-SS।।4237।।

(20) शुद्धातम का ध्यान धरें, जिनमत के अनुसार करें-2
स्वर्गलोक वो प्राप्त करें-SS
जिससे मिलता मोक्ष यहाँ, नहीं मिले क्या स्वर्ग यहाँ?-2
झट से मिल जाये हो-3 ये प्रभु बतलाएँ रे-SS।।4238।।

जहाँ नहीं दुख लेश उसे, मोक्ष बताएं रे-2
मोक्ष बिन प्राणी हो-3 सुख कहीं न पाये रे-ऽऽ

(21) जो मनु भारी भार यहाँ, ले जाता सौ कोश यहाँ-2
फिर भी थकता नहीं यहाँ-ऽऽ
आधा कोश वो भार लिए, चले नहीं क्या बिना थके-2
शिवपुर जो जाये हो-3 झट स्वर्ग में जाये रे-ऽऽ।।4239।।

(22) कोटि भट्ट भी मिल करके, जिसको कभी न जीत सके-2
ऐसी योद्धा आतम ये-ऽऽ
एक योद्धा उस आतम से, कैसे लड़कर जीत सके-2
इन्द्रिय आतम को हो-3 कभी जीत न पायें रे-ऽऽ।।4240।।

(23) तप से स्वर्ग सभी पाते, ध्यान से स्वर्ग न सब पाते-2
श्रेष्ठ ध्यान से बतलाते-ऽऽ
ध्यान से पाता स्वर्ग यहाँ, वे अद्भुत ही कहलाते-2
अगले ही भव से हो-3 वे शिवसुख पायें रे-ऽऽ।।4241।।

(24) शुद्ध निमित्त मिले जब ही, अशुद्ध होता शुद्ध तभी-2
वैसे ही यह जीव कभी-ऽऽ
लब्धि निमित्त मिलाता हो, परतातम हो जाता है-2
मिलते सुहागा हो-3 स्वर्ण शुद्धि पाये रे-ऽऽ।।4242।।

(25) व्रत ले स्वर्ग यहाँ पाना, सबने ही अच्छा माना-2
व्रत बिन नरक बुरा माना-ऽऽ
करे प्रतीक्षा छाँव में, एक कर रहा धूप में-2
ये ही व्रत अव्रत हो-3 में भेद बताएं रे-ऽऽ।।4243।।

(26) ये संसार महासागर, सभी जगह दुख का आकर-2
चाहे निकलना आराधक-ऽऽ
शुद्धातम का ध्यान करे, कर्म ईंधन को भस्म करे-2
तब ही भव बंधन हो-3 से मुक्ति पायें रे-ऽऽ।।4244।।

(27) राग-द्वेष मद गारव को, मोह समस्त कषायों को-2
छोड़े भव व्यवहारों को-ऽऽ
इनसे विरक्त होता है, आत्मध्यान मय होता हो-2
भव भव का बंधन हो-3 खुद ही मिट जाये रे-ऽऽ।।4245।।

(28) पाप पुण्य अज्ञान यहाँ, दुख की जड़ मिथ्यात्व यहाँ-2
त्रिविध योग से छोड़ यहाँ-ऽऽ
मौनी बन कर ध्यान यहाँ, करो आत्म साक्षात् यहाँ-2
वो ही आतम को हो-3 उज्ज्वल कर जाये रे-ऽऽ।।4246।।

(29) दिखता जो नहिं जाने वो, जाने जो नहिं दिखता वो-2
ये अनुभव निज से ही हो-ऽऽ
बात करूँ वो दिखे नहीं, दिखे बात वो करे नहीं-2
किससे मैं बोलूँ हो-3 किससे चुप होये रे-ऽऽ।।4247।।

(30) सारे आस्रव रुक जाते, कर्म नष्ट तब हो पाते-2
ऐसा जिनवर बतलाते-ऽऽ
ध्यान निमग्न जो योगी हो, केवलज्ञान वही पाते-2
फिर वे मुनि मुक्ति हो-3 इक दिन पा जायें रे-ऽऽ।।4248।।

जहाँ नहीं दुख लेश उसे, मोक्ष बताएं रे-2
मोक्ष बिन प्राणी हो-3 सुख कहीं न पाये रे-ऽऽ

(31) जो मुनि बाहर सोता है, वो अंतस में जगता है-2
ऐसा ही तो होता है-ऽऽ
जो बाहर में जगता है, वो अंतस में सोता है-2
बाह्य कर्मों में हो-3 नहिं लगन लगाओ रे-ऽऽ।।4249।।

(32) छोड़े सब व्यवहार यहाँ, जागे अंतस् भाव यहाँ-2
मन हो तब एकाग्र यहाँ-ऽऽ
ध्यान तभी शुद्धातम हो, अंतस् में परमातम हो-2
उसके मिलते ही हो-3 सब दुख मिट जायें रे-ऽऽ।।4250।।

(33) हे मुनि! पंच महाव्रत धर, पाँच समिति को अपनाकर-2
तीन गुप्ति में रमण तू कर-ऽऽ
रत्नत्रय को धारण कर, निरत ध्यान और अध्ययन कर-2
तब ही अनुभव में हो-3 परमात्म दिखाये रे-ऽऽ।।4251।।

(34) रत्नत्रय का आराधक, साधु है सच्चा साधक-2
ज्ञानी हो बनता ज्ञायक-ऽऽ
उस आराधन का ही फल, ज्ञान मिले उसको केवल-2
जिसकी महिमा को हो-3 ये दुनियां गाये रे-ऽऽ।।4252।।

(35) सर्वलोक दर्शी आतम, सिद्ध शुद्ध सर्वज्ञ आतम-2
केवलज्ञानमयी आतम-ऽऽ
निश्चय से जिनदेव कहें, ऐसा ही अब मानो तुम-2
जैसा जानोगे हो-3 वैसा ही पाओ रे-ऽऽ।।4253।।

(36) रत्नत्रय आराधक जो, आत्म ध्यान में रमता वो-2
पर पदार्थ सब तजता वो-ऽऽ
इसमें है संदेह नहीं, जिनमत में गुणगान वही-2
ध्यानस्थ मुनि ही हो-3 कैवल्य समाये रे-ऽऽ।।4254।।

(37) वस्तु जानता ज्ञान है वो, अवलोकन दर्शन है वो,
देख रहा दर्शन है वो-ऽऽ
पाप-पुण्य का त्याग करे, उसको ही चारित्र कहें-2
रत्नत्रय तीनों हो-3 मिलकर हो जायें रे-ऽऽ।।4255।।

(38) तत्त्व रुचि समदर्श जहाँ, तत्त्वज्ञान सद्ज्ञान यहाँ-2
आत्म रमण चारित्र यहाँ-ऽऽ
पाप पुण्य का त्याग जहाँ, उत्तम है चारित्र वहाँ-2
ऐसा जिनदेव हो-3 सबको बतलाएँ रे-ऽऽ।।4256।।

(39) समदर्शन से शुद्ध यहाँ, कहलाता है शुद्ध यहाँ-2
वो पाता है मोक्ष यहाँ-ऽऽ
समदर्शन बिन होता है, इष्ट लाभ नहिं होता है-2
सम्यक् की महिमा हो-3 सब संत बताएँ रे-ऽऽ।।4257।।

(40) जन्म मरण को नाश करे, ज्ञान चरित्र विकास करे-2
कहें उसे सम्यक्त्व अरे-ऽऽ
ये मुनि श्रावक को होता, चतुर्गति में भी होता-2
सारे ही गुण में हो-3 यह श्रेष्ठ बताएँ रे-ऽऽ।।4258।।

जहाँ नहीं दुख लेश उसे, मोक्ष बताएँ रे-2
मोक्ष बिन प्राणी हो-3 सुख कहीं न पाये रे-SS

(41) जीव अजीव विभाग करे, उनका ज्ञान यथार्थ करे-2
उसको सम्यग्ज्ञान कहे-SS
ये भव पार कराता है, अच्छा चिंतन लाता है-2
ज्ञान ही मुनि को हो-3 निर्विकल्प बनाए रे-SS।।4259।।

(42) पुण्य पाप का त्याग करे, राग-द्वेष को दूर करे-2
मोह भाव से रहित रहे-SS
उस मुनि को ही इस भव में, निर्विकल्प चारित्र कहें-2
ऐसा ही जिनवर हो-3 श्रुत में बतलाएँ रे-SS।।4260।।

(43) जो मुनि रत्नत्रय धरे, शुद्धातम का ध्यान करे-2
शक्ति समां वह तप कर ले-SSS
स्वर्गादि वह प्राप्त करे, पीछे वह निर्वाण वरे-2
ध्यान इंसां को हो-3 भगवान बनाये रे-SS।।4261।।

(44) त्रियोग से त्रय योग धरो, तीन शल्य को दूर करो-2
तीन रत्न से सहित रहो-SSS
राग-द्वेष से मुक्त रहो, आत्मध्यान में स्थिर हो-2
तब ही वह योगी हो-3 सुख शाश्वत पाये रे-SS।।4262।।

(45) माया पद और क्रोध रहित, लोभ कषायों से वर्जित-2
निर्मल आत्मस्वभाव सहित-SS
ऐसा मुनि जब ध्यान करे, कम निर्जरा बहुत करे-2
उत्तम सुख पाता हो-3 दुख सब मिट जाये रे-SS।।4263।।

(46) विषय कषाय सहित है जो, आत्मभावना रहित है वो-2
जिनमुद्रा से भ्रष्ट है वो-SSS
सच पूछो तो रुद्र है जो, उसे कभी भी सिद्धि न हो-2
ऐसे ही साधु हो-3 आतंक मचाएँ रे-SS।।4264।।

(47) सिद्धि दिलाये जिनमुद्रा, सुख वैभव दे जिनमुद्रा-2
मोक्ष दिलाये जिनमुद्रा-SS
स्वप्न में भी नहिं रुचे जिन्हें, वे भटकें इस भव वन में-2
गति में दुर्गति में हो-3 वे भटकते जायें रे-SS।।4265।।

(48) परमातम का ध्यान करे, लोभ पाप से मुक्ति वरे-2
कर्म निर्जरा यहाँ करे-SS
नये कर्म नहिं बंध करे, इक दिन वो ही मुक्ति वरें-2
योगी भव दुख से हो-3 मुक्ति पा जाये रे-SS।।4266।।

(49) ध्यान अवस्थित योगी हो, दृढ़ सम्यक् उपयोगी हो-2
चारित का अनुभागी हो-SSS
मुनि जिन आतम ध्यान करे, परमातम पद प्राप्त करे-2
कर्म मिटाकर हो-3 वह शिवपद पाये रे-SS।।4267।।

(50) राग-द्वेष बिन भाव यहाँ, कहा गया समभाव यहाँ-2
यह अभिन्न परिणाम यहाँ-SS
चारित आतम धर्म कहा, धर्म यहाँ समभाव कहा-2
ज्ञानी समभाव हो-3 निज में अपनाये रे-SS।4268।।

जहाँ नहीं दुख लेश उसे, मोक्ष बताएँ रे-2
मोक्ष बिन प्राणी हो-3 सुख कहीं न पाये रे-SS

(51) जैसा द्रव्य वहाँ आता, उसी रंगमय हो जाता-2
स्फटिक स्वभाव दिखा जाता-SS
जीव स्वभाव विनिर्मल है, राग-द्वेष खुद ही मल है-2
मोह से जीव हो-3 मोही कहलाये रे-SS।।4269।।

(52) संयम से अनुराग करे, देव गुरु का भक्त अरे-2
आदर से सम्यक्त्व धरे-SS
रत्नत्रय से प्रेम करे, श्रद्धा जो उत्कृष्ट धरे-2
ऐसा ही योगी हो-3 ध्यानी कहलाये रे-SS।।4270।।

(53) अज्ञानी तप उग्र धरे, कई भवों में कर्म खिरे-2
आत्म भावना रहित करे-SS
ज्ञानी गुप्ती तीन धरे, कई भवों के कर्म खिरे-2
अन्तर्मुहूर्त हो-3 में कर्म खपाए रे-SS।।4271।।

(54) जो साधु संयम धरकर, राग करे पर में पड़कर-2
स्त्री चाहे व्रत को धरकर-SS
वह साधु अज्ञानी है, राग तजे वह ज्ञानी है-2
ज्ञानी के मन में हो-3 नहिं राग समाए रे-SS।।4272।।

(55) इष्ट विषय में राग करे, वह आस्रव का भाव करे-2
पुण्यास्रव भी राग करे-SS
इसी राग के कारण ही, आत्मस्वभाव न भाव धरे-2
विपरीत भाव हो-3 मन में ले आये रे-SS।।4273।।

(56) मतिज्ञान में कुछ जाने, केवलज्ञान नहीं माने-2
खण्डन कर अपनी ताने-SS
उसमें दोष लगाता है, अज्ञानी कहलाता है-2
जिनधर्म दूषक हो-3 उसको बतलाएँ रे-SS।।4274।।

(57) चारित बिन जो ज्ञान करे, दर्शन बिन तप खूब धरे-2
भाव रहित कर्तव्य करे-SS
इनसे सुख नहिं उसे मिले, क्रियाकाण्ड ये सभी कहे-2
भेष धारण से हो-3 क्या सुख मिल जाये रे-SS।।4275।।

(58) कहे अचेतन को चेतन, रूप न जान रहा चेतन-2
छाया है अज्ञान सघन-SS
चेतन को चेतन माने, उसे यहाँ ज्ञानी जाने-2
ज्ञानी बन करके हो-3 अज्ञान मिटाओ रे-SS।।4276।।

(59) तप के बिन जो ज्ञान रहे, ज्ञानी उसको व्यर्थ कहे-2
ज्ञान बिना तप अर्थ न दे-SS
ज्ञान व तप मिल जायेंगे, मुक्ति प्राप्त कराएँगे-2
ज्ञानी बन करके हो-3 तप को अपनाओ रे-SS।।4277।।

(60) जिन्हें मिलेगी मुक्ति यहाँ, तीर्थंकर भगवान यहाँ-2
चार ज्ञान से युक्त यहाँ-SS
वे भी तो तप करते हैं, तभी कर्म क्षय करते हैं-2
तप बिन कर्मों का हो-3 नहिं क्षय हो पाये रे-SS।।4278।।

जहाँ नहीं दुख लेश उसे, मोक्ष बताएँ रे-2
मोक्ष बिन प्राणी हो-3 सुख कहीं न पाये रे-ऽऽ

(61) बाह्य लिंग से युक्त है जो, भावलिंग नहिं उसमें हो-2
द्रव्य लिंगमय साधु वो-ऽऽ
आत्म चरित से भ्रष्ट यहाँ, उसको मुक्ती मार्ग कहाँ-2
भटके वे साधु हो-3 सबको भटकाएँ रे-ऽऽ।।4279।।

(62) सुख में जितना ज्ञान किया, दुख आने पर नाश हुआ-2
अनुभव बिन था ज्ञान जिया-ऽऽऽ
दुख में जो अनुभव आता, कभी न वह भूला जाता-2
साधु जीवन में हो-3 दुख रोज उपाये रे-ऽऽ।।4280।।

(63) आहार आराम निद्रा को, जीतो धारो जिनमत को-2
पाओ आतम अनुभव को-ऽऽऽ
गुरु प्रसाद से ज्ञान करो, उसका ही नित ध्यान करो-2
ध्यानी ही साधु हो-3 भव बंध मिटाये रे-ऽऽ।।4281।।

(64) दुख में आतम ज्ञान किया, भावना की तो दुखी जिया-2
विषय त्याग में दुखी हिया-ऽऽऽ
संयम में दुख सहन किया, विरक्त हो तो दुखी जिया-2
पूरा दुख पाकर हो-3 शुभ भाव बनाओ रे-ऽऽ।।4282।।

(65) दर्शन ज्ञान सहित आतम, चारितवान स्वयं आतम-2
शुद्ध भावमय है आतम-ऽऽऽ
गुरु प्रसाद से जाना ये, उसका ध्यान करे आतम-2
आतम का ध्यान हो-3 निज गुण दिलवाये रे-ऽऽ।।4283।।

(66) विषयों में जो वृत्ति करे, आत्मज्ञान में भ्रष्ट अरे-2
अनुभव कैसे आत्म करे-ऽऽ
विषयों से जो दूर रहे, वह निज आतम स्वयं करे-2
विषयों में आतम हो-3 खुद ही खो जाये रे-ऽऽ।।4284।।

(67) निज आतम को जाना है, फिर भी मोह बेगाना है-2
भ्रष्ट करे जिन बाना है-ऽऽ
वे मुनि यहाँ भटकते हैं, चतुर्गति में रुलते हैं-2
आतम को जाने हो-3 फिर भी भरमाए रे-ऽऽ।।4285।।

(68) विरक्त विषयों से है जो, आत्म ज्ञान संयुक्त है जो-2
शुद्ध भावना युक्त है जो-ऽऽ
तप और मूलगुणों से युक्त, इस भव को ही छोड़ें जो-2
आतम का ज्ञान हो-3 भव पार कराए रे-ऽऽ।।4286।।

(69) पर द्रव्यों में रति करे, वह अज्ञानी मूढ़ अरे-2
आत्म भावमय नहीं चले-ऽऽ
साधू बना भटकता है, भव में यहाँ अटकता है-2
ऐसा बहिरातम हो-3 गुण एक न पाये रे-ऽऽ।।4287।।

(70) समदर्शन से शुद्ध यहाँ, आत्मध्यान नित करें यहाँ-2
दृढ़ संयम जो धरें यहाँ-ऽऽ
विषय विरत है जिनका मन, वे पाते हैं मुक्ती धन-2
ऐसे ही मुनिवर हो-3 सारे गुण पायें रे-ऽऽ ।।4288।।

जहाँ नहीं दुख लेश उसे, मोक्ष बताएँ रे-2
मोक्ष बिन प्राणी हो-3 सुख कहीं न पाये रे-ऽऽ

(81) स्त्री की पर्याय लखे, उसके तन में राग करे-2
वह भव का नित बंध करे-ऽऽ
निज पर आत्म भावना कर, शुद्ध आतम पर दृष्टि धर-2
पर्यय की बुद्धि हो-3 नित राग बढ़ाए रे-ऽऽ।।4289।।

(82) निंदा और प्रशंसा में, भव के सुख और दुक्खों में-2
शत्रु में और मित्रों में-ऽऽ
सब में समता भाव धरे, इससे हो चारित्र अरे-2
चारित्र जीवन हो-3 को शुद्ध बनाये रे-ऽऽ।।4290।।

(83) जो मुनि शिथिलाचारी हैं, संयम में अतिचारी हैं-2
व्रत हो मिथ्याचारी हैं-ऽऽ
कहते पंचमकाल ये है, इसमें ध्यान न होता है-2
भ्रष्ट ये साधु हो-3 अज्ञान बढ़ाएँ रे-ऽऽ।।4291।।

(84) सम्यग्ज्ञान रहित है जो, भव सुख में ही रत है जो-2
मोक्ष कभी नहिं पाये जो-ऽऽ
वो अभव्य ही कहे यहाँ, ध्यान योग्य दे समय कहाँ-2
ध्यान का काल हो-3 ये नहीं बताए रे-ऽऽ।।4292।।

(85) भरत क्षेत्र पंचम युग में, धर्म ध्यान में मुनि रमें-2
नहिं माने अज्ञानी हैं-ऽऽ
आत्म भाव में रमता जो, धर्मध्यान उसको ही हो-2
दुखमय काल में हो-3 भी ध्यान बताएँ रे-ऽऽ।।4293।।

(86) व्रत-समिति और गुप्ति में, मूढ़ हैं वो अज्ञानी हैं-2
साधू में सुस्वादु हैं-ऽऽ
इनको ध्यान कहाँ से हो, जो रागी हैं द्वेषी हैं-2
ऐसे ही साधु हो-3 भटके, भटकाएँ रे-ऽऽ।।4294।।

(87) रत्नत्रय से शुद्ध यहाँ, करता है जो ध्यान यहाँ-2
लौकांतिक हो देव यहाँ-ऽऽ
फिर मनुष्य गति आते हैं, मुनि बन मुक्ति पाते हैं-2
तीजे भव में ही हो-3 वे मुक्ति पायें रे-ऽऽ।।4295।।

(88) पापों से सम्मोहित हैं, वे मुनि जग अपमानित हैं-2
शिथिलाचारी गर्हित है-ऽऽ
जिनलिंग धारें पाप करें, मोक्ष मार्ग में पतित वो हैं-2
भव के बंधन से हो-3 वे मुक्ति न पायें रे-ऽऽ।।4296।।

(89) पंच वस्त्र की चाह रखें, परिग्रह को नित ग्रहण करें-2
अधःकर्म संलग्न रहें-ऽऽ
वस्तु याचना करते हैं, निंद्यकर्म रत रहते हैं-2
ऐसे वे मुनिवर हो-3 पथ पतित कहाएँ रे-ऽऽ।।4297।।

(80) मोह परिग्रह रहित हैं जो, परीषहों को सहते जो-2
जीता सभी कषायों को-ऽऽ
पापारंभ से दूर जो हैं, मोक्षमार्गी उन्हें कहें-2
ऐसे ही साधू हो-3 शिव पथिक बताएँ रे-ऽऽ।।4298।।

जहाँ नहीं दुख लेश उसे, मोक्ष बताएँ रे–2
मोक्ष बिन प्राणी हो–3 सुख कहीं न पाये रे–SS

(81) ऊर्ध्व–मध्य–अधो लोकों में, कोई जीव न मेरे हैं–2
हम भी नहीं किसी के हैं–SS
योगी करे भावना ये, अविनाशी सुख पायें वे–2
उत्कृष्ट भावों में हो–3 सुख स्वयं समाये रे–SS।।4299।।

(82) देव गुरु के भक्त हैं जो, करें विचार विरागी जो–2
ध्यान में नित तत्पर हैं जो–SS
शोभनीय आचारी हैं, ज्ञानी हैं गुणधारी हैं–2
ऐसे ही मुनिवर हो–3 शिवमार्ग दिलाएँ रे–SS।।4300।।

(83) आतम से निज आतम में, आतम को तन्मयता में–2
धारा है निज भावों में–SSS
वो चारित्र परम उत्तम, कहते हैं सब योगी जन–2
ऐसा ही योगी हो–3 मुक्ती को पाये रे–SS।।4301।।

(84) योगी बनकर जिये यहाँ, ज्ञान दर्श कर पूर्ण यहाँ–2
ध्यान करे निज आत्म यहाँ–SS
वह पापों को हरता है, निर्द्वन्द्वी बन रहता है–2
केवलज्ञानी बन हो–3 प्रभुता पा जाये रे–SS।।4302।।

(85) जिन प्रभु के उत्कृष्ट वचन, श्रावक मुनि को अमृत धन–2
नष्ट करें संसार सघन–SSS
सिद्धि प्राप्त कराते हैं, गुणमय यहाँ बताते हैं–2
जिनके वचनों में हो–3 सुख शांति दिखाए रे–SS।।4303।।

(86) जो अत्यन्त विनिर्मल है, मेरु सम जो निश्चल है–2
ऐसा सम्यक् अविचल है–SS
संयम धर फिर ध्यान करे, कर्मों का तब नाश करे–2
श्रावक ये भाव हो–3 प्रतिदिन कर जाये रे–SS।।4304।।

(87) जो सम्यक् का ध्यान करे, होता वह समदृष्टि अरे–2
रत्नत्रय फिर यहाँ धरे–SS
समदर्शन परिणमन करे, कर्मों का क्षय वही करे–2
श्रेष्ठ वे मानव हो–3 ऐसा कर जायें रे–SS।।4305।।

(88) हुए पूर्व में सिद्ध यहाँ, होंगे आगे सिद्ध यहाँ–2
अभी हो रहे सिद्ध यहाँ–SS
ये सम्यक् ही महिमा है, उसके बिन हो सिद्ध कहाँ–2
सम्यक् पाने का हो–3 पुरुषार्थ जगाओ रे–SS।।4306।।

(89) वे मानव ही धन्य यहाँ, वे मानव कृतकृत्य यहाँ–2
वे ही हैं अतिशूर यहाँ–SS
सम्यक् मलिन न करते जो, सभी सिद्धियाँ पाते वो–2
वे ही इस जग में हो–3 पंडित कहलाएँ रे–SS।।4307।।

(90) धर्म अहिंसा परम यहाँ, दोष रहित जिनदेव यहाँ–2
हों गुरुवर निर्ग्रन्थ यहाँ–SS
इन पर श्रद्धा धरता है, प्राप्त वो सम्यक् करता है–2
सम्यक् पा करके हो–3 मंजिल पा जाये रे–SS।।4308।।

जहाँ नहीं दुख लेश उसे, मोक्ष बताएँ रे-2
मोक्ष बिन प्राणी हो-3 सुख कहीं न पाये रे-SS

(91) बालकवत् मुनि लिंग यहाँ, उत्तम संयम सहित यहाँ-2
सभी परिग्रह रहित यहाँ-SSS
पर से नहीं अपेक्षा हो, उसको हो सम्यक्त्व यहाँ-2
सम्यक् संयम का हो-3 आधार बताएँ रे-SS।।4309।।

(92) लज्जाभय गारव से जो, कुदेव वंदना करते जो-2
कुधर्म-कुगुरु पूजता हो-SS
मिथ्यादृष्टि होता वो, तत्त्वज्ञान नहिं पाता वो-2
ऐसे ही लोग हो-3 भव भ्रमते जायें रे-SS।।4310।।

(93) जटाजूट धारी हैं जो, स्त्री संग रागी हैं जो-2
गेरु वस्त्र मृग चर्मी जो-SS
वंदन करे धरे श्रद्धा, वो आँखों वाला अंधा-2
मिथ्यादृष्टि ही हो-3 इन्हें शीश झुकाएँ रे-SS।।4311।।

(94) जिनवर पर श्रद्धान करे, वीतराग को हृदय धरे-2
गुरु निर्ग्रन्थ महान अरे-2
इन पर श्रद्धा धरता जो, वो पाता सम्यक्त्व अहो-2
सम्यक् जो पाए हो-3 सुलझे सुलझाए रे-SS।।4312।।

(95) मिथ्यादृष्टि जीव यहाँ, जन्म जरामृत युक्त यहाँ-2
कोटि दुक्ख परिपूर्ण यहाँ-SS
हरदम रहता दुखी यहाँ, मरता फिरता स्वयं यहाँ-2
भव के दुक्खों से हो-3 वो अंत न पाये रे-SS।।4313।।

(96) सभी गुणों में सम्यक् गुण, अगुणों में मिथ्यात्व अगुण-2
कर विचार बन यहाँ निपुण-SS
तुझे यहाँ जो पाना है, उसको शीश झुकाना है-2
जो भी चाहेगा हो-3 वो ही मिल जाये रे-SS।।4314।।

(97) बाह्य परिग्रह त्याग यहाँ, पर मिथ्यात्व न त्याग यहाँ-2
खूब करे वे जाप यहाँ-SS
उचित नहीं फल मिल पाये, भाव न सम वो लख पाये-2
समता भावों में हो-3 वो कभी न जाये रे-SS।।4315।।

(98) नहीं मूलगुण पाले जो, बाह्य कर्म नित भाले जो-2
लगते हैं मतवाले वो-SS
जैनधर्म बदनाम करें, सिद्धि सुख नहिं प्राप्त करे-2
वह तो जिनलिंग हो-3 का नाम डुबोये रे-SS।।4316।।

(99) आत्म स्वभाव न जाना है, बाह्य कर्म नित बाना है-2
उसको भटकन पाना है-SS
व्रत-तप यहाँ करेगा क्या, भाव तुम्हारा है मिथ्या-2
आत्म स्वभाव हो-3 सम्यक्त्व दिलाये रे-SS।।4317।।

(100) व्रत-तप सम्यक् बिना करे, कई शास्त्र वो यहाँ पढ़े-2
चारित पालन रोज करे-SS
आत्मस्वरूप न लख पाया, बाल चरित सा कहलाया-2
ऐसे ही साधु हो-3 भव भटकन पायें रे-SS।।4318।।

जहाँ नहीं दुख लेश उसे, मोक्ष बताएँ रे-2
मोक्ष बिन प्राणी हो-3 सुख कहीं न पाये रे-SS

(101) साधु जो वैरागी हो, परद्रव में नहिं रागी हो-2
वीतराग का पागी हो-SS
भव सुख में आसक्त नहीं, निज सुख में अनुरक्त वही-2
अनुभव की धारा हो-3 उसमें आ जाये रे-SS।।4319।।

(102) गुण समूह से तन शोभित, हेय लगे हरदम अनुचित-2
उपादेय करके निश्चित-SS
ध्यान-अध्ययन में लीन हुआ, श्रेष्ठ स्थान को प्राप्त हुआ-2
उत्तम से उत्तम हो-3 वह पद पा जाये रे-SS।।4320।।

(103) जिन्हें इन्द्र सब नमन करें, सब ही जिनका ध्यान करें-2
स्तुति सारे भव्य करें-SS
तीर्थंकर जिसको ध्याते, आत्म तत्त्व के गुण गाते-2
उस ही आतम का हो-3 श्रद्धान जमाओ रे-SS।।4321।।

(104) अर्हत् सिद्धाचार्य यहाँ, उपाध्याय सब साधु यहाँ-2
परमेष्ठी ये कहे यहाँ-SSS
आतम की सब पर्यायें, उस आतम को हम चाहें-2
शुद्ध स्वभाव हो-3 पद श्रेष्ठ दिलाए रे-SS।।4322।।

(105) सम्यग्दर्शन ज्ञान कहें, सम्यक् तप चारित्र कहें-2
आतम में ये सभी रहें-SS
इन्हें पाओ या आतम को, दोनों एक ही बात कहें-2
तब तो आतम ही हो-3 निज शरण बताएँ रे-SS।।4323।।

(106) जिन प्रभु ने बतलाया है, कुंदकुंद ने गाया है-2
प्राभृत मोक्ष दिखाया है-SS
श्रेष्ठ भक्ति से पढ़ता है, भावों से जो सुनता है-2
उसको शाश्वत सुख हो-3 इक दिन मिल जाये रे-SS।।4324।।

सम्यग्दर्शन प्राप्त कर, पा रत्नत्रय धाम।
ध्याते हैं जिन आत्म को, पाते वो निर्वाण।।

सम्यग्दर्शन के बिना, ज्ञान न सम्यक् होय।
हो जाये चारित्र पर, ज्ञान बिना नहिं सोय।।

शील पाहुड़

मूल ग्रंथकर्ता : आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी
पद्यानुवाद : उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

शील सहित व्रत कही महिमा, सारे श्रुत गायें रे–2
शील से संयम हो–3 दृढ़ता पा जाये रे–ऽऽ

मंगलाचरण

(1) लाल कमल सम चरण यहाँ, नेत्र हैं केवलज्ञान यहाँ–2
राग–द्वेष से दूर यहाँ–ऽऽ
महावीर भगवान हैं वो, उनको करूँ प्रणाम यहाँ–2
शील–गुणों को हो–3 कह शीश झुकाएँ रे–ऽऽ॥4325॥

(2) शील सहायक ज्ञान यहीं, ज्ञान विरोधी शील नहीं–2
शील में ज्ञान अवश्य यहीं–ऽऽ
शील न हों गर जीवन में, विषय ज्ञान तब नष्ट करें–2
शील से ज्ञान हो–3 अनुभव बन जाये रे–ऽऽ॥4326॥

(3) ज्ञान जानने में दुख हो, उसे भावने में दुख हो–2
विषय त्यागने में दुख हो–ऽऽ
बिन त्यागे अनुभव नहिं हो, अनुभव बिन रक्षित नहिं हो–2
दुर्लभ से दुर्लभ हो–3 वह ज्ञान बढ़ाएँ रे–ऽऽ॥4327॥

(4) विषयों के वश रहता जो, तब तक उसको ज्ञान न हो–2
ज्ञानी ऐसा कहें अहो–ऽऽ
बिना ज्ञान व्रत धरे यहाँ, पूर्व कर्म क्षय कभी न हों–2
ज्ञान बिन संवर हो–3 निर्जरा न पाये रे–ऽऽ॥4328॥

(5) चारित बिन जो ज्ञान करे, दर्शन बिन मुनि भेष धरे–2
संयम बिन तप यहाँ करे–ऽऽ
व्यर्थ सभी आचरण यहाँ, सिद्धि मिले कुछ नहीं यहाँ–2
बिन शक्ति, संयम हो–3 नहिं पूज्य बनाएँ रे–ऽऽ॥4329॥

(6) ज्ञान शुद्ध हो चारित्र से, मुनि पद शुद्ध हो दर्शन से–2
तप की शुद्धि संयम से–ऽऽ
सम्यक् तप थोड़ा भी हो, देता फल वो महा अहो–2
शुद्ध थोड़ा तप हो–3 बहु फल दिलवाए रे–ऽऽ॥4330॥

(7) जिनने जाना ज्ञान यहाँ, विषयों में आसक्त यहाँ–2
विषय मोह में मूर्ख यहाँ–ऽऽ
ज्ञान मिटाता विषय सभी, आसक्ति फिर रहे कहाँ–2
मोही इस भव में हो–3 भ्रमता ही जाये रे–ऽऽ॥4331॥

(8) जो मुनि विषय विरक्त यहाँ, पाते हैं वो ज्ञान यहाँ–2
तप करते हैं खूब यहाँ–ऽऽऽ
मूल उत्तर गुण युक्त रहें, वे चउगति भव नष्ट करें–2
इसमें कैसा भी हो–3 संदेह न आये रे–ऽऽ॥4332॥

(9) होता स्वर्ण विशुद्ध यहाँ, अग्नि का संयोग जहाँ–2
नमक सुहाग हो लेय जहाँ–ऽऽ
वैसे निर्मल ज्ञान यहाँ, जीव वहीं हो शुद्ध यहाँ–2
मोह निकले तो हो–3 निर्मलता आये रे–ऽऽ॥4333॥

(10) ज्ञान गर्वयुत् राग करें, विषयों में आसक्ति धरें–2
दोष ज्ञान का नहीं कहें–ऽऽ
दोष तो मंदबुद्धि का है, मोह अपुरुषारथ का है–2
ज्ञान तो हरदम हो–3 सद्राह दिखाये रे–ऽऽ॥4334॥

शील सहित व्रत कही महिमा, सारे श्रुत गायें रे–2
शील से संयम हो–3 दृढ़ता पा जाये रे–ऽऽ

(11) सम्यक् सहित हो ज्ञान यहाँ, सम्यक् सहित चरित्र यहाँ–2
सम्यक्युत् तप दर्श यहाँ–ऽऽ
यही मोक्ष के कारण हैं, ये संसार निवारण हैं–2
इनसे ही मुनिजन हो–3 मन शुद्ध बनायें रे–ऽऽ।।4335।।

(12) शील की रक्षा करते हैं, निर्मल दर्शन धरते हैं–2
दृढ़ संयम आचरते हैं–ऽऽ
विषय विरक्त रहें हरदम, ध्यान करें नित ही आगम–2
उनको निश्चित ही हो–3 मुक्ति मिल जाये रे–ऽऽ।।4336।।

(13) इष्ट लक्ष्य जो देख रहे, भले वो मोही बना रहे–2
उसको तो शिव पथिक कहे–ऽऽ
जिन्हें देख उन्मार्ग यहाँ, वे हैं दर्शन भ्रष्ट यहाँ–2
उनका सब ज्ञान हो–3 बेकार बताएँ रे–ऽऽ।।4337।।

(14) कई शास्त्र को जानें जो, मिथ्यामत को मानें वो–2
उसकी करें प्रशंसा जो–ऽऽ
ज्ञान रहित व्रत शील रहित, अपना करते यहाँ अहित–2
शिवपथ आराधक हो–3 वे नहिं बतलाएँ रे–ऽऽ।।4338।।

(15) पाया सुंदर रूप यहाँ, यौवन कांति युक्त यहाँ–2
धन से मद से सहित यहाँ–ऽऽ
किंतु शील गुण रंच नहीं, जन्म है उनका व्यर्थ यहीं–2
ऐसे ही लोग हो–3 भू-भार बताएँ रे–ऽऽ।।4339।।

(16) जानें जो व्याकरण यहाँ, गणित, न्याय, व्यवहार यहाँ–2
छंद, शास्त्र का ज्ञान यहाँ–ऽऽ
शील नहीं उनमें होवे, तो वे उत्तम रहें कहाँ?–2
शील ही भव में हो–3 अतिश्रेष्ठ बनाए रे–ऽऽ।।4340।।

(17) शील गुणों से शोभित जो, आदर सबसे पाते वो–2
अपना ज्ञान बढ़ाते वो–ऽऽ
शील रहित श्रुतज्ञानी भी, तुच्छ आदर को पाते वो–2
शील प्राणी का हो–3 सम्मान बढ़ाए रे–ऽऽ।।4341।।

(18) शक्ति हीन धन हीन रहें, हीन जाति में बूढ़े हैं–2
रूप रंग से हीन रहे–ऽऽ
उत्तम शील वो धरते हैं, मानव उनको कहते हैं–2
उनका ये भव भी हो–3 उत्तम हो जाये रे–ऽऽ।।4342।।

(19) जीव दया सम्यग्दर्शन, ब्रह्मचर्य इन्द्रिय दमन–2
सत्य अचौर्य संतोषी मन–ऽऽ
सम्यक् तप और ज्ञान यहाँ, शील का ये परिवार यहाँ–2
शील आ जाये हो–3 सब खुद आ जाये रे–ऽऽ।।4343।।

(20) शील ही दर्शन शुद्धि है, शील ही उत्तम बुद्धि है–2
शील से ज्ञान प्रसिद्धि है–ऽऽ
शील भोग का शत्रु है, शील ही आत्म विशुद्धि है–2
शील मुक्ति की हो–3 सीढ़ी बतलाएँ रे–ऽऽ।।4344।।

शील सहित व्रत कही महिमा, सारे श्रुत गायें रे-2
शील से संयम हो-3 दृढ़ता पा जाये रे-SS

(21) मन विषयों में लाता है, विषय मृत्यु दिलवाता है-2
जीव दुखों को पाता है-SS
विष समान ये विषय यहाँ, कष्ट दिलाते घोर यहाँ-2
जीने का भाव हो-3 ये विषय मिटायें रे-SS।।4345।।

(22) विष खाकर इकबार मरे, विषय वेदना दुक्ख भरे-2
विषयी नंतो बार मरे-SS
विष से विषय भयंकर है, शील विषय का घातक है-2
शील, विषयों को हो-3 मृत्यु दिलवाए रे-SS।।4346।।

(23) विषयासक्त मनुष्य यहाँ, नर्क वेदना सहें यहाँ-2
पशुगति में दुख सहें यहाँ-SS
नीच कुलीन मनुष्य बनें, देवों में दुर्भाग्य सहें-2
विषयों की लीला हो-3 सब जगह दिखाए रे-SS।।4347।।

(24) सारभूत जो पाता है, तुष को वही उड़ाता है-2
खा मजबूती पाता है-SS
शीलयुक्त उत्तम ज्ञानी, विषय कषाय उड़ाता है-2
इन्द्रिय के विषय हो-3 तुष समझ में आयें रे-SS।।4348।।

(25) तन में कोई गोल यहाँ, अंग कोई हैं सरस यहाँ-2
कोई चन्द्राकार यहाँ-SS
कोई चौड़े, लम्बे हैं, सबसे उत्तम शील यहाँ-2
कहते हैं गुरुवर हो-3 जो शील बढ़ाएँ रे-SS।।4349।।

(26) तन से एकीभाव करे, वो तन बारम्बार धरे-2
ऐसा मिथ्यामती करे-SS
तन के ही सब विषय यहाँ, इनको चाहो नहीं यहाँ-2
शील ही इन पर हो-3 अति रोक लगाए रे-SS।।4350।।

(27) विषय रूप जो राग धरे, मोह से आतम ग्रसित करे-2
गाँठ कर्म की जो बाँधे-SS
ज्ञानी उसको नष्ट करे, संयम, तप गुणशील धरे-2
तब ही विषयों का हो-3 छेदन हो पाये रे-SS।।4351।।

(28) रत्न भरे हों सागर में, भले खजाना हो उसमें-2
जल से शोभा सागर में-SS
विनय तपस्या रत्न सहित, शोभित हो जो शील सहित-2
शील से संयम हो-3 उत्तम पद पाये रे-SS।।4352।।

(29) कुत्ता गधा सियाल यहाँ, शेर बिलाव व सर्प यहाँ-2
इन्हें न होता मोक्ष यहाँ-SS
जो भी मुनि पुरुषार्थ करें, वे मुनिवर ही मुक्ति वरें-2
शील गुण द्वारा हो-3 पुरुषार्थ बढ़ाएँ रे-SS।।4353।।

(30) विषयों के जो लोभी हों, दश पूर्वो के ज्ञानी हों-2
ऐसे रुद्र नरक में क्यों?-SS
शीलवान् गर ये होते, क्यों फिर नरकों में पड़ते-2
शील मानव में हो-3 विज्ञान कराये रे-SS।।4354।।

शील सहित व्रत कही महिमा, सारे श्रुत गायें रे-2
शील से संयम हो-3 दृढ़ता पा जाये रे-SS

(31) मात्र ज्ञान नहिं शुद्ध करे, वर्ना रुद्र भी शुद्ध अरे-2
चारित तप ये शुद्ध करे-SS
ज्ञान राह दिखलाता है, चारित शुद्ध बनाता है-2
शील बिन संयम हो-3 नहिं शुद्धि दिलाए रे-SS।।4355।।

(32) जो हो विषय विरक्त यहाँ, नरक मिले नहिं उसे यहाँ-2
करे वेदना दूर यहाँ-SS
सम्यग्दर्शन पाता है, तीर्थंकर पद पाता है-2
शील से ही सब हो-3 संभव हो पाए रे-SS।।4356।।

(33) केवल दर्शन पाया है, केवलज्ञान समाया है-2
सर्वलोक झलकाया है-SS
उन अरहंतों ने गाया, मोक्ष महाफल को पाया-2
शील से भव में हो-3 शाश्वत सुख पायें रे-SS।।4357।।

(34) सम्यग्दर्शन ज्ञान यहाँ, संग में हो चारित्र यहाँ-2
तप हो वीर्याचार यहाँ-SS
पवन सहित ये अग्नि समां, दग्ध करें सब कर्म यहाँ-2
सम्यक्त्व भव में हो-3 मुक्ति दिलवाये रे-SS।।4358।।

(35) जीत लिया सब इन्द्रिय को, विषय विरक्त हुए हैं जो-2
परीषहों में निश्चल जो-SSS
विनय, शील, तप सहित हैं जो, अष्टकर्म से रहित हैं जो-2
उन सब सिद्धों को हो-3 हम शीश झुकाएँ रे-SS।।4359।।

(36) जो मुनि समता भाव धरे, शीलगुणों से युक्त अरे-2
संयम तरु अति दीर्घ वरे-SS
लोक प्रसिद्धि पाता वो, शीलवान् कहलाता वो-2
दुनियाँ में उसकी हो-3 महिमा सब गायें रे-SS।।4360।।

(37) जैसी-जैसी शक्ति जहाँ, वैसा दर्शन ज्ञान वहाँ-2
ध्यान योग आचार यहाँ-SS
सम्यग्दर्शन से मिलती, रत्नत्रय की बोधि यहाँ-2
वीर्य गुण से ही हो-3 ये सब मिल पाये रे-SS।।4361।।

(38) सार शास्त्र का पाते हैं, वे विरक्त हो जाते हैं-2
संयम तप अपनाते हैं-SS
धीर वीर वे मुनि यहाँ, शील स्नान कराते हैं-2
इक दिन सिद्धालय हो-3 का सुख वो पायें रे-SS।।4362।।

(39) गुण पा कर्म हटाये हैं, भव सुख-दुक्ख मिटाये हैं-2
मन विशुद्धि अपनाये हैं-SS
कर्मधूलि को उड़ा दिया, आराधन को प्रकट किया-2
ऐसे ही मुनिवर हो-3 सिद्धालय पायें रे-SS।।4363।।

(40) अर्हत् प्रभु में शुभ भक्ति, सम्यक्त्व है अंतस् शक्ति-2
श्रद्धा श्रेष्ठ यही युक्ति-SS
विषय विरक्त है शील यहाँ, इनसे बाहर ज्ञान कहाँ-2
शील बिन ज्ञान हो-3 अज्ञान कहाए रे-SS।।4364।।

शील सभी गुण में रहे, तभी ये गुण शुभ जान।
शील बिना गुण सब रहें, तो भी है अज्ञान।।

शील करे गुण शुद्ध सब, बिना शील व्रत भार।
सभी गुणों में शील व्रत, दिखता हमको सार।।

गुण की रक्षा शील से, ज्यों घर में दीवाल।
व्रत में आये शील तो, दिखे तुझे निज लाल।।

शील करे निर्मल यहाँ, दर्शन-संयम-ज्ञान।
शील युक्त संयम तुझे, देता है निर्वाण।।

सम्यग्दर्शन के आठ अंग

पद्यानुवाद : उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

गुरुवर ज्योति दिवाकर हैं, गुरु गंगाजल सागर हैं–2
गुरु की मूरत में हो–3 भगवान् दिखाये रे–ऽऽ

(1) जिन वच में शंका मत कर, जिन गुरु पर अब श्रद्धा धर–2
ऐसा करके यहाँ गुजर–ऽऽ
तब सम्यक्त्व समाएगा, एक नगीना पाएगा–2
पहला ये अंग हो–3 मजबूत बनाए रे–ऽऽ।।4365।।

(2) जिन गुरु की तू सेवा कर, व्रत–पूजा सामायिक कर–2
मन में इच्छाएँ मत धर–ऽऽ
गुण पाने की चाहत कर, ज्ञानी बन आराधन कर–2
तब ही इच्छाएँ हो–3 सब गुण बन जाये रे–ऽऽ।।4366।।

(3) रत्नत्रय गुणधारी में, बीमारी लाचारी में–2
पापोदय की क्यारी में–ऽऽ
उनसे ग्लानि नहीं करो, सेवा कर उपचार करो–2
गुण निर्विचिकित्सा हो–3 निज में आ जाए रे–ऽऽ।।4367।।

(4) मूढ़ी मिथ्यावादी की, गलत राह आजादी की–2
ढोंगी और मायावी की–ऽऽ
कभी प्रशंसा नहीं करे, मूढ़ी मन से नहीं बने–2
दृष्टि अमूढ़ हो–3 तब ही बन पाये रे–ऽऽ।।4368।।

(5) अज्ञानी असमर्थों से, दुष्टों से व भ्रष्टों से–2
निंदा सच्चे धर्मी की–ऽऽ
उसको यहाँ छिपाते हैं, मोक्षमार्ग प्रकटाते हैं–2
उनमें उपगूहन हो–3 का अंश बताएँ रे–ऽऽ।।4369।।

(6) मिथ्या बातों में आना, दर्शन व्रत से गिर जाना–2
सही मार्ग पर ला देना–ऽऽ
धर्मी ऐसा करता है – धर्म प्रेम वह रखता है–2
ऋषिवर ये अंग हो–3 स्थितिकरण बताए रे–ऽऽ।।4370।।

(7) जिसके दिल में धर्म रहे, व्रत संयम का मर्म रहे–2
हर हमेश शुभ कर्म रहे–ऽऽ
उनका जो सम्मान करे, अंग यही वात्सल्य कहे–2
ऐसा वात्सल्य हो–3 सम्यक्त्व दिलाए रे–ऽऽ।।4371।।

(8) मिथ्यातम का नाश करे, जिनशासन परकाश करे–2
सही रीति विस्तार करे–ऽऽ
ये प्रभावना अंग महा, सम्यग्दर्शन संग कहा–2
इसकी महिमा को हो–3 सब ऋषिजन गायें रे–ऽऽ।।4372।।

(9) अंगहीन नहिं छेद सके, भव संतति नहीं भेद सके–2
राग–द्वेष नहिं मेट सके–ऽऽ
मंत्र में हो एक अक्षर कम, वो विष दुख नहिं मेट सके–2
आठों अंगों का हो–3 दृग जगत मिटाए रे–ऽऽ।।4373।।

(10) वक्त निकलता जाता है, उम्र गुजरती जाती है–2
फिर भी समझ न आती है–ऽऽ
वक्त समझ ले शीघ्र यहाँ, घड़ी यही समझाती है–2
वक्त इंसां को हो–3 मजबूर बनाए रे–ऽऽ।।4374।।

गुरुवर ज्योति दिवाकर हैं, गुरु गंगाजल सागर हैं–2
गुरु की मूरत में हो–3 भगवान् दिखाये रे–ऽऽ

(11) अच्छा भाग्य दिलाता है, हम से वस्तु मिलाता है–2
जीवन को महकाता है–ऽऽ
मिलने पर भी मुरझाए, किस्मत नहीं समझ पाए–2
मिलने नहीं मिलने हो–3 को समझ न पाए रे–ऽऽ।।4375।।

(12) पर में परवश फँसे रहे, अपने वश में नहीं रहे–2
कर्म सभी को विवश करे–ऽऽ
कर्म समझ में आएगा, अनुभव खुद नजराएगा–2
अनुभव से कर्म हो–3 खुद ही गिर जाएँ रे–ऽऽ।।4376।।

(13) कर्म यहाँ फल दिखा रहे, सुख–दुख वेदन चखा रहे–2
चारों गति में घुमा रहे–ऽऽ
ज्ञान कर्म समझाएगा, तभी मुक्ति दिलवाएगा–2
कर्मों को जानो हो–3 जो गुण दिलवाए रे–ऽऽ।।4377।।

(14) कर्म दिखाते खेल यहाँ, सुख दुख रूपी रेल यहाँ–2
चतुर्गति में जेल यहाँ–ऽऽ
ये संबंध बनाते हैं, योग वियोग दिखाते हैं–2
कर्मों की लीला हो–3 ज्ञानी बतलाए रे–ऽऽ।।4378।।

(15) कर्मों के सिद्धांत यहाँ, जो जाने वो संत यहाँ–ऽऽऽ
करे वही भव अंत यहाँ–ऽऽ
भेद ज्ञान करवाता है, निर्विकल्पता लाता है–2
आओ अब जानें हो–3 निज ज्ञान बढ़ाएँ रे–ऽऽ।।4379।।

(16) विषयों पर मन जाता है, उनका लक्ष्य बनाता है–2
उनमें ही रम जाता है–ऽऽ
यही कुमति कहलाती है, दुख ही दुक्ख दिखाती है–2
ऐसी ही बुद्धि हो–3 भव भ्रमण मिटाये रे–ऽऽ।।4380।।

(17) पापों में मन लगता है, सुख ही दुक्ख समझता है–2
उसको फर्ज समझता है–ऽऽ
राग द्वेष बढ़ाता है, मोही बन मर जाता है–2
उसको जिनधर्म हो–3 नहिं समझ में आये रे–ऽऽ।।4381।।

(18) जब मन के अनुसार चले, तब अपना संसार बढ़े–2
पूरे जीवन दुखी रहे–ऽऽ
पराधीनता लाता है, सुख से दूर हटाता है–2
मन ही इस मति को हो–3 भव भ्रमण कराये रे–ऽऽ।।4382।।

(19) ज्ञान उजाला लाता है, अंधकार मिट जाता है–2
जीवन को महकाता है–ऽऽ
अंधकार दुख लाता है, चाहे कहीं गिराता है – 2
दुखमय अँधियारा हो–3 तुम दूर भगाओ रे–ऽऽ।।4383।।

(20) मेरे अंदर ज्ञान यहाँ, करता सबका भान यहाँ–2
निज–पर को पहचान यहाँ–ऽऽ
जिसको सच्चा ज्ञान नहीं, रोता रहता वही यहीं–2
ज्ञान ज्ञानी को हो–3 सम्मान दिलाये रे–ऽऽ।।4384।।

गुरुवर ज्योति दिवाकर हैं, गुरु गंगाजल सागर हैं–2
गुरु की मूरत में हो–3 भगवान् दिखाये रे–ऽऽ

(21) जीवन ज्ञान दिलाता है, अंतस् रूप बताता है–2
ईश्वर को दिखलाता है–ऽऽ
ज्ञान बिना सारा जीवन, दुख ही दुक्ख दिलाता है–2
ज्ञानी ही सबको हो–3 वह ज्ञान सिखाये रे – ऽऽ।।4385।।

(22) प्रेम क्रोध पर भारी है, प्रेम भले ही नारी है–2
क्रोधी की मति मारी है–ऽऽ
क्रोध एक बीमारी है, प्रेम दवा उपकारी है–2
प्रेम की शक्कर हो–3 स्वादिष्ट बताए रे–ऽऽ।।4386।।

(23) कोई कर्ज पटाता है, कोई कर्ज बढ़ाता है–2
कोई फर्ज निभाता है–ऽऽ
फँसता है कोई आकर, कोई बन जाता चाकर–2
करनी का फल ही हो–3 अनुभव में आये रे–ऽऽ।।4387।।

(24) कर्ज को लेकर आता है, शादी वही रचाता है–2
बच्चे वो ही पाता है–ऽऽ
कर्ज चुकाकर जो आये, साधु वो ही बन पाये–2
साधु जीवन की हो–3 एक तर्ज बनाए रे–ऽऽ।।4388।।

(25) जो लेकर नहिं आता है, वो ही मौज उड़ाता है–2
कहीं नहीं दुख पाता है–ऽऽ
देकर के जो जाता है, सभी जगह वो पाता है–2
दुनियाँ में जीकर हो–3 वो फर्ज निभाये रे –ऽऽ।।4389।।

(26) जलता और जलाता है, शक्ति क्रोध मिटाता है–2
सबको ही दुखदाता है–ऽऽ
तपकर बन जाओ ध्यानी, तप करने में मनमानी–2
क्रोध हो दिल में हो–3 सब व्यर्थ बताए रे–ऽऽ।।4390।।

(27) बैर बढ़ाता क्रोध यहाँ, प्रेम बढ़ाता बोध यहाँ–2
ज्ञान कराता शोध यहाँ–ऽऽ
ध्यान स्वयं का करना है, खुद को स्वयं समझना है–2
समझे बिन कुछ भी हो–3 तू समझ न पाये रे–ऽऽ।।4391।।

(28) जिंदा हमें जलाता है, मौत अकाल दिखाता है–2
शक्ति क्रोध मिटाता है–ऽऽ
दिल का धर्म क्षमा यारो, इससे जले शमा यारो–2
धर्म ही दिल को हो–3 रौशन कर जाए रे–ऽऽ।।4392।।

(29) जब जब क्रोध समाता है, जन्म मरण करवाता है–2
अंधा हमें बनाता है–ऽऽ
दीप जलाता क्षमा धर्म, राह दिखाता सही करम–2
क्रोधी जीवन को हो–3 जंजाल बनाए रे–ऽऽ।।4393।।

(30) क्रोध करम से आता है, क्षमा धर्म से आता है–2
क्रोध नरक ले जाता है–ऽऽ
खून बना देता पानी, क्रोध बनाता अभिमानी–2
क्रोधी सड़कर के हो–3 दुर्गंध बढ़ाए रे–ऽऽ।।4394।।

गुरुवर ज्योति दिवाकर हैं, गुरु गंगाजल सागर हैं–2
गुरु की मूरत में हो–3 भगवान् दिखाये रे–ऽऽ

(31) काला मुँह करवाता है, कर्म कालिमा लाता है–2
दुष्ट रूप दिखलाता है–ऽऽ
दिल का प्रेम मिटाता है, अपनी यहाँ चलाता है–2
इंसां को क्रोध हो–3 जल्लाद बनाये रे–ऽऽ।।4395।।

(32) क्रोध मिटाता अपना घर, जिस्म काँपता है थर थर–2
यहाँ काटता अपने पर–ऽऽ
आँख बंद कर जाता है – मुँह से बाहर आता है–2
क्रोध की आग हो–3 निज धर्म मिटाए रे–ऽऽ।।4396।।

(33) दिल को यहाँ खंगालें हम, एक मुहूर्त निकालें हम–2
क्रोध उसी में कर लें हम–ऽऽ
कितना किस पर कब करना, या फिर क्रोध बिना मरना–2
क्रोधी के तन में हो–3 इक जहर समाये रे–ऽऽ।।4397।।

(34) चेहरे के रंग को बदले, जीवन के ढंग को बदले–2
लोगों के संग को बदले–ऽऽ
खुशियों को गम में बदले, क्रोध दुखों के संग चले–2
क्रोधी नरकों में हो–3 खुद ही पड़ जाए रे–ऽऽ।।4398।।

(35) मुँह से क्रोध निकलता है, नर्क यहीं पर बनता है–2
बंदर सा मुँह लगता है–ऽऽ
स्वर्ग में जाता प्रेम यहाँ, अपना सुंदर फ्रेम यहाँ–2
पाता वो स्वर्ग हो–3 जो क्रोध मिटाये रे–ऽऽ।।4399।।

(36) क्रोध करे अपराध यहाँ, करके दिल नाशाद यहाँ–2
करके कई विवाद यहाँ–ऽऽ
प्रेम करे आबाद हमें, हर इक पल दिलशाद हमें–2
क्रोधी अपना ही हो–3 अस्तित्व गँवाए रे–ऽऽ।।4400।।

(37) कर्म ज्ञान दिलवाता है, राह सही दिखलाता है–2
भ्रम को यही मिटाता है–ऽऽ
सम्यग्दर्श दिलाकर के जीवन सफल बनाता है–ऽऽऽ
मन की हलचल को हो–3 शुभ शांत बनाए रे–ऽऽ।।4401।।

(38) धन ही हमें डुबाता है, धन ही पुण्य बढ़ाता है–2
पड़ा यहीं रह जाता है–ऽऽ
धन से होते कृपण यहाँ, यही कराये भ्रमण यहाँ–2
धन को पाकर के हो–2 तुम ज्ञान बढ़ाओ रे–ऽऽ।।4402।।

(39) श्रद्धा मार्ग दिखाती है, प्रेरक भी बन जाती है–2
सच स्वीकार कराती है–ऽऽ
जैसी श्रद्धा दिल में हो, वैसा ही विश्वास अहो–2
भोगों की इच्छा हो–3 भव भ्रमण कराए रे–ऽऽ।।4403।।

(40) श्रद्धा के बिन भटके हैं, पर्यायों में अटके हैं–2
भव के दुख में लटके हैं–ऽऽ
सही–सही अब ज्ञान करें, सच्चा ही श्रद्धान करें–2
तब ही जीवन में हो–3 खुशियाँ नजरायें रे–ऽऽ।।4404।।

गुरुवर ज्योति दिवाकर हैं, गुरु गंगाजल सागर हैं–2
गुरु की मूरत में हो–3 भगवान् दिखाये रे–ऽऽ

(41) सार निकल नहीं पाएगा, तो पीछे पछताएगा–2
रुलवाकर खुद रोयेगा–ऽऽ
राग–द्वेष कर जाएगा, तो संसार बढ़ाएगा–2
भव से मुख मोड़े हो–3 तब सार दिखाए रे–ऽऽ।।4405।।

(42) गैरों को मत जान यहाँ, इनमें होता ज्ञान कहाँ–2
मिलता है सम्मान कहाँ–ऽऽ
जब खुद को ही जानोगे, तब भगवन् को मानोगे–2
प्रभु के आते ही हो–3 सब दुख मिट जाए रे–ऽऽ।।4406।।

(43) अभयदान कर जाएगा, कहीं नहीं दुख पाएगा–2
नई जिंदगी पाएगा–ऽऽ
महक–महक मन जाएगा, गुण से खुद भर जाएगा–2
प्रभु की भक्ति से हो–3 निर्भय पद पाए रे–ऽऽ।।4407।।

(44) भय हिंसा दिलवाती है, मरण कई करवाती है–2
दुख ही दुक्ख दिखाती है–ऽऽ
परम अहिंसा धर्म यहाँ, देता अभय सुकर्म यहाँ–2
धर्म, धर्मी को ही हो–3 खुशहाल बनाए रे–ऽऽ।।4408।।

(45) पहले गुरु ने दी शिक्षा, फिर संयम की दी दिक्षा–2
कर दी दूर सभी इच्छा–ऽऽ
संयम का उपहार दिया, मुझ पर इक उपकार किया–2
गुरुवर की महिमा हो–3 हम सभी सुनाएँ रे–ऽऽ।।4409।।

(46) गुरु का गुणानुवाद किया, उनने आशीर्वाद दिया–2
संयम दे उपकार किया–ऽऽ
गुरु की महिमा न्यारी है, जग में सबसे भारी है–2
गुरुवर का नाम हो–3 भव पार कराए रे–ऽऽ।।4410।।

(47) अंत समय जो चाहोगे, वैसा ही कर जाओगे–2
इच्छित फल तब पाओगे–ऽऽ
श्रद्धा से अपनाओगे, तभी सफलता पाओगे–2
फल के मिलते ही हो–3 मन खुश हो जाए रे–ऽऽ।।4411।।

(48) शुभ विचार जब लाओगे, संस्कार तब पाओगे–2
किस्मत यहाँ बनाओगे–ऽऽ
संस्कार बिन भाग्य नहीं, भाग्य बिना सौभाग्य नहीं–2
भाग्य बिन भव में हो–3 खुशियाँ नहिं पाये रे–ऽऽ।।4412।।

(49) मन की जब मन करता है, तब दुख पैदा करता है–2
लेकिन नहीं समझता है–ऽऽ
दिल की मन जब सुनता है, तब कुछ सुखी समझता है–2
मन की जो माने हो–3 वो दुख ही पाये रे–ऽऽ।।4413।।

(50) खुद को मत गमगीन करो, उस पर यहाँ यकीन करो–2
अपनी मत तौहीन करो–ऽऽ
यकीं करो सब पाओगे, हरदम मौज उड़ाओगे–2
भक्ति से सबको हो–3 प्रभुवर मिल जाये रे–ऽऽ।।4414।।

गुरुवर ज्योति दिवाकर हैं, गुरु गंगाजल सागर हैं–2
गुरु की मूरत में हो–3 भगवान् दिखाये रे–ऽऽ

(51) बदलोगे कुछ बदलेगा, भीतर से कुछ निकलेगा–2
गुलशन जैसा महकेगा–ऽऽ
फल वाले तुम फूल बनो, कभी नहीं तुम शूल बनो–2
तब ही जीवन में हो–3 कुछ सार दिखाये रे–ऽऽ।।4415।।

(52) सही ज्ञान के बिना यहाँ, भटके अब तक कहाँ–कहाँ–2
दुख पाया है यहाँ वहाँ–ऽऽ
सही राह तब दिख पाये – जब उत्तम गुरु मिल जाये–2
गुरु ही दुनियाँ में हो–3 पहचान दिलाए रे–ऽऽ।।4416।।

(53) जिनवाणी की मानोगे, तब खुद को पहचानोगे–2
अपनी ताकत जानोगे–ऽऽ
भूल सभी मिट जायेगी, ज्ञानकली खिल जायेगी–2
ज्ञानी को भव में हो–3 सब कुछ मिल जाए रे–ऽऽ।।4417।।

(54) मन से शक्त न बन पाए, आसक्ति में भरमाए–2
व्रत संयम नहिं अपनाए–ऽऽ
भोगों में, बदहालों में, वासनाओं के जालों में–2
भोगी को भव में हो– नहिं लक्ष्य दिखाए रे–ऽऽ।।4418।।

(55) हुआ ज्ञान संयोग जहाँ, भाग गये सब भोग वहाँ–2
जाग गये हैं योग वहाँ–ऽऽ
ब्रह्मयोग तब आता है, शक्ति खूब बढ़ाता है–2
तब ही इंसां को हो–3 ईश्वर दिख पाए रे–ऽऽ।।4419।।

(56) मतलब की दुनियाँदारी, अपनायी रिश्तेदारी–2
पाप पुण्य के व्यापारी–ऽऽ
आज नहीं कल जाना है, क्यूँ इससे अंजाना है–2
सत्य मिलने पर हो–3 ईश्वर मिल जाए रे–ऽऽ।।4420।।

(57) सच मुश्किल से मिलता है, मिलते ही दिल खिलता है–2
अंतस् दीपक जलता है–ऽऽ
फिर सब कुछ नजराता है, कुछ भी नहिं छिप पाता है–2
सच के मिलते ही हो–3 प्रभु खुद मिल जाए रे–ऽऽ।।4421।।

(58) ये कैसी मति मारी है, मालिक बना भिखारी है–2
ये कैसी लाचारी है–ऽऽ
धन की महिमा न्यारी है – जान न अपनी प्यारी है–2
पर मैं क्यूँ भ्रम कर हो–3 खुद को ठुकराए रे–ऽऽ।।4422।।

(59) इक दो पल का मेला है, ये संसार झमेला है –2
चलना तुझे अकेला है–ऽऽ
आँख खुले का सपना है, कौन यहाँ पर अपना है–2
अपना ही अपना हो–3 आगे साथ निभाए रे–ऽऽ।।4423।।

(60) दुनियाँ रैन बसेरा है, क्या तेरा क्या मेरा है–2
चंद दिनों का डेरा है–ऽऽ
जिसको कहते मेरा है वो ही तुझे लुटेरा है–2
कब तक दुनियाँ में हो–3 तू जान गँवाए रे–ऽऽ।।4424।।

गुरुवर ज्योति दिवाकर हैं, गुरु गंगाजल सागर हैं–2
गुरु की मूरत में हो–3 भगवान् दिखाये रे–ऽऽ

(61) संयम से नहिं प्यार यहाँ, बिना ब्रेक की कार यहाँ–2
बढ़ता है संसार यहाँ–ऽऽ
मिले कभी नहिं सार यहाँ, बने न शुभ व्यापार यहाँ–2
संयम की नौका हो–3 भव पार लगाए रे–ऽऽ।।4425।।

(62) कितनी चादर ओढ़ी हैं, कितनी मटकी फोड़ी हैं–2
कितनी माला तोड़ी हैं–ऽऽ
कितनी देहरी छोड़ी हैं, फिर भी लगती थोड़ी है–2
जब भी जानेगा हो–3 तब रुदन मचाए रे–ऽऽ।।4426।।

(63) किस्मत से लक्ष्मी आती, बदकिस्मत से मिट जाती–2
पुण्य कर्म से टिक पाती–ऽऽ
लक्ष्मी ज्ञान दिलाती है, मुक्तिपुरी पहुँचाती है–2
ज्ञानी के पीछे हो–3 लक्ष्मी लग जाये रे–ऽऽ।।4427।।

(64) जो भी भाग्य बनाता है, किस्मत को चमकाता है–2
लक्ष्मी वो ही पाता है–ऽऽ
राह उसी को मिल पाये, लक्ष्मी से जो भर जाये–2
लक्ष्मी, लक्षित को हो–3 निज लक्ष्य दिलाए रे–ऽऽ।।4428।।

(65) जन्म सभी जन पाते हैं, कोई सफल कर जाते हैं–2
कई ठोकरें खाते हैं–ऽऽ
जन्म भविष्य बताता है, जीवन अंत दिखाता है–2
जीवन ही जन्म हो–3 को श्रेष्ठ बनाए रे–ऽऽ।।4429।।

(66) जन्म जहान बढ़ाता है, जीवन जन्म मिटाता है–2
जब वह ज्ञान सजाता है–ऽऽ
उभयलोक सुख पाता है, ज्ञानी को यह भाता है–2
सुखमय हो जीवन हो–3 तो शिवपुर पाए रे–ऽऽ।।4430।।

(67) जन्म सभी को मिलते हैं, किसी किसी के खिलते हैं–2
ज्ञानदीप जब जलते हैं–ऽऽ
संयम जब आ जाता है, मरण मिटाकर जाता है–2
जन्म कल्याणक हो–3 तीर्थंकर पाए रे–ऽऽ।4431।।

(68) तीर्थंकर जब आते हैं, राह नई दिखलाते हैं–2
दुनियाँ को समझाते हैं–ऽऽ
सबको प्रेम दिखाते हैं, सबसे प्रेम रचाते हैं–2
उनकी महिमा को हो–3 ये दुनियाँ गाये रे–ऽऽ।।4432।।

(69) उत्तम सोच बनाते हैं, धर्म समझ वो पाते हैं–2
तीर्थंकर बन जाते हैं–ऽऽ
सोच बनाता तीर्थंकर, सोच बनाता है तीतर–2
उत्तम हो चिंतन हो–3 वह ज्ञान बढ़ाए रे–ऽऽ।।4433।।

(70) ज्ञान वही जन पाते हैं, जो गुण से भर जाते हैं–2
जिन गुरु के गुण गाते हैं–ऽऽ
खुशियाँ ज्ञान दिखाता है, जीवन को महकाता है–2
ज्ञानी फूलों का हो–3 इक बाग लगाए रे–ऽऽ।4434।

गुरुवर ज्योति दिवाकर हैं, गुरु गंगाजल सागर हैं–2
गुरु की मूरत में हो–3 भगवान् दिखाये रे–SS

(71) जाले में जंजाले हैं, खोटे मन ने पाले हैं–2
राग रोग के छाले हैं–SS
जिनके यहाँ उजाले हैं, वे ही किस्मत वाले हैं–2
जाले–जंजाले हो–3 हम स्वयं हटाएँ रे–SS।।4435।।

(72) भक्ति जभी उमड़ती है, किस्मत तब ही बनती है–2
लक्ष्मी खुद ही बढ़ती है–SS
भक्ति भाव ईजाद करें, दिल को हम दिलशाद करें–2
दिल मन खुश हो तो हो–3 खुशियाँ ले आये रे–SS।।4436।।

(73) नीम लगाया आँगन में, आम देखते हैं उसमें–2
जीवन भर वो नहीं दिखें–SSS
आओ आम लगायें हम, मीठा मीठा खायें हम–2
फल–फल नजराएँ हो–3 तो फल पा जाए रे–SS।।4437।।

(74) किस्मत यहाँ दिलाती है, मन का फूल खिलाती है–2
अच्छी राह दिखाती है–SS
पुरषारथ जब आता है, मोक्षमार्ग दिखलाता है – 2
दोनों मिल जाएँ हो–3 तो दुख मिट जाए रे–SS।।4438।।

(75) कोई किस्मत खाता है, कोई भाग्य बनाता है–2
कोई दोनों पाता है–SS
पुरुषारथ जब आता है, मोक्षमार्ग दिखलाता है–2
दोनों मिल जाएँ हो–3 तो दुख मिट जाए रे–SS।।4439।।

(76) राग–द्वेष कम कर जाता, किस्मत वही बना पाता–2
जीवन वो ही जी पाता–SSS
उम्र गुजरती जाती है, बुद्धि मोह बढ़ाती है–2
अपना ही धर्म हो–3 फिर समझ न आये रे–SS।।4440।।

(77) अच्छा यहाँ विचार करें, अच्छा हम आचार धरें–2
अच्छी किस्मत तभी बने–SS
भावों से ही भाव बने, कर्त्तव्य से सौभाग्य बने–2
किस्मत ही नभ की हो–3 ऊँचाई दिखाये रे–SS।।4441।।

(78) अच्छे को अच्छा मिलता, बुरा करे तो दुख मिलता–2
अच्छा बुरा संग चलता–SS
अच्छा तो कम होता है, ज्यादातर गम होता है–2
किस्मत से जग में हो–3 सब ही मिल जाये रे–SS।।4442।।

(79) अपना जरा खयाल करो, खुद को मत बेहाल करो–2
जीवन को खुशहाल करो–SS
बदहाली दुखदायी है, जो गम की परछाई है–2
गम से बचकर के हो–3 कुछ धर्म कमाओ रे–SS।।4443।।

(80) ये मन साफ नहीं होगा, ईश्वर पास नहीं होगा–2
व्रत उपवास नहीं होगा–SS
मन को साफ रखोगे जब, लक्ष्मी घर आयेगी तब–2
मन ही सारा धन हो–3 सबको दिलवाए रे–SS।।4444।।

गुरुवर ज्योति दिवाकर हैं, गुरु गंगाजल सागर हैं–2
गुरु की मूरत में हो–3 भगवान् दिखाये रे–ऽऽ

(81) पाप कर्म हम करते हैं, चाहत अच्छी धरते हैं–2
ये गुनाह हम करते हैं–ऽऽ
अच्छा कर्म हँसाता है, बुरा दुखों को लाता है–2
अच्छे कर्मों से हो–3 सब अच्छा पाएँ रे–ऽऽ।।4445।।

(82) कर ले जो कुछ करना है, आज नहीं कल मरना है–2
करनी का फल भरना है–ऽऽ
मिट्टी में बौराया है, क्या आकर के पाया है–2
तेरा ही कर्म हो–3 तेरा साथ निभाये रे–ऽऽ।।4446।।

(83) हारे हमें गिराते हैं, जीते जीत दिखाते हैं–2
ऊपर हमें उठाते हैं–ऽऽ
ऊँचे का हम साथ करें, नीचे पर हम हाथ धरें–2
तब ही जीवन में हो–3 सच खुद नजराए रे–ऽऽ।।4447।।

(84) जितना भी हम करते हैं, निज अनुभव से करते हैं–2
उस पर ही हम बढ़ते हैं–ऽऽ
जैसा होता ज्ञान यहाँ – वैसा अनुभव ध्यान यहाँ–2
ज्ञानी के दिल में हो–3 ईश्वर नजराए रे–ऽऽ।।4448।।

(85) जीवन में कड़वाहट हो, तो हरदम घबराहट हो–2
अंतरमन भी आहत हो–ऽऽ
मोह मिटाता ज्ञान यहाँ, सुख करता बरबाद यहाँ–2
सच्चा हो ज्ञानी हो–3 वो दुख ना पाए रे–ऽऽ।।4449।।

(86) सार ढूँढ़ने आते हैं, उसे समझ नहिं पाते हैं–2
असार में फँस जाते हैं–ऽऽ
फिर असार ही सार लगे, जब तक ज्ञान न दीप जले–2
ज्ञान होते ही हो–3 अंतर दिख जाए रे–ऽऽ।।4450।।

(87) गिरे गिराते हैं हरदम, उठे उठाते हैं हरदम–2
कहते हैं सारे ऋषिजन–ऽऽ
गिरने से हम यहाँ बचें, उठने में हम लगे रहें–2
तब ही आकर हम हो–3 ऊपर उठ पाए रे–ऽऽ।।4451।।

(88) किस्मत हमें दिलाती है–मेहनत रंग दिखलाती है–2
भावी भाग्य बनाती है–ऽऽऽ
मिलना यारो भाग्य कहा, मेहनत है पुरुषार्थ यहाँ–2
किस्मत अच्छी तो हो–3 मेहनत रंग लाए रे–ऽऽ।।4452।।

(89) किया जेल में बंद यहाँ, रचा द्वन्द्व में फंद यहाँ–2
पापों का अनुबंध यहाँ–ऽऽऽ
आदिनाथ को जब ध्याया, बंधन खुद खुलते पाया–2
प्रभु को ध्याते ही हो–3 दुख खुद मिट जाए रे–ऽऽ।।4453।।

(90) प्रभु को फूल चढ़ाते हैं, फूल गले में पाते हैं–2
खुश हो खुशी मनाते हैं–ऽऽ
लाडू यहाँ चढ़ाएँगे, तब ही लड्डू पाएँगे–2
खुद को चढ़ाएँ हो–3 वो खुदा को पाए रे–ऽऽ।।4454।।

गुरुवर ज्योति दिवाकर हैं, गुरु गंगाजल सागर हैं–2
गुरु की मूरत में हो–3 भगवान् दिखाये रे–ऽऽ

(91) पार्श्वनाथ गुण गायें हम, चरणों शीश झुकाएँ हम–2
लाडू आज चढ़ाएँ हम–ऽऽ
जो हम यहाँ चढ़ाते हैं, वो ही हम पा जाते हैं–2
कुछ ना चढ़ाएँ हो–3 वो कुछ ना पाए रे –ऽऽ।।4455।।

(92) सबकी करें प्रशंसा हम, निंदा करें कभी ना हम–2
अनुशंसा गुण गायें हम–ऽऽ
तेरी करे बुराई जो, उसको बुरा कहें ना हम–2
तब ही तेरी वो हो–3 तारीफ सुनाए रे–ऽऽ।।4456।।

(93) दाना पानी योग जहाँ, होगा वर्षायोग वहाँ–2
श्रावक का संयोग जहाँ–ऽऽ
गुरु की आज्ञा मिले जहाँ, हमको जाना पड़े वहाँ–2
हमसे मत पूछो हो–3 ये गुरु बतलाएँ रे–ऽऽ।।4457।।

(94) प्रभु गुरु से करता दूरी, करता फिरता मजदूरी–2
कभी न हो इच्छा पूरी–ऽऽ
जीवन में गुरु होते हैं, वे सम्यक्त्व संजोते हैं–2
गुरु के बिन भव में हो–3 कुछ भी नहिं पाये रे–ऽऽ।।4458।।

(95) गुरु दर्शन इक चिंतन है, निज जीवन का मंथन है–2
ज्ञान सहित सद्दर्शन है–ऽऽ
देख उन्हें सुख मिलता है, हृदय स्वयं ही खिलता है–2
गुरुओं का दर्शन हो–3 सम्यक्त्व दिलाए रे–ऽऽ।।4459।।

(96) मुनि देखकर चैन मिला, तभी तुम्हें कुल जैन मिला–2
उत्तम कुल दिन रैन मिला–ऽऽ
गुरुओं का दर्शन सुखकर, देता है सद्ज्ञान प्रखर–2
गुरुओं की संगत, हो–3 रंगत ले आये रे–ऽऽ।।4460।।

(97) क्रोध करे वो अज्ञानी, पश्चातापी है ज्ञानी–2
अहं करे वो अभिमानी–ऽऽ
मान नरक ले जाता है, दुख ही दुक्ख दिखाता है–2
क्रोधी ही भागे हो–3 मानी बन जाये रे–ऽऽ।।4461।।

(98) मुनियों की करता सेवा, वो पाता हरदम मेवा–2
मिल जाते फिर गुरुदेवा–ऽऽ
बिगड़ी गुरु बनाते हैं, मंजिल तक ले जाते हैं–2
गुरुओं की सेवा हो–3 सब तीर्थ बनाये रे–ऽऽ।।462।।

(99) संत खिलाता फूल यहाँ, करे दिलों को कूल यहाँ–2
सभी मिटाए भूल यहाँ–ऽऽ
संतों के बिन ये धरती, शूलों जैसी धूल यहाँ–2
साधु जीवन में हो–3 खुशबू बिखराये रे–ऽऽ।।4463।।

(100) संत जभी मिल जायेंगे, भेदभाव मिट जायेंगे–2
एक सभी हो जाएँगे–ऽऽऽ
आओ हम सब मिलें यहाँ, खेद दूर कर खिलें यहाँ–2
चेहरा खिल जाए हो–3 मजहब नजराए रे–ऽऽ।।4464।।

गुरुवर ज्योति दिवाकर हैं, गुरु गंगाजल सागर हैं–2
गुरु की मूरत में हो–3 भगवान् दिखाये रे–SS

(101) क्यूँ तम में तुम जीते हो, घूँट गमों का पीते हो–2
धर्म कर्म से रीते हो–SS
संतों से पाकर संयम, आओ गम कुछ कर लें कम–2
ये पल दोबारा हो–3 फिर लौट न आए रे–SS।।4465।।

(102) फूलों सा खिल जाता है, दुनियाँ को महकाता है–2
संत वही कहलाता है–SS
खुशियों को बिखराता है, राह सही दिखलाता है–2
साधु ईश्वर के हो–3 एजेन्ट बताए रे–SS।।4466।।

(103) पाया केवलज्ञान यहाँ, उसे मिले निर्वाण यहाँ–2
गुण अनंत की खान यहाँ–SSS
शुद्धातम का ध्यान यहाँ, देता है सम्मान यहाँ–2
आओ ज्ञानी बन हो–3 हम सब सुख पायें रे–SS।।4467।।

(104) कैसे लक्ष्मी आती है, कैसे लक्ष्मी जाती है–2
जिनवाणी बतलाती है–SS
आने के आधार कई, जाने के हैं द्वार कई–2
ज्ञानी अपनाये हो–3 तो धन गुण पाये रे–SS।।4468।।

(105) ज्ञान उसे हो पाता है, जो गुण निज में लाता है–2
अपना भाग्य बनाता है–SS
अच्छा भाग्य जो बन जाये, लक्ष्मी वहीं ठहर जाये–2
धन ही प्राणी को हो–3 सद्धर्म कराये रे–SS।।4469।।

(106) पापों का प्रायश्चित कर, पुण्यकार्य जीवन में धर–2
पैदा कर मंजिले सफर –SS
जीवन एक धरोहर है – भक्ति एक सरोवर है–2
ज्ञान मिल जाये हो–3 तो सब मिल जाये रे–SS।।4470।।

(107) संतों से जब संत मिलें, समझो जीवित धर्म करें–2
मतभेदों को दूर करें–SS
सबको गले मिलाते हैं, राग द्वेष मिटाते हैं–2
संतों की महिमा हो–3 सब वेद सुनाएँ रे–SS।।4471।।

(108) जिन गुरु जिसको मिल जायें, समझो किस्मत खिल जाए–2
वो फिर उठता ही जाए–SS
जिनको अच्छा शीश मिले, उन्हें गुरु आशीष मिले–2
गुरु के बिन जीवन हो–3 रसहीन दिखाये रे–SS।।4472।।

(109) जिनवर का गुणगान करे, उसको सब इंसान कहे–2
खुशियाँ उसके साथ रहे–SS
जिसे गुरु का संघ मिले, उसके दिल का दीप जले–2
जिन गुरु की सेवा हो–3 सब कुछ दिलवाये रे–SS।।4473।।

(110) दिल से उसको गायेगा, वो तेरा हो जाएगा–2
दुख सारा मिट जाएगा–SS
जो तेरा हो जाएगा, वो अपना दे जाएगा–2
उसके मिलते ही हो–3 तू सुख पा जाए रे–SS।।4474।।

गुरुवर ज्योति दिवाकर हैं, गुरु गंगाजल सागर हैं–2
गुरु की मूरत में हो–3 भगवान् दिखाये रे–ऽऽ

(111) पूजन सब जन रोज करो, जीवन का आधार करो–2
अपना कुछ उद्धार करो–ऽऽ
डूब रहे हैं दल दल में, जीवन के हर पल–पल में–2
उसके गुण गाकर हो–3 कुछ पुण्य कमाओ रे–ऽऽ।।4475।।

(112) कुछ भी नहिं कर पाएगा, वो भव में पछताएगा–2
रोया और रुलाएगा–ऽऽ
गलत चलेगा जो आकर – दुख में रहे वही पामर–2
आराधन कर ले हो–3 वरना दुख पाए रे–ऽऽ।।4476।।

(113) आराधन का कर्म जहाँ, तीर्थंकर का दर्श वहाँ–2
बिन इसके आदर्श कहाँ–ऽऽ
आदर्शों में दर्शन है, वरना यही प्रदर्शन है–2
दर्शन ही दिल में हो–3 प्रभु दर्श कराए रे–ऽऽ।।4477।।

(114) जिनवाणी को ध्याता है, सबको उसे दिलाता है–2
वही ज्ञान को पाता है–ऽऽ
शास्त्र बिना हो ज्ञान कहाँ? ज्ञान बिना सुख शांति कहाँ–2
ज्ञान के बिन ना हो–3 व्यक्ति सुख पाये रे–ऽऽ।।4478।।

(115) धर्म अहिंसा प्यारा है, सब धर्मों में न्यारा है–2
सुख में यही सहारा है–ऽऽ
इसके बिन हो धर्म कहाँ? जीवन में हो मर्म कहाँ–2
हिंसा हट जाये हो–3 तो धर्म समाए रे–ऽऽ।।4479।।

(116) करो यहाँ वो काम अरे, दुनियाँ तुझे सलाम करे–2
फैले जग में नाम अरे–ऽऽ
दया धर्म को लाओगे, सबके प्रिय हो जाओगे–2
धर्म इंसां को हो–3 सब कुछ दिलवाए रे–ऽऽ।।4480।।

(117) दीप ज्ञान का जलता है, धर्म वहीं पर पलता है–2
मिटती सभी विकलता है–ऽऽ
मंजिल धर्म दिखाता है, सारे रोग मिटाता है–2
धर्मी का जीवन हो–3 निर्मल हो जाए रे–ऽऽ।।4481।।

(118) धर्म बनाता ज्ञान विमल, मन को कर देता निर्मल–2
जैसे हो गंगा का जल–ऽऽ
वस्तु स्वभाव दिखाता है, सुख शाश्वत दिलवाता है – 2
धर्म–धर्मी को हो–3 अरहंत बनाए रे–ऽऽ।।4482।।

(119) किस्मत नहीं बनाते हैं, फूल वहीं मुरझाते हैं–2
मिट्टी में मिल जाते हैं–ऽऽ
किस्मत जो चमकाते हैं, वे ही सब कुछ पाते हैं–2
उनको दुख में भी हो–3 सुख ही नजराए रे–ऽऽ।।4483।।

(120) ज्ञान गुलाल उड़ाये रंग, होली खेलें मुनि के संग–2
ऐसा यहाँ बनाए ढंग–ऽऽऽ
करके दिल से धरम–करम, पाप करम का करें क्षरन–2
ज्ञान का रंग हो–3 सुख शांति दिलाए रे–ऽऽ।।4484।।

गुरुवर ज्योति दिवाकर हैं, गुरु गंगाजल सागर हैं–2
गुरु की मूरत में हो–3 भगवान् दिखाये रे–ऽऽ

(121) गुरु ने जो भी दिया हमें, देते हैं हम वहीं तुम्हें–2
कहा हमें हम वही कहें–ऽऽ
करते हैं उपकार यहाँ, जीवन का आधार यहाँ–2
गुरु की कृपा से हो–3 सब मौज उड़ाएँ रे–ऽऽ।।4485।।

(122) गुरु से मिलता सार यहाँ, जीने का आधार यहाँ–2
रत्नत्रय व्यापार यहाँ–ऽऽ
गुरु हम सबके माली हैं, गुरु बिन हम सब खाली हैं–2
गुरु का आशीष हो–3 सब कुछ दिलवाए रे–ऽऽ।।4486।।

(123) अगर नजरिया अच्छा है, सभी नजारे अच्छे हैं–2
तभी ज्ञान से सच्चे हैं–ऽऽ
दिया नजरिया से जलता, दिया जले तो सब मिलता–2
दिल के जलते ही हो–3 ईश्वर मिल जाए रे–ऽऽ।।4487।।

(124) जिसको वर्षायोग मिले, उसके दिल का कमल खिले–2
राग–द्वेष का मैल धुले–ऽऽ
होता ज्ञान विकास वहाँ, संस्कार आवास जहाँ–2
गुरुओं की वाणी हो–3 निर्वाण दिलाए रे–ऽऽ।।4488।।

(125) गुरु का जब संयोग मिले, पाप कर्म की धूल धुले–2
हर दिल में इक दीप जले–ऽऽ
गुरु का आशिष मिल जाए, वही सफलता को पाए–2
गुरु ही अंधों को हो–3 आँखें दिलवाएँ रे–ऽऽ।।4489।।

(126) जिनगुरु का सम्मान करो, खुश हो पूजन दान करो–2
दिल से प्रभु गुणगान करो–ऽऽ
जीवन खिल–खिल जाएगा, जो चाहे मिल जाएगा–2
जिनवर की पूजन हो–3 सब कुछ दिलवाए रे–ऽऽ।।4490।।

(127) जो मन स्वच्छ बनाएगा, बुद्धि वही बढ़ाएगा–2
आगे बढ़ता जाएगा–ऽऽ
ऊँचा पद वह पाएगा, खुशियाँ खूब बढ़ाएगा–2
ज्ञान से अपनी हो–3 कीमत बढ़ जाए रे–ऽऽ।।4491।।

(128) जन्म सभी को मिलते हैं, किसी–किसी के खिलते हैं–2
दीप ज्ञान के जलते हैं–ऽऽ
कई यहाँ मर जाते हैं, नाम डुबाकर जाते हैं–2
जीवन को पाकर हो–3 खुशहाल बनाओ रे–ऽऽ।।4492।।

(129) जैसा होता निर्मल मन, वैसे थे गुरुदेव विमल–2
देते सब जन को वत्सल–ऽऽ
विमल–विमल परिणाम करें, विमल गुरु को याद करें–2
गुरुओं की महिमा हो–3 सब वेद सुनाएँ रे–ऽऽ।।4493।।

(130) गुरुवर ने उपकार किया, मेरा भी उद्धार किया–2
दीप हृदय का जला दिया–ऽऽ
गुरुवर के गुण गायें हम, उनका ध्यान लगायें हम–2
गुरु ही शिष्यों को हो–3 गुरुता दिलवाएँ रे–ऽऽ।।4494।।

गुरुवर ज्योति दिवाकर हैं, गुरु गंगाजल सागर हैं-2
गुरु की मूरत में हो-3 भगवान् दिखाये रे-ऽऽ

(131) दीपक सा जो जलता है - पंचाचार उगलता है-2
सम्यक् पथ पर चलता है-ऽऽ
वे गुरुवर कहलाते हैं, सब आचार्य बताते हैं-2
उनकी वाणी में हो-3 अनुयोग समाये रे-ऽऽ।।4495।।

(132) सबको राह दिखाता है, राही यहाँ बनाता है-2
ज्ञान चरित्र दिलाता है-ऽऽ
सूरज सम नजराते हैं, वे आचार्य कहाते हैं-2
गुरु की भक्ति से हो-3 हम पाप नशायें रे-ऽऽ।।4496।।

(133) मन ही सारे काम करे, तन को करना यहाँ पड़े-2
मन थमते आराम मिले-ऽऽ
जो भी मन को समझेगा, वो संयम तप कर लेगा-2
मन के थमते ही हो-3 सब कुछ दिख जाए रे-ऽऽ।।4497।।

(134) किस्मत नहीं बनाते हैं, वही फूल मुरझाते हैं-2
मिट्टी में मिल जाते हैं-ऽऽ
किस्मत जो चमकाते हैं, वे ही सब कुछ पाते हैं-2
उनको दुख में भी हो-3 सुख ही नजराए रे-ऽऽ।।4498।।

(135) धूँ-धूँ कर जल जाएगा, मिट्टी में मिल जाएगा-2
जब अंतिम दिन आएगा-ऽऽ
कोई न साथ निभाएगा, धर्म काम तब आएगा-2
कर ले जो करना हो-3 वरना पछताए रे-ऽऽ।।4499।।

(136) नीम लगाया आँगन में, आम ढूँढ़ते हैं उसमें-2
कभी नहीं वो हमें दिखें-ऽऽ
पहले यहाँ लुटाता जो, झोली भर के पाता वो-2
त्यागी को जग में हो-3 सब कुछ मिल जाए रे-ऽऽ।।4500।।

(137) अगर नजरिया अच्छा है, सभी नजारे अच्छे हैं-2
लगते सब ही सच्चे हैं-ऽऽ
दिया नजरिया से जलता, तभी देखने सच मिलता-2
सच के मिलते ही हो-3 ईश्वर मिल जाए रे-ऽऽ।।4501।।

(138) दुख में जीना सीख लिया, उसने मरना सीख लिया-2
ऊपर उठना सीख लिया-ऽऽ
दुख में जो भी हँस लेगा, उसने तिरना सीख लिया-2
दुख ही इंसां को हो-3 जर-जर कर जाए रे-ऽऽ।।4502।।

(139) प्रथम योग्यता को लाओ, फिर उसको तुम अजमाओ-2
ताकत अपनी दिखलाओ-ऽऽ
अगर योग्यता पक्की है, तो फिर योग बना जाओ-2
योग बनाओ हो-3 संयोग न लाओ रे-ऽऽ।।4503।।

(140) योग तभी संयोग बने, राग-द्वेष जब साथ चले-2
जीवन उसमें रोज ढले-ऽऽ
राग-द्वेष नहिं हो मन में, उसका योग मिशाल बने-2
ऐसे योगों को हो-3 योगी समझाएँ रे-ऽऽ।।4504।।

गुरुवर ज्योति दिवाकर हैं, गुरु गंगाजल सागर हैं–2
गुरु की मूरत में हो–3 भगवान् दिखाये रे–ऽऽ

(141) योग बने संयोग जभी, बन जाते हैं भोग तभी–2
पैदा करते रोग सभी–ऽऽ
दुखदायी बन जाते हैं, उनकी जड़ है योग सभी–2
योगी ही सबको हो–3 भव पार कराए रे–ऽऽ।।4505।।

(142) सही वक्त जब आएगा, वक्त समझ आ जाएगा–2
अपना रूप दिखाएगा–ऽऽ
वक्त समझ नहिं पाएगा, तो फिर वक्त घुमाएगा–2
वक्त इंसा को हो–3 मजबूर बनाए रे–ऽऽ।।4506।।

(143) जिनको मिलता सार यहाँ, उन्हें मिले संसार यहाँ–2
भव का मिले किनार कहाँ–ऽऽ
मूल तत्त्व का ज्ञान जिन्हें, उनको मिलता सार यहाँ–2
सार मिल जाए हो–3 तो सब मिल जाए रे–ऽऽ।।4507।।

(144) तन से खूब कमाते धन, कोई पुत्र समझता धन–2
धन–धन करते हुए निधन–ऽऽ
कोई तन को सफल करे, कोई तन में रमण करे–2
भव ही इस तन का हो–3 निजसार दिलाए रे–ऽऽ।।4508।।

(145) राह नई जो चलते हैं, वे ही भाग्य बदलते हैं–2
उनको भगवन् मिलते हैं–ऽऽ
जिनको मंजिल पाना है, वे संयम में ढलते हैं–2
उनका ही जीवन, हो–3 मंगल बन जाए रे–ऽऽ।।4509।।

(146) जीवन में नहिं मंगल हो, तो दुखदायी दंगल हो–2
चारों ओर अमंगल हो–ऽऽ
दंगल में जो मस्त रहे, समझो तो तुम पागल हो–2
मंगलमय होना हो–3 तो संयम पाओ रे–ऽऽ।।4510।।

(147) जब मेहनत रंग लाती है, किस्मत भी मुस्काती है–2
राह नई दिखलाती है–ऽऽ
पुण्य नहीं तू लाएगा कैसे खुश हो पाएगा–2
पुण्य से जीवन हो–3 पावन हो जाए रे–ऽऽ।।4511।।

(148) अच्छे करे विचार यहाँ, तो अच्छा आधार यहाँ–2
संस्कार शुभ बने यहाँ–ऽऽ
अच्छे से अच्छा होता, जीवन भी सच्चा होता – 2
अच्छा जो सोचें हो–3 वे सब कुछ पायें रे–ऽऽ।।4512।।

(149) दुख का है रहना अच्छा, कहने से सहना अच्छा–2
रुकने से बहना अच्छा–ऽऽ
दुख जब बाहर निकलेगा, सुख का सागर मचलेगा–2
दुख के जाये बिन हो–3 सुख कभी न आए रे–ऽऽ।।4513।।

(150) सबको समय नचाता है, समय भीख मँगवाता है–2
होकर समय लगाता है–ऽऽ
समय बड़ा बलवान यहाँ, समझे जिसको ज्ञान यहाँ–2
समझे समय को हो–3 वो सब कुछ पाए रे–ऽऽ।।4514।।

गुरुवर ज्योति दिवाकर हैं, गुरु गंगाजल सागर हैं–2
गुरु की मूरत में हो–3 भगवान् दिखाये रे–ऽऽ

(151) कठिन परीषह सहते हैं, फिर भी हँसते रहते हैं–2
दुख को कभी न कहते हैं–ऽऽ
गिला कभी नहिं करते हैं, सबके मन को हरते हैं–2
ऐसे ही साधु हो–3 निज धर्म बढ़ाएँ रे–ऽऽ।।4515।।

(152) मानव का तन पाया है, किसमें इसे लगाया है–2
इससे क्या–क्या पाया है–ऽऽ
व्रत संयम आ जाएगा, सार समझ में आयेगा–2
इक दिन ये तन भी हो–3 मिट्टी हो जाए रे–ऽऽ।।4516।।

(153) धन हम खूब कमाते हैं, महल खड़े करवाते हैं–2
दुख में समय बिताते हैं–ऽऽ
जब करते कुछ दान यहाँ, तब थोड़ा सुख पाते हैं–2
पात्र मिल जाये हो–3 मन खिल–खिल जाए रे–ऽऽ।।4517।।

(154) जिसको अच्छी बुद्धि मिले, उसके उर में ज्ञान खिले–2
निजी ज्ञान का दीप जले–ऽऽ
तत्त्व ज्ञान गर मिल जाए, सार बुद्धि का खिल जाए–2
वरना ये बुद्धि हो–3 नहिं फूल खिलाए रे–ऽऽ।।4518।।

(155) संत समागम मिल जाये, स्वर्ग यहीं पर दिख जाये–2
जीवन खुद उठता जाये–ऽऽ
ज्ञान संत से पाएगा, जब चरणों में आएगा–2
संतों की सेवा हो–3 सब कुछ दिलवाए रे–ऽऽ।।4519।।

(156) कर सकते वो यहाँ करो, नहिं कर पाओ नहीं करो–2
शक्ति जितना यहाँ करो–ऽऽ
शक्ति नहीं शक्ति माँगो, जीवन के प्रति तुम जागो–2
जीवन मिल जाये हो–3 तो सब मिल जाए रे–ऽऽ।।4520।।

(157) भाग्यहीन वो होता है, शक्ति अपनी खोता है–2
हरदम खुद को रोता है–ऽऽ
भाग्यशील उसको समझो, प्रभु की भक्ति करते जो–2
ईश्वर की सेवा हो–3 ऐश्वर्य दिलाए रे–ऽऽ।।4521।।

(158) भटके वो अज्ञानी हैं, सुलझ रहे वो ज्ञानी है–2
नहिं समझे नादानी हैं–ऽऽ
कौन तुझे सुलझाएगा, राह सही दिखलाएगा–2
खोजो खुद आकर हो–3 तो सब मिल जाए रे–ऽऽ।।4522।।

(159) कर्त्तव्यों को कर जाता, वो सम्यग्दर्शन पाता–2
जीवन में सच लख पाता–ऽऽ
दर्शन के बिन ज्ञान कहाँ, ज्ञान बिना कल्याण कहाँ–2
ज्ञानी इस जग में हो–3 खुशबू बिखराए रे–ऽऽ।।4523।।

(160) जो दोगे वो अपना है, बाकी सुंदर सपना है–2
इसमें कैसा खपना है–ऽऽ
घुटन न पैदा करना है, हँसकर जीना मरना है–2
हँसकर जो मरता हो–3 वो संत कहाए रे–ऽऽ।।4524।।

गुरुवर ज्योति दिवाकर हैं, गुरु गंगाजल सागर हैं–2
गुरु की मूरत में हो–3 भगवान् दिखाये रे–ऽऽ

(161) ज्ञान–दर्श में नंद करो, श्रद्धा का अनुबंध करो–2
चारित का संबंध करो–ऽऽ
तीन रत्न गर मिल जायें, सारे ही गुण खिल जायें–2
रत्नों के रत्न हो–3 ये तीन बताए रे–ऽऽ।।4525।।

(162) जिसका नाम सुबह ले लें, वो दिन भर फिर ध्यान रखे–2
इंतजाम वो सभी करे–ऽऽ
उठकर जिसका नाम जपे, वह अपना सब काम करे–2
उसके मिलते ही हो–3 सब कुछ मिल जाए रे–ऽऽ।।4526।।

(163) बिना ज्ञान के करे क्रिया, दुखी हुआ तब यहाँ जिया–2
ज्ञानामृत क्यों नहीं पिया–ऽऽ
ज्ञान सहित हो अगर क्रिया, तब ही अपना जले दिया–2
अपने घर के बिन हो–3 सुख कहीं न पाए रे–ऽऽ।।4527।।

(164) ये संसार असार लगे, इस जीवन पर भार लगे–2
कोइ न इसमें सार दिखे–ऽऽ
वीतरागता सार कहा, भेद ज्ञान आधार कहा–2
आये जब सार हो–3 संसार मिटाए रे–ऽऽ।।4528।।

(165) संक्रान्ति जब आती है, मन में शांति लाती है–2
भ्रम की भ्रांति मिटाती है–ऽऽ
कांति, क्रान्ति दिखाती है, सच्चा मार्ग बताती है–2
भगवन् की पूजा हो–3 गुण सभी दिलाए रे–ऽऽ।।4529।।

स्वयंभू स्तोत्र

मूल ग्रंथकर्ता : हेमराज कृत

पद्यानुवाद : उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

तीर्थंकर के गीत यहाँ, जो भवि गाये रे-SSS
उसको दुनिया में हो-3 सब कुछ मिल जाए रे-SSS

(1) स्वयं ज्ञान को पाया है, जीना यहाँ सिखाया है - 2
मोक्षमार्ग दिखलाया है-SS
किसी को आतम ज्ञान दिया, असि-मसि का विज्ञान दिया-2
आदिप्रभु को हो - 3 नित शीश झुकाएँ रे-SS।।4530।।

(2) क्षीर समुद्री जल लेकर, पहुँचे मेरु पर्वत पर-2
किया न्हवन प्रभु के ऊपर-SSS
कामजयी सुखकारी हैं, अजितनाथ गुणधारी हैं-2
शुद्ध भावों से हो - 3 हम सब गुण गायें रे-SS।।4531।।

(3) शुक्ल ध्यान जब ध्याया था, कर्म समूह मिटाया था-2
मुक्ति महल तब पाया था-SSS
किया असंभव को संभव, ऐसे थे जिनवर संभव-2
गुण की चाहत में हो-3 हम शीश झुकाएँ रे-SS।।4532।।

(4) माँ को सोलह स्वप्न दिखे - हाथी से अग्नि तक के-2
सुबह पिता ने अर्थ कहे-SSS
ऐसे प्रभु थे अभिनंदन हाथ जोड़ उनको वंदन
प्रमुदित मन करके हो-3 हम झुक झुक जाएँ रे-SS।।4533।।

(5) वाद-विवादों की धारा, जीते नय प्रमाण द्वारा-2
जिन वचनों को विस्तारा-SSS
देवों के जो देव प्रभो सुमतिनाथ महादेव विभो-2
उनके चरणों में हो-3 हम शीश झुकाएँ रे-SS।।4534।।

(6) जन्म पूर्व पन्द्रह महीने, रत्न गिराए कुबेर ने-2
हर्षित हो पितु आँगन में-SSS
लालवर्ण गुणधारी हैं, पदमप्रभ सुखकारी हैं-2
उनकी आभा को हो-3 हम शीश झुकाएँ रे-SS।।4535।।

(7) जिनकी दिव्यमयी वाणी, सब इन्द्रों को कल्याणी-2
आत्मबोध शिव रजधानी-SSS
समवशरण विख्यात सभा, प्रभु सुपार्श्व की दिव्यप्रभा-2
उनको निश्चय से हो-3 हम शीश झुकाएँ रे-SS।।4536।।

(8) प्रतिहार्य अतिशयकारी, दोष विनाशी गुणकारी-2
अंधकार नाशनहारी-SSS
चन्द्रदीप हैं चन्द्रप्रभ, जिन्हें देख हों हर्षित सब-2
उनको भावों से हो-3 हम शीश झुकाएँ रे-SS।।4537।।

(9) पंच महाव्रत समिति का, बारह तप त्रयगुति का-2
है उपदेश यहाँ जिनका-SSS
पुष्पदंत अधिदेव विभो, देवों के भी देव प्रभो!
उनको नित नमकर हों-3 हम ध्यान लगाएँ रे-SS।।4538।।

(10) क्षमा धर्म को अपनाया, ब्रह्मचर्य तक समझाया-2
दश धर्मों को दिखलाया-SSS
शीतलनाथ परमशीतल, निर्मल जैसे गंगाजल-2
उनके चरणों में हो-3 प्रतिदिन झुक जाएँ रे-SS।।4539।।

तीर्थंकर के गीत यहाँ, जो भवि गाये रे-SSS
उसको दुनिया में हो-3 सब कुछ मिल जाए रे-SSS

(11) क्रोधनाश अतिशांतमयी, सबको है आनंदमयी-2
गणधर को हैं ज्ञानमयी-SSS
द्वादशांग उपदेश दिया, श्रेयनाथ ने श्रेय किया-2
उन ही ईश्वर को हो-3 हम शीश झुकाएँ रे-SS।।4540।।

(12) मुक्ति महल का लक्ष्य लिया, रत्नत्रय निर्माण किया-2
मुक्ति वधू को धन्य किया-SSS
वासुपूज्य भगवान परम, जिनमें दिखता सदा धरम-2
उनके चरणों में हो-3 हम शीश झुकाएँ रे-SS।।4541।।

(13) ज्ञानी ध्यानी हितकारी, आत्मस्वरूपी व्रतधारी-2
मिथ्याधारी त्रिपुरारी-SSS
विमल विमल परिणामी हैं, विमलनाथ गुण स्वामी हैं-2
उनके चरणों में, हो-3 नितशीश नवाएँ रे-SS।।4542।।

(14) सबके हित का भाव किया, सभी परिग्रह त्याग किया-2
मोक्ष मार्ग का लक्ष्य किया-SSS
तब अनंत प्रभु ने भव में, गुण अनंत को प्राप्त किया-2
उनका वंदन कर हो-3 हम शीश झुकाएँ रे-SS।।4543।।

(15) तत्त्व द्रव्य बतलाए हैं, अस्तिकाय समझाए हैं-2
नव पदार्थ दिखलाए हैं-SSS
लोक अलोक बताया है, धर्मनाथ से पाया है-2
उनके चरणों में हो-3 नित नित झुक जाएँ रे-SS।4544।।

(16) चक्रवर्ती तीर्थंकर थे, कामदेव निधि गुणधर थे-2
शांतमयी प्रभु सुखकर थे-SSS
सबको शांति दिलाते थे, ऐसे शांत शांतिजिन थे-2
उनके चरणों में हो-3 हम शीश झुकाएँ रे-SS।।4545।।

(17) हर्ष न करें प्रशंसा पर, रोष करें नहिं निंदा पर-2
शीलव्रतों का पालन कर-SSS
लीन हुए शिवपुर पाकर, प्यारे कुंथुनाथ जिनवर-2
हर्षित होकर के हो-3 हम शीश झुकाएँ रे-SS।।4546।।

(18) नमन नहीं गुणगान करें, फिर भी जो सम्मान वरें-2
केवली श्रुत केवलियों से-SSS
समवशरण अतिशयकारी, अरहनाथ जिन अविनाशी-2
उनके चरणों में हो-3 हम झुक झुक जाएँ रे-SS।।4547।।

(19) मन वच काय विशुद्ध किया, रत्नत्रय को शुद्ध किया-2
पूर्व भवों में सिद्ध किया-SSS
कर्ममल्ल जीता जिनने, कहा मल्लिप्रभु हम सबने-2
भक्तीभावों से हो-3 उन्हें शीश झुकाएँ रे-SS।।4548।।

(20) लौकांतिक देवों द्वारा, स्तुति सुन मुनिपद धारा-2
नमो सिद्ध पद उच्चारा-SSS
केशलौंच कर लिये स्वयं, ऐसे मुनिसुव्रत भगवन्-2
उनका वंदन कर हो-3 हम शीश झुकाएँ रे-SS।।4549।।

तीर्थंकर के गीत यहाँ, जो भवि गाये रे-SSS
उसको दुनिया में हो-3 सब कुछ मिल जाए रे-SSS

(21) चार ज्ञानधारी जिनवर, आहार हुए राजा के घर
रत्नवृष्टि तब हुई प्रखर-SSS
समग्रता से करूँ नमन, गुण गाऊँ हे! नमि भगवन्
उनकी पूजा कर हो-3 हम झुक झुक जाएँ रे-SSS।।4550।।

(22) पुनर्जन्म नहिं हो भव में, लगे दयाधर शिवगम में-2
राजुल छोड़ गये वन में-SSS
नष्ट कर दिये जन्म मरण, ऐसे नेमिनाथ भगवन्-2
उनको भक्ति से हो-3 हम शीश झुकाएँ रे-SS।।4551।।

(23) कमठ ने घोर उपसर्ग किया, जब पशु ने निज ध्यान किया-2
फण फैलाकर दूर किया-SSS
इन्द्र और धरणेन्द्रों ने, पार्श्वनाथ के वन्दों ने-2
उनको आदर से हो-3 हम शीश नवाएँ रे-SS।।4552।।

(24) डूब रहे भव सागर में, करुणा आई देख उन्हें-2
धर्मपोत जो उन्हें बने-SSS
उन्हें पाप से बचा लिया, वर्धमान शिवमार्ग किया
ऐसे प्रभु वीर हो-3 को शीश झुकाएँ रे-SS।।4553।।

(25) जो भवि प्रभु गुणगाता है, पुष्पांजलि चढ़ाता है-2
योग शुद्ध कर ध्याता है-SSS
स्वर्गमोक्ष को पाकर के, लक्ष्य लक्ष्मी पाता है
जिनवर भक्ती का हो-3 ये फल बतलाएँ रे-SS।।4554।।

भक्ती से गुणगान कर, प्रतिदिन करो प्रणाम।
उसका फल ही है यहाँ, कहें ऋषि शिवधाम।।
चौबीसों प्रभु तीर्थंकर पाते हैं शिवधाम।
चरणकमल वंदू सदा करूँ विनम्र प्रणाम।।

अल्पबुद्धि से लिख दिया, तीर्थंकर गुणगान।
शोध पढ़ें धीजन यहाँ, क्षमा करें मम दान।।
भक्तिभाव उर में लिया, निर्मल शुद्ध विचार।
तीर्थंकर का ध्यान कर, नमहूँ बारम्बार।।

भक्तामर स्तोत्र

मूल ग्रंथकर्ता : आचार्य मानतुंग स्वामी

पद्यानुवाद : उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

भक्तामर है प्यारा स्तोत्र, सब मिल गाओ रे-2
आदि प्रभु को हो-हो-2, सब शीश झुकाओ रे-ऽऽ

(1) इन्द्र चरण में नमन् करें, मुकुटों की मणि कांति वरें-2
अंधकार सब दूर करें-ऽऽ
चरणों का ले अवलम्बन, सम्यक् ढंग से करूँ नमन्
विघ्न मिटाता हो-3 भव पार कराये रे-ऽऽ।।4555।।

(2) सब जीवों के चित्त हरे, ऐसी स्तुति इन्द्र करे-2
जिसका उर तत्त्वज्ञ अरे-ऽऽ
आदि प्रभु को गाऊँगा, शीश विनम्र झुकाऊँगा-2
झुकते ही विघ्न हो-3 सारे मिट जायें रे-ऽऽ।।4556।।

(3) देवों से पूजित सिंहासन, लज्जा छोड़ करे थुति मन-2
बुद्धिहीन मैं हूँ भगवन्-ऽऽ
चन्द्रबिम्ब जल दिख जाये, शीघ्र पकड़ने शिशु आये-2
परमावधि विद्या हो-3 सब सिद्धि दिलाये रे-ऽऽ।।4557।।

(4) चन्द्रकांति सम उज्ज्वल गुण, कौन है कहने में सक्षम?-2
दुनियाँ में सुरगुरु के सम-ऽऽ
भारी क्षुभित समुद्र यहाँ, कौन करे कर पार यहाँ-2
सर्वावधि ज्ञान हो-3 भय जन्तु मिटाये रे-ऽऽ।।4558।।

(5) शिशु रक्षा को मृगि आती, नहीं शेर से घबराती-2
यही प्रीति है कहलाती-ऽऽ
शक्ति नहीं पर भक्ति वशात्, तेरे गुण मैं गाऊँ नाथ!-2
नेत्र का रोग हो-3 यह छंद मिटाये रे-ऽऽ।।4559।।

(6) विज्ञ हँसे मम भक्ति पर, नहिं चिंता अभिव्यक्ति पर-2
भक्ति मुझे बुलाती है-ऽऽ
ऋतु बसंत में आम्र दिखे, कोयल मधुर गीत बोले-2
बुद्धि बढ़ाये हो-3 विद्या खूब प्रचारे रे-ऽऽ।।4560।।

(7) पाप अनन्त भवों आते, क्षण में ही क्षय हो जाते-2
तुमको सच में जो गाते-ऽऽ
एक किरण रवि आ जाये, सारा तम ही मिट जाये-2
चिंतन उपजाये हो-3 भव दुःख मिटाये रे-ऽऽ।।4561।।

(8) शुरू करूँ गुणगान तेरा, चित्त हरे सब स्तोत्र मेरा-2
इसमें है प्रभाव तेरा-ऽऽ
बूँद कमलिनी पत्ते पर, मोती सी लगती सुन्दर-2
कांति पत्ते से हो-3 उस बूँद में आये रे-ऽऽ।।4562।।

(9) सूरज कितनी दूर रहे, किरण देख सब कमल खिले-2
रवि प्रभाव ही है वैसे-ऽऽ
थुति छोड़ो जब कथा यहाँ, नाश करे सब पाप जहां-2
इच्छित फलदायी हो-3 निज ज्ञान बढ़ाए रे-ऽऽ।।4563।।

(10) प्रभु को गुण से गाते हैं, प्रभु जैसा बन जाते हैं-2
नहिं आश्चर्य बताते हैं-ऽऽ
सच्चा मालिक वही जहां, सेवक निज सा करे यहाँ-2
प्रज्ञा बढ़ जाती हो-3 अज्ञान मिटाये रे-ऽऽ।।4564।।

तीर्थंकर के गीत यहाँ, जो भवि गाये रे–SSS
उसको दुनिया में हो–3 सब कुछ मिल जाए रे–SSS

(11) अन्य जगह नहिं होश हुआ, देख तुम्हें संतोष हुआ–2
इकटक देखा बोध हुआ–SS
निर्मल जल जो पायेगा, वो खारा क्यों चाहेगा?–2
ऐसे भावों से हो–3 आकर्षण बढ़ता रे–SS॥4565॥

(12) जितने सुन्दर अणु जहाँ, उनसे तव तन रचा यहाँ–2
तभी आप सा अन्य कहाँ?–SS
वांछित रूप प्रदाता हो, बोधि ऋद्धि तुम दाता हो–2
महिमा प्रभु तेरी हो–3 सब भविजन गाये रे–SS॥4566॥

(13) नर इन्द्रों के नेत्र हरे, ऐसा तव मुख कांति वरे–2
उपमा तीनों लोक हरे–SS
रवि आते शशि फीका हो, जैसे फूल पलाश कहो–2
लक्ष्मी दिलवाता हो–3 ऋजु मानस लाये रे–SS॥4567॥

(14) चन्द्रकांति से निर्मल गुण, लाँघ रहे हैं तीन भुवन–2
जैसे पूर्ण चाँद भगवन्–SS
तव आश्रित हो जाने से, रोके कौन विचरने से?–2
औरों के मन का हो–3 ये ज्ञान कराये रे–SS॥4568॥

(15) प्रलयंकारी हवा चले, चोटी मेरुगिरि नहीं हिले–2
ऐसा अडिग तुम्हारा मन–SS
महादेवियाँ नृत्य करें, तुम्हें कभी नहिं डिगा सकें–2
भाग्य विधाता हो–3 सम्मान बढ़ाये रे–SS॥4569॥

(16) धूम न बाती जलते हो, सर्व लोक तुम कहते हो–2
हे प्रभु अपूर्व दीपक हो–SS
प्रलय वायु में रहते हो, लेकिन कभी न बुझते हो–2
देते विजय को हो–3 गुरुदेव बतायें रे–SS॥4570॥

(17) अस्त न राहू से ग्रसते, युगपत् लोक प्रकट करते–2
बादल तुम्हें नहीं ढकते–SS
महिमा रवि से न्यारी है, गाते ऋद्धिधारी हैं–2
सारे रोगों को हो–3 गुणगान मिटाये रे–SS॥4571॥

(18) नित्य उदित जो रहता है, मेघ न राहू ढकता है–2
मोह रूप तम दलता है–SS
कांति महान् दिखाता है, शांति महान् दिलाता है–2
चाँद सा शोभित हो–3 होता मुख मंडल रे–SS॥4572॥

(19) धान्य खेत पक जायें जब, बादल झुक–झुक जायें तब–2
पर क्या उनका काम है अब–SS
तव मुख ने तम मिटा दिया, रवि शशि काम रहा फिर क्या–2
दुःख को मिटाये हो–3 विद्यायें लाये रे–SS॥4573॥

(20) प्रभु में जैसा ज्ञान यहाँ, पर देवों में नहीं यहाँ–2
खूब देख लो यहाँ–वहाँ–SS
मणियों में जो चमक कही, वैसी चमक न काँच कहीं–2
प्रभु के गुण गाकर हो–3 सौभाग्य बढ़ाओ रे–SS॥4574॥

तीर्थंकर के गीत यहाँ, जो भवि गाये रे–SSS
उसको दुनिया में हो–3 सब कुछ मिल जाए रे–SSS

(21) तेरा दर्शन करे यहाँ, उसके मन संतोष यहाँ–2
अन्य देव में तोष कहाँ?–SS
तुम सबका मन हरते हो, सबके मन में बसते हो–2
प्रज्ञा दे करके हो–3 सौभाग्य बढ़ाये रे–SS।।4575।।

(22) सौ–सौ सुत सौ माँ जन्में, तुमसा कोई न जनम सकें–2
अपने अपने आँगन में–SS
सर्व दिशा में तारे हों, सूरज पूर्व दिशा में हो–2
बाधा भूतों की हो–3 सब दूर भगायें रे–SS।।4576।।

(23) परम पुरुष कहते निर्मल, मुनिजन तम बिन कहें अमल–2
तुममें है तेजस्व सबल–SS
तुम्हें हृदय जो पाते हैं, मृत्युंजयी हो जाते हैं–2
दृष्टि को पाकर हो–3 सिर रोग मिटाये रे–SS।।4577।।

(24) अव्यय! आदि! अनन्त! तुम्हीं, ईश्वर! विभु! अचिंत्य! तुम्हीं–2
ब्रह्मा! केतुअनंग! तुम्हीं–SS
एकानेक! असंख्य! प्रभो! विमल! विदित योगेश! विभो!–2
ज्ञान स्वरूपी! हो–3 सब संत बताये रे–SS।।4778।।

(25) तुम्हीं बुद्ध सब ज्ञाता हो, शंकर भव सुख दाता हो–2
तुम शिवमार्ग विधाता हो–SS
शक्ति प्रकट कर दी उत्तम, हे प्रभु! तुम हो पुरुषोत्तम–2
कुदृष्टि रोके हो–3 तप खूब बढ़ाये रे–SS।।4579।।

(26) पीड़ाहारी तुम्हें नमन्! पृथ्वीभूषण तुम्हें नमन्!–2
त्रय जगदीश्वर तुम्हें नमन्!–SS
भव सागर करते शोषण, आदिनाथ प्रभु तुम्हें नमन्!–2
कांति तन लाये हो–3 पीड़ा दूर भगाये रे–SS।।4580।।

(27) तुम्हें गुणों ने पाया है, अपना मान बढ़ाया है–2
दोष न तुझमें दिखे कभी–SS
दोष टिके अभिमानी में, अचरज क्या लगता इसमें–2
तप को बढ़ाकर हो–3 शत्रु भाव मिटाये रे–SS ।।4581।।

(28) राजित तरु अशोक नीचे, निर्मल तन किरणें फेंके–2
सर्व मनोरथ पूर्ण करे–SS
रवि हो काले बादल में, ऐसी महिमा दिखे हमें–2
शक्ति प्रदाता हो–3 तप खूब बढ़ाये रे–SS।।4582।।

(29) स्वर्णमयी है सिंहासन, जिस पर शोभित स्वर्णिम तन–2
बनता किरण समूह सघन–SS
मेरु चोटि रवि आ जाये, ऐसे आप नजर आये–2
घोर तपस्या हो–3 पीड़ा नेत्र विनाशे रे–SS।।4583।।

(30) चौंसठ चँवर ढोरते हैं, स्वर्णिम तन पे शोभते हैं–2
झरने जैसे लगते हैं–SS
मेरु पर जल स्वच्छ गिरे, चन्द्र किरण उस पर लहरें–2
उत्तम गुणों को हो–3 ये प्राप्त कराये रे–SS।।4584।।

तीर्थंकर के गीत यहाँ, जो भवि गाये रे-SSS
उसको दुनिया में हो-3 सब कुछ मिल जाए रे-SSS

(31) सूर्य ताप को रोक रहे, चन्द्रकांति सम शोभ रहे-2
तीन छत्र अति मोह रहे-SS
ईश्वरता बतलाते हैं, सुन्दरता बिखराते हैं-2
ये ही राज्यों में हो-3 सम्मान दिलाये रे-SS।।4585।।

(32) दुंदुभि दिशा गुँजाती है, प्रभु जय घोष सुनाती है-2
वैभव संगम लाती है-SS
नभ में यश बतलाती है, सबका मन हर्षाती है-2
सारे ग्रहों का हो-3 संताप मिटाये रे-SS।।4586।।

(33) पुष्प कल्पतरु बरसाते, देव सर्व मन हरषाते-2
सुंदर संतानक लाते-SS
मंद पवन की लहर चले, खुश्बू मन हर गगन उड़े-2
ज्वर को मिटाकर हो-3 नीरोग बनाये रे-SS।।4587।।

(34) भामंडल है अतिप्यारा, सात भवों का उजियारा-2
कांति जीतती भव सारा-SS
कोटि चन्द्र शशि उग आयें, फीका इसे नर कर पायें-2
शोभा हो अद्‌भुत हो-3 दिन रात मिटाये रे-SS।।4588।।

(35) स्वर्ग मोक्ष बतलाती है, तत्त्व खोज करवाती है-2
सत्य धर्म दिखलाती है-SS
द्रव्य-गुणों पर्यायों में, विशद सभी भाषाओं में-2
दिव्य ध्वनि खिरती हो-3 नि:शंक बनाये रे-SS।।4589।।

(36) जहाँ-जहाँ प्रभु चरण पड़े, देव चरण में कमल रचें-2
जब भगवान विहार करें-SS
दो सौ पच्चिस कमल रखें, किरणें स्वर्णमयी निकलें-2
लक्ष्मी प्रदायी हो-3 बहु पुण्य बढ़ाये रे-SS।।4590।।

(37) धर्म देशना देते जब, वैभव शाली लगते तब-2
ऐसा अन्य देव नहिं हो-SS
रवि तम सारा नाश करे, सब तारे नहिं नाश सकें-2
तेरा ये वैभव हो-3 श्रद्धान बढ़ाये रे-SS।।4591।।

(38) भौंरो ने अति नाद किया, गज का चित्त बिगाड़ दिया-2
गज उन्मत्त है क्रोध भरा-SS
अगर सामने आ जाये, तब आश्रित नहिं घबराये-2
हाथी मद नाशे हो-3 मन सिद्धि दिलाये रे-SS।।4592।।

(39) लहुलुहान गज करि डाला, रक्त लसित वसुधा हाला-2
शेर क्रूर भावों वाला-SS
अगर सामने आ जाए, वही भक्त नहिं घबराए-2
जो तव चरणों में हो-3 आश्रय पा जाये रे-SS।।4593।।

(40) कल्पकाल की हवा चले, दावानल सी आग जले-2
सबको भस्म हि कर डाले-SS
ऐसी आग सामने हो, तव कीर्तन जल उर में हो-2
तेरा शुभनाम हो-3 सब आग बुझाए रे-SS।।4594।।

तीर्थंकर के गीत यहाँ, जो भवि गाये रे-SSS
उसको दुनिया में हो-3 सब कुछ मिल जाए रे-SSS

(41) काला साँप हो अति विकराल, फण उठाए है आँखें लाल-2
सभी प्राणियों का जो काल-SS
भक्त सामने आ जाए, हो निःशंक लाँघ जाए-2
जो तेरा नाम हो-3 निज हृदय बसाए रे-SS।।4595।।

(42) सेना है अति बलशाली, कठिन जीतना है भारी-2
कीर्तन करे प्रभु का जो-SS
सेना होती तितर-बितर, ज्यों तम को करता दिनकर-2
युद्ध के भय को हो-3 ये दूर भगाए रे-SS।।4596।।

(43) छिन्न-भिन्न गज कर डाले, भेद दिये तन में भाले-2
बहें खूब खूनी नाले-SS
कठिन जीतना शत्रु यहाँ, पर वो पाते विजय यहाँ-2
जो तव चरणों का हो-3 आश्रय पा जाए रे-SS।।4597।।

(44) अग्नि लगी हो तूफां हो, मछली-मच्छ भयंकर हो-2
क्षुभित समुद्र में जहाज हो-SS
लेकिन ये नहिं घबराते, निडर किनारे आ जाते-2
जिनने प्रभु तेरा हो-3 स्मरण सजाये रे-SS।।4598।।

(45) रोग जलोदर भयकारी, भार रोग का दुःखकारी-2
आश तजी जीवन सारी-SS
तव चरणों की रज पाता, कामदेव सा हो जाता-2
अक्षीण ऋद्धि हो-3 तव नाम दिलाए रे-SS।।4599।।

(46) कंठ से पैरों तक बाँधा, खून लसित हो गइ जाँघा-2
बड़ी बेड़ियों से बाँधा-SS
जो तव नाम निरंतर ले, उनके बंध हटते हैं-2
बंधन भय नाशक हो-3 निज ज्ञान बढ़ाए रे-SS।।4600।।

(47) साँप-दावानल-हाथी-युद्ध-शेर-समुद्र-महोदर-बंध-2
आठों भय भयकारी हैं-SS
जो तव स्तवन पढ़ता है, भय से मुक्ति वरता है-2
तेरी ही थुति से हो-3 निर्भयता पाए रे-SS।।4601।।

(48) गुण पुष्पों की माला है, शुभ भक्ति का प्याला है-2
निजानुभूति उजाला है-SS
गाकर कंठ सजाता है, मानतुंग गुरु ध्याता है-2
भक्ति से भक्त हो-3 शिवलक्ष्मी पाये रे-SS।।4602।।

कल्याण मंदिर स्तोत्र

मूल ग्रंथकर्ता : आचार्य कुमुदचन्द्राचार्य

पद्यानुवाद : उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

कल्याणों का धाम यही, स्तोत्र बताएँ रे-SS
पार्श्व प्रभु को हो-3, हम शीश झुकाएँ रे-SSS

(1) कल्याणों के मंदिर हैं, दर्शन ज्ञान समंदर हैं-2
पापों को जो खंजर हैं-SS
भवसागर में डूब रहे, उनको जहाज प्रभुवर हैं-2
पारस प्रभु नमकर हो-3, जयकार लगाओ रे-SS।।4603।।

(2) सुरगुरु ने भी गाया है, फिर भी पार न पाया है-2
गुण समुद्र सी काया है-SS
मान कमठ का चूर किया, अग्नि समा प्रभु है छाया-2
ऐसे प्रभु पारस हो-3, की स्तुति गायें रे-SS।।4604।।

(3) उल्लू रवि को बतलाए, दिन में अंधा हो जाए-2
जाने बिन क्या समझाए-SS
वैसे ही अज्ञानी मैं, कैसे तव स्वरूप गायें-2
भक्ति से अंधा हो-3, आँखें पा जाये रे-SS।।4905।।

(4) सागर में बहु रत्न भरे, गिनती उनकी कौन करे-2
कोई नहीं समर्थ दिखे-SS
वैसे प्रभु के अनंत गुण, गिन नहिं सके महान निपुण-2
ऐसे प्रभु के गुण हो-3, गाये गुण पाये रे-SS।।4606।।

(5) हाथों को जो फैलाए, सागर सीमा बतलाए-2
बालक बुद्धू कहलाए-SS
वैसे ही मैं मूर्ख यहाँ, गुण गाने तैयार यहाँ-2
ऐसे ही भाव हो-3, निज ज्ञान बढ़ाएँ रे-SS।।4607।।

(6) बिना विचारे बोले जो, पक्षी सा अज्ञानी हो-2
कैसे प्रभु गुण गाये वो-SS
योगी गुण नहिं गा पायें, हम कैसे गा सकते वो-2
फिर भी गुण गाये हो-3, धर्मी बतलाएँ रे-SS।।4608।।

(7) करते पथ में पथिक गमन, गर्मी में हो तीव्र तपन-2
तुष्ट कराए शीत पवन-SS
छोड़ो थुति जब नाम यहाँ, कर देता भवशाम यहाँ-2
पारस की महिमा हो-3, अद्भुत बतलाएँ रे-SS।।4609।।

(8) मोर जहाँ पर आते हैं, साँप वहाँ घबराते हैं-2
बंधन खुद खुल जाते हैं-SS
प्रभु जब हृदय समाते हैं, कर्मबंध मिट जाते हैं-2
प्रभु को जो ध्याये-हो 3, चिंतामणि पाये रे-SS।।4610।।

(9) मालिक ज्यों ही नजराए, चोर स्वयं ही घबराए-2
गाय छोड़कर भग जाए-SS
वैसे ही प्रभु दर्शन से, सभी उपद्रव मिट जाए-2
जिनवर का दर्शन हो-3, सब ही दिखलाए रे-SS।।4611।।

(10) मसक न पार कराती है, हवा पार करवाती है-2
बात समझ ये आती है-SS
पार कराते प्रभू हमें, या हम पार कराते हैं-2
दिल में प्रभु बैठे हो-3, भव पार कराएँ रे-SS।।4612।।

तीर्थंकर के गीत यहाँ, जो भवि गाये रे-SSS
उसको दुनिया में हो-3 सब कुछ मिल जाए रे-SSS

(11) जल अग्नि को नाश करे, बड़वानल जल नाश करे-2
जल के दो दो काम अरे-SS
काम मिटाए रागी को, मिटता गर वैरागी हो-2
प्रभुवर ने क्षण में हो-3, सब काम मिटाए रे-SS।।4613।।

(12) दर्श ज्ञान से भारी हैं, हृदय धरें संसारी हैं-2
प्रभु सबको उपकारी हैं-SS
तुम्हें हृदय धर जाते जो, कैसे झट तिर जाते वो-2
प्रभुवर की महिमा हो-3, नहिं चिंत्य बताएँ रे-SS।।4614।।

(13) क्रोध खत्म कर मारा है, कर्मों को निरवारा है-2
बिना क्रोध फटकारा है-SS
बर्फ यहाँ पड़ जाती है, हरियाली जल जाती है-2
ठंडी अग्नि से हो-3, जंगल जल जाए रे-SS।।4615।।

(14) हृदय कमल पर ध्याते हैं, वे उर में प्रभु पाते हैं-2
निर्मल भाव बनाते हैं-SS
सबसे सुंदर हृदय कमल, यही जगह प्रभु की निर्मल-2
दिल में प्रभु ध्याये हो-3, वो कर्म मिटाए रे-SS।।4616।।

(15) पत्थर को जब अग्नि मिले, तभी शुद्धमय स्वर्ण खिले-2
ऐसा कहते लोग भले-SS
ध्यान दीप जब हृदय जले, उसको तन में प्रभु मिले-2
क्षण में ही ध्यानी हो-3, प्रभु पद पा जाये रे-SS।।4617।।

(16) जिस तन से प्रभु ध्यान करें, प्रभु उस तन को नाश करें-2
लगता है आश्चर्य अरे-SS
महापुरुष जहाँ आते हैं, भवि के दुक्ख मिटाते हैं-2
ऐसा स्वभाव हो-3, प्रभु का बतलाएँ रे-SS।।4618।।

(17) ज्ञानी प्रभु का ध्यान करें, जिनवर जैसी कांति वरें-2
निज में अमृतपान करें-SS
मंत्रित हो जल मंत्रों से, विषय विकार विनाश करे-2
वैसे प्रभु नाम हो-3, अमृत बन जाये रे-SS।।4619।।

(18) भोगी देखे भोग जहाँ, योगी देखे योग वहाँ-2
उपयोगी उपयोग वहाँ-SS
जैसा चश्मे का रंग हो, वैसा मंजर का रंग हो-2
पीली आँखों को हो-3, पीला नजराए रे-SS।।4620।।

(19) सूर्य जगत में आता है, सबका ज्ञान कराता है-2
खुशियों को भर जाता है-SS
प्रभु होते जब पास यहाँ, शोक सभी हों नाश यहाँ-2
"वृक्ष अशोक" हो-3, सब शोक मिटाए रे-SS।।4621।।

(20) ज्ञानी देव तुम्हें लखते, चरणों में वो आ झुकते-2
जैसे कर्म सभी मिटते-SS
"पुष्पवृष्टि" जब देव करें, ऊपर पंखुरी फूल गिरें-2
डंठल हो नीचे हो-3, ऋषिजन बतलाएँ रे-SS।।4622

तीर्थंकर के गीत यहाँ, जो भवि गाये रे-SSS
उसको दुनिया में हो-3 सब कुछ मिल जाए रे-SSS

(21) अमृत जैसी वाणी है, सबको ही सुखदानी है-2
"दिव्यध्वनि" कल्यानी है-SS
ज्ञानी पीकर हुए प्रखर, पाते पद जो अजर अमर-2
पारस की वाणी हो-3, भव पार कराए रे-SS।।4623।।

(22) चौंसठ चंमर दुराते हैं, देव नम्र हो जाते हैं-2
भक्ति श्रेष्ठ दिखाते हैं-SS
शुद्ध भाव मन में लाते, वे चरणों में झुक जाते-2
ऊर्ध्वगामी बन हो-3, वह शिवपुर जाये रे-SS।।4624।।

(23) मेरु शिखर पर आये हों, काले बादल छाये हों-2
गर्जन करते आये हों-SS
त्यों ही स्वर्णिम "सिंहासन", उस पर श्यामवर्णमय तुम-2
शोभित होते हो हो-3 मन सभी लुभाएँ रे-SS।।4625।।

(24) सात भवों को दर्शाता, भामण्डल वह कहलाता-2
महाकांति को दिखलाता-SS
वीतरागता लखता जो, वीतरागमय होता वो-2
प्रभु की महिमा को हो-3 सब देव सुनाएँ रे-SS।।4626।।

(25) नभ में शब्द गुँजाती है, सबको पास बुलाती है-2
जो दुंदुभि कहलाती है-SS
मुक्तिनगर के वैभव को, पालो ये बतलाती है-2
दुंदुभि-भगवन् की हो-3 संगति दिलवाए रे-SS।।4627।।

(26) तीन छत्र प्रभु के ऊपर, जिनमें मोती की झालर-2
जैसे तीन चन्द्र सुंदर-SS
तीन लोक का ज्ञान कहें, बहुत बड़ा सम्मान कहें-2
छत्रों की महिमा हो-3 क्षत्रिय बतलाएँ रे-SS।।4628।।

(27) चाँदी माणिक स्वर्णमयी, कोट बने त्रयवर्णमयी-2
समवशरण है शरणमयी-SS
कांति प्रताप दिखाता है, प्रभु का यश बतलाता है-2
धर्म सभा में हो-3, सब भव्य दिखाएँ रे-SS।।4629।।

(28) देव प्रभु को झुक जाएँ, गिरें चरण में मालाएँ-2
प्रेम चरण से दिखलाएँ-SS
गुल विद्वान वहीं रहते, प्रभु के चरण जहाँ पड़ते-2
झुकता जो प्रभु को हो-3, वो उठता जाए रे-SS।।4630।।

(29) अधोमुखी घट जल में हो, पार कराए नदियों को-2
वैसे ही प्रभु आप अहो-SS
भव में वीतरागमय हो, सबको पार कराते हो-2
महती महिमा को हो-3, सब मुनिगण गायें रे-SS।।4631।।

(30) लिखते नहिं पढ़ते नहिं हो, ज्ञान रहित दारिद्री हो-2
फिर भी सबके रक्षक हो-SS
अज्ञानी असहायी हो, पर तुम केवलज्ञानी हो-2
सारी दुनियाँ को हो-3, प्रभु यहाँ बताएँ रे-SS।।4632।।

तीर्थंकर के गीत यहाँ, जो भवि गाये रे-ऽऽऽ
उसको दुनिया में हो-3 सब कुछ मिल जाए रे-ऽऽऽ

(31) प्रभु थे ध्यान तपस्या में, धूल उड़ा दी थी नभ में-2
कमठ दुष्ट ने क्रोधित में-ऽऽ
उसे कर्मरज ने जकड़ा, प्रभु ने समता को पकड़ा-2
समता जो धारे हो-3, मंजिल वह पाये रे-ऽऽ।।4633।।

(32) बिजली गरज रही भारी, बरसे मेघ प्रलयकारी-2
जलवृष्टि अति भयकारी-ऽऽ
कमठ ने दुख उपजाया था, खुद ही दुक्ख बढ़ाया था-2
प्रभु ने सब सहकर हो-3, सारे गुण पाये रे-ऽऽ।।4634।।

(33) दैत्य प्रभु पर दौड़ाए, तप से विचलित हो जाए-2
पर कुछ बिगाड़ नहीं पाए-ऽऽ
दृढ़ता और बढ़ी प्रभु की, पापकर्म के झड़ते ही-2
भारी कमठ ने हो-3, फिर दुक्ख उठाए रे-ऽऽ।।4635।।

(34) भव के छोड़े काम यहाँ, सुबह शाम प्रभु नाम यहाँ-2
पुलकित हो सर्वांग यहाँ-ऽऽ
तेरी भक्ति रचाते हैं, धन्य वही कहलाते हैं-2
उनका ही जीवन हो-3, भव सफल बताएँ रे-ऽऽ।।4636।।

(35) फिरें भटकते वो प्राणी, सुनें न जो जिनवर वाणी-2
जिनवाणी है कल्याणी-ऽऽ
नाम तुम्हारा जप जाये, उस पर नहीं विपति आये-2
प्रभु का शुभ नाम हो-3, पावनता लाए रे-ऽऽ।।4637।।

(36) चरणों में झुक जाते हैं, जो पूजा कर जाते हैं-2
इच्छित फल वो पाते हैं-ऽऽ
भाव सहित नहिं पूजन की, इसीलिए हूँ बहुत दुखी-2
प्रभु की पूजन से हो-3, भव-भव सुख पाये रे-ऽऽ।।4638।।

(37) अंधेपन में दर्श किया, सुख का अमृत नहीं पिया-2
हरदम रहा जिया दुखिया-ऽऽ
सच्चा दर्शन हो जाता, इतने दुख फिर क्यों पाता-2
तेरा ही दर्शन हो-3, सब दुक्ख मिटाए रे-ऽऽ।।4639।।

(38) पूजा दर्शन ध्यान किया, नाम जपा गुणगान किया-2
फिर भी दुख में रहा जिया-ऽऽ
भक्ति बिना सब कार्य किये, इसीलिए फल नहीं मिले-2
भावों बिन भक्ति हो-3, नहिं फलित बताएँ रे-ऽऽ।।4640।।

(39) शरणागत प्रतिपालक तुम! करुणामय दुखहारक तुम!-2
मुझ पर दया दिखाओ तुम!-ऽऽ
भक्ति में अति नम्र हुआ, भव से पार कराओ तुम-2
जल्दी हे भगवन्! हो-3, दुख दूर भगाओ रे-ऽऽ।।4641।।

(40) कर्म सताते जाते हैं, विघ्न डालते जाते हैं-2
जब शुभकर्म रचाते हैं-ऽऽ
पावन गुणमय प्रतिपालक, रक्षा करो मेरे रक्षक-2
किस्मत का मारा हो-3, प्रभु हमें बचाओ रे-ऽऽ।।4642।।

तीर्थंकर के गीत यहाँ, जो भवि गाये रे–SSS
उसको दुनिया में हो–3 सब कुछ मिल जाए रे–SSS

(41) भव को जाननहारे तुम! भव से तारण हारे तुम!–2
दयासिंधु! गुणसागर तुम–SS
दुखी मुझे भव पार करो, पावन कर उद्धार करो–2
सच्चे तुम साथी हो–3, सब स्वार्थ दिखाएँ रे–SS।।4643।।

(42) जिसको तेरी मिले शरण, उसका मिटता जन्म–मरण–2
भव भयनाशक प्रभू चरण–SS
तेरे पद हों मम उर में, मेरा हृदय रहे पद में–2
जन्मों–जन्मों तक हो–3, ये फल मिल जाए रे–SS।।4644।।

(43) गुण का लक्ष्य बनाते हैं, पुलकित मन कर जाते हैं–2
भव्य सुधी कहलाते हैं–SS
यह स्तोत्र रचाते हैं, धन्य वही बतलातें हैं–2
पुण्य का योग हो–3, ये योग बनाए रे–SS।।4645।।

(44) गाते हैं स्तोत्र यहाँ, खुशियाँ पाते यहाँ वहाँ–2
जाते हैं वो जहाँ जहाँ–SS
स्वर्ग सुखों को पाते हैं, इक दिन शिवपुर जाते हैं–2
गुण को जो गाये हो–3, सब कर्म मिटाए रे–SS।।4646।।

एकीभाव स्तोत्र

मूल ग्रंथकर्ता : आचार्य वादिराज मुनिराज

पद्यानुवाद : उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

एकीभाव स्तोत्र यहाँ, ऋषिवर बतलाएँ रे-2
जिसमें भगवन् की हो-3 स्तुति को गायें रे-SSS

(1) निज में तन्मय आप यहाँ, दुखदायी सब कर्म यहाँ-2
मुश्किल से हो दूर यहाँ-SSS
दुख से दूर कराने को, तेरी ही भक्ति है जो-2
सारे भव के दुख हो-3 इक भक्ति मिटाये रे-SS।।4647।।

(2) पाप तिमिर को नाश करें, गणधर ज्ञान स्वरूप कहें-2
मेरे मन में सदा रहें-SSS
ज्योतिर्मय प्रभु आप जहाँ, पाप तिमिर क्यों रहे वहाँ-2
जिनवर को ध्याये हो-3 वो पाप मिटाये रे-SS।।4648।।

(3) भीगा आनंद अश्रु से, स्तवन करे अंतर ध्वनि से-2
चित्त स्थिर कर मंत्रों से-SSS
सर्प निकलते बामी से, कर्म मिटें सब अंदर से-2
मन की कषायें हो-3 सब ही मिट जायें रे-SS।।4649।।

(4) स्वर्ग से गर्भ में आते हैं, अतिशय यहाँ दिखाते हैं-2
भू-स्वर्णिम करवाते हैं-SSS
ध्यान हृदय में लाये जो, स्वर्णमयी हो जाये वो-2
इसमें नहिं कोई हो-3 अचरज बतलाएँ रे-SS।।4650।।

(5) स्वार्थ रहित हो मित्र परम, विषय ज्ञान की शक्ति शुभम्-2
बाधा रहित मेरे भगवन-SSS
भक्ति से मन में वास करें, दुख प्रभु सारे नाश करें-2
भगवन के पास हो-3 दुख नहिं आ पाये रे-SS।।4651।।

(6) भव वन में नित भ्रमण किया, जिनवाणी रसपान किया-2
स्याद्वाद नय प्राप्त किया-SSS
शीतलदायी वाणी में, गर्दन तक हम डूबे हैं-2
फिर भी दुख हमसे हो-3 क्यों दूर न जायें रे-SS।।4652।।

(7) प्रभु जब यहाँ विहार करें, तीनों लोक पवित्र करें-2
देव चरण में कमल रचें-SSS
कमल धन्य हो जाते हैं, प्रभु पग जब स्पर्श करें-2
चरणों को छू लो हो-3 कल्याण हो जाये रे-SS।।4653।।

(8) निकले कर्मवनों से जो, मद को हरने वाले जो-2
अनुपम सुख को पायें वो-SSS
भक्तिपात्र से अमृत पी, अजर अमर हो जाते वो-2
कोई भी रोग हो-3 दुख नहिं दे पायें रे-SS।।4654।।

(9) मानस्तम्भ बहुत जग में, उन्हें देख नहिं मान गलें-2
रत्नों के भी भले दिखें-SSS
मानस्तम्भ अहं नाशे, अतिशय समवशरण भासे-2
प्रभु की नजदीकी हो-3 ही मान गलाये रे-SS।।4655।।

(10) तन छू हवा हो मनहारी, हर प्राणी को सुखकारी-2
धूल हटाये गुणकारी-SSS
ध्यान से हृदय बुलाये जो, उसके दुक्ख भगाते वो-2
सारे उपकार हो-3 प्रभु ध्यान कराये रे-SS।।4656।।

एकीभाव स्तोत्र यहाँ, ऋषिवर बतलाएँ रे-2
जिसमें भगवन् की हो-3 स्तुति को गायें रे-SSS

(11) चतुर्गति में भ्रमण करें, भोग रहा दुख ही भोगें-2
शस्त्र समा स्मरण कहें-SSS
हे कृपालु! उपकार करो, दया करो उद्धार करो-2
तेरे चरणों की हो-3 हम शरण में आये रे-SS।।4657।।

(12) श्वान भी देव है हो जाता, इंद्रों के पद दिलवाता-2
महामंत्र सुख का दाता-SSS
महामंत्र नित जाप करें, अचरज क्या वो इन्द्र बनें-2
मंत्र की महिमा हो-3 सब वेद सुनाएँ रे-SS।।4658।।

(13) शुद्ध ज्ञान चारित्र रहे, भक्ति नहीं उत्कृष्ट रहे-2
उसे न मुक्ति द्वार मिले-SSS
मोक्ष अभिलाषी पुरुष यहाँ, श्रेष्ठ भाव नित लिए यहाँ-2
मोह मिटते ही हो-3 शिव द्वार दिखाये रे-SS।।4659।।

(14) शिवपथ तम से व्याप्त यहाँ, गहन दुखों से विषम यहाँ-2
दिखता नहीं प्रकाश यहाँ-SSS
तत्त्वज्ञान का दीप मिले, जिनवाणी का सार दिखे-2
तब ही इस पथ पर हो-3 सुख से चल पाये रे-SS।।4660।।

(15) ज्ञान, कर्म से ढका यहाँ, देता जो आनंद यहाँ-2
मिथ्यात्वी को नहीं यहाँ-SSS
भक्ति स्तवन के द्वारा, कर्मबंध को खोद यहाँ-2
ज्ञान सम्पत्ति हो-3 को झट पा जायें रे-SS।।4661।।

(16) स्याद्वाद गिरि से निकली, भाग्योदय से हमें मिली-2
वाणी गंगा है उजली-SSS
पापरूप मल को धोकर, कर स्नान पवित्र होकर-2
पाप धुलने से हो-3 निर्मल मन पाये रे-SS।।4662।।

(17) वीतराग प्रभु ध्यान किया, तब ही ऐसा ज्ञान लिया-2
प्रभु सा खुद को जान लिया-SSS
भले हि बात असत्य है ये, बुद्धि शुद्ध कर देती ये-2
इससे ही दोषी हो-3 निर्दोष हो जायें रे-SS।।4663।।

(18) सातों भंग तरंगों से, सम्यक्रूपी वचनों से-2
श्रद्धा होती निश्चय से-SSS
मिथ्यामल को दूर करे, सम्यक् सुख को प्राप्त करे-2
भगवन की वाणी हो-3 का राज बताएँ रे-SS।।4664।।

(19) भाव से जो वदरूप यहाँ, अलंकार वो धरे यहाँ-2
शस्त्र रखे भयशील यहाँ-SSS
तुम सर्वांग परम सुंदर, पुष्प आभूषण काम कहाँ-2
महिमा जिनवर की हो-3 ये दुनियाँ गाये रे-SS।।4665।।

(20) पूजा स्तुति वंदना करें, प्रभु शंसा कैसे कह दें-2
इसे इन्द्र की कीर्ति कहें-SSS
तिरते आप तिराते हो, मुक्ति नगर के स्वामी हो-2
ऐसी प्रशंसा हो-3 प्रभु की कहलाए रे-SS।।4666।।

एकीभाव स्तोत्र यहाँ, ऋषिवर बतलाएँ रे–2
जिसमें भगवन् की हो–3 स्तुति को गायें रे–SSS

(21) हम अबोध अज्ञानी हैं, आप शत्रुजय ज्ञानी हैं–2
आप न संसारी सम हैं–SSS
भक्ति स्तुति मम तुच्छ यहाँ, फिर भी अमृत तुल्य यहाँ–2
कल्पतरु के सम हो–3 इच्छित फलदायी रे–SS।।4667

(22) राग–द्वेष नहिं क्रोध यहाँ, वीतराग मय आप यहाँ–2
उदासीन हैं आप यहाँ–SSS
ये जग आज्ञाकारी है, सेवा विरोध नाशी है–2
प्रभु सा प्रभाव हो–3 नहिं कहीं दिखाए रे–SS।।4668।।

(23) सम्यक् भक्ति करता जो, चिंतन स्तुति करता जो–2
कर्म काट शिव पाता वो–SSS
पूर्णज्ञान को पा जाता, फिर अज्ञान नहीं आता–2
मोह मिट जाता हो–3 वह मोक्ष को पाए रे–SS।।4669।।

(24) अनंत चतुष्टयधारी तुम, प्राणी को उपकारी तुम–2
त्रिकाल पूज्य सुखारी तुम–SSS
विनयवंत हो भक्ति करे, मोक्षमार्ग की शक्ति मिले–2
पंचकल्याणक हो–3 वो ही पा जाए रे–SS।।4670।।

(25) सौ इन्द्रों से पूज्य यहाँ, पूर्ण ज्ञान दृग रूप यहाँ–2
स्तुति की सामर्थ कहाँ–SSS
फिर भी स्तुति कर जाउँगा, तभी आत्मसुख पाउँगा–2
कल्पतरु के सम हो–3 प्रभु भक्ति बताएँ रे–SS।।4671।।

(26) वादिराज ने गाया है, यह स्तोत्र बनाया हो–2
भव्यों को सुख छाया हो–SSS
तार्किक सिंह समां गुरुवर, रचनाकार परम गुरुवर–2
लोक में स्तोत्र हो–3 शुभ धर्म दिखाए रे–SS।।4672।।

विषापाहार स्तोत्र

मूल ग्रंथकर्ता : कवि धनञ्जय
पद्यानुवाद : उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

विषापहार स्तोत्र यहाँ, हम सब गायें रे–SS
जिनवर की महिमा, हम तुम्हें सुनायें रे–SSS

मंगलाचरण

(1) सर्वव्याप्य निज में रहकर, ग्रंथ रहित ज्ञानी होकर–2
जरा रहित दीर्घायु होकर–SSS
उत्तम गुण से युक्त हैं जो, आदिनाथ भगवन हैं वो–2
रक्षा करो मम हो–3 हम शीश झुकायें रे–SS।।4673।।

(2) अचिंतनीय सब बतलाते, महाशक्तियुत् कहलाते–2
मुनि भी थुति नहिं कर पाते–SSS
ऐसे आदिनाथ भगवन्, हम उनके गुण को गाते–2
सूर्य नहिं जाये हो–3 वहाँ दीपक जाये रे–SS।।4674।।

(3) अल्पज्ञान पर गाऊँ मैं, शक्ति न निजी छिपाऊँ मैं–2
प्रभुवर के गुण गाऊँ मैं–SSS
इन्द्र नहीं गुण गा पाये, थक कर छोड़ चले जाये–2
थोड़ा सा ज्ञान हो–3 बहु अर्थ बताएँ रे–SS।।4675।।

(4) सभी आपको नजराते, आप न सबको नजराते–2
सबको आप जान जाते–SSS
सभी आपको नहिं जानें, फिर भी स्तुति की ठानें–2
शक्ति नहिं मुझमें हो–3 हम शक्ति दिखाएँ रे–SS।।4676।।

(5) बालक समझ के ज्ञान दिया, अपराधों का बोध दिया–2
रोग सभी का दूर किया–SSS
हम तो मूर्ख दुखारी हैं, आप परम हितकारी हैं–2
आप हो वैद्य हो–3 सब कष्ट मिटायें रे–SS।।4677।।

(6) लोग सूर्य को नमन करें, वरदानों की माँग करें–2
देगा क्या असमर्थ रहे–SSS
तव चरणों में नमन करें, बिन माँगे झोली भर दें–2
महिमा जिनवर की हो–3 रवि श्रेष्ठ बताएँ रे–SS।।4678।।

(7) तुमसा जो अनुकरण करे, वो सारे सुख प्राप्त करे–2
वरना दुख ही दुःख भरे–SSS
दोनों के सम एक समां, दर्पणवत् तव रहें यहाँ–2
प्रभु की महिमा को हो–3 अति श्रेष्ठ बताएँ रे–SS।।4679।।

(8) सागर में गहराई है, सुमेरु सी ऊँचाई है–2
भू–नभ में अवगाही है–SSS
गहराई ऊँचाई है, प्रभु में श्रेष्ठ अवगाही है–2
प्रभु त्रय लोकों में हो–3 व्यापक बतलाएँ रे–SS।।4680।।

(9) परिवर्तन द्रव्य सभी, सिद्ध न लौटे यहाँ कभी–2
बात विरोधी हमें लगी–SSS
त्यागे सारे सौख्य यहाँ, चाहे हैं परलोक यहाँ–2
विपरीत वृत्ति हो–3 पर उचित बताएँ रे–SS।।4681।।

(10) महादेव स्त्री प्रेरित, ब्रह्मा लक्ष्मी से प्रेरित–2
काम विजय से आप सहित–SSS
निज के प्रति जागृत रहकर, काम से नहीं अचेत होकर–2
जीता है काम हो–3 गुरुदेव बताएँ रे–SS।।4682।।

विषापहार स्तोत्र यहाँ, हम सब गायें रे–SS
जिनवर की महिमा, हम तुम्हें सुनायें रे–SSS

(11) गैरों के हम दोष कहें, अपने को हम श्रेष्ठ कहें–2
इससे हम नहिं गुणी रहें–SSS
आप स्वाभाविक गुण वाले, सागर सी महिमा वाले–2
छोटा किसी को हो–3 नहिं आप बताएँ रे–SS।।4683।।

(12) जीव कर्म को ले जाता, कर्म जीव को ले जाते–2
ताकत दोनों दिखलाते–SSS
कभी जीव खेता नैया, कभी कर्म खेते नैया–2
नाव खेवटिया हो–3 नेतृत्व दिखायें रे–SS।।4684।।

(13) गुण चाहें और दोष धरें, पुण्य चाहें और पाप करें–2
सुख चाहें दुख कार्य करें–SSS
तेल अर्थ बालू पेलें, बच्चों जैसे कार्य करें–2
मूरख अज्ञानी हो–3 गुण कैसे पायें रे–SS।।4685।।

(14) विष को यहाँ मिटाने को, ढूँढ रहे औषधि मणि को–2
मंत्र, रसायन, अमृत को–SSS
आत्म स्वयं औषधि मणि है, परम रसायन अमृत है–2
ऐसा नहिं ख्याल हो–3 मन में आ पाये रे–SS।।4686।।

(15) आप नहीं कुछ करते हैं, लोग जो दिल में रखते हैं–2
वो दुनियाँ पा लेते हैं–SSS
राग–द्वेष से रहित यहाँ, फिर भी जानें सभी यहाँ–2
महिमा प्रभु तेरी हो–3 अति श्रेष्ठ बताएँ रे–SS।।4687।।

(16) तीन काल को जान रहे, तीन लोक में व्याप रहे–2
फिर भी सीमित नहीं रहे–SSS
ज्ञान उसे भी लख लेता, इसके बाहर जो होता–2
लोक सीमित है हो–3 नहिं ज्ञान बताएँ रे–SS।।4688।।

(17) प्रभु की सेवा इन्द्र करे, वो प्रभु का नहिं भला करे–2
अपना ही वह भला करे–SSS
छत्र न प्रभु को सुखी करें, इन्द्र पुण्य का बंध करें–2
ऐसा ही पुण्य हो–3 निज सुख दिलवाये रे–SS।।4689।।

(18) राग–द्वेष बिन आप यहाँ, इच्छाएँ बिन आप यहाँ–2
कैसे सुख उपदेश यहाँ–SSS
सुख का नहिं उपदेश करें, तो सब ही क्यों प्रेम करें–2
हमको यह बात हो–3 अब समझ में आई रे–SS।।4690।।

(19) देने को कुछ नहीं यहाँ, वीतरागमय आप यहाँ–2
फिर भी उन्नत हृदय यहाँ–SSS
पर्वत पर जल नहिं होता, फिर भी वो नदियाँ देता है–2
सागर नहिं कोई हो–3 नदियाँ दे पाए रे–SS।।4691।।

(20) सभी जीव सुख रूप रहें, प्रभु की सेवा नित्य करें–2
धर्म में लगकर सौख्य वरें–SSS
ऐसा जब संकल्प किया, तीर्थंकर पद प्राप्त किया–2
प्रातिहार्यों को हो–3 फिर इन्द्र लगाये रे–SS।।4692।।

विषापहार स्तोत्र यहाँ, हम सब गायें रे–SS
जिनवर की महिमा, हम तुम्हें सुनायें रे–SSS

(21) निर्धन, धनिक को आदर दें, धनिक नहीं निर्धन को दे–2
जग में ऐसा सभी कहे–SSS
तम वाला उजला देखे, उजले को तम नहीं दिखे–2
प्रभु को ये सारी हो–3 दुनियाँ दिख जाये रे–SS।।4693।।

(22) जाने नहीं पदार्थ यहाँ, वो क्या जाने तत्त्व यहाँ–2
ज्ञान स्वरूपी आत्म यहाँ–SSS
वह असमर्थ जानने में, खुद का रूप मानने में–2
वे तो हैं मूढ़ हो–3 जग यही बताए रे–SS।।4694।।

(23) पत्थर से हो स्वर्ण यहाँ, नहीं फेंकते स्वर्ण यहाँ–2
बहुत कीमती रहे यहाँ–SSS
वैसे तीर्थंकर जन्मे, लेकिन वो भगवान यहाँ–2
सबसे ही श्रेष्ठ हो–3 प्रभु पद बतलाएँ रे–SS।।4695।।

(24) मोह बहुत बलवान यहाँ, जीता उसने सभी यहाँ–2
प्रभु ने जीता मोह यहाँ–SSS
वही जीतता मोह यहाँ, जो ताकत से भरा यहाँ–2
ताकत से लड़ना हो–3 खुद ही मर जाए रे–SS।।4696।।

(25) एक मार्ग पर प्रभू रहे, चारों गति में लोग रहे–2
प्रभु को सारा विश्व दिखे–SSS
फिर भी नहिं अभिमान रहा, अकड़ न नाम निशान रहा–2
सब कुछ पाकर के हो–3 जो अहं न लाए रे–SS।।4697।।

(26) सभी पदार्थ अनित्य यहाँ, आप हो भगवन् नित्य यहाँ–2
जन्म–मरण से रहित यहाँ–SSS
राहु सूर्य जल अग्नि यहाँ, वायु समुद्र अनित्य यहाँ–2
इन सबका अंत हो–3 सबको नजराए रे–SS।।4698।।

(27) बिना ज्ञान तव गमन करें, पुण्यबंध वे लोग करें–2
अन्य नमन से नहीं मिले–SSS
हरित मणि इक हाथ यहाँ, हरित काँच इक हाथ यहाँ–2
दोनों इक जैसे हो–3 पर भेद दिखाए रे–SS।।4699।।

(28) सुंदर जिनके बोल यहाँ, करते शुभ व्यवहार यहाँ–2
भले हो कोई बुरा यहाँ–SSS
दीपक बुझे घड़ा फूटे, कहते दीपक बड़ा यहाँ–2
फूटे घड़े का हो–3 कल्याण बताएँ रे–SS।।4700।।

(29) अनेकांत हितकारी हैं, वचन यहाँ उपकारी हैं–2
सुन निर्दोष सुखारी हैं–SSS
ज्वर से मुक्त हो जाता है, वो अच्छा स्वर गाता है–2
प्रभु की वाणी में हो–3 नहिं दोष दिखाए रे–SS।।4701।।

(30) इच्छा रखें न आप यहाँ, प्रवचन फिर भी करें यहाँ–2
इसको कहें नियोग यहाँ–SSS
जैसे–जैसे चन्द्र बढ़े, समुद्र लहरें यहाँ बढ़ें–2
ऐसा नियोग हो–3 भव में बतलाएँ रे–SS।।4702।।

विषापहार स्तोत्र यहाँ, हम सब गायें रे–SS
जिनवर की महिमा, हम तुम्हें सुनायें रे–SSS

(31) गुण उज्ज्वल गंभीर यहाँ, हैं अनंत उत्कृष्ट यहाँ–2
स्तुति से कह नहिं सके यहाँ–SSS
स्तुति गुण का अनंत करे, इसके बिन नहिं अंत अरे–2
नंत गुण कहकर हो–3 झट अंत हो जाये रे–SS।।4703।।

(32) केवल स्तुति नहिं सिद्धि करे, भक्ति, स्मृति भी काम करे–2
नमन से भी हो सिद्धि अरे–SSS
नमन स्मरण करूँ यहाँ, ध्यान करूँ गुणगान यहाँ–2
कैसे भी गुण की हो–3 सिद्धि कर जाओ रे–SS।।4704।।

(33) तीन लोक अधिपति भगवन्, अविनाशी हैं ज्ञान सघन–2
नंतशक्ति से हैं सम्पन्न–SSS
पुण्य पाप से रहित हैं जो, किसी को वंदन करें न जो–2
पुण्य के स्रोत हो–3 हम शीश झुकाएँ रे–SS।।4705।।

(34) शब्द वर्ण रस गंध रहित, सर्वज्ञान से आप सहित–2
मन द्वारा स्मरण रहित–SSS
कोई न तुमको जन्म सके, मूर्तिक गुण से आप रहित–2
हरदम में तुमको हो–3 निज हृदय बसाऊँ रे–SS।।4706।।

(35) धैर्यवान गंभीर यहाँ, हैं अचिन्त्य गुणधीर यहाँ–2
सबके ईश्वर आप यहाँ–SSS
राजाओं से पूजित हैं, धन वालों से याचित हैं–2
ऐसे जिनवर की हो–3 हम शरणा पायें रे–SS।।4707।।

(36) क्रम से उन्नत नहीं हुए, हरदम उन्नत बने रहे–2
वर्धमान ही कहे गये–SSS
शिक्षा दीक्षा गुरु हो तुम, सबको ही हितकारी तुम–2
चरणों में हम सब हो–3 नित शीश झुकाएँ रे–SS।।4708।।

(37) हरपल रहें प्रकाशित जो, अंधकार नहिं बाधक हो–2
हल्के भारी भी नहिं हो–SSS
एक रूप रहने वाले, अंत रहित जीने वाले–2
ऐसे प्रभु पग में हो–3 हम शीश नवाएँ रे–SS।।4709।।

(38) स्तुति करके मैं नित ध्याऊँ, मैं वरदान नहीं चाहूँ–2
चरणों की रज मैं चाहूँ–SSS
तरु के नीचे आते हैं, छाया खुद पा जाते हैं–2
प्रभु की भक्ति से हो–3 सब खुद मिल जाये रे–SS।।4710।।

(39) मम उर चरण में लीन रहे, तव पद मेरे हृदय रहे–2
प्रभु मुझ पर ये कृपा करें–SSS
आप परम उपकारी हो, मुझ पर प्रभु उपकार करो–2
मेरी इच्छा को हो–3 विश्वास बनाओ रे–SS।।4711।।

(40) भक्ति किसी की करता है, इच्छित चाहत वरता है–2
हर इंसां ये कहता है–SSS
प्रभु की जो भी भक्ति करे, वो सुख सम्पति कीर्ति वरे–2
चरणों की भक्ति हो–3 सब कुछ दिलवाये रे–SS।।4712।।

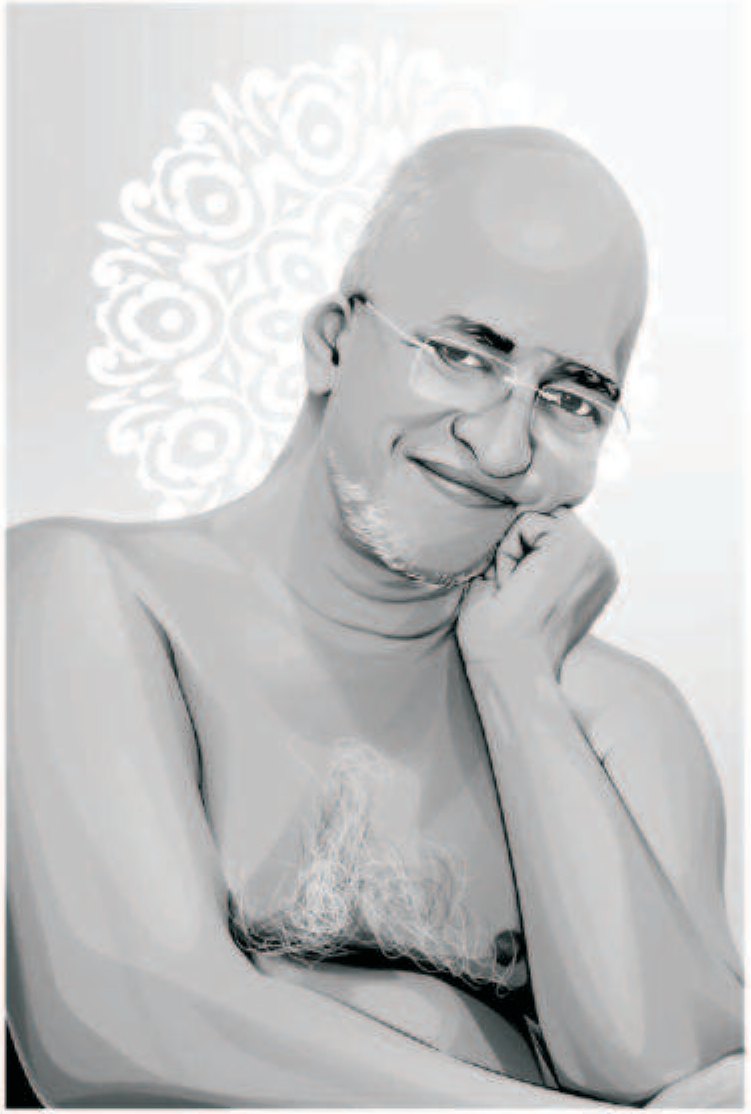

महावीराष्टक

मूल ग्रंथकर्ता : आचार्य भागेन्दु
पद्यानुवाद : उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

गुरुवर ज्योति दिवाकर हैं, गुरु गंगाजल सागर हैं–2
गुरु की मूरत में हो–3 भगवान् दिखाये रे–ऽऽ

(6) दर्पणवत् विद ज्ञान यहाँ, झलकें सभी पदार्थ यहाँ–2
चेतन में असंख्य यहाँ–ऽऽऽ
रविसम जग साक्षात् करें, शिवपथ यहाँ प्रकाश करें–2
स्वामी महावीर हो – 3 मम नयन समाएँ रे–ऽऽ।।4713।।

(2) पलक नहीं झपकाते हैं, क्रोध अभाव दिखाते हैं – 2
जिनके दोनों नयन कमल–ऽऽऽ
शांत विनिर्मल मुद्रा है, राग–द्वेष नहीं तंद्रा है–2
स्वामी महावीर हो – 3 मम नयन समायें रे–ऽऽ।।4714।।

(3) देव नमन करने आयें,चरणों की आभा पायें–2
मणि कांतिमय हो जायें–ऽऽऽ
करते जो स्मरण यहाँ, भवज्वाला हो शांत यहाँ – 2
ऐसे प्रभु वीर हो–3 मम नयन समाएँ रे–ऽऽ।।4715।।

(4) मेंढक हर्षित भाव लिए, पूजन के शुभ भाव किये – 2
क्षण में गुणमय देव हुए–ऽऽऽ
शिवसुख पाते भक्त यहाँ, इसमें हो आश्चर्य कहाँ – 2
ऐसे प्रभु सन्मति हो –3 मम नयन समाएँ रे–ऽऽ।।4716।।

(5) तन बिन फिर भी स्वर्णिम रंग, एक अनेक गुणों के संग–2
राग बिना लक्ष्मी के संग–ऽऽऽ
जन्मरहित सिद्धार्थ सपूत, अद्‌भुत गति के धारक दूत–2
महावीर स्वामी हो–3 मम नयन समाएँ रे –ऽऽ।।4717।।

(6) नय तरंग से हैं उज्ज्वल, जिनकी वाणी अति निर्मल–2
भव्यों को जो गंगाजल–ऽऽऽ
हंसरूप जो ज्ञानीजन, अनुभव करें यहाँ निशदिन–2
ऐसे प्रभु वीर हो – 3 मम नयन समाएँ रे–ऽऽ।।4718।।

(7) मुक्ति रमा अपनाने को, नित्यानंद समाने को–2
छोटी वय में ही जिसने–ऽऽऽ
कामोद्रेक मिटाया था, निजात्म बल दिखलाया था–2
ऐसे प्रभु वीर हो – 3 मम नयन समाएँ रे–ऽऽ।।4719।।

(8) मोहरोग को शांत करे, बिना हेतु जो मित्र अरे–2
महिमा मंगलमयी धरे–ऽऽऽ
भवभीरू जो भव्य यहाँ, श्रेष्ठगुणी दे शरण यहाँ–2
ऐसे अतिवीर हो–3 ममहृदय समाएँ रे–ऽऽ।।4720।।

(9) महावीराष्टक स्तोत्र को पढ़ें सुनें दिनशाम।
परमगति पाता वही, निज में कर विश्राम।।

(10)

सामायिक पाठ

मूल ग्रंथकर्ता : आचार्य अमितगति

पद्यानुवाद : उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

समतामय शुभभाव हमें शांत बनाये रे-ऽऽ
सामायिक भाव हो-3 अंदर दिखलाये रे-ऽऽ

(6) त्याग धर्म अपनाएगा, समता उर में लाएगा-2
मैत्री सब में भाएगा-ऽऽऽ
आर्त-रौद्र को छोड़ यहाँ, धर्मध्यान मन लाएगा-2
तब ही सामायिक हो-3 जीवन में आए रे-ऽऽ।।4721।।

(2) चारो दिश का दिग्बंधन, नव देवों को अभिवंदन-2
मन आराधन में नंदन-2
तीन बार आवर्त करें, चारों दिश में नमन करें-2
शुभ मन सामायिक हो-3 का भाव बनाए रे-ऽऽ।।4722।।

(3) सबसे मैत्रीभाव धरें, गुणीजनों से मोद करें-2
दुखियों पर हम दया धरें-ऽऽऽ
धर्म से हों विपरीत यहाँ, उनसे हम मध्यस्थ रहें-2
समता का भाव हो-3 तब ही बन पाए रे-ऽऽ।।4723।।

(4) खड्ग, म्यान से अलग करें, सोना, मृत से विलग करें-2
निज को तन से भिन्न करें-ऽऽऽ
शक्ति हमें वह दो भगवन्, दे दो प्रभु आशीष वचन-2
तेरी भक्ति से हो-3 हम शक्ति बढ़ाएँ रे-ऽऽ।।4724।।

(5) सुख-दुख, वैरी-मित्रों में, योग-वियोग, भवन-वन में-2
जग की सभी वस्तुओं में-ऽऽऽ
समता भाव धरें उर में, ममत्व बुद्धि दूर करे-2
ऐसी सम बुद्धि हो-3 संक्लेश मिटाए रे-ऽऽ।।4725।।

(6) अंधकार दुख नाशक है, दीपक रूप प्रकाशक है-2
ऐसे प्रभु पग हों उर में-ऽऽऽ
कीलित, थिर, उत्कीर्ण समां, प्रतिबिम्बित उर चरण यहाँ-2
तब ही मेरा मन हो-3 दुख से बच पाये रे-ऽऽ।।4726।।

(7) चलते फिरते इधर उधर, प्रमाद से सब जीवों पर-2
पीड़ित चोटिल हुए अगर-ऽऽऽ
ऐसा मेरा दुराचरण, मिथ्या होवे हे भगवन्-2
प्राणी ही हिंसा - हो-3 भवं दुक्ख बढ़ाए रे-ऽऽ।।4727।।

(7) कषायवश दुर्बुद्धि से, इन्द्रियभाव अशुद्धि से-2
विमुख हुआ व्रत शुद्धि से-ऽऽऽ
मोक्षमार्ग प्रतिकूल चला, किया न अपना कभी भला-2
ऐसा मम कर्म हो-3 मिथ्या हो जाये रे-ऽऽ।।4728।।

(9) निंदा, गर्हा, आलोचन, दुख से बचने के कारण-2
वैद्य करे ज्यों मंत्रकरण-ऽऽऽ
मनवचन तन से करूँ यहाँ, पापों से मैं बचूँ यहाँ-2
भव के सारे दुख हो-3 तब ही मिट पाएँ रे-ऽऽ।।4729।।

(10) अतिक्रमं और व्यतिक्रमं अतिचारम अनाचारम-2
प्रमाद से दुर्बुद्धि से-ऽऽऽ
उत्तम व्रत में हुए यहाँ, प्रतिक्रमण मैं करूँ यहाँ-2
तब ही पापों से हो-3 मुक्ति मिल पाए रे-ऽऽ।।4730।।

समतामय शुभभाव हमें शांत बनाये रे-ऽऽ
सामायिक भाव हो-3 अंदर दिखलाये रे-ऽऽ

(6) मन की अशुद्धि है अतिक्रम, शील उलंघन है व्यतिक्रम-2
विषय वर्तना अतिचारम-ऽऽऽ
अति आसक्ति विषयों में, कहते उसे अनाचारम-2
ज्ञानी ये जानें हो-3 मन शुद्ध बनाएँ रे-ऽऽ।।4731।।

(2) अर्थ, वाक्य, पर मात्रा में, हीन हो गया वचनों में-2
क्षमा करे श्रुतदेव हमें-ऽऽऽ
हे सरस्वती माँ हमको - केवलज्ञान प्रदान करे-2
ऐसा प्रमाद हो-3 हम दूर हटाएँ रे-ऽऽ।।4732।।

(3) चिंतामणि के रत्न समां, हे सरस्वती शारद माँ!-2
बोधि समाधि मुझे दो माँ-ऽऽऽ
परिणामों की शुद्धि हो, शिव सुख, की उपलब्धि हो-2
अपने आतम की हो-3 तब निधि मिल जाए रे-ऽऽ।।4733।।

(4) इन्द्र, नरेश, मुनीन्द्र जपें, आराधन कर ध्यान करें-2
वेद पुराण जिन्हें गायें-ऽऽऽ
ऐसे जिन प्रभु का वंदन, मेरे उर में रहे वसन-2
जिनवर का ध्यान हो-3 संताप मिटाए रे-ऽऽ।।4734।।

(5) सुख अनंत दृग ज्ञान जिन्हें, बाह्य विकार से दूर रहें-2
निज स्वरूप में रमण करें-ऽऽऽ
परम समाधि गम्य प्रभो, परमातम का रूप विभो!-2
देवों का देव हो-3 मम हृदय विराजे रे-ऽऽ।।4735।।

(6) जो भव दुख को नाश करे, सारा जग साक्षात् करे-2
अंतरात्म को साफ दिखे-ऽऽऽ
योगीजन अवलोकन कर, अपना आतमराम लखें-2
ऐसा वह देव हो - 3 मम हृदय विराजे रे-ऽऽ।।4736।।

(7) मुक्तिमार्ग प्रतिपादक है, जन्ममृत्यु भय घातक है-2
तीनों लोक प्रकाशक है-ऽऽऽ
सर्वकलंक शरीर रहित, सर्वगुणों के ज्ञान सहित-2
ऐसा वह देव हो-3 मम हृदय विराजे रे-ऽऽ।।4737।।

(7) रागादिक नहिं दोष जहाँ, सब प्राणी में व्याप्त यहाँ-2
ज्ञानमयी जो आप्त यहाँ-ऽऽऽ
इन्द्रिय ज्ञान अपाय नहीं, देवों का जो देव यहीं-2
मेरे हृदय में हो-3 वह देव समाए रे-ऽऽ।।4738।।

(9) ज्ञायक स्वभाव वाला है, सर्वव्याप्य शिव प्याला है-2
ध्यानमयी गुणशाला है-ऽऽऽ
सभी विकार विनष्ट करे, सुख सबको हो भाव धरे-2
देवों का देव हो-3 मम हृदय समाए रे-ऽऽ।।4739।।

(10) नित्य निरंजन हे भगवन्, एक अनेक स्वरूपी धन-2
उनके पद की रहे शरण-ऽऽऽ
ज्यों तम को रवि नहीं छुएए, त्यों प्रभो को नहिं कर्म छुए-2
ऐसे प्रभुवर की हो-3 हम शरण को पाएँ रे-ऽऽ।।4740।।

समतामय शुभभाव हमें शांत बनाये रे–ऽऽ
सामायिक भाव हो–3 अंदर दिखलाये रे–ऽऽ

(6) जिसको झलके विश्व यहाँ, अलग–अलग स्पष्ट यहाँ–2
शुद्ध शिवं जो शांत यहाँ–ऽऽऽ
आदि अंत से रहित प्रभो, वीतराग मय संतविभो–2
ऐसे प्रभु की हम हो–3 सब शरण को पाएँ रे–ऽऽ।।4741।।

(2) आप विराजित रहें जहाँ, सूरज का फिर काम कहाँ–2
अंधकार नहिं रहे वहाँ–ऽऽऽ
निज स्वरूप में राजित हैं, तीनों लोक प्रकाशित हैं–2
ऐसे जिनवर की हो–3 हम शरण को पाएँ रे–ऽऽ।।4742।।

(3) अग्नि पेड़ विनाश करे, वैसे जिसने नाश दिये–2
काम मान भय दूर किये–ऽऽऽ
निद्रा, शोक, विषाद नहीं, चिंता, मूर्छा राग नहीं–2
ऐसे भगवन की हो–3 हम शरण को पाएँ रे–ऽऽ।।4743।।

(4) आसन–फलक–चटाई हो, फर्सी घास बिछाई हो–2
ये समाधि साधन नहिं हो–ऽऽऽ
विषय कषाय रहित आतम, भावों में हो परमातम–2
ये ही समाधी हो–3 के हेतु बताएँ रे–ऽऽ।।4744।।

(5) आसन पूजा संघ मिलन, नहिं समाधि के साधन–2
कहते हैं जिनदेव वचन–ऽऽऽ
बाह्य वासनाएँ छोड़ों, हरदम निज, निज से जोड़ों–2
तब ही समाधि हो – 3 भव में हो पाए रे–ऽऽ।।4745।।

(6) कुछ भी मेरा नहीं यहाँ, मैं भी पर का नहीं यहाँ–2
दृढ़ निश्चय कर रहो यहाँ–ऽऽऽ
फिर सबको तू छोड़ यहाँ, निज को निज से जोड़ यहाँ–2
मुक्ती गर पाना हो–3 मन स्वस्थ बनाओ रे–ऽऽ।।4746।।

(7) आतम को निज आतम में, आतम से साक्षात् करें–2
दर्श ज्ञानमय शुद्ध लखें–ऽऽऽ
हो एकाग्र समाधी में, निश्चय से सर्वत्र लखें–2
ऐसे ही साधु हो–3 शुभ समाधि पाएँ रे–ऽऽ।।4747।।

(7) एकाकी शाश्वत निर्मल, ज्ञान स्वभावी परम विमल–2
कर्म रहित निज आत्म अमल–ऽऽऽ
बाह्य पदार्थ हैं कर्म जनित, कोई नहीं यहाँ शाश्वत–2
केवल निज आतम हो–3 ही शुद्ध बताएँ रे–ऽऽ।।4748।।

(9) एक्य नहीं तन संग यहाँ, तो स्त्री सुत् एक्य कहाँ–2
निज आतम निस्संग यहाँ–ऽऽऽ
चर्म अलग हो जाएगा, रोमकूप ढह जाएगा–2
तन से छूटे तो हो–3 भव ही मिट जाए रे–ऽऽ।।4749।।

(10) पर से हो संयोग जहाँ तब होता दुख योग यहाँ–2
निज आतम उपयोग कहाँ–ऽऽऽ
छोड़ सभी संयोग अरे, करो प्रियोग विशुद्ध अरे–2
तब ही इस भव से हो–3 मुक्ति मिल पाए रे–ऽऽ।।4750।।

समतामय शुभभाव हमें शांत बनाये रे-ऽऽ
सामायिक भाव हो-3 अंदर दिखलाये रे-ऽऽ

(6) दुख के कारण भव वन में, बहुत भरे सबके मन में-2
दूर करो सुख चाहत में-ऽऽऽ
निज आतम का ध्यान करो, परमातम का तत्त्व वरो-2
जीवन का सार हो-3 तब ही नजराए रे-ऽऽ।।4751।।

(2) हमने जो भी कर्म किये, उसके ही फल आज मिले-2
शुभ का फल शुभ रूप मिले-ऽऽऽ
मुझे मिले गैरों का फल, तो होगा निजकर्म विफल
अपने कर्मों का हो-3 सब ही फल पाएँ रे-ऽऽ।।4752।।

(3) अपने कर्मों का ही फल, पाते आज नहीं तो कल-2
इस पर हरदम करो अमल-2
अन्य कोई कुछ देता है, झूठ समझ ये लेता है-2
तेरा ही कर्म हो-3 कुछ तुझे दिलाए रे-ऽऽ।।4753।।

(4) ज्ञान अनंत भरा जिसमें, कर्मदोष नहीं रंच रहें-2
सभी उसे परमात्म कहें-ऽऽऽ
उसका करता है चिंतन, मिलता उसको निजात्म धन-2
निज में ही रमकर हो-3 मंजिल पा जाए रे-ऽऽ।।4754।।

(5)

(6) एकाग्रचित हो बत्तीस छंद गाये-2
परमात्म का हृदय में वो दर्श पाये-2
गुनता ये सामयिक पाठ यहाँ सुनाता-2
ध्याता अजर अमर पद शिव सौख्य पाता-ऽऽऽ

(7) पद्यानुवाद गुरु ने हमको सिखाया
दे ज्ञान की किरण मार्ग हमें दिखाया
हे पूज्यपाद गुरुदेव विराग सिन्धु
तव पाद पंकज सदैव सदैव वन्दू

(7)

(9)

(10)

ज्ञानांकुश स्तोत्र

मूल ग्रंथकर्ता : आचार्य योगीन्दु देव

पद्यानुवाद : उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

ज्ञानांकुश स्तोत्र यहाँ, शुभ ज्ञान दिलाये रे-ऽऽ
निज आत्मदर्शन हो-3 इससे मिल जाये रे-ऽऽ

(1) कर्म कलंक न जिसमें हो, ज्ञानस्वरूपी वो ही हो-2
भव छेदन का कारण जो-ऽऽ
मैं उत्कृष्ट परम आतम, भेदज्ञान मय शुद्धातम-2
योगीन्दुदेव हो-3 वह ध्यान बतायें रे-ऽऽ॥4755॥

(2) तन प्रमाण है पर्यय से, लोक प्रमाण कहा द्रव्य से-2
कर्म रहित है निश्चय से-ऽऽ
नित्य कही चैतन्यमयी, आतम द्रव्यार्थिक नय से-2
उसको पाने को हो-3 समज्ञान बताएँ रे-ऽऽ॥4756॥

(3) संसारी शुभ अशुभ करे, भावों से वो कर्म वरे-2
पाप कभी और पुण्य भरे-ऽऽ
दोनों भाव विनष्ट करे, तब वह केवलज्ञान धरे-2
सिद्धत्व पाये हो-3 तन खुद नश जाये रे-ऽऽ॥4757॥

(4) भाव विभाव विनष्ट करे, कर्म सभी वह नष्ट करे-2
निज स्वरूप में मग्न रहे-ऽऽ
होकर चिंतन मुक्त यहाँ, ज्ञायक पन में लीन रहे-2
अपना स्वभाव हो-3 उसको मिल जाये रे-ऽऽ॥4758॥

(5) मन स्थिर हो जाता है, ध्यान तभी हो पाता है-2
कर्म विनशता जाता है-ऽऽ
ध्यान कर्म का नाश करे, निश्चय ध्यान स्वभाव करे-2
आतम का निज में हो-3 शुभ ध्यान लगाओ रे-ऽऽ॥4759॥

(6) जीव यहाँ संकल्प करे, बंध मोक्ष के भाव करे-2
वीतराग से मोक्ष वरे-ऽऽ
हो सराग संकल्प यहाँ, उससे होता बंध यहाँ-2
दोनों संकल्प हो-3 ये जीव अपनाये रे-ऽऽ॥4760॥

(7) निश्चय नय से सोच यहाँ, ज्ञायक तेरा स्वभाव यहाँ-2
रागादिक नहिं भाव यहाँ-ऽऽऽ
सारे चिंतन छोड़ यहाँ, कुछ नहिं मेरा सोच यहाँ-2
हो निर्विकल्प हो-3 ज्ञायक हो जाये रे-ऽऽ॥4761॥

(8) ज्ञान स्वरूपी आत्म कहें, भेद नहीं गुण-गुणी करें-2
भेद करें तो विकल्प हैं-ऽऽऽ
ज्ञान से ज्ञान का अवलंबन, ज्ञान बढ़ाए यहाँ सघन-2
सारे कर्मों का हो-3 तब क्षय हो पाये रे-ऽऽ॥4762॥

(9) साधु हो या श्रावक हो, इससे मतलब नहीं अहो-2
निजस्वरूप में रमण करो-ऽऽऽ
शुद्धातम का ध्यान करे, कर्मबंध वो नष्ट करे-2
इसमें नहिं कोई हो-3 संशय नजराए रे-ऽऽ॥4763॥

(10) रूप पदार्थ अलग ही है, शास्त्र विचार अलग ही है-2
मुक्तिमार्ग अलग ही है-ऽऽ
जीव दुखों में दुखी यहाँ, इसका क्लेश अलग ही है-2
आतम का रूप हो-3 अति भिन्न बताएँ रे-ऽऽ॥4764॥

ज्ञानांकुश स्तोत्र यहाँ, शुभ ज्ञान दिलाये रे–SS
निज आत्मदर्शन हो–3 इससे मिल जाये रे–SS

(11) वर्ण, शरीर रहित हैं जो, राग–द्वेष रहित हैं जो–2
गन्ध द्वन्द्व बिन सिद्ध हैं वो–SSS
ध्यानाभ्यासी मानव जो, ध्यान करे सिद्धों का वो–2
ध्यान, ध्याता को हो–3 आराध्य दिखाये रे–SS।।4765।।

(12) सोता हो या चलता हो, मानव भोजन करता हो–2
बातें सबसे करता हो–SSS
तब वह ध्यान नहीं होता, जिससे मुक्ति पाता वो–2
होंगे विकल्प हो–3 तो मुक्ति न पाये रे–SS।।4766।।

(13) मनु मन स्थिर करे यहाँ, राग–द्वेष से हटे यहाँ–2
वो शुद्धातम लखे यहाँ–SSS
शुद्ध तत्त्व का ध्यान करे, शाश्वत सुख को वही वरे–2
अविनाशी शिवपद हो–3 वो खुद पा जाये रे–SS।4767।।

(14) पदस्थ मंत्र ध्यान कहा, निज चिंतन पिण्डस्थ अहा–2
जिन चिंतन रूपस्थ महा–SSS
सिद्धों का जब ध्यान करें, ध्यान वो रूपातीत कहा–2
ऐसा ही ध्यान हो–3 शुद्धात्म दिखाए रे–SS।।4768।।

(15) कषाय सारी दूर करो, नो कषाय से दूर रहो–2
कर्म और नो कर्म तजो–SSS
इन्द्रिय मन की ताकत से, शुद्धातम उपयोग करो–2
तब ही निज आतम हो–3 अनुभव हो पाये रे–SS।।4769।।

(16) परम सत्य इक आतम है, गुण अनंत परमातम है–2
आत्म अनादि अनंत है–SSS
आतम ही स्वामित्व मेरा, बाकी सब ही विभ्रम है–2
ऐसा ही ज्ञान हो–3 श्रद्धान बढाए रे–SS।।4770।।

(17) कर्म सभी तू छोड़ यहाँ, स्वात्म तत्त्व से जोड़ यहाँ–2
मन आतम में मोड़ यहाँ–SSS
निज स्वरूप आचरण करे, वही पुरुष है श्रेष्ठ अरे–2
अपना उपयोग हो–3 प्रभु गुण में लाओ रे–SS।।4771।।

(18) पाप क्रियायें छोड़ यहाँ, पुण्य अनुकरण करे यहाँ–2
साधू ऐसा करे यहाँ–SSS
अशुभ भाव को दूर करे, शुभ भावों का सोच रखे–2
योगी पुण्यास्रव हो–3 का हेतु बताएँ रे–SS।।4772।।

(19) योग रहित हैं शुद्ध हैं जो, शाश्वत नंत गुणी हैं जो–2
क्षायिक भाव सहित हैं जो–SS
उसी रूपमय मैं भी हूँ, नंत ज्ञान दर्शनमय हूँ–2
ऐसा जो सोचे हो–3 वो ही गुण पाये रे–SS।।4773।।

(20) आत्म दर्श ही दर्शन है, आत्मज्ञान ही ज्ञान है–2
आत्म रमण ही चारित है–SS
तीनों से जो तन्मय है, उस पर ही रत्नत्रय है–2
हरदम ही मन में हो–3 रत्नत्रय चाहो रे–SS।।4774।।

ज्ञानांकुश स्तोत्र यहाँ, शुभ ज्ञान दिलाये रे–ऽऽ
निज आत्मदर्शन हो–3 इससे मिल जाये रे–ऽऽ

(21) ज्ञान की कहीं पाँच पर्यय, मति–श्रुत–अवधि–मन:पर्यय–2
केवलज्ञान परम शुभमय–ऽऽऽ
पर्यायों से हट करके, रहना सहज ज्ञानगुणमय–2
मुक्ति की राहें हो–3 उसको मिल पायें रे–ऽऽ।।4775।।

(22) तन चैत्यालय रूप यहाँ, जीव है उसमें चैत्य यहाँ–2
भक्ति चैत्य की भक्ति यहाँ–ऽऽऽ
यही भक्ति गुणकारी है, प्रशंसनीय दुखहारी है–2
भव के परिभ्रम से हो–3 ये दूर कराये रे–ऽऽ।।4776।।

(23) स्वर्ण कालिमा सहित यहाँ, कर अग्नि संयोग यहाँ–2
हो जाता है शुद्ध यहाँ–ऽऽऽ
जीव कर्मयुत् कहा यहाँ, ज्ञान ध्यान का योग यहाँ–2
कर्म जल जाये हो–3 तो शुद्ध हो जाये रे–ऽऽ।।4777।।

(24) जिसमें नहीं विरोध यहाँ, उसको कहते शास्त्र यहाँ–2
गुरु हो मायाचार बिना–ऽऽऽ
भोग उपभोग रहित संयम, वो पाता है मोक्ष यहाँ–2
कोई प्रपंच हो–3 मुनि नहिं अपनाए रे–ऽऽ।।4778।।

(25) ध्यान समान है भाई नहीं, ध्यान समां गुरु यहाँ नहीं–2
ध्यान समां कोइ मित्र नहीं–ऽऽऽ
ध्यान समान न तप कोई, ध्यान समां नहिं पथ कोई–2
ऐसा व ध्यान हो–3 कैवल्य दिलाए रे–ऽऽ।।4779।।

(26) परमातम दो भेद कहे, एक सकल इक निकल कहे–2
अर्हत् भगवन् सकल कहे–ऽऽऽ
अष्टकर्म से रहित हैं जो, उन सिद्धों को निकल कहें–2
दोनों ही भगवन हो–3 भव पार करायें रे–ऽऽ।।4780।।

(27) पहले जितने सिद्ध हुए, ध्यान योग से यहाँ हुए–2
ऐसा ही हम सुने हुए–ऽऽऽ
ज्ञानी सभी प्रयत्न करें, उत्तमोत्तम ध्यान करें–2
ध्यान ही सबको हो–3 सब सिद्धि दिलाए रे–ऽऽ।।4781।।

(28) पक्षपात नहिं योगी में, लाभ–अलाभ न योगी में–2
मायाचार न योगी में–ऽऽऽ
योगी तत्त्व में लीन रहे, सभी विकल्पों रहित रहे–2
उसको ही भव से हो–3 मुक्ति मिल पाये रे–ऽऽ।।4782।।

(29) गर्भवती स्त्री होती, ध्यान पूर्ण बालक रखती–2
कभी प्रमाद नहीं करती–ऽऽऽ
वैसे योगी ध्यान रखे, आत्म तत्त्व को ध्येय करे–2
उसका ही ध्यान हो–3 मन से वह ध्याये रे–ऽऽ।।4783।।

(30) परम तत्त्व नहिं जप से हो, प्राप्त नहीं वो हवन से हो–2
नहीं जनेऊ सूत्र से हो–ऽऽ
भेष धारने से नहिं हो, जंगल जाने से नहिं हो–2
आतम चिंतन से हो–3 वह तत्त्व दिखाये रे–ऽऽ।।4784।।

ज्ञानांकुश स्तोत्र यहाँ, शुभ ज्ञान दिलाये रे-ऽऽ
निज आत्मदर्शन हो-3 इससे मिल जाये रे-ऽऽ

(31) ज्ञान हृदय में राजित है, उससे सभी प्रभावित हैं-2
उसमें प्रभा विराजित है-ऽऽ
संत में निरत प्रभात रहे, अन्य में तम का वास रहे-2
ज्ञान की आभा हो-3 सब दुक्ख मिटाये रे-ऽऽ।।4785।।

(32) ज्ञानी जीव ये काम करे, तन से आतम पृथक् करे-2
फिर निजात्म चिंतवन करे-ऽऽऽ
तन को आतम मान रहा, ध्यान वहाँ क्या खाक कहा-2
उसके सब ध्यान हो-3 भव में भरमायें रे-ऽऽ।।4786।।

(33) धर्म क्रिया पर जोर न दो, दृष्टि अपनी शुद्ध करो-2
पर पदार्थ से दूर हटो-ऽऽऽ
शुद्धातम में स्थित हो, उसे न पर की चिंता हो-2
पर की चिंता में हो-3 शुद्धात्म न पाये रे-ऽऽ।।4787।।

(34) पर चिंता से ज्ञान मिटे, पर पदार्थ से शक्ति घटे,
पर वस्तु से बुद्धि मिटे-ऽऽऽ
पर से प्रेम ही व्याधि है, पर चिंता ही आधि है-2
अपनी चिंता में हो-3 विपरीत हो जाये रे-ऽऽ।।4788।।

(35) तन से भिन्न हूँ, चेतन मैं, भाई बन्धु सब अन्य रहें-2
ज्ञानी शुद्धातम हूँ मैं-ऽऽऽ
निज-पर को तू जान यहाँ, भाव करो शुद्धात्म यहाँ-2
भेद विज्ञान हो-3 तब ही हो पाये रे-ऽऽ।।4789।।

(36) सबसे मलिन शरीर यहाँ, घृणित वस्तु से युक्त यहाँ-2
इसमें सभी असार यहाँ-ऽऽऽ
शुद्धात्म ही निर्मल है, जिसमें रंच नहीं मल है-2
देख दोनों को हो-3 क्या शुद्ध कराएँ रे-ऽऽ।।4790।।

(37) जीव अकेला कर्म करे, स्वयं अकेला फल भोगे-2
एकल ही पैदा होवे-ऽऽऽ
जब जाता परलोक यहाँ, जीव अकेला गमन करे-2
फिर भी ये पर में हो-3 अपनत्व बनाये रे-ऽऽ।।4791।।

(38) ऊर्ध्वश्वास ऊपर छोड़ों, अध:श्वास नीचे रोको-2
मध्यलोक को शून्य करो-ऽऽऽ
इसी समय तुम शून्य रहो, कुछ भी चिंतन नहीं करो-2
अपने स्वरूप हो-3 में लीन हो जाओ रे-ऽऽ।।4792।।

(39) जब तक चिंता रहती है, तब तक काय भटकती है-2
पाप पुण्य को करती है-ऽऽऽ
परम तत्त्व निश्चेष्ट यहाँ, जैसे मन बिन काय यहाँ-2
चिंता चिंतन से हो-3 अब मुक्ति पाओ रे-ऽऽ।।4793।।

(40) काम क्रोध मद मोह यहाँ, इनके बल पर अधिक यहाँ-2
वो नहिं राजा कहा यहाँ-ऽऽऽ
दया दान पूजा सेवा, ध्यान में शत्रु समान यहाँ-2
इनमें जो योग हो-3 वो योग नहीं है रे-।।4794।।

ज्ञानांकुश स्तोत्र यहाँ, शुभ ज्ञान दिलाये रे–SS
निज आत्मदर्शन हो–3 इससे मिल जाये रे–SS

(41) आर्त–रौद्र को छोड़ यहाँ, धर्मध्यान मन जोड़ यहाँ–2
शुक्ल ध्यान को धार यहाँ–SSS
इनसे श्रेष्ठ है ध्यान नहीं, इनसे हो निर्वाण यहीं–2
ऐसा जिन गुरुवर हो–3 सबको बतलायें रे–SS।।4795।।

(42) तत्त्व ज्ञान, वैरागी हो, परिषह विजय स्वभावी हो–2
मुनि हो समता भावी हो–SSS
पाँच ध्यान के हेतु कहे, ध्यानी इनमें भाव धरे–2
इनके बिन ध्यान हो–3 कैसे हो पाये रे–SS।।4796।।

(43) नेत्र, कर्ण, मुख, शिर, तालु, हृदय नासिका मुख भाल–2
स्थान ध्यान के हैं लाल–SS
विषय कषाय रहित हो जा, एक जगह पर ध्यान लगा–2
चित्त स्थिर करके हो–3 अनुभव में आओ रे–SS।।4797।।

(44) यह ज्ञानांकुश स्तोत्र यहाँ, मन का हाथी विकट यहाँ–2
उसको वश में करे यहाँ–2
जो स्थिर मन कर इसे पढ़े, वो हो ज्ञानी श्रेष्ठ यहाँ–2
ध्यान निज करके हो–3 वह शिवपद पाये रे–SS।।4798।।

उपसंहार

ज्ञानांकुश के ज्ञान से, निर्मल होता ज्ञान।
ज्ञान, ज्ञान में, ज्ञान से, पाता है विश्राम।।

ज्ञान, ज्ञान में ज्ञानकर, ज्ञायक होता आप।
कर्ता क्रिया न कर्म का, होता नहिं संताप।।

ज्ञानी सुख में रम रहा, दुख का उसे न लेश।
मन का वो कर्ता नहीं, कैसे हो संक्लेश।।

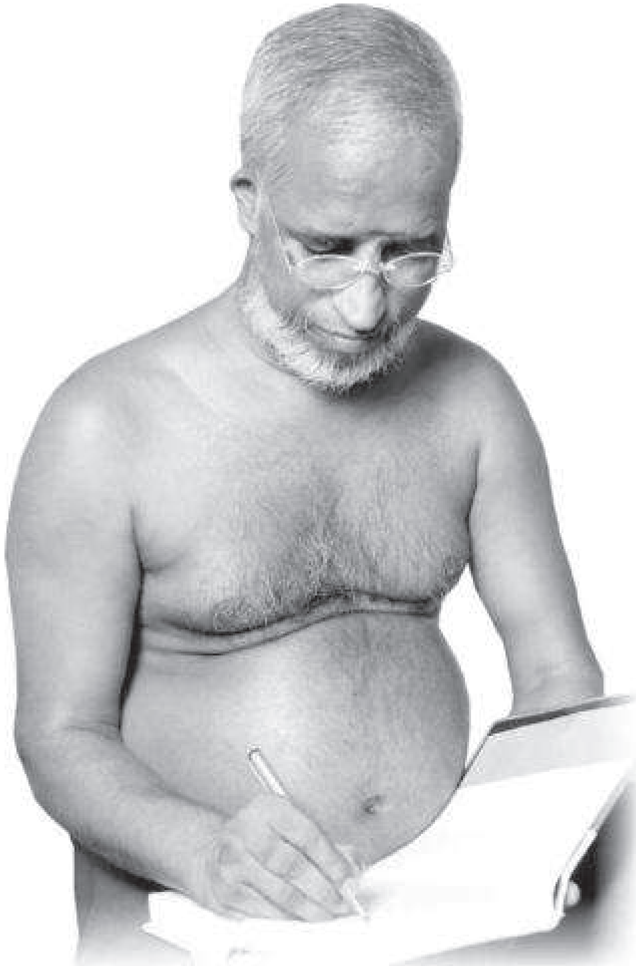

(1) जान न पाया आगम को, तभी है आया गम हमको–2
कहते हैं मुनि हम सबको–ऽऽऽ
आगम से गम जाते हैं, गम गमगीन बनाते हैं–2
ऋषियों की वाणी हो–3, उद्धार कराये रे–ऽऽ।।4799।।

(2) दुखदायी अज्ञान यहीं, दिला सके सम्मान नहीं–2
करवाता अपमान यहीं–ऽऽऽ
उठ लें भौंदूपन से हम, करें ज्ञान की सेवा हम–2
आज नहीं तो हो–3 कल ज्ञान दिखाये रे–ऽऽ।।4800।।

(3) अहंकार की बात जहाँ, समझ गधे की जात वहाँ–2
दीप जले वो बात कहाँ–ऽऽऽ
ढेंचूँ गधा बोलता है, हीरो स्वयं समझता है–2
मालुम क्या उसको हो–3 सब नीच बताएँ रे–ऽऽ।।4801।।

(4) अहंकार की अधोगति, जीवन की जो करे क्षति–2
कर देता है भ्रष्ट मति–ऽऽऽ
तू जिंदा मर जाएगा, अहंकार गर लाएगा–2
शक्ति स्मरण की हो–3 ये अहं घटाए रे–ऽऽ।।4802।।

(5) अहंकार गर लाएगा, ज्ञान कभी नहिं पाएगा–2
जीते जी मर जाएगा–ऽऽऽ
अहंकार विष पीता है, वो इंसां कब जीता है–2
इंसां हो मुर्दा हो–3 तो अकड़ दिखाए रे–ऽऽ।।4803।।

(6) नीच कुलों की जात वहाँ, आदमियत की बात कहाँ–2
अहंकार की बात जहाँ–ऽऽऽ
दीपक जला बुझाएगा, गर्तों में ले जायेगा–2
ऐसा अभिमान हो–3 ही नीच बनाए रे–ऽऽ।।4804।।

(7) अहंकार आता अंदर, दिल खुद हो जाता बंजर–2
बहुत घिनौना हो मंजर–ऽऽऽ
झुकने पर सम्मान मिले, पथ पर सही मुकाम मिले–2
मानी खुद अपना हो–3 सम्मान घटाये रे–ऽऽ।।4805।।

(8) भली सुहाती बात नहीं, जब बैठा हो मान कहीं–2
ढक जाता है ज्ञान वहीं–ऽऽऽ
भले दिलों में बात भली, भले दिलों को लगे भली–2
दिल में भला हो–3 सब भले दिखाएँ रे–ऽऽ।।4806।।

(9) तू गुमान दिल लायेगा, खुद ही गुम हो जायेगा–2
गुमसुम में गम पायेगा–ऽऽऽ
जब विनम्रता लायेगा, तब ऊर्जा भर पायेगा–2
ऊर्जा बिन जीवन हो–3 का सार न पाए रे–ऽऽ।।4807।।

(10) जो दायित्व निभाता है वो ही आदर पाता है–2
घर को स्वर्ग बनाता है–ऽऽऽ
फर्ज़ नज़र अंदाज करें, अधिकारों की बात करें–2
मानी की इज्ज़त हो–3 मृत में मिल जाये रे–ऽऽ।।4808।।

(11) कम से कम सामान रखो, दिल मे मत अभिमान रखो–2
अपना हरदम ध्यान रखो–ऽऽऽ
सबसे तू घुलमिल भी जा, पर अपनी पहिचान बना–2
अपना व्यक्तित्व हो–3 पहिचान बनाए रे–ऽऽ।।4809।।

(12) चेहरा दिखता दर्पण में, ज्ञान मिलेगा अर्पण में–2
मिलता सभी समर्पण में–ऽऽऽ
जैसे–जैसे जागोगे, अहंकार कुछ त्यागोगे–2
मानी का जीवन हो–3 तेजाब कहाये रे–ऽऽ।।4810।।

(13) भक्ति में हो अवगाहन, तब हो गुरु का पड़गाहन –2
खिल जाता दिल का आँगन –ऽऽ
देकर के आहार यहाँ, धन्य समझते हाथ यहाँ –2
उस दिन खुशियों से हो–3 घर महका जाये रे –ऽऽ।4811।।

(14) सत्पात्रों को दान करे, भव में भूखों नहीं मरे –2
गुरुओं का आशीष रहे –ऽऽ
दुनियाँ में सम्मान मिले, गुरुओं का वरदान मिले –2
उसकी ही नैया हो–3 भव से तिर जाये रे–ऽऽ।।4812।।

(15) मुनि को दे आहार यहाँ, भरे रहें भण्डार वहाँ –2
धन का कोइ न पार वहाँ –ऽऽऽ
विनय भाव उर रखता जो, भोग भूमि में जन्मे वो –2
भोगों के सुख पा हो–3 गति देव वो पाये रे–ऽऽ।।4813।।

(16) अच्छे रहें विचार जहाँ, होता शुभ आचार वहाँ–2
बिन विचार आचार कहाँ–ऽऽऽ
जैसी गति हो मति वैसी, जैसी मति हो गति वैसी–2
गतियाँ बन जाती हो–3 जैसी मति बन जाये रे–ऽऽ।।4814।।

(17) जिन गुरु के गुण गाते हैं, मौत अकाल मिटाते हैं –2
जीवन में सुख पाते हैं –ऽऽ
पुण्य इष्ट दिखलाता है, अच्छे घर ले जाता है –2
पुण्य से प्राणी हो–3 भगवन् बन जाये रे –ऽऽ।।4815।।

(18) 'अ' से ही अश्लील बना, 'अ' से ही अरिहंत बना–2
'अ' से ही है अजर–अमर–ऽऽऽ
'स' से सत्यानाश बना, 'स' से साकी सत्य बना–2
अक्षर प्रस्तुति में हो–3, हम ध्यान लगायें रे–ऽऽ।।4816।।

(19) 'क' से सीख कमाना है, 'ख' से सीखें खाना है–2
'ग' से प्रभु गुण गाना है–ऽऽऽ
'घ' से बना नया घर तू, पढ़ ये पाठ यहाँ पर तू–2
वरना तू ङ पे हो–3, कुछ भी नहिं पाएँ रे–ऽऽ।।4817।।

(20) खुल जाती है आँख जहाँ, इज्जत मिलती साख वहाँ–2
अंधे भटकें कहाँ–कहाँ?
अंधों के गोरख धंधे, सोच बनाते हैं गंदे –2
आँखों को खोलो हो–3 सब खुद दिख जाये रे–ऽऽ।।4818।।

(21) जब निकलेगा दीवाला, तब देखे ऊपर वाला -2
देगा वो अमृत प्याला -ऽऽऽ
क्यूँ करता मन को हाला, बन बनके तू मतवाला -2
मन ही इस दिल में हो-3 तम लेकर आये रे -ऽऽ।।4819।।

(22) गर खदान बन जाओगे, हीरे दिल में पाओगे -2
ऊपर उठते जाओगे -ऽऽ
खान अगर तुम बने यहाँ, तम ही तम से भरे यहाँ -2
तम के आँगन में हो-3 कुछ नहिं दिख पाये रे -ऽऽ।।4820।।

(23) पूनम की हो रात अगर, दिख जायेगी तुम्हें डगर-2
नजराएगा सही सफर-ऽऽ
अंधकार गर लाएगा, कई ठोकरें खाएगा-2
अपनी करनी पर हो-3, तू खुद पछताए रे-ऽऽ।।4821।।

(24) राग-द्वेष ईज़ाद करे, वही गधों से बात करे -2
कभी नहीं संवाद करे-ऽऽऽ
अंधकार खुद बोता है, क्यूँ पीछे फिर रोता है -2
छोड़ो ये झंझट हो-3 खुद में रम जाओ रे -ऽऽ।।4822।।

(25) याद करो जो आँखों में, तेरे दिल की बातों में -2
रहता है जज्बातों में -ऽऽऽ
उसको दिल से याद करो, फिर कोई फरियाद करो -2
निश्चित हो पूरी हो-3 यह ऋषि बताएँ रे -ऽऽ।।4823।।

(26) बिछड़ें तो आँसू बहते, मिलने पर आँसू बहते -2
सच्चा प्रेम यही कहते -ऽऽऽ
आँखें मन का दर्पण हैं, तो ये अश्क समर्पण हैं -2
अंतस् का प्रेम हो-3 ये अश्क बताएँ रे -ऽऽ।।4824।।

(27) आँसू दिले करीबी है, मिलना एक नसीबी है -2
इनमें चाल फरेबी है -ऽऽऽ
आँसू के आयाम निरे, पर आँसू है एक अरे -2
समझो ये आँसू हो-3 हर काम बनाएँ रे -ऽऽ।।4825।।

(28) जो अनुभव नहिं लायेगा, धर्मामृत क्यों पायेगा?-2
मर्म समझ नहिं पायेगा-ऽऽऽ
कितनी भी पूजन कर ले, पिछी कमण्डल को धर ले-2
अनुभव का धर्म हो-3 भव पार कराये रे-ऽऽ।।4826।।

(29) जिसको सच्चा ज्ञान नहीं, वो सच में इंसान नहीं-2
धन से कोई महान् नहीं-ऽऽऽ
बन पाये इंसान नहीं, शिव राहें आसान नहीं-2
अपना ही अनुभव हो-3 सुख शांति दिलाये रे-ऽऽ।।4827।।

(30) किसका होता कौन यहाँ? बोल है क्यों तू मौन यहाँ?-2
करता रहता फोन यहाँ-ऽऽऽ
कौन तुझे समझाए ये, अनुभव तू खुद ही कर ले-2
कर ले संवेदन हो-3 तब समझ में आये रे-ऽऽ।।4828।।

(31) बाधाएँ क्षण क्षण में हैं, जीवन के कण-कण में हैं -2
ये सब संचित मन में हैं -ऽऽऽ
जो बाधाएँ याद रखें, वे मन में अवसाद करें -2
भूलो बाधाएँ हो-3 खुशियाँ मिल जायें रे -ऽऽ।।4829।।

(32) गैरों का भी दर्द जिसे, अपने जैसा यहाँ लगे -2
दिल में ईश्वर उसे दिखे -ऽऽऽ
अनुभव दर्द कराता है, सब खुद ही समझाता है -2
गहरा ही दर्द हो-2 हमको मर्ज बताए रे -ऽऽ।।4830।।

(33) इस भव से तू पार उतर, दुनियाँ क्या ये विचार कर -2
आ जायेगा ज्ञान उभर -ऽऽऽ
तेरी थोड़ी रही उमर, पैदा कर ले दिले सहर -2
जीता है वो ही हो-3 जो अनुभव लाए रे -ऽऽ।।4831।।

(34) दिल में दृढ़ विश्वास जहाँ, होता सही विकास वहाँ -2
भ्रम रह पाता वहाँ कहाँ?-ऽऽऽ
अनुभव के ये खेल सभी, कर ले अनुभव दिले अभी-2
मालूम कब घंटी हो-3 यम की बज जाये रे -ऽऽ।।4832।।

(35) जिसका हृदय विशाल हो, वो ही मालामाल हो -2
पाये दिल में लाल वो -ऽऽऽ
सरल हृदय हो जाता है वही गुणों को पाता है -2
गुण के मिलते ही हो-3 खुशियाँ मिल जायें रे-ऽऽ।।4833।।

(36) कंदमूल आयोजन का, त्याग करो निश भोजन का -2
मन हो निर्मल जल जैसा -ऽऽ
मद्य-माँस-मधु मधुर नहीं, जीव दया सम धर्म नहीं -2
भगवन् का दर्शन हो-3 पल में फल जाये रे -ऽऽ।।4834।।

(37) देगा तू आतिथ्य यहाँ, बन जाये तू अतिथि यहाँ-2
कभी नहीं हो दुक्ख यहाँ-ऽऽऽ
जहाँ-जहाँ भी जायेगा, बिन चाहे सब पायेगा-2
आदर से देगा हो-3 बिन तिथि के पाये रे-ऽऽ।।4835।।

(38) अंतरात्मा-बहिरात्मा, और कहीं है परमात्मा-2
तीन तरह की है आत्मा-ऽऽ
बहिरात्मा को त्याग करें, अंतरात्मा प्राप्त करें-2
परमात्मा पाकर हो-3, भव सफल बनाओ रे-ऽऽ।।4836।।

(39) राग-द्वेष की चिन्गारी, कर्मों की है फुलवारी-2
फिर सुख दुख की हों क्यारी-ऽऽऽ
बाहर के अब ख्वाब तजो, अंतर्दीप प्रकाश करो-2
भव में ये नैया हो-3, अब पार लगाओ रे-ऽऽ।।4837।।

(40) अंतस् तू चेतनमय है, बाहर से पुद्गल मय है-2
मय पीकर दोनों मय है-ऽऽ
होना है गर अजर अमर, तो खुद जानो समय सफर-2
अंतस् आतम में हो-3, चैतन्य दिखाए रे-ऽऽ।।4838।।

(41) चंद क्षणों का डेरा है, चौरासी लख फेरा है–2
हरदम काल लुटेरा है–SSS
जग तेरा न मेरा है, इसमें रैन बसेरा है–2
अपने ही घर में हो–3, सुख–शान्ति दिखाए रे–SS।।4839।।

(42) अपना लोटा थामें हम, किसका लोटा छानें हम?–2
अपने को ही जानें हम–SSS
कुआँ न कोई छान सका, कोइ न पर की मान सका–2
अपने में देखो हो–3 सब कुछ दिख जाए रे–SS।।4840।।

(43) अवगुण गुण बतलाते हो, लोगों को समझाते हो–2
अच्छे गुण नहिं गाते हो–SSS
पर अवगुण नहिं, गुण देखो, अपने अवगुण को फेंको–2
तब ही जीवन में हो–3, शुभ कुल मिल पाये रे–SS।।4841।।

(44) आयुबंध नहिं जाना है, कर्मबंध अंजाना है–2
तम में ही दीवाना है–SS
सच्चा दिल में ज्ञान वरो, खुद की ही पहिचान करो–2
वरना जीवन में हो–3, दुख बढ़ता जाये रे–SS।।4842।।

(45) पुण्य कर्म अनुबंध करें, पाप कर्म नहिं बंध करें–2
तब ही आयुबंध करें–SS
जब जब जीवन जानोगे, तब प्रभु की सही मानोगे–2
खुद को जाने बिन हो–3, नहिं सत्य दिखाये रे–SS।।4843।।

(46) बेटे की बहु आती है, अपनी धाक जमाती है–2
माँ को कई सुनाती है–SSS
खड़ा–खड़ा सुनता रहता, पत्नि को कुछ नहिं कहता–2
अपनी ही माँ का हो–3 उसे दर्द न आये रे–SS।।4844।।

(47) वंश चलेगा बेटे से, सोच रहे हैं लेटे ये–2
कैसे हों सपने पूरे–SSS
पत्नी बेटे नहीं हुए, महावीर का वंश चले–2
संयम के वंशज हो–3, सब अमर कहाएँ रे–SS।।4845।।

(48) तुम चाहे कुछ भी कर लो, चाहे जितना धन धर लो –2
कितनी यहाँ फिकर कर लो –SS
अंत समय तू पायेगा, कुछ भी साथ न जायेगा –2
तेरा ही बेटा हो–3 तुझपे कफन चढ़ाये रे –SS।।4846।।

(49) मात–पिता को बुरा कहे, बेटी ऐसा नहीं सहे–2
साथ न उनके कभी रहे–SS
बहू बुरा जब यहाँ कहे, बेटा सुन चुपचाप रहे–2
बेटी ही सच में हो–3 बेटा कहलाए रे–SS।।4847।।

(50) काम नहीं निज पैरों का, उसे सहारा गैरों का–2
ऐरे नत्थू खैरों का–SSS
जिनके पास दिमाग नहीं, नया न उन पर भाग्य कहीं–2
ये तो पहले का हो–3 खा काम चलाएँ रे–SS।।4848।।

(51) किश्मत का घट फूट रहा, विषयों में सुख लूट रहा–2
पर में सुख की ढूँढ रहा–SSS
विष का जहर विषैला है, तन–मन करता मैला है–2
तेरी करतूतें हो–3 ही कष्ट बढ़ाएँ रे–SS।।4849।।

(52) भक्तामर जो गायेगा, भक्त वही कहलाएगा–2
अजर अमर पद पायेगा–SSS
गुण से वह भर जायेगा, शिवपुर को वह पायेगा–2
भक्ति भव्यों को हो–3 भव पार कराये रे–SS।।4850।।

(53) ढाई द्वीप मनुलोक कहा, जिसमें मानव दुखी महा–2
प्रभु ने सुखमय ज्ञान कहा–SSS
जिसने दु:ख में सुक्ख लहा, उसने पाया ज्ञान अहा–2
ज़ानी के चरणों हो–3 में सब मिल जाये रे–S।।4851।।

(54) हँसकर जो मर जायेगा, वही समाधि पायेगा–2
कहते मानतुंग गुरुवर–SSS
आओ हम श्रद्धान करें, दिल से प्रभु गुणगान करें–2
भक्तामर स्तोत्र हो–3 सारे काम बनाए रे–SS।।4852।।

(55) शुद्ध नहीं पढ़ पायेगा, सिद्धि नहीं कुछ पायेगा –2
थोड़ा द्रव्य कमायेगा –SS
उचित न फल मिल पायेगा, मंद बुद्धि रह जायेगा –2
बोले बिन भव में हो–3 नहिं कुछ भी पाये रे –SS।।4853।।

(56) कुछ भी नहीं कमाएगा, आगे फिर क्या खायेगा–2
गम का बोझ उठाएगा–SSS
भक्ति कर कुछ कमा यहाँ, व्यर्थ समय मत गवाँ यहाँ–2
निकले वो वक्त हो–3 फिर लौट न आये रे–SS।।4854।।

(57) भक्ति में नहिं किया जतन, धन्य न हो पाया नरतन–2
माँझ़ ले मन के तू बर्तन–SSS
देख समय का परिवर्तन, सिंहासन से हुआ पतन–2
खोटा हो सिक्का हो–3 तो ठोकर खाए रे–SS।।4855।।

(58) सबरी जैसी भक्तिकर, स्वार्थभाव मन से तजकर –2
राम नाम माला जपकर –SSS
खाले जूँठे बेर यहाँ, नहीं करोगे देर यहाँ –2
तेरे ही घर पर हो–3 श्री राम आ जायें रे –SS।।4856।।

(59) प्रभुवर की शुभ भक्ति पर, निज आतम की शक्ति पर –2
अपने शुद्ध आचरण पर –SSS
तीनों पर विश्वास करो, पाने इन्हें प्रयास करो –2
इनके मिलते ही हो–3 ईश्वर मिल जाये रे –SS।।4857।।

(60) भक्ति शक्ति दिलाती है, नई युक्ति बतलाती है –2
राह सही दिखलाती है –SSS
ये भगवन् की पाती है, सबका ज्ञान बढ़ाती है –2
भक्ति में भवि को हो–3 भगवान दिखाए रे –SS।।4858।।

(61) नाम राम का जपो सभी, दुक्ख न होंगे तुम्हें कभी –2
कर ले ऐसा काम अभी –ऽऽ
जीना सीखो राम से, भक्त बनो हनुमान से –2
दुनियाँ में आके हो–3 गम नहीं उठाओ रे –ऽऽ।।4859।।

(62) भाव विनम्र हमारा हो, नई ज्ञान की धारा हो–2
एक विवेक सहारा हो–ऽऽऽ
आओ नयी शान वर लें, नहीं किया उसको कर लें–2
आँख हिये की हो–3, बुद्धि खुलवाये रे–ऽऽ।।4860।।

(63) भावों में हो बंध यहाँ, भावों से निर्बन्ध यहाँ–2
हृदय भाव का छंद यहाँ–ऽऽऽ
प्राणी हो स्वच्छंद यहाँ, गर आँखों में धुंध यहाँ–2
अंतस् आँखों में हो–3 सब कुछ दिख जाये रे–ऽऽ।।4861।।

(64) कुत्ते से डर जायेगा, कुत्ता और डराएगा–2
भय पैदा करवायेगा–ऽऽऽ
भय का करो सामना तुम, भय खुद ही मिट जायेगा–2
भय का भय यारो हो–3 भय और बढ़ाए रे–ऽऽ।।4862।।

(65) हम सब भीतर जाते हैं, तब हम तिरते जाते हैं–2
तिरना भीतर जाना है–ऽऽऽ
भीतर–भीतर जाओ तुम, भव से भी तर जाओ तुम–2
भीतर जो जाये हो–3, वह ही तिर जाये रे–ऽऽ।।4863।।

(66) जब कोई आकर जीता, ज्ञानामृत का घट पीता–2
तब लिख जाती है गीता–ऽऽऽ
कड़वा घूँट पियोगे गर, तब दिख जाऐंगे प्रभुवर–2
भोगों के विष में हो–3 विष ही नजराये रे–ऽऽ।।4864।।

(67) विषय भोग में अटक गया, तभी यहाँ पर भटक गया–2
आशा में तू लटक गया–ऽऽऽ
कौन तुझे अब समझाये, जब तू खुद मरता जाये–2
मरने वालों को हो–3 कोइ बचा न पाये रे–ऽऽ।।4865।।

(68) रस में भटकेगी रसना, उसको पड़ जाये फँसना–2
निज रस में हँसना–हँसना–ऽऽऽ
देखो सच के दर्पण को, करके यहाँ समर्पण को–2
भोगों में फँसता हो–3 वो खुद फँस जाये रे–ऽऽ।।4866।।

(69) जब–जब हो संयोग यहाँ, तब–तब गम के योग यहाँ–2
रोग–शोक विषभोग यहाँ–ऽऽ
तीन योग से छोड़ो तुम, इनसे मुख को मोड़ो तुम–2
तब ही मज़हब का हो–3, शुभ मर्म समाए रे–ऽऽ।।4867।।

(70) विषय भोग की प्याली में, राग–द्वेष की नाली में–2
कीड़ों से हम नजरायें–ऽऽ
क्रीड़ा खुद में कर चेतन, भटक न क्रीड़ा कर भव वन–2
विषयों में फँसकर हो–3, क्यूँ विष उपजाये रे–ऽऽ।।4768।।

(81) भोगों में तू कहे मज़ा, हरदम ढूढ़े तुझे कज़ा–2
मज़ा नहीं ये तुझे सज़ा–SSS
कर ले अच्छी यहाँ रज़ा, थोड़ा भइया यहाँ लज़ा–2
गम को अपनाकर हो–3, क्या गम मिट पाये रे–SS।।4869।।

(82) भूला खुद की आजादी, वही करे आकर शादी–2
कर लेता है बरबादी–SSS
भोगों का होकर आदी, गम की गठरी है लादी–2
अपना ही सुख दुख हो–3, संग साथ निभाए रे–SS।।4870।।

(83) बुद्धि विवेक नहीं पाया, तो फिर तुमने क्या पाया?–2
खुद को गम में उलझाया–SSS
जीवन एक गँवा डाला, भरकर अँधियारा काला–2
कैसे उजियारा हो–3 हो कौन बताएँ रे–SS।।4871।।

(84) बुद्धि–विवेक नहीं मन में, क्या पाएगा जीवन में–2
रहे भटकता भव वन में–SSS
बिन विवेक उल्लास कहाँ, खुद पर ही विश्वास कहाँ–2
बुद्धि विवेक हो–3 श्रद्धान बनाएँ रे–SS।।4872।।

(85) किस्मत का घट फूट रहा, विषयों में सुख लूट रहा–2
पर में सुख को ढूँढ रहा–SSS
विष का जहर विषैला है, तन–मन करता मैला है–2
तेरी करतूतें हो–3 ही कष्ट बढ़ाएँ रे–SS।।4873।।

(86) हाय बुढ़ापा आयेगा, तेरी कमर झुकाएगा–2
तन में सिकुड़न लायेगा–SSS
रह जायेगा सभी धरा, काम आयेगा धर्म तेरा–2
काया से अपनी हो–3 तुम धर्म बढ़ाओ रे–SS।।4874।।

(87) अर्द्धमृतकसम बूढ़ापन, खाल लटकती दुक्ख सघन–2
पोता–पोती देख मगन–SSS
उनमें देख रहा बचपन, देखा करता रोज स्वपन–2
अपना बुढ़ापा हो–3 यूँ रोज बिताए रे–SS।।4875।।

(88) खाँस–खाँस कर रोता है, कोई साथ न होता है–2
लाठी ले दुख ढोता है–SSS
मरा हुआ सा लेटा है साथ न देता बेटा है–2
अब तू रो–रोकर हो–3 क्यों चैन गँवाये रे–SS।।4876।।

(89) मतलब के सब नर नारी, झूठी ये दुनियाँदारी–2
सभी जगह हैं दुख भारी–SSS
गर्ज रहे तो साथ सभी, कह दें बाप गधे को भी–2
तेरे ही परिजन हो–3 तुझको कफन उड़ाएँ रे–SS।।4877।।

(80) दुनियाँ के इस अरहट में, बीत रहा तू घट–घट में–2
राग–द्वेष की खटपट में–SSS
बाँध तुझे ले जायेंगे, लोग तेरे ही मरघट में–2
तेरा ही वारिस हो–3 तुझको चिता दिखाये रे–SS।।4878।।

(81) बैठा घर के द्वारे पर, लेटा है जो खटिया पर–2
खाँस रहा जो बिस्तर पर–SSS
हाय बुढ़ापा इस तन का, घणा दुक्ख इस जीवन का–2
संयम से अपना हो–3 बूढ़ापन जाये रे–SS।।4879।।

(82) राजनीति में चाव करें, बूढ़े यहाँ चुनाव लड़ें–2
मरघट में वो पाँव धरें–SSS
फिर भी अहं नहीं जाता, नहीं बुढ़ापा नजराता–2
साठ के बाद हो–3, मति शठिया जाये रे–SS।।4880।।

(83) सोच रहा अपना बेटा, करे बुढ़ापे में सेवा–2
खाता, ख्वाबों की मेवा–SSS
तन बूढ़ा हो जाता है, बेटा पास न आता है–2
रोता चिल्लाता हो–3, जल्दी मर जाये रे–SS।।4881।।

(84) कमर झुकी पकड़ी लाठी, लाठी हो गई सहपाठी–2
बुझ गई आँखों की बाती–SSS
सबका होना हाल यही, साधू का हो कभी नहीं–2
बूढ़े सब लोगो हो–3, साधू बन जाओ रे–SS।।4882।।

(85) इंसां जब बूढ़ा होता, बचपन जैसा मन होता–2
गोदी में खेले पोता–SSS
उम्र हुई पूरी पचपन, बूढ़ा ढूँढ रहा बचपन–2
पाये ना पाये हो–3 बचपना तो आये रे–SS।।4883।।

(86) खाँस–खाँस घर में आता, या आते ही चिल्लाता–2
दादा तब भीतर आता–SSS
हालत ऐसी होगी पर, फिर भी नहीं छोड़ता घर–2
मेरी मानो तो हो–3 साधू बन जाओ रे–SS।।4884।।

(87) बाल सफेद हुए सिर पर, दो तिहाई गई उमर–2
डाई कराके बनें सुपर–SSS
उसने भेजा है ये खत, करो धरम अब चूको मत–2
फिर भी तुम सबको हो–3, कुछ समझ न आये रे–SS।।4885।।

(88) बूढ़ापन अधमरे हुए, बीमारी से लदे हुए–2
लाचारी में फँसे हुए–SSS
ढूँढ रहा यमराज जिन्हें, तृष्णा फिर भी नहीं घटे–2
बेटा बहु सोचें हो–3, बूढ़ा कब मर जाये रे–SS।।4886।।

(89) पड़े हैं खटिया पर यारो, जीवन है घटिया यारो–2
अकल गई शठिया यारो–SSS
लेटा–लेटा चिल्लाता, कोई नहीं झकने आता–2
बूढ़ों की ऐसी हो–3, हालत बतलाएँ रे–SS।।4887।।

(90) बूढ़े डिस्को डांस करें, बाला से रोमांस करें–2
अपनी कभी न उम्र लखें–SSS
अपना जवां समझते दिल, बियरबार बनती महफिल–2
बूढ़े होते ही हो–3, मति शठिया जाये रे–SS।।4888।।

(91) काल लुटेरा आयेगा, तब जाना पड़ जायेगा–2
सभी धरा रह जायेगा–SSS
पता नहीं कब आयेगा, कहाँ हमें ले जायेगा–2
कर ले तो करना हो–3 वरना पछताए रे–SS।।4889।।

(92) लाठी कँपती हाथों में, कमर झुके हालातों में–2
सिकुड़न हाथों पावों में–SSS
आँख–कान नहिं काम करें, तृष्णा बढ़ती हुई दिखे–2
ऐसा बुढ़ापा हो–3 बस धर्म मिटाए रे–SS।।4890।।

(93) गैर देखकर जो भौंके, आम आदमी सब चौंके–2
सदा ढूँढता जो मौके–SSS
करे गैर की बात जहाँ, कुत्ते की औकात वहाँ–2
खुद को नहिं देखे हो–3 भौं भौं चिल्लाए रे–SS।।4891।।

(94) थोड़ा सा हो ज्ञान यहाँ, पर हो चारितवान् यहाँ–2
पाता वो निर्वाण यहाँ–SSS
चारित से हो कर्मक्षरण, ज्ञान युक्त हो गर आचरण–2
सम्यक् चारित्र हो–3, भव पार कराये रे–SS।।4892।।

(95) ज्ञान की शुद्धि चारित से, ज्ञान की सिद्धि चारित से–2
ज्ञान की वृद्धि चारित से–SSS
कोरा ज्ञान न शुद्ध करे, चारित दर्शन शुद्ध करे–3
सच क्या? ये ज्ञान हो–3, तुमको दिखलाए रे–SS।।4893।।

(96) तुझसे दर्शन मोह मिटे, तुझसे चारित्र मोह घटे –2
तुमसे सारे कर्म पिटे –SSS
तुम ही सब कुछ मेरे हो, मेरे लिये सबेरे हो –2
मुझको भव सागर हो–3 ये पार कराओ रे–SS।।4894।।

(97) मंगल वर्षायोग वहाँ, उस घर में हो पुण्य जहाँ –2
पुण्य बिना नहिं योग यहाँ –SSS
पुण्यवान् को सब मिलता, दीपक भी उसका जलता –2
पुण्य नहिं होवे हो–3 मन मुरझा जाये रे –SS।।4895।।

(98) तन से चार बनाते तन, हर्षाते हैं मन ही मन–2
यही समझते अपना धन–SSS
नौन तेल लकड़ी साबुन, फिर इसमें निकले जीवन–2
चेतन की यारो हो–3 फिर सुध नहिं आये रे–SS।।4896।।

(99) भेदज्ञान से पाया है, तन मिट्टी की काया है–2
चेतन इसमें छाया है–SSS
चेतन शुद्ध अरूपी है, निर्विकार गुण रूपी है–2
चेतन मिलते ही हो–3, चिंता मिट जाये रे–SS।।4897।।

(100) एक आँख नहिं तन में हो, सब जन कहते काने हो–2
इस भव में बेगाने हो–SSS
चेतन की गर आँख नहीं, तब तो अंधे हुए यहीं–2
अंतस् की आँख हो–3, हर चीज दिखाये रे–SS।।4898।।

(101) अमृत आता चेतन में, जहर उगलता है मन ये–2
प्रकट करे सारा तन ये–ऽऽऽ
चेतन से मन मिल जाये, मार्ग तभी सच दिख पाये–2
चेतन ही मन को हो–3, मंजिल दिखलाए रे–ऽऽ॥4899॥

(102) दुख लाये तन की यारी, भटकाए मन की यारी –2
पिटवाए धन की यारी –ऽऽ
प्यारी चेतन की यारी, करो इसी की तैयारी –2
चेतन से अच्छा हो–3 नहिं मित्र दिखाए रे –ऽऽ॥4900॥

(103) तू तन है या है चेतन, कभी किया तूने चिंतन–2
भटक रहा लेकर भटकन–ऽऽऽ
करना क्या कर्तव्य यहाँ, आगे जाना हमें कहाँ–2
आया कहाँ से? हो–3 ये कौन बताए रे–ऽऽ॥4901॥

(104) चिंतन चिन्ता दूर करे, अनुभव का दस्तूर भरे–2
मंथन ये भरपूर करे–ऽऽऽ
जिसके पास नहीं चिंतन, दर्शन हो अस्तित्व परम–2
इसके ही बल पर हो–3 शुद्धात्म दिखाये रे–ऽऽ॥4902॥

(105) क्रोध मान मद लोभ नहीं, अंतरंग में क्षोभ नहीं–2
कभी हो उसको शोक नहीं–ऽऽऽ
चिंता, चिता बनाती है, जिंदा यहाँ जलाती है–
चिंतन की धारा हो–3 निज राह दिखाए रे–ऽऽ॥4903॥

(106) करता रहता अरमां तू, चंद दिनों का मेहमां तू–2
यहाँ रहेगा कितना तू–ऽऽऽ
जैसे यहाँ विचार करे, वैसा ही घर द्वार मिले–2
अच्छे से अच्छा हो–3 सब ही मिल जाये रे–ऽऽ॥4904॥

(107) जो वनवास में जाता है, वो इतिहास रचाता है –2
बनता सच्चा ज्ञाता है –ऽऽऽ
चिंतन प्रखर बनाता है, अनुभव नये कमाता है –2
चिंतन चिंता की हो–3 खुद चिता बनाए रे –ऽऽ॥4905॥

(108) सौ चिराग हों बुझे अगर, कोइ न उससे जले मगर–2
जला चिराग जलाये सब–ऽऽऽ
हों हजार मुर्देपर क्या? मुर्दा किसे जिला सकता?–2
जिंदा हों चार हो–3, तो सब जल जायें रे–ऽऽ॥4906॥

(109) दान आहार एक दिन का, औषधि एक बीमारी का –2
अभयदान है इक भव का –ऽऽ
ज्ञान दान जो यहाँ करे, कई जनम उसके सुधरे –2
ज्ञानी और ज्ञान हो–3 भव पार लगाए रे –ऽऽ॥4907॥

(110) खीर पुड़ी तब पाओगे, जब तुम पुण्य कमाओगे –2
कभी न दुःख उठाओगे –ऽऽऽ
दान करो, यश पाओगे, श्रावक बनकर जाओगे –2
ऐसे शुभ काम हो–3 सम्मान दिलाएँ रे –ऽऽ॥4908॥

(111) देना दूना करना है, लेना ऊना करना है –2
दिये बिना नहिं मिलता है –SSS
जो भी देता जाएगा, ऊपर उठता जायेगा –2
दान व्यक्ति का हो–3 सम्मान बढ़ाए रे –SS।।4909।।

(112) देकर जितना जाओगे, उतना ही ले पाओगे –2
देने से ही लेना है –SSS
जैसा यहाँ लुटाओगे, वैसा घर में पाओगे –2
पीतल के बदले हो–3 नहिं सोना आये रे –SS।।4910।।

(113) घोर अंधेरा दिल में दुख, फिर भी जुबां बनी है चुप–2
दर्द बदलता नहीं है रुख –SSS
दर्द–दर्द तब जानेगा, जब खुद को पहिचानेगा –2
दर्द ही दिल को हो–3 बेदर्द बनाये रे –SS।।4911।।

(114) छोड़ यहाँ मैली चादर, शीश झुका मन्दिर जाकर–2
हर्ष हुआ प्रभु को पाकर–SSS
अहोभाव पैदा कर ले, अपना दर्श अमर कर ले–2
ऐसा ही दर्शन हो–3 सम्यक्त्व दिलाए रे–SS।।4912।।

(115) तन को मंदिर लाया कर, फिर कुछ खिला–पिलाया कर–2
ऐसा नियम हमेशा धर–SSS
सच्चा है सम्मान यही, समझो ये गुणगान सही–2
ऐसा करता वो हो–3 श्रावक कहलाए रे–SS।।4913।।

(116) आओ दर्शन कर लें हम, पारस प्रभु को वर लें हम –2
थोड़ा यहाँ उभर लें हम –SS
दर्शन तुझे उठाएगा, धारा नई बनाएगा–2
दर्शन जीवन में हो–3 सब ही दर्शाये रे –SS।।4914।।

(117) दबा दबाकर खाते हो, तभी दवाएँ खाते हो –2
बीमारी खुद लाते हो –SSS
कम खाओ और गम खाओ, कभी दवाएँ मत खाओ –2
पथ्य अपनाया हो–3 तो पीर न आए रे –SS।।4915।।

(118) नया दीप इक जलता है, कहीं पुराना बुझता है–2
जग की यही नियतता है–SSS
जलने को बुझता कोई, रौशन को जलता कोई–2
जलने वाला ही हो–3 इक दिन बुझ जाये रे–SS।।4916।।

(119) किस किसको हम याद करें, किससे यहाँ विवाद करें–2
किससे यहाँ विषाद करें–SSS
खुद से ही संवाद करें, अपना ही ईजाद करें–2
इससे ही दिल का हो–3, दीपक जल जाये रे–SS।।4917।।

(120) अंधकार का जोर यहाँ, कैसे होंगे भोर यहाँ?–2
बैठे सारे चोर यहाँ–SSS
दीपक एक जलाएँ दिल, रौशन कर ले अपना दिल–2
दीपक जलने से हो–3 तम खुद मिट जाये रे–SS।।4918।।

(121) दिल, फूलों सा खिला लिया, समझो, दीपक जला लिया–2
प्रभु को खुद से मिला लिया–SSS
नहीं मिलें प्रभु, दुखी जिया, मरा हुआ अधमरा जिया–2
दीपक जलने से हो–3 दिल दर्पण पाए रे–SS।।4919।।

(122) सोचा है जब भी हमने, दीप जलाया खुद तुमने –2
खुद में तभी लगा रमने –SSS
तुझे भविष्य बनाया है, जीवन उठता पाया है –2
तू हो गर दिल में हो–3 तो भय मिट जाये रे –SS।।4920।।

(123) बेमानी से धन जोड़ा, अपनी किस्मत को फोड़ा–2
अपनों का ही दिल तोड़ा–SSS
नगर सुन्दरी सी दौलत, बुरी बना देती है लत–2
इसके दीवाने हो–3 खुद दर्द बढ़ाएँ रे–SS।।4921।।

(124) छल माया से धन आता, तभी आदमी बौराता–2
धन से चैन नहीं पाता–SSS
जब ये धन का दान करे, तब ही सुख सम्मान वरे–2
वरना ये धन ही हो–3 भय मौत दिलाये रे–SS।।4922।।

(125) धन हाथों का मैल अरे, किस्मत का सब खेल अरे–2
धन से मिलती जेल अरे–SSS
छल से मिले नहीं ज्यादा, ये ऋषियों ने बतलाया–2
फिर भी इंसां को हो–3 ये समझ न आये रे–SS।।4923।।

(126) खूब कमाया तुमने धन, फिर भी भरा न तेरा मन–2
खा–पी सके नहीं वह धन–SSS
बेटे–पौते मौज करें, दादा धन के लिये मरें–2
धन की चाहत में हो–3 नहिं चैन गँवाओ रे–SS।।4924।।

(127) महल खड़े तू करवा ले, खूब तिजोरी भरवा ले–2
इंतजाम सब करवा ले–SSS
चलने का जब दिन आये, सारे स्वप्न उजड़ जाये–2
दो गज जमीन हो–3 में तू सो जाये रे–SS।।4925।।

(128) धन वैभव पा फूल रहा, खुद अपने को भूल रहा–2
विषयों में तू झूल रहा–SSS
सभी तरफ है धूल अहा, गवाँ रहा तू मूल अहा–2
विषयों की ज्वाला हो–3 दुख दिले बढ़ाए रे–SS।।4926।।

(129) धन पाने को रोते हैं, बीज गमों के बोते हैं–2
ऊँचे ख्वाब सजोते हैं–SSS
ऊँची भरें उड़ान यहाँ, गिरने का है काम कहाँ–2
कैसे सच्चाई हो–3 की राह दिखाए रे–SS।।4927।।

(130) धन को यहाँ बढ़ाता है, दिन भर खूब कमाता है–2
चिंता में दुख पाता है–SSS
अपना जिसे बनाता है, संगिनी उसे बताता है–2
मरघट पे तेरे हो–3 वो संग न जाये रे–SS।।4928।।

(131) धन की कोई जात नहीं, धन बिन है औकात नहीं–2
धन में छिपती जात यहीं–SSS
धन है ईश्वर से बढ़कर, धन पर जाते हैं मर–मर–2
ऐसों को ईश्वर हो–3, नहिं कभी दिखाए रे–SS।।4929।।

(132) जिये कमाई कर करके, छोड़ गये सब मर मरके–2
पाप कमाया है जम के–SSS
यहाँ अकेला भोगेगा, साथ न कोई होवेगा–2
तब तू सिर धुनकर हो–3, बहु रुदन मचाये रे–SS।।4930।।

(133) धन दौलत है पास जहाँ, पूछेगा परिवार वहाँ–2
इसके बिन है प्रेम कहाँ–SSS
धन के पत्नि बच्चे हैं, कमा के दो तो अच्छे हैं–2
धन बिन कोइ तेरा हो–3, नहिं साथ निभाए रे–SS।।4931।।

(134) धरा, धरा पर सारा धन, धन में धरा तुम्हारा मन–2
भूल रहा अपनी चेतन–SSS
धन कोहराम मचाता है, दुनियाँ में भटकाता है–2
अपना धन पाओ हो–3, तब राह दिखाये रे–SS।।4932।।

(135) धन को यहाँ कमाते हैं, पूरा समय लगाते हैं–2
जीवन यहाँ गँवाते हैं–SSS
फिर ये जीवन पाने को, पैसा सभी लगाते हैं–2
पैसा और जीवन हो–3, दोनों फिर जायें रे–SS।।4933।।

(136) मुश्किल से धन आता है, फिर भी वह मिट जाता है–2
असुरक्षित कहलाता है–SSS
धन को पाकर स्वस्थ कहे, ऐसा मानव मूर्ख अरे–2
ज्वर में घी पी ले हो–3, वो मूर्ख कहाये रे–SS।।4934।।

(137) ज्यों–ज्यों आयु बढ़ती है, त्यों–त्यों तृष्णा बढ़ती है–2
आसक्ति नहिं घटती है–SS
धन पाना उत्कृष्ट है, जीवन फिर नहिं इष्ट है–2
मानव ये समझे हो–3, मुनिराज बताएँ रे–SS।।4935।।

(138) धन की महिमा न्यारी है, जान नहीं अब प्यारी है–2
ये कैसी लाचारी है–SSS
मालिक बना भिखारी है, ये कैसी मति मारी है–2
धन में जीवन को हो–3, तुम नहीं लगाओ रे–SS।।4936।।

(139) नश्वर है ये धन यौवन इसमें कैसा अपनापन –2
जैसे आता–जाता धन –SSS
अविनश्वर इक धर्म यहाँ, इससे मिलता मर्म यहाँ –2
धर्मी का जीवन हो–3 खुशहाल दिखाए रे –SS।।4937।।

(140) हरदम तू धन जोड़ रहा, पुद्गल में सर फोड़ रहा –2
खुद अपना दिल तोड़ रहा –SS
धन है किसका सगा अरे, धन ही देता दगा अरे –2
धन की चाहत में हो–3 दुख दर्द बढ़ाए रे –SS।।4938।।

(141) जब हो जाये मन काला, काम न आये तब माला –2
निर्मित हो जग जंजाला –SS
आयेगा जब काल तेरा, पड़ा रहे सब माल तेरा –2
दिल से मन जानो हो–3 सब समझ में आये रे –SS।।4939।।

(142) दौलत आनी जानी है, क्यूँ इस पर अभिमानी है –2
दो पल की जिंदगानी है –SS
पल भर में उड़ जायेगा, सभी पड़ा रह जायेगा –2
मन की आशायें हो–3 मन भर न पाये रे –SS।।4940।।

(143) समता में जो रहते हैं, कहते नहिं वो सहते हैं–2
ज्ञानध्यान में रमते हैं–SSS
रहना हरदम प्रभु के साथ, गुणी जनों से कर सौगात–2
धर्मी का वंदन हो–3 निज धर्म दिलाये रे–SS।।4941।।

(144) करो प्रार्थना परम यहाँ, मिल जाये तो धर्म यहाँ–2
धर्म दिलाता मर्म यहाँ–SSS
धर्म विशाल हृदय सम है, मिटते खुद सारे गम हैं–2
प्रभु का आराधन हो–3 आराध्य बनाये रे–SS।।4942।।

(145) धर्म कर्म से रीते हैं, मोही मदिरा पीते हैं–2
गम ही गम में जीते हैं–SS
सही धर्म नहिं जाना है, धर्म क्रिया को माना है–2
अंतस् जाने बिन हो–3 नहिं धर्म समाए रे–SS।।4943।।

(146) थोड़ा तजकर जाएगा, थोड़ा परभव पाएगा–2
नियम प्रकृति का यही यहाँ–SSS
कुछ–कुछ तजकर जाएगा, कुछ कुछ पर भव पाएगा–2
सब कुछ तजेगा हो–3 वो सब कुछ पाये रे–SS।।4944।।

(147) खुद का अनुसंधान करो, कोई नया विधान करो–2
खुद ही खुद का ज्ञान वरो–SSS
धर्मी का सम्मान करो, धर्मफलों में हर्ष धरो–2
निंदा–अनुकंपा हो–3 निज धर्म बढ़ाये रे–SS।।4945।।

(147) कर्म बाँटता है अक्सर, धर्म जानने का अवसर–2
ध्यान बनाता अजर–अमर–SSS
धर्म सहित शुभ कर्म करो, ध्यान करो निज मर्म वरो–2
तब ही सिद्धों सा हो–3, निज रूप दिखाए रे–SS।।4946।।

(149) मन निश्चल हो जाता है, धर्म समझ में आता है–2
नई राह दिखलाता है–SSS
धर्म नहीं गर जीवन में, भटकन ही भटकन भव में–2
धर्मी से घर में हो–3 खुशियाँ भर जायें रे–SS।।4947।।

(150) हँसकर जिसे दिया जाता, हँसकर जिसे लिया जाता–2
पुण्य स्वयं बढ़ता जाता–SSS
धर्म उसी का नाम है, खुशियाँ जिसका धाम है–2
देगा वो मिलता हो–3 सब ऋषि बताएँ रे–SS।।4948।।

(151) कामधेनु सम धर्म यहाँ, दूध समां है कर्म यहाँ–2
घी जैसा है मर्म यहाँ–SSS
धर्म–कर्म गर मर्म मिले, ईश्वर का वरदान मिले–2
उसको कहीं भी हो–3 नहिं दुक्ख सताए रे–SS।।4949।।

(152) कर्त्तापन खो जाता है, निर्विकल्प हो जाता है–2
वीतरागपन आता है–SSS
शुद्ध धर्म दिख जाता है, सुख सीढ़ी सा पाता है–2
धर्म, धर्मी को हो–3, शिवराह दिखाए रे–SS।।4950।।

(153) धरम न दिल में लाएगा, रहम न दिल में पायेगा–2
हरदम गम उपजाएगा–SS
अपने उर को पावन कर, जीवन को तू सावन कर–2
गम के भावों में हो–3, गम ही गम पाये रे–SS।।4951।।

(154) धर्म हृदय में आयेगा, निश्छलता प्रकटाएगा–2
जीवन सफल बनाएगा–2
धर्म कला विज्ञान है, जिसमें सबका ज्ञान है–2
धर्मी मिल जाये हो–3, तो धर्म दिखाये रे–SS।।4952।।

(155) दुनियाँ गोरख धंधा है, क्यों तू इसमें अंधा है–2
तन का साथ ही गंदा है–SSS
दिल में धर्म समाए है, वो इंसां ही जिंदा है–2
सच में सच पाना हो–3, नहिं सुलभ दिखाए रे–SS।।4953।।

(156) धर्म हृदय में पलता है, जहाँ दिले निश्छलता है–2
दीप धरम से जलता है–SSS
जीवन स्वयं निकलता है, पाप कर्म जब गलता है–2
धर्मी से धर्म हो–3, खुद ही आ जाये रे–SS।।4954।।

(157) कब तक यहाँ चलाओगे, अपना हृदय दुखाओगे–2
खुद को यहाँ भुलाओगे–SSS
घुट–घुट करके रोयेगा, गर नहिं धर्म संजोएगा–2
धर्म जीवन में हो–3, शिवमार्ग बताये रे–SS।।4955।।

(158) मन वच काय विकल्प नहीं, समझो जिंदा धर्म वहीं–2
और कहीं भी धर्म नहीं–SSS
मन को निर्विकार कर ले, दया धर्म जल्दी वर ले–2
खुद में खो जाना हो–3, सच धर्म बताएँ रे–SS।।4956।।

(159) कर्त्तापन खो जाता है, ज्ञानमयी हो जाता है–2
तभी समझ सब आता है–SSS
दिले धर्म तब पाता है, ये जिन धर्म बताता है–2
धर्म का मतलब हो–3, खुद में रम जाये रे–SS।।4957।।

(160) धर्म मनुष्य बनाता है, जीवित धर्म खिलाता है–2
दिल में ज्योति जलाता है–SSS
धर्म मर्म दिखलाता है, सारे कर्म मिटाता है–2
धर्मी की सेवा हो–3, में धर्म दिखाये रे–SS।।4958।।

(161) पर घर में धन मित्र है, वैद्य रोग में मित्र है-2
गम में किस्मत मित्र है-SSS
मरण समय जब आएगा, धर्म मित्र बन जाएगा-2
धर्म नहीं है, हो-3, तो मरता जाये रे-SS।।4959।।

(162) जिसने धर्म किया सच्चा, उसको मिला जिगर अच्छा-2
उसकी प्रभु करे रक्षा-SSS
नहीं मिला तो पाओ तुम, मिला उसे अपनाओ तुम-2
मंजिल का रस्ता हो-3, गुरु धर्म बताये रे-SS।।4960।।

(163) धर्म दिले अपनाएगा, कर्म स्वयं मिट जायेगा-2
सुख अंजामे पायेगा-SSS
न माने तो देख अभी, अपनाकर के धर्म कभी-2
धर्म से आँगन हो-3, रौशन हो जाए रे-SS।।4961।।

(164) जीव दया बिन धर्म विफल, नीर बिना सरवर असफल-2
ज्ञान बिना दिल है, निष्फल-SSS
छाया बिन तरु व्यर्थ यहाँ, चन्द्र बिना नहिं रात यहाँ-2
वैसे ही जीवन हो-3, बिन धर्म बताएँ रे-SS।।4962।।

(165) धर्म-कर्म को जानें हम, दिल से उसको मानें हम-2
खुद को ही पहिचानें हम-SSS
जब तक इनका ज्ञान नहीं, तब तक सुख का भान नहीं-2
धर्मी बन करके हो-3, निज धर्म बढ़ाओ रे-SS।।4963।।

(166) संस्कार बन जाते हैं, पत्थर से छप जाते हैं-2
वे चारित्र बनाते हैं-SSS
संस्कार शुभ नहीं हुए, तो फिर जीवन नहीं बने-2
धर्म जीवन में हो-3, सुख शांति दिलाए रे-SS।।4964।।

(167) दया धरम का मूल है, नहिं माने यह भूल है-2
उसका जीवन शूल है-SSS
जीवन उसका फूल है, जो आगम अनुकूल है-2
दुखियों की सेवा हो-3, में धर्म समाए रे-SS।।4965।।

(168) अनुभव से जल जाएँगे, सबके दीप जलाएँगे-2
शिवराही बन जायेंगे-SSS
रस्ता नया बनायेंगे, सबको धर्म दिखाएँगे-2
ऐसे भावों से हो-3, दिल खिल-खिल जाये रे-SS।।4966।।

(169) मित्र पुन: मिल सकते हैं, वैभव फिर मिल सकता है-2
पत्नी फिर मिल सकती है-SS
धर्म नहीं मिल सकता है, एक बार ही मिलता है-2
अपने जीवन में हो-3, तू धर्म समाये रे-SS।।4967।।

(170) दिल में नहीं गरूर है, उसको जहाँ सरूर है-2
उसमें धर्म जरूर है-SSS
जो खुद में मगरूर है, करता वही कसूर है-2
बीज जो बोया हो-3, वैसा फल आये रे-SS।।4968।।

(171) धर्म–कर्म पाखण्ड किया, खुद को नहीं अखण्ड किया–2
तन मन को यूँ दण्ड दिया–SSS
निज अखण्डता पाओगे, तब ही गुण वर पाओगे–2
गुण बिन क्रिया में हो–3, नहिं सार दिखाये रे–SS।।4969।।

(172) मंत्र साधना मन की है, तंत्र साधना तन की है–2
यंत्र साधना भव की है–SSS
तीनों ही चेतन की हैं, निज गुण के वेतन की हैं–2
आराधन–साधन हो–3, निज साध्य दिलाये रे–SS।।4970।।

(173) आओगे, कुछ पाओगे, वरना कुछ खो जाओगे–2
पाया उसे गँवाओगे–SSS
धर्म सभी कुछ दाता है, इसका सुख से नाता है–2
धर्मी की संगत हो–3 जन्नत दिलवाये रे–SS।।4971।।

(174) पाप का फल मंदिर लाये, पुण्य का मल प्रभु भुलवाये–2
पुण्य का फल गुण दिलवाये–SSS
धर्म हृदय खिलवाता है, जीवन नया बनाता है–2
धर्मी को पाकर हो–3 मन खुद हर्षाये रे–SS।।4972।।

(175) पहले खूब कमाते धन, दिखता नहीं रात और दिन–2
चुक जाता सब चैन–अमन–SSS
जब फुक जाता तन और मन, तब हम करते धरम करम–2
ऐसे लोगों में हो–3 नहिं धर्म दिखाए रे–SS।।4973।।

(176) धर्म नहीं जिनके मन में, भटक रहा वो भव वन में–2
गुण पाता नहिं चेतन में–SSS
दुनियाँ के हर मग मग में, मिलें ठोकरें पग–पग में–2
मज़हब से जीवन हो–3 गुल सा खिल जाये रे–SS।।4774।।

(177) जो सच का अमृत पीता, वो खुद बन जाता गीता –2
हँसते हुए वही जीता –SSS
धर्म कर्म से जो रीता, वक्त यहाँ गम में बीता –2
बंजर सा जीवन हो–3 उसका हो जाये रे –SS।।4775।।

(178) शक्ति है उतना धर्म करो, तहे दिले निज कर्म करो –2
नहीं करो, तो डूब मरो –SSS
भूल तू ईश्वर जायेगा, वो भी तुझे भुलाएगा –2
नजरें वो फेरे हो–3 फिर कौन बचाये रे –SS।।4776।।

(179) ऊँची–ऊँची बात करें, भीतर–भीतर जहर पियें –2
धर्मी ऐसा नहीं करें –SSS
धर्मी की है बात अलग, उसका सबसे सोच अलग –2
अंतस् का चिंतन हो–3 गुल दिले खिलाए रे –SS।।4977।।

(180) काम हमेशा दुख देता, अर्थ दुखों सा सुख देता –2
धर्म सभी को सुख देता –SSS
मोक्ष मार्ग पर चले यहाँ, यही मुक्ति पथ का नेता –2
चारों जीवन में हो–3 मानव अपनाए रे –SS।।4978।।

(181) किसी दुखी का देखो गम, तुरत लगा दे तू मरहम –2
सबसे कहता यही, धरम –ऽऽऽ
कोई शोला बन जाये, तो तुम बन जाना शबनम –2
ऐसा ही सोच हो–3 निजधर्म बढ़ाए रे –ऽऽ।।4979।।

(182) हो प्रभावना जन जन में, करो भावना तुम मन में –2
धर्म की हो पहिचान हमें –ऽऽऽ
होवे धर्म प्रचार यहाँ, जीवन का हो सार यहाँ –2
इसके बिन दर्शन हो–3 नहिं कोई पाये रे –ऽऽ।।4980।।

(183) जिसकी तुम पर निगाह हो, उसको तेरी पनाह हो –2
छोड़े वही गुनाह जो –ऽऽऽ
राह यहाँ पा जाता है, शहंशाह हो जाता है –2
चरणों की छाया हो–3 संताप मिटाये रे –ऽऽ।।4981।।

(184) आओ धर्म करें चर्चा, हो जाती प्रभु की अर्चा –2
इसमें क्या लगता खर्चा –ऽऽऽ
घर–घर में ये मिशन चले, तब गुलशन में फूल खिलें –2
जीवन की बगिया हो–3 खुद ही महकाएँ रे –ऽऽ।।4982।।

(185) वांछित रूप दिलाता है, कामदेव बनवाता है –2
धर्म राह दिखलाता है –ऽऽऽ
तीर्थंकर भी बन जाते, धर्म तुम्हें दिल अपनाते –2
धर्मी धरम की हो–3 महिमा बतलाए रे –ऽऽ।।4983।।

(186) मुश्किल से संयोग मिले, धर्म कार्य में हृदय खिले –2
जीवन में सद्राह मिले –ऽऽऽ
धर्मकार्य में जीवन है, वरना जीवन भव वन है –2
आओ मंगलमय हो–3 एक दीप जलाएँ रे –ऽऽ।।4984।।

(187) अपने कर्मों को फोड़ो, नहीं पटाखों को फोड़ो –2
हिंसा कर्म अभी छोड़ो –ऽऽऽ
धर्म अहिंसा बतलाया, जिसको ऋषियों ने गाया –2
धर्मी की बातें हो–3 सब पाप मिटाये रे –ऽऽ।।4985।।

(188) अपने गुण से प्यार करो, आतम का शृंगार करो –2
खुद में नया विचार करो –ऽऽ
तुमको धर्म उठायेगा, सच्चा धर्म दिखाएगा –2
धर्मी को दिल में हो–3 सब कुछ दिख जाये रे –ऽऽ।।4986।।

(189) जहाँ धरम की हवा चले, वहीं घरों में दीप जले –2
रहें सभी के हृदय खिले –ऽऽ
धर्म–मर्म को जानें हम, दिल से उसको मानें हम –2
धर्मी की बातें हो–3 हर दिल को भायें रे –ऽऽ।।4987।।

(190) मिलना मेरी किस्मत है, करना मेरा कर्म है –2
इनसे ऊपर धर्म है –ऽऽ
धर्म कर्म को जान अरे, सच क्या है पहिचान अरे –2
सच को जाने बिन हो–3 सच समझ न आये रे –ऽऽ।।4988।।

(191) धरम करम कुछ अपना ले, किस्मत में कुछ लिखवा ले –2
झोली में कुछ तो पा ले –SSS
चार दिनों का मेला है, फिर तो उठता ठेला है –2
उठते जीवन में हो–3 कुछ नहिं कर पाये रे –SS।।4989।।

(192) जीवन का उपयोग करो, विषयों का मत भोग करो –2
राग रंग में नहीं फँसो–SS
गर उपयोग नहीं होगा, तो धन योग नहीं होगा –2
धन को पाकर के हो–3 निज धर्म सजाओ रे –SS।।4990।।

(193) भाव बना लो आज अरे, करवायेंगे, विधान अरे–2
जीवन ये अनमोल अरे–SS
कल को किसने देखा है, आज हि कर ले मौका है –2
मौका जीवन में हो–3 फिर नहिं मिल पाए रे–SS।।4991।।

(194) संकट में नहिं घबराओ, ताकत अपनी अजमाओ –2
धर्म आचरण को लाओ –SSS
साथ न कोई देता है, नाव स्वयं तू खेता है –2
दुनियाँ से सुख की हो–3 मत आश लगाओ रे–SS।।4992।।

(195) कर ले जो कुछ करना है, आज नहीं कल मरना है –2
कल का नही भरोसा है –SS
कर्म सही जो करते हैं, धर्म सही वो करते हैं –2
मानवता पाकर हो–3 तुम फर्ज निभाओ रे –SS।।4993।।

(196) दुक्खों से मत घबराओ, शक्ति हाथों में लाओ –2
तब ही सुन्दर जीवन हो–SSS
सबसे मिलकर प्रेम करो, धर्म वरो नहिं द्वेष करो –2
नैया खुद भव से हो–3 तुम पार लगाओ रे–SS।।4994।।

(197) धर्म धर्म चिल्लाते हैं, त्याग अभक्ष न पाते हैं –2
धर्मी यहाँ बताते हैं –SS
दया नहीं अपनाते हैं, विषय भोगते जाते हैं –2
भोगों में धर्म हो–3 नहिं कभी दिखाए रे–SS।।4995।।

(198) ध्यान में रोता है दुखड़ा, मिलता पत्थर का टुकड़ा–2
अथवा मिलता है रोकड़ा–SS
दूजे ध्यान में प्रभु मिलते, जिससे अंग–अंग खिलते–2
होगा विवेकी हो–3, चिंतामणि पाये रे–SS।।4996।।

(199) दिल को क्यूँ दे रहा दगा, दिल ही तेरा सही सगा–2
दिल से तू अब भगा–दगा–SS
दिल की दिल में ज्योति जगा, खुद को पाये जगा–जगा–2
जग में जगने की हो–3, अब ललक जगाओ रे–SS।।4997।।

(200) सफर पाँव में लाना है, डगर मोक्ष की पाना है–2
मुक्ति नगर उपजाना है–SS
करले अपना साफ जिगर, पाना है गर ज्ञान अगर–2
दिल में गर पाप हो–3, नहिं साफ दिखाए रे–SS।।4998।।

(201) जिनका दिल नहिं साफ यहाँ, वो होते नापाक यहाँ–2
उनकी होती धाक कहाँ?–ऽऽऽ
दिल को निर्मल साफ करो, प्रभुवर की नित जाप करो–2
साकी को ध्याकर हो–3, शुभ राह बनाओ रे–ऽऽ।।4999।।

(202) लाते कपड़े और गहने, दीवाली पर वो पहिनें –2
नये मकानों में रहने –ऽऽऽ
ऐसे मनती दीवाली, दिल की पर्त रहे काली –2
कैसे जेहन में हो–3 उजियारा आये रे –ऽऽ।।5000।।

(203) गौतम ज्ञानी बने सघन, बारह घंटे किया जतन –2
चार चतुष्टय पाया धन –ऽऽऽ
घर–घर तब ही दीप जले, दीवाली का पर्व चले –2
सब ही निज घर में हो–3 इक दीप जलाएँ रे –ऽऽ।।5001।।

(204) वीर प्रभु गुण गायें हम, दिल का दीप जलाएँ हम–2
दीपावली मनाएँ हम –ऽऽऽ
घर–घर में शुभ दीप जले, यही भावना भाएँ हम–2
मंजर हो ऐसा हो–3 जो खुशी बढ़ाए रे –ऽऽ।।5002।।

(205) कर्मकोश करती खाली, भ्रम तम को मेंटनवाली –2
करे उजाला दीवाली –ऽऽऽ
इसकी सुबहोशाम अरे, करो प्रभु के नाम अरे –2
तब ही इस दिल में हो–3 दीपक जल पाये रे –ऽऽ।।5003।।

(206) दिल का दीप जलाएगा, घर रौशन हो जायेगा –2
बाग स्वयं महकाएगा –ऽऽऽ
अँधियारे में जिया अगर, कैसे अच्छा कहें जिगर –2
तम के घेरे में हो–3 क्यूँ ठोकर खाये रे –ऽऽ।।5004।।

(207) दिल में होवे दीवाली, आ जाये तब खुशहाली –2
राह मिले मंजिल वाली –ऽऽऽ
दिल में अगर अंधेरा है, तो फिर यहाँ सवेरा है –2
दीवाली पर हम हो–3 सब जगमग दीप जलाएँ रे –ऽऽ।।5005।।

(208) तम में जी घबराता है, अंधापन ले आता है –2
सबको ही दुखदाता है –ऽऽऽ
रोशनमय दिल जो करता, वही अंधेरा कम करता –2
दिल में अँधियारा हो–3 गम खूब बढ़ाए रे –ऽऽ।।5006।।

(209) प्रभु को लाडू चढ़ाता है, लड्डू वो ही पाता है –2
वो ही मौज उड़ाता है –ऽऽऽ
उसको सब कुछ दिखता है, वही भाग्य को लिखता है –2
उसकी खिदमत ही हो–3 अपना भागय बनाए रे –ऽऽ।।5007।।

(210) मिट्टी का हम बने दिया, मुझे खुदा ने खूब दिया –2
दिया न जलता हमें दिया –ऽऽ
दिया न जलता पाएगा, दिया नहीं जल पाएगा –2
दिल के देते ही हो–3 दीपक जल जाये रे –ऽऽ।।5008।।

(211) शुद्धातम को देख जरा, उसमें ही अध्यात्म भरा–2
परमातम तो बहुत खरा–SSS
कर ले निर्मल दृष्टि जरा, मिट जायेगी, स्वयं जरा–2
वरना यह तन ही हो–3, जर–जर हो जाये रे–SS।।5009।।

(212) उनको खुदा सलामत रख, जो हमसे करते नफरत–2
ऐसी दुआ करें हर वक्त–SSS
प्रेम नहीं नफरत करते, कुछ तो वो हमसे करते–2
ऐसी नफरत में हो–3 भी प्यार दिखाए रे–SS।।5010।।

(213) गम की आश सजोते हैं, पीछे गम में रोते हैं–2
व्यर्थ ही बोझा ढोते हैं–SSS
पाकर सब कुछ खोते हैं, लोग भी ऐसे होते हैं–2
गम की राहों में हो–3, नहिं खुशी दिखाये रे–SS।।5011।।

(214) घोर विपत्ति पाता है, निज सम्पत्ति गँवाता है–2
गम से गम उपजाता है–SSS
शांतिनाथ का करें स्तवन, उनकी मिटती सभी तपन–2
चरणों की धूलि हो–3, सुख शांति दिलाए रे–SS।।5012।।

(215) अर्जित करने में दुख हो, रक्षित करने में दुख हो–2
जिसको देने में दुख हो–SSS
कौन कहे वह धन अच्छा, कहता है वो है बच्चा–2
धन ही मानव में हो–3, भय रोग बढ़ाए रे–SS।।5013।।

(216) धू–धू कर वन आग लगी, घबराकर पशु भगे सभी–2
तरु पे मन की सोच तभी–SS
आग में ये जल जाएँगे, भारी दुक्ख उठाएंगे–2
अपना नहिं सोचे हो–3, हम भी जल जायेंगे–SS।।5014।।

(217) गम ही गम में रहते हैं, खुशी–2 गम सहते हैं –2
फिर भी उसे न तजते हैं –SS
दुख को ही सुख माना है, दुख का ही दीवाना है –2
जीवन पाने की हो–3 अब ललक जगाओ रे–SS।।5015।।

(218) कहीं नहीं आराम यहाँ, गम ही गम का काम यहाँ –2
पिया मोह का जाम यहाँ –SS
नाम जपा नहिं राम यहाँ, नहीं मिले विश्राम यहाँ–2
अपने लम्हों में हो–3 सुख शांति दिखाए रे –SS।।5016।।

(219) जब जब हो संयोग यहाँ, तब तब गम के योग यहाँ –2
रोग–शोक विषभोग यहाँ –SS
तीन योग से छोड़ो तुम, इनसे मुख को मोड़ो तुम –2
तब ही मज़हब का हो–3 शुभ मर्म समाए रे –SS।।5017।।

(220) सारे हैं गमगीन यहाँ, दिल से हैं नमकीन यहाँ–2
कोइ नहीं स्वाधीन यहाँ–SSS
गमगीनों पर गम मिलता, तुमको नहीं यकीन यहाँ–2
गम की दुनियाँ में हो–3 क्यूँ गमी बढ़ाए रे–SS।।5018।।

(221) अपने में जो डूबा है, वो दुनियाँ से ऊबा है–2
दुनियाँ उसे अजूबा है–ऽऽ
देखे, पर न देखता है, बोले–पर न बोलता है–2
चलने पर भी वह हो–3, ठहरा नजराए रे–ऽऽ।।5019।।

(222) जीव जहाँ पर रहता है, प्रीति वहीं पर करता है–2
उसी जगह पर रमता है–ऽऽऽ
फिर वह कहीं न जाता है, वहीं उसे फिर भाता है–2
चाहे वह कीड़ा हो–3, मल का बन जाये रे–ऽऽ।।5020।।

(223) आज नहीं कल जाना है, किसका कौन ठिकाना है?–2
क्यों इससे अंजाना है–ऽऽऽ
कब तक प्राण गँवाओगे, खुद को यहाँ भुलाओगे–2
दुनियाँ के काँटे हो–3, चुभकर दर्द बढ़ाएँ रे–ऽऽ।।5021।।

(224) मुझमें कैसा सिला रहा, दिल को खुद से गिला रहा–2
फिर भी मूरख खिला रहा–ऽऽऽ
यही वजह तिलमिला रहा, दिल को खुद से मिला रहा–2
दुनियाँ की खातिर हो–3, जल–जल मिट जाये रे–ऽऽ।।5022।।

(225) दुनियाँ एक तमाशा है, पाप–पुण्य का पाशा है –2
आशा और निराशा है –ऽऽऽ
जिसको जो भी भासा है, उसने वही तराशा है –2
अपने अनुभव पर हो–3 पग बढ़ता जाये रे –ऽऽ।।5023।।

(226) दुनियाँ के जंजालों में, रहे यहाँ कंगालों में –2
गमे तंगमय हालों में –ऽऽ
फँसो नहीं जग जालों में–कंगालों की चालों में –2
खुद में जो जलता हो–3 जंजाल मिटाये रे –ऽऽ।।5024।।

(227) जीवन बहु अनमोल है, सारी दुनियाँ गोल है –2
तन भ्रमने का खोल है –ऽऽ
दुनियाँ गले लगाएगा, तो अनमोल न पाएगा –2
गम को अपनाकर हो–3 क्यूँ शूल बिछाए रे–ऽऽ।।5025।।

(228) चंद समय का खेला है, तन अपना इक ठेला है –2
दुनियाँ दिखती मेला है –ऽऽ
जीतेगा तो पार हुआ, हारा बंटाढार हुआ –2
ऐसा अब खेलो – हो–3 भव पार हो जाये रे–ऽऽ।।5026।।

(229) हो जाये कब साँझ यहाँ, अपना आँगन माँझ यहाँ–2
बना नहीं मन बाँझ यहाँ–ऽऽऽ
आँखों को तू आँझ अरे त्यागो मन का राग अरे–2
कर ले जो करना हो–3 कल, कल नहिं आये रे–ऽऽ।।5027।।

(230) करना है वो आज करो, कल पर मत विश्वास करो–2
आज करो वो अभी करो–ऽऽऽ
कल को किसने देखा है, पल का नहीं भरोसा है–2
कल–कल करके तू हो–3, क्यों अकल गँवाए रे–ऽऽ।।5028।।

(231) भोगी मस्त दुकान में, योगी अपने ध्यान में–2
ज्ञानी धर्मी ज्ञान में–SS
भोगी रोकर जाता है, धर्मी हँसता जाता है–2
दोनों में इतना हो–3, ही फर्क दिखाए रे–SS।।5029।।

(232) जो नहिं फर्ज़ निभाता है, वो ही कर्ज़ बढ़ाता है–2
अपनी तर्ज़ डुबाता है–SS
अपना मर्ज़ भूलता है, अघ में वही फूलता है–2
फर्ज़ी हो फर्ज़ हो–3, तो तर्ज़ न पाये रे–SS।।5030।।

(233) करता है करने वाला, लिखता है लिखने वाला–2
देता है देने वाला–SSS
लेने वाला लेता है, फर्ज अदा कर लेता है–2
अवसर मिलते ही हो–3 तुम फर्ज़ निभाओ रे–SS।।5031।।

(234) तन मन ही नहिं देते हैं, संस्कार भी देते हैं –2
फिर भी कुछ नहिं लेते हैं –SSS
भूलो मत वे मात–पिता, जिनने तुमको बड़ा किया –2
उनका तुम आकर हो–3 अब कर्ज चुकाओ रे–SS।।5032।।

(235) फूट, हमें परतंत्र करे, मगर एकता मंत्र बने–2
वरदानों का यंत्र बने–SSS
फूट, बड़ी अभिशाप यहाँ, मन को दे संताप यहाँ–2
दो पल का जीवन हो–3, क्यों धर्म मिटाए रे–SS।।5033।।

(236) फूट, तो विष का काम करे, प्राणों का संघात करे–2
फूट, गधे की जात अरे–SSS
नीति पुरानी गोरों की, मायावी कमजोरों की–2
रह लो मिल जुलकर हो–3, ये धर्म बताए रे–SS।।5034।।

(237) फूट अकल का द्वार नहीं, शक्ति का भण्डार नहीं–2
फूलों का ये हार नहीं–SSS
फूट–फूटकर रोता वो, बीज फूट के बोता जो–2
मिल करके रहना हो–3, महावीर बताएँ रे–SS।।5035।।

(238) फूट, बढ़ाती भूलों को, जीवन में प्रतिकूलों को–2
देती भूल उसूलों को–SSS
हमें एकता प्यारी है, सुंदर सी फुलवारी है–2
ये ही गुरुमंत्र हो–3, गुरुदेव बताएँ रे–SS।।5036।।

(239) फूट में मिलता ज्ञान कहाँ, अपना ही उत्थान कहाँ–2
तिकड़म बाजी काम यहाँ–SSS
अहंकार को सिद्ध करे, जिंदा होकर जिये, मरे–2
मर–मरके जीता हो–3, फिर मरता जाये रे–SS।।5037।।

(240) फूट पराजय देती है, पैदा भय कर देती है–2
चैन न इकपल देती है–SSS
घर को ये बर्बाद करे, कभी नहीं इंसाफ करे–2
स्वारथ के सिक्के हो–3, बस अहं बढ़ाएँ रे–SS।।5038।।

(241) फूट का हो जब अंगारा, काम बिगड़ जाता सारा–2
मन रहता खारा–खारा–SSS
फूट में किस्मत फूटेगी, चलती गाड़ी टूटेगी–2
प्रेम से दिल में हो–3, अमृत भर जाये रे–SS।।5039।।

(242) भले रहे वो व्यर्थ पड़ी, चलती रहती सदा घड़ी –2
सीख दिलाती बहुत बड़ी –SSS
क्षण–क्षण तेरी आयु ढले, फिर भी तू क्यों नहिं संभले –2
तेरी ही बुद्धि हो–3 तेरा साथ निभाए रे –SS।।5040।।

(243) गल्ती को गल्ती माने, क्या है ज्ञान वही जाने –2
गलत सही वो पहचाने –SSS
गल्ती समझ में आयेगी, तब गलती गल पायेगी –2
गल्ती तब फलती हो–3 जब समझ न आये रे–SS।।5041।।

(244) किया न गम पर कभी गिला, गम का हरदम चला सिला–2
खुशियों का नहिं सफर मिला–SS
गुल सा दिल को अभी खिला, दिल को दिल का भाव दिला–2
ऐसी कला ही हो–3, कालुष्य मिटाये रे–SS।।5042।।

(245) बीज गमों के बोता है, समय गमों में खोता है–2
फिर क्यों पीछे रोता है–SSS
पहले जग में सोता है, गम का बोझा ढोता है–2
गैरों में हरदम हो–3, तू लगन लगाये रे–SS।।5043।।

(246) खुद में लगन लगा ले तू, जीवन स्वयं बना ले तू–2
मजहब को अपना ले तू–SSS
राग–द्वेष हटा ले तू, गीत स्वयं के गा ले तू–2
जीवन के हर पल हो–3, बहुमूल्य बताएँ रे–SS।।5044।।

(247) दिल को पत्थर बना लिया, खंजर खुद पर चला दिया–2
जख्म जिगर में बढ़ा लिया–SSS
घायल हुए घूमते हम, नहीं धर्म की है मरहम–2
दर–दर के मारे हो–3, गम खूब उठायें रे–SS।।5045।।

(248) इंतकाम दिल लाओगे, इंतजाम कर जाओगे–2
सुख अंजाम–ए–पाओगे–SS
आयेगा पैगाम तभी, नहिं होगा बदनाम कभी–2
अपना अपने में हो–3, इक दिन मिल जाये रे–SS।।5046।।

(249) जीने का नहिं हुनर यहाँ, पीता रहता जहर यहाँ–2
मिलता अपना शहर कहाँ–SSS
गम में मिलता सफर कहाँ?, अपनी होती सहर कहाँ?–2
गम की गलियों में–3, नहिं राह दिखाए रे–SS।।5047।।

(250) जो गम का अर्जन करता, पंच परावर्तन करता –2
लाखों जन्म मरण करता –SSS
सभी गुनाह विसर्जन कर, पहले मन से सर्जन कर –2
गम के अर्जन से हो–3 गम कैसे जाये रे –SS।।5048।।

(251) काँटों में जो फूल खिले, वे ही दिल को लगे भले –2
वैसे ही जो गमे खिले –SSS
गम में तुम हँसना सीखो, तम में तुम जलना सीखो –2
तब ही दुनियाँ को हो–3 तेरा नाम सुहाए रे –SS।।5049।।

(252) फ़िकर न पर की करना है, फ़कत फ़िकर निज करना है–2
(दया) फज़ल सभी पर करना है –SS
खुशगवार हो फ़िजा सभी, मिटे गमों की कज़ा सभी–2
सीरत कर हासिल हो–3 कोहराम हटाये रे –SS।।5050।।

(253) हो नसीब किरदार जभी, हक का वो हकदार तभी –2
अभी–अभी या मिले जभी –SS
हिकमत तू बुलंद कर ले, दर्द भरा दिल खुश कर ले –2
जिल्लत से हटकर हो–3 जन्नत को पाओ रे –SS।।5051।।

(254) जी की जी में रह जाये, वो जी में नहिं रह पाये –2
हरदम जी ये घबराये –SSS
जी को जो ठुकराएगा, गम में वो फँस जायेगा –2
पाता वही जो हो–3 जी को अपनाये रे –SS।।5052।।

(255) बिना ज्ञान के करे क्रिया, दुखी हुआ तब यहाँ जिया –2
ज्ञानामृत क्यों नहीं पिया –SSS
ज्ञान सहित हो अगर क्रिया, तब ही अपना मिले ठिया –2
अपने घर के बिन हो–3 सुख कहीं न पाये रे –SS।।5053।।

(256) पूरा जीवन पाप करें, सारे दिन गम में गुजरे –2
ऐसा सारे गृहस्थ करें –SSS
एक भी दिन मुनि बन जाये, सारे पाप मिटा जाये –2
गृहस्थो जब जाओ हो–3 मुनि बनकर जाओ रे–SS।।5054।।

(257) गुण से रूप निखरता है, शील सदा आचरता है–2
आती ज्ञान प्रखरता है–SSS
क्यों धन में तू मरता है, देता ज्ञान निपुणता है–2
गुण की चाहत में हो–3 गुण मिलते जायें रे–SS।।5055।।

(258) जूते कपड़े नाम यहाँ, धन से हो पहिचान यहाँ –2
सच में वो इंसान कहाँ –SSS
गुण से ही इंसान बने, सरल हृदय ईमान बने –2
गुण की चाहत में हो–3 भगवान दिखाए रे –SS।।5056।।

(259) गुरु निंदा मुख लाएगा, वह मुर्दा कहलाएगा–2
कभी नहीं उठ पाएगा–SSS
जिंदा उनको कहते हैं, जो गुरु के संग रहते हैं–2
जिन गुरु की भक्ति हो–3, भव पार कराये रे–SS।।5057।।

(260) करता जो गुरु निंदा है, वो इंसां कब जिंदा है–2
हमको लगता मुर्दा है–SSS
जिसका मन ही गंदा है, मानी है भिखमंगा है–2
गुरु निंदा से बढ़कर हो–3, नहिं पाप दिखाये रे–SS।।5058।।

(261) कलह नष्ट कर देता घर, मित्र मिटाते खोटे स्वर –2
खोटे काम मिटाता नर –SSS
गुरु निन्दा से पुत्र मिटे, पत्नि और परिवार मिटे –2
होवे अधर्म हो–3 तो सब मिट जाये रे –SS।।5059।।

(262) बुद्धि से जो मंद रहे, उसे हमेशा द्वन्द रहे–2
मतवाले स्वच्छन्द रहे–SSS
जगह–जगह ठोकर खाते, कहीं नहीं इज्जत पाते–2
कर ले गुरु सेवा हो–3 सद्बुद्धि दिलाये रे–SS।।5060।।

(263) हाथों से नहिं दान दिया, नहीं वेद का ज्ञान किया–2
हरदम धन पर ध्यान किया–SSS
गुरुसेवा में नहीं गया, तीरथ करना भूल गया–2
ऐसे नर–नारी हो–3, अति निंद बताये रे–SS।।5061।।

(264) पहले पात्र परखते हैं, शिष्य तभी गुरु कहते हैं –2
फिर गुण से भर देते हैं –SSS
गुरुवर हैं सबसे भारी, शिष्यों को गुरु उपकारी –2
गुरु ही शिष्यों को हो–3 सद्राह लगायें रे –SS।।5062।।

(265) गुरु को दिल में बिठा लिया, चरणों में सर झुका दिया–2
गुरु ने जलता दिया दिया–SSS
गुरुवर ज्योति दिवाकर हैं, गुरु गंगाजल सागर हैं–2
गुरु की मूरत में हो–3 भगवान् दिखाये रे–SS।।5063।।

(266) गुरु ही मेरे विधान हैं, गुरु ही मुझे प्रधान हैं–2
गुरु ही मेरे प्राण हैं–SSS
गुरु धड़कन हैं शान हैं, गुरुवर ही भगवान हैं–2
गुरुवर से बढ़कर हो–3 नहिं कोई दिखाए रे–SS।।5064।।

(267) गुरुओं का सम्मान हो, कलह न नाम निशान हो–2
सबके दिल प्रभु नाम हो–SS
लक्ष्मी वहीं निवास करे, जहाँ धरम का वास अरे–2
आदर में आकर हो–3 लक्ष्मी बस जाये रे–SS।।5065।।

(268) माँ ने तन को जन्म दिया, गुरु ने मन को जन्म दिया–2
प्रभु ने आतम जन्म दिया–SSS
माँ से बाहर आँख मिले, गुरु से अंतस् आँख मिले–2
गुरु ही जीवन को हो–3 वरदान बनाएँ रे–SS।।5066।।

(269) दिले भावना होती है, तभी प्रार्थना होती है–2
यही साधना होती है–SSS
आराधन संजीवन है, गुण पाने का गुलशन है–2
गुण की आराधन हो–3 भव पार लगाए रे–SS।।5067।।

(270) जिन गुरु महिमा न्यारी है, ऋषियों ने उच्चारी है–2
पापाचार निवारी है–SSS
भोग विषय भव क्यारी है, वीतराग फुलवारी है–2
जो भी जो चाहे हो–3 उसको अपनाए रे–SS।।5068।।

(271) गुरू बिना कल्याण नहीं, गुरू बिना शुभ ध्यान नहीं–2
गुरू बिना सम्मान नहीं–ऽऽ
गुरू बिना सत ज्ञान नहीं, गुरु बिना निर्वाण नहीं–2
गुरू का आशीष हो–3 हर काम बनाये रे–ऽऽ।।5069।।

(272) रत्नत्रय की ज्योति जले, कर्मदाह सब दुःख टले–2
भाव बनें जब भले–भले–ऽऽ
कदम मुक्ति की राह चले, जीवन अपना नहीं छले–2
मंगल पाने की हो–3 अब आश जगाओ रे–ऽऽ।।5070।।

(273) किस्मत हो तो रंग है, सद्गुरु का सत्संग है–2
दिल में नई उमंग है–ऽऽऽ
पावन वही प्रसंग है, जहाँ गुणों का रंग है–2
मंजिल का रस्ता हो–3 गुरुवर बतलाएँ रे–ऽऽ।।5071।।

(274) पर को पाकर भूले हैं, भूल भूलकर झूले हैं–2
भूले, फिर भी फूले हैं–ऽऽ
स्व–पर भेद विज्ञान नहीं, खुद की है पहिचान नहीं–2
गुरु के चरणों में हो–2 सब कुछ मिल जाये रे–ऽऽ।।5072।।

(275) गुरुओं का सम्मान करो, उनसे चेतन ज्ञान वरो–2
दिल से तुम बहुमान करो–ऽऽऽ
समय निकल गर जाएगा, फिर पीछे पछताएगा–2
फूल सा जीवन हो–3 क्यूँ शूल बनाये रे–ऽऽ।।5073।।

(276) जब जब गुरू बुलाते हैं, रस्ता नई दिखाते हैं–2
देकर ज्ञान चलाते हैं–ऽऽ
दिल में अलख जगाते हैं, शंखनाद कर जाते हैं–2
गुरु की गुरुता को हो–3 अब गुरु सिखलायें रे–ऽऽ।।5074।।

(277) कीचड़ में ज्यों कमल रहे, गीतों में ज्यों गजल रहे–2
वैसे ही गुरु अमल रहे–ऽऽ
जिनकी चादर अम्बर है, जिनका रूप दिगम्बर है–2
ऐसे गुरुवर ही हो–3 शिवराह दिखायें रे–ऽऽ।।5075।।

(278) रागी नहीं विरागी हों, सत्यगुणों के पागी हों–2
दिल से जो वीतरागी हों–ऽऽ
ऐसे गुरु का संग करो, दिल में गुरु का अंश वरो–2
गुरुवर का प्यार हो–3 इक दीप जलाए रे–ऽऽ।।5076।।

(279) गुरु बिन रावण नरक गया, गुरु बिन चक्री नरक गया–2
गुरु बिन प्राणी डूब गया–ऽऽऽ
गुरु चरणों में जन्नत है, गुरु से माथा उन्नत है–2
गुरुवर हम सबका हो–3 भव भ्रमण मिटायें रे–ऽऽ।।5077।।

(280) गुरुओं का अभिनंदन हो, चरणों में अभिवंदन हो–2
उन्हें देख उर नंदन हो–ऽऽऽ
चरणों की रज चंदन हो–2, गुरु से ही निर्बन्धन हों–2
गुरु से दिल आँगन हो–3 गुलशन बन जाये रे–ऽऽ।।5078।।

(281) आओ गुरु को जानें हम, दिल से गुरु की मानें हम–2
अपनी कभी न तानें हम–ऽऽ
गुरु जब दिल में आते हैं, दिल का दीप जलाते हैं–2
गुरु का इशारा हो–3 हर दाग मिटाये रे–ऽऽ।।5079।।

(282) गुरुवर से मिल जाना है, खिल–खिल कर खिल जाना है–2
हरदम ध्यान लगाना है–ऽऽऽ
गुरु ही भाग्य विधायक हैं, गुरु ज्ञाता हैं, ज्ञायक हैं–2
गुरुवर की महिमा हो–3 नहिं शब्द बतायें रे–ऽऽ।।5080।।

(283) गुरु असीम गुण सागर हैं, गुरु ही ज्ञान दिवाकर हैं–2
गुरु करुणा की गागर हैं–ऽऽऽ
गुरुवर ही निष्काम हैं, गुरु ही मुक्ति धाम हैं–2
गुरु ही चंदन सा हो–3 जीवन महकाएँ रे–ऽऽ।।5081।।

(284) चरणों में झुकते रहना, सेवा गुरु करते रहना–2
भाव विनम्र सदा रखना–ऽऽऽ
ऊपर उठता जाएगा, फूला फलता पाएगा–2
हँस करके गुरुवर हो–3 गर हाथ उठायें रे–ऽऽ।।5082।।

(285) जिस पर गुरु की नजर पड़ी, उसकी बिगड़ी सभी बनी–2
बरसे उस पर घणी मनी–ऽऽऽ
गुरु चरणों में जन्नत है, गुरु से जीवन उन्नत है–2
गुरु ही सागर से हो–3 तट पर ले जाएँ रे–ऽऽ।।5083।।

(286) गुरु ही सुन्दर शिल्पी हैं, कल्पवृक्ष जिन कल्पी हैं–2
गुरु ही बिना विकल्पी हैं–ऽऽऽ
जहाँ इनायत गुरु की हो, उसके काम सफल सब हों–2
गुरु के चरणों में हो–3 दुनियाँ झुक जाए रे–ऽऽ।।5084।।

(287) गुरु के बिना अधूरा है, माटी जैसा चूरा है–2
जीवन लगता कूड़ा है–ऽऽऽ
गुरु ही यत्न कराते हैं, तीनों रत्न दिलाते हैं–2
गुरु की कृपा से हो–3 हम मौज उड़ाएँ रे–ऽऽ।।5085।।

(287) गुरु के लिए तरसते हैं, हर्षित नयन बरसते हैं–2
उनके हृदय महकते हैं–ऽऽऽ
गुरु ही शिष्य परखते हैं, गुरु से शिष्य महकते हैं–2
गुरुवर की पूजा हो–3 सब रोग मिटाये रे–ऽऽ।।5086।।

(289) गुरु दिल की झंकार हैं, गुरु मीठी टंकार हैं–2
गुरु वाणी के तार हैं–ऽऽऽ
गुरु दुनियाँ से पार हैं, गुरु गुण की मीनार हैं–2
गुरुवर की वाणी हो–3 गुरुमंत्र कहाये रे–ऽऽ।।5087।।

(290) गुरु चलना सिखलाते हैं, मंजिल हमें दिखाते हैं–2
जीवन सुधा पिलाते हैं–ऽऽ
गुरु प्रभु से मिलवाते हैं, गुरु ही राज बताते हैं–2
गुरु की आज्ञा में हो–3 सब वेद समाये रे–ऽऽ।।5088।।

(291) गुरु पर जो विश्वास करें, उनको गुरुवर पार करें–2
ऐसा सारे वेद कहें–ऽऽ
गुरु श्रद्धा के गीत हैं, गुरु दुखियों के मीत हैं–2
गुरुवर से बढ़कर हो–3 नहिं कोइ दिखाये रे–ऽऽ।।5089।।

(292) ज्ञानी देता ज्ञान को, अज्ञानी, अज्ञान को–2
रखना हरदम ध्यान को–ऽऽ
जिस पर जो गुण होता है–सेवा में वह देता है–2
जग में प्रसिद्ध हो–3 यह बात बतायें रे–ऽऽ।।5090।।

(293) गुरु साहिल, गुरु प्यारे हैं– गुरु ही सही सहारे हैं–2
गुरु चंदा, हम तारे हैं–ऽऽ
गुरु जीवंत सितारे हैं, मंजिल गुरु हमारे हैं–2
गुरु की कृपा से हो–3 हर गम मिट जाये रे–ऽऽ।।5091।।

(294) गुरु ब्रह्मा गुरु शंकर हैं, गुरु ही विष्णु हितंकर हैं–2
गुरुवर ही तीर्थंकर हैं–ऽऽऽ
गुरु धरती सम अम्बर हैं, गुरुवर परम दिगम्बर हैं–2
गुरु से धड़कन में हो–3 खुश्बू भर जाये रे–ऽऽ।।5092।।

(295) चाँद सितारों से बढ़कर, गुरुवर हैं जैसे दिनकर–2
दें सबको जीवंत सफर–ऽऽऽ
मंजिल राह दिखाते हैं, गिरता उसे उठाते हैं–2
गुरु गम सा जीवन हो–3 गुलजार बनाएँ रे–ऽऽ।।5093।।

(296) गुरुवर मेरे दर्पण हैं, सब कुछ उन्हें समर्पण है–2
गुरुवर दिल में हरक्षण हैं–ऽऽ
गुरु से जीवन मधुवन है, गुरु से खिलता गुलशन है–2
गुरुवर सूरज हैं हो–3 अँधियार मिटायें रे–ऽऽ।।5094।।

(297) जहाँ हृदय सिर झुक जाये, वहीं सभी कुछ पा जाये–2
झुके बिना नहिं मिल पाये–ऽऽ
गुरु ज्ञानी, हम श्रद्धानी, गुरु से मिलती जिनवाणी–2
गुरु ही भव्यों को हो–3, शुभ राह दिखायें रे–ऽऽ।।5095।।

(298) दिल में ये अरमान करें, हम अच्छे इंसान बनें–2
भव से नैया पार करें–ऽऽ
गुरु सेवा में भाव धरें, तिरते गुरु का संग करें–2
गुरुवर खेवटिया हो–3, नौका पार लगायें रे–ऽऽ।।5096।।

(299) संकट में ये प्राण हैं, कोइ न दिखता त्राण है–2
सभी तरफ विषवाण हैं–ऽऽऽ
गुरुवर ही कल्याण हैं, इनमें ही सद्ज्ञान है–2
गुरु ही इस जग में हो–3, गुणवान दिखाएँ रे–ऽऽ।।5097।।

(300) शरण मिले वह चंगा है, संत धर्म की गंगा है–2
शरण न तो भिखमंगा है–ऽऽऽ
संत शांत दिल होता है, संत शांति को बोता है–2
गुरु से धरती पर हो–3, खुशबू महकाए रे–ऽऽ।।5098।।

(301) गुरु नहिं होते धरती पर, उड़ने को नहिं मिलते पर–2
नहिं हो पाता भेद स्व–पर–SSS
गुरु से प्रीति लगाएगा, दुनियाँ में सब पाएगा–2
महिमा गुरु गाये हो–3, मंजिल पा जाये रे–SS।।5099।।

(302) मन्दिर हृदय बनाएँगे, उसमें गुरु बुलाएँगे–2
इक तस्वीर लगायेंगे–SSS
अपना दर्द बताएँगे, सारे दुक्ख गलाएँगे–2
तब ही गुरुवर का हो–3, आशिष फल पाये रे–SS।।5100।।

(303) संतो से सम्मान मिले, प्रामाणिक सद्ज्ञान मिले–2
दुनियाँ में यशकीर्ति मिले–SS
संशय सारे दूर हटें, शांति समाधि हृदय बसे–2
देवों से पूज्य हो–3, गुरुभक्त बताएँ रे–SS।।5101।।

(304) गुरु से लगन लगा ले तू, किस्मत को चमका ले तू–2
राज धर्म का पा ले तू–SS
गुरु उठते इंसान हैं, चलते इक भगवान हैं–2
गुरु ही कीचड़ में हो–3, शुभ फूल खिलाएँ रे–SS।।5102।।

(305) गुरुवर का जब प्यार मिले, उसका सब संसार मिटे–2
उर में गुणमय फूल खिलें–SSS
गुरु मंजिल के साधक हैं, आराधन आराधक हैं–2
गुरु ही जीवन में हो–3, दृग ज्योति जलाएँ रे–SS।।5103।।

(306) गुरुवर मुझे पढ़ाओ तुम, ज्ञानी मुझे बनाओ तुम–2
भव से पार लगाओ तुम–SSS
बन जायें हम शिष्य सुगम, हो जाएँ सब कर्म खतम–2
गुरुवर की छाया हो–3, भव रोग नशाये रे–SS।।5104।।

(307) प्रथम गुरू माँ रक्षक है, गुरू दूसरा शिक्षक है–2
तीजा सद्गुरु मुनिवर है–SS
तीनों हमें जगाते हैं, गुण से भरे बनाते हैं–2
इनका आदर कर हो–3, तो आदर पाये रे–SS।।5105।।

(308) करता संत प्रहार यहाँ, होता उसमें प्यार यहाँ–2
जीवन का उद्धार यहाँ–SS
दुष्टों का हो प्यार जिसे, तो समझो तलवार उसे–2
गुरुवर की मार हो–3, उत्थान कराये रे–SS।।5106।।

(309) लोहे जितने आते हैं, गुरुवर स्वर्ण बनाते हैं–2
पारसमणि कहलाते हैं–SS
दिल सागर से गहरा है, गम का हरदम पहरा है–2
गुरु ही जीवन को हो–3, उद्योत बनाएँ रे–SS।।5107।।

(310) छूते गुरु के चरण यहाँ, करते आशीष वरण यहाँ–2
होता गम तब क्षरण यहाँ–SS
चरण–आचरण लाते हैं, सच्चा मार्ग दिखाते हैं–2
गुरुवर अंधेपन हो–3, को दूर भगायें रे–SS।।5108।।

(311) गुरु बोलें अतिशयकारी, होता सदा असरकारी-2
बनता वही चमत्कारी-ऽऽ
अनुभव से गुरु बोले हैं-इसीलिए पट खोले हैं-2
गुरु ही गुरुता का हो-3, सिद्धांत पढ़ाएँ रे-ऽऽ।।5109।।

(312) गुरुवर ही ध्रुवतारा हैं, नभ में खिले सितारा हैं-2
गुरु ही रत्न पिटारा हैं-ऽऽऽ
गुरुवर पास बुलाते हैं, शिवपुर हमें दिलाते हैं-2
गुरु ही शिष्यों के हो-3, गम गमन करायें रे-ऽऽ।।5110।।

(313) गुरु शिष्यों के साधन हैं, गुरु दिल में आराधन हैं-2
गुरु जीवन में सावन हैं-ऽऽ
गुरु नभ में उड़ते पक्षी, जिनकी हर चर्या अच्छी-2
गुरु ही भव्यों का हो-3, सौभाग्य जगायें रे-ऽऽ।।5111।।

(314) गुरुवर परम विरागी हैं, मोक्ष महल की चाबी हैं-2
सर्व गुणों के पागी हैं-ऽऽ
गुरुवर ही वरदान हैं, गुरु सच्चे भगवान हैं-2
गुरु की कृपा ही हो-3, हर काम बनाए रे-ऽऽ।।5112।।

(315) गुरु गुलशन के माली हैं, मोक्ष द्वार की ताली हैं-2
गुरु विषयों से खाली हैं-ऽऽ
गुरु दिल से आकाश हैं, गुरु गुणके आभास हैं-2
गुरु ही मंजिल का हो-3, सच पता बताएँ रे-ऽऽ।।5113।।

(316) जिसने धर्म किया सच्चा, उसको मिला जिगर अच्छा-2
उसकी करें प्रभु रक्षा-ऽऽ
नहीं मिला तो पाओ तुम, मिला उसे अपनाओ तुम-2
मंजिल का रस्ता हो-3, गुरु-धर्म बताएँ रे-ऽऽ।।5114।।

(317) पहले पात्र परखते हैं, शिष्य तभी गुरु कहते हैं-2
फिर गुण से भर देते हैं-ऽऽ
गुरुवर हैं सबसे भारी, शिष्यों को गुरु उपकारी-2
गुरु ही शिष्यों को हो-3, सद्राह लगायें रे-ऽऽ।।5115।।

(318) गुरु नहिं होते धरती पर, जल जाता ये खुद अम्बर-2
त्राहि-त्राहि मचती भू-पर-ऽऽऽ
गुरु ही हमको पाल रहे, अच्छे गुण में ढाल रहे-2
शिष्यों को हल्का हो-3, बस गुरु बनाएँ रे-ऽऽ।।5116।।

(319) गुरु भक्ति दिलशाद है, सबको आशीर्वाद है-2
दिल को यही प्रसाद है-ऽऽऽ
गुरु सेवा के बिन जीना, मन में इक अवसाद है-2
खोटी नजरों को हो-3, गुरु नज़र मिटाये रे-ऽऽ।।5117।।

(320) गुरु का चिह्न मुकुट पर हो, उसके दिल में ईश्वर हो-2
कर्म उसी के जर-जर हों-ऽऽऽ
विजय जहाँ में पाता वो, अपना वैभव पाता जो-2
गुरु की महिमा को हो-3 मुख कैसे गाये रे-ऽऽ।।5118।।

(321) धरती जिसे बिछौना है, नभ इक छत का कौना है-2
कोमल कर सिरहाना है-SSS
नहीं किसी से कुछ लेना, कर्ज न गैरों का देना-2
ऐसे वो मुनिवर हो-3 भव पार कराए रे-SS।।5119।।

(322) गुरु गुणों का कूप हैं, दिव्य ज्ञानमय रूप हैं-2
मंगल परम अनूप हैं-SSS
गुरु गुण की फुलवारी हैं, शिवपुर के व्यापारी हैं-2
गुरु सा दुनियाँ में हो-3 नहिं मुझे दिखाए रे-SS।।5120।।

(323) गुरु प्रतिमा हो पत्थर पर, करें वंदना नारी-नर-2
सभी जानते हैं अक्सर-SSS
चेतनता जो साधु धरे, उसकी महिमा कौन कहे-2
साधु में हमको हो-3 भगवान् दिखाए रे-SS।।5121।।

(324) ज्यों सूरज उद्योत करे, त्यों गुरुवर उद्योत करे-2
एक जगत इक दिले करे-SSS
रवि संसार दिखाता है, गुरु आनंद जगाता है-2
गुरु ही हर दिल में हो-3 इक दीप जलाए रे-SS।।5122।।

(325) मुद्रा ही इतनी प्यारी, लगे सभी को मनहारी-2
परम दिगम्बर सुखकारी-SSS
ऐसे गुरु से बात करें, ऐसा लगता फूल झरें-2
गुरु के दो शब्द हो-3 दिल फूल बनाए रे-SS।।5123।।

(326) जिन-गुरु का सत्कार जहाँ, लक्ष्मी का आवास वहाँ-2
होता दिले प्रकाश वहाँ-SSS
गुरुवर का बहुमान तुम्हें, देगा खुद सम्मान तुम्हें-2
आदर से आदर हो-3 खुद ही मिल जाये रे-SS।।5124।।

(327) महापुरुष का गुणकीर्तन, देता हमको विद्याधन-2
तर्कशक्ति मय नव चिंतन-SSS
होता तब ही ज्ञान प्रखर, ऋषियों के ये बोल अमर-2
गुण का अभिवंदन हो-3 अभिवंदन लाये रे-SS।।5125।।

(327) करो गुरु का अभिवंदन, हो जायेगा अभिनंदन-2
समझ खुशी के ये ही क्षण-SSS
वंदन सुंदर स्वागत है, अपनी यहाँ हिफाजत है-2
गुरुओं का वंदन हो-3, मननंद कराये रे-SS।।5126।।

(329) गुरु का हो आशीष जहाँ, उठ जाता है शीश वहाँ-2
जीने की तरकीब वहाँ-SSS
ईश्वर के गुरु दूत हैं, अनुभव से अभिभूत हैं-2
गुरु की अनुकंपा हो-3 भव पार लगाये रे-SS।।5127।।

(330) संतापित भी किया अगर, साधू छोड़े नहीं डगर-2
चिंतन करता और प्रखर-SSS
चित्त मलिनता नहिं लाये, भेद ज्ञान चिंतन भाये-2
साधू कीचड़ में हो-3 गुल कमल खिलाएँ रे-SS।।5128।।

(331) दुनियाँ खेल समझना है, खेल खेलकर चलना है–2
सही खिलाड़ी बनना है–SSS
जीता वही सिकन्दर है, हारा वही छछूँदर है–2
गुरुवर हैं कोच हो–3 सच्चा खेल खिलायें रे–SS।।5129।।

(332) साधु का संयोग मिले, उसका ही उर कमल खिले–2
मिट जाते हैं सभी गिले–SSS
बनने लगते नये सिले, हरदम रहे उमंग दिले–2
साधू घर आये हो–3 खुशहाली लाये रे–SS।।5130।।

(333) घर पवित्र हो जाता है, जब पवित्र मन आता है–2
मन दिन भर हर्षाता है–SS
दिन भर मन गुणगाता है, कई दिनों सुख पाता है–2
गुरु के आते ही हो–3 गुण खुद भर जाये रे–SS।।5131।।

(334) चरण जहाँ पड़ जाते हैं, वहीं आचरण आते हैं–2
पुण्यकोश भर जाते हैं–SS
ऐसी भक्ति लायें हम, गुरु के चरण धुलायें हम–2
गुरु की भक्ति ही हो–3 सब काम बनाए रे–SS।।5132।।

(335) श्रद्धा भाव बनाती है, गुरु दर तक ले जाती है–2
आठों अंग झुकाती है–SS
झूठी श्रद्धा हो दिल में, तो फिर अहंकार दिल में–2
श्रद्धा की ताकत हो–3 शिवमार्ग दिखाए रे–SS।।5133।।

(336) तुमने यहाँ विवेक रखा, लोग बनेंगे सभी सखा–2
समझ सही का स्वाद चखा–SS
देगा कोई तुझे दगा, फिर भी तुमको लगे सगा–2
तेरा विवेक हो–3 सद्राह दिखाए रे–SS।।5134।।

(337) आवश्यक उतना रखना, ज्यादा का मन मत करना–2
आसक्ति को कम करना–SSS
अगर परिग्रह कम होगा, फिर से मनुष जनम होगा–2
गुरुओं की सीख हो–3 मन से अपनाओ रे–SS।।5135।।

(338) दिल हो जितना शाद यहाँ, गुरु का मिले प्रसाद वहाँ–2
होगा निश्चित त्याग वहाँ–SSS
जितना ज्यादा त्याग करे, उतना आशीर्वाद मिले–2
गुरु का आशीष हो–3 हर काम बनाए रे–SS।।5136।।

(339) मुनि जिसके घर आते हैं, खुशहाली भर जाते हैं–2
गीत खुशी के गाते हैं–SSS
गुरु चरणों में स्वर्ग दिखे, मुक्ति का सद्मार्ग मिले–2
गुरु के दिखते ही हो–3 मन खिल खिल जाये रे–SS।।5137।।

(340) जो गुरु चरणों में आये, भाग्य उसी का जग जाये–2
दुनियाँ की दौलत पाये–SSS
ज्ञान गुरु से मिलता है, दिल फूलों सा खिलता है–2
गुरु के आदर से हो–3 शक्ति मिल जाये रे–SS।।5138।।

(341) गुरु नहिं होते जीवन में, भटके फिरते भव वन में-2
शांति न मिल पाती मन में-SSS
गुरु का मिलता प्यार जिसे, मिल जाता उद्धार उसे-2
गुरु के चरणों में हो-3 सुख स्वर्ग दिखाये रे-SS।।5139।।

(342) करें असंभव को संभव, मिटा रहे जो सारे भव-2
जिनको गाते मानव सब-SSS
ऐसे हैं विराग गुरुवर, जिनकी प्रज्ञा परम प्रखर-2
ऐसे गुरुवर को हो-3 हम शीश झुकाएँ रे-SS।।5140।।

(343) बचा रहे सबकी अस्मत, बना रहे अच्छी किस्मत-2
मिटा रहे दिल की नफरत-SSS
उन गुरुवर का दीदार करें, आकर नहीं नदीद बनें-2
वरना जीवन में हो-3 गम बढ़ता जाये रे-SS।।5141।।

(344) गुरु पर श्रद्धा हो सच्ची, उसको बुद्धि मिले अच्छी-2
सोच नहीं उसकी कच्ची-SSS
गुरु पर जिसे भरोसा है, उसको किसने कोसा है-2
गुरु हैं जो सबका हो-3 दिल साफ कराएँ रे-SS।।5142।।

(345) जिसने दीपक जला लिया, उसने दिल को खिला लिया-2
नया दिवाकर उगा लिया-SSS
गुरुवर का बहुमान किया, जिनवर का गुणगान किया-2
जीवन की ज्योति हो-3 तब ही जल पाये रे-SS।।5143।।

(346) गुण ही तारनहारे हैं, अवगुण मारनहारे हैं-2
गुरुवर पालन हारे हैं-SSS
देवताओं से ऊँचे हम, गर पा जायें हम संयम-2
अपने अनुभव से हो-3 गुण खुद बढ़ जायें रे-SS।।5144।।

(347) कितनी भी पुस्तक पढ़ ले, सारे शब्दों को रट ले-2
अच्छे शब्दों को गढ़ ले-SSS
दुराचारिणी गर्भ धरे, कहीं नहीं सम्मान वरे-2
गुरूवर की विद्या हो-3 सम्मान दिलाए रे-SS।।5145।।

(348) जब गुरु घर पर आते हैं, मन ही मन हर्षाते हैं-2
गीत खुशी के गाते हैं-SSS
गुरु चरणों में स्वर्ग दिखे, मुक्ति का सद्मार्ग मिले-2
ये ही तो लक्षण हो-3 गुरु-धर्म बताएँ रे-SS।।5146।।

(349) संत सभी को मनभावन, कर देते मन को पावन-2
होता पतझड़ में सावन-SSS
चरणों की सेवा में मन, खाली भर जाये दामन-2
गुरु का चरणोदक हो-3 जो शीश लगाये रे-SS।।5147।।

(350) रोती ज्यादा महिलायें, हँसती ज्यादा महिलायें-2
कम हों पागल महिलाएँ-SSS
पुरुष हँसे-नहिं-रो पाएँ, पागल हो अटैक आएँ-2
हँसना और रोना हो-3 सब ठीक बताएँ रे-SS।।5148।।

(351) गुरुवर का दर सच्चा है, गुरु विन कोइ न अच्छा है–2
गुरु चरणों में रक्षा है–ऽऽऽ
सिद्ध प्रभु सिद्धालय में, गुरु दिल के श्रद्धालय में–2
गुरु बिन ये जीवन हो–3 पतझड़ बन जाये रे–ऽऽ।।5149।।

(352) मर जाओ, मर जाएगा, जी जाओ, जी जायेगा–2
ऋषि कहें, हो जायेगा–ऽऽऽ
आशीविष का काम यही, गुरुवर पर श्रद्धान यही–2
जैसा वो कह दें हो–3 वैसा हो जाये रे–ऽऽ।।5150।।

(353) संत धरा पर आते हैं, सुन्दर फूल खिलाते हैं–2
बगिया को महकाते हैं–ऽऽऽ
शांति सुधा वर्षाते हैं, खुशियाँ घर घर लाते हैं–2
संतों से घर का हो–3 आँगन महकाये रे–ऽऽ।।5151।।

(354) गुण की दिले उमंग करो, गुरुओं का सत्संग करो–2
पैदा नई तरंग करो–ऽऽ
अरमानों का रंग भरो, मोक्षमार्ग पर जंग करो–2
साहिल पर नैया हो–3, क्यूँ आप डुबोये रे–ऽऽ।।5152।।

(355) हाथों से नहिं दान दिया, नहीं वेद का ज्ञान किया–2
हरदम धन पर ध्यान दिया–ऽऽऽ
गुरुसेवा में नहीं गया, तीरथ करना भूल गया–2
ऐसे नर–नारी हो–3, अतिनिंद बतायें रे–ऽऽ।।5153।।

(356) गुरु चरणों में आता जो, अपना भाग्य जगाता वो–2
अंजाना सुख पाता वो–ऽऽऽ
किस्मत वो चमकाएगा, जो गुरु का हो जाएगा–2
मिट्टी का गुरु भी हो–3, सद्ज्ञान दिलाये रे–ऽऽ।।5154।।

(357) जब–जब गुरू बनाएगा, तब–तब सुख तू पाएगा–2
हल्का तू हो जाएगा–ऽऽऽ
गुरु ही भार हटाते हैं, नई रौशनी लाते हैं–2
जीवन में गुरु ही हो–3, संदीप बनाएँ रे–ऽऽ।।5155।।

(357) गुरु से कुछ भी नहीं मिले, मिले, नहीं वो कहीं मिले–2
गुरु से ही गुल दिल–ए–खिले–ऽऽऽ
सब प्रश्नों के जवाब हैं, गुरु ही खिले गुलाब हैं–2
गुरुवर से बढ़कर हो–3, नहिं कोई दिखाए रे–ऽऽ।।5156।।

(359) बचपन खेलकूद खोया, देख जवानी बौराया–2
बूढ़ेपन में चिल्लाया–ऽऽऽ
खुद को नहीं समझ पाया, दुनियाँ में ही भरमाया–2
सच्चा हमराही हो–3, गुरुदेव दिखायें रे–ऽऽ।।5157।।

(360) स्वर्ग से सुन्दर अपना घर, जीवन जहाँ अनंत अमर–2
मुक्ति पथ का यहाँ सफर–ऽऽऽ
संयम वो अपनाते हैं, जो सत्संग बनाते हैं–2
गुरुवर ही दिल में हो–3, इक स्वर्ग बनाएँ रे–ऽऽ।।5158।।

(361) आओ सच्चा ज्ञान वरें, कोई नया विधान करें–2
जिन–गुरु का सम्मान करें–ऽऽऽ
दिल में ये अरमान करें, हम अच्छे इंसान बनें–2
तब ही गुरु वाणी हो–3, अज्ञान मिटाये रे–ऽऽ।।5159।।

(362) अपना हम सम्मान करें, पहले प्रभु गुणगान करें–2
तब ही भोजन पान करें–ऽऽऽ
ऐसा तू कर जाएगा, कहीं नहीं दुख पायेगा–2
गुरु का आशीष हो–3, फिर हरदम पाये रे–ऽऽ।।5160।।

(363) गुरु पहले गर मिल जाते, हम भी साथ निकल जाते–2
छल फरेब ये दिखलाते–ऽऽऽ
संयम कुछ भी नहीं रखें, ऊँची–ऊँची बात करें–2
ऐसे लोगों से हो–3, भगवान् बचाये रे–ऽऽ।।5161।।

(364) गुरु से कुछ कहकर जाते, बाहर लोग मुकर जाते–2
ये सब कपटी कहलाते–ऽऽऽ
जिनका हो विश्वास नहीं, उन्हें बिठाओ पास नहीं–2
ऐसे खुजैले हो–3, खुजली फैलाएँ रे–ऽऽ।।5162।।

(365) दुख संताप महाभारी, सहता है ये संसारी–2
भव–भव में बारी–बारी–ऽऽ
जिसको तू दिल देता है, वही तुझे छल लेता है–2
शरणा जिन–गुरु की हो–3, संताप मिटाये रे–ऽ।।5163।।

(366) गुरु कुम्हार कहलाते हैं, शिष्य को घड़ा बनाते हैं–2
सारे खोट मिटाते हैं–ऽऽऽ
फिर वे उसे पकाते हैं, शहरों में भिजवाते हैं–2
कीमत घड़े की हो–3, नित बढ़ती जाये रे–ऽऽ।।5164।।

(367) दिले चिराग जलाते हैं, गुरु अभिमान गलाते हैं–2
अमृत खूब पिलाते हैं–ऽऽऽ
च्यवनप्राश तप संयम का, देकर शक्ति दिलाते हैं–2
गुरुवर की गीता हो–3, आनंद दिलाये रे–ऽऽ।।5165।।

(368) संत न होते धरती पर, जल जाता ये भू अम्बर–2
दिखता चारों ओर जहर–ऽऽऽ
नई रौशनी लाते हैं, मानवता दिखलाते हैं–2
संतों की संगत हो–3 रंगत ले आये रे–ऽऽ।।5166।।

(369) जो साधु को छल जाये, वो जीते जी जल जाये–2
यहाँ नहीं कुछ फल पाये–ऽऽऽ
चलते फिरते तीर्थंकर, साधु हैं जैसे ईश्वर–2
गुरु को जो चाहे हो–3 सब उसको चाहें रे–ऽऽ।।5167।।

(370) लगे सुहाना गुरु का दर, जिनके चरणों मिले सहर (सुबह)–2
मंजिल का खुद दिखे सफर–ऽऽऽ
गुरु ईश्वर का दर्पण है, उनको सभी समर्पण है–2
भटके प्राणी को हो–3 गुरु राह दिखायें रे–ऽऽ।।5168।।

(371) गुरु का जिसको साथ मिले, उसे नया विश्वास मिले–2
अनुभव और अहसास मिले–SSS
प्रभु दिल के ही पास मिले, मुक्तिपथ का पास मिले–2
गुरु के चरणों में हो–3 सब राज दिखायें रे–SS।।5169।।

(372) गुरु बिन दीपक जले नहीं, दिल फूलों सा खिले नहीं–2
मन दर्पण सा मिले नहीं–SSS
गुरु सबको आकर्षक हैं, भटकों को पथ दर्शक हैं–2
दिल को दर्पण सा हो–3 गुरुदेव बनाएँ रे–SS।।5170।।

(373) झूठा है घर–द्वार यहाँ, झूठा है संसार यहाँ–2
सच्चा कहीं न प्यार यहाँ–SSS
गुरु ही एक यहाँ सच्चे, सबको लगते हैं अच्छे–2
गुरु की वाणी में हो–3 भगवान् दिखाएँ रे–SS।।5171।।

(374) गुरु चरण ही मिले शरण, अंत समय में हो सु–मरण–2
नाम जपूँ गुरु का प्रतिक्षण–SSS
पाप सभी हो जायें क्षरण, मिलें हमें आशीष चरण–2
गुरु में ही देखो हो–3 भगवान दिखाएँ रे–SS।।5172।।

(375) गुरू–शिष्य का नाता है, जिसमें कर्म विधाता है–2
हाथ, शिष्य को छाता है–SSS
गुरु को शिष्य निभाता है, तभी गुरू से पाता है–2
गुरु की कृपा बिन हो–3 तू कुछ नहिं पाये रे–SS।।5173।।

(376) हाथ गुरू ने उठा दिया, कृपा दृष्टि से जला दिया–2
तुम पर ये उपकार किया–SSS
गुरू कहें, वैसा कर दो, जीवन भी अर्पण कर दो–2
सब कुछ भी दे दो हो–3 तब भी तुच्छ बताएँ रे–SS।।5174।।

(377) गुरू जैसा है कौन यहाँ?, बोल–है क्यों तू मौन यहाँ?–2
गुरु सबके सिरमौर यहाँ–SSS
उस पर गुरु की कृपा रहे, जिसका दिल शुभ सफा रहे–2
गुरु की सद्वाणी हो–3 संताप मिटाये रे–SS।।5175।।

(378) जो गुरु पर विश्वास करे, वो ही आत्म विकास करे–2
इक दिन ज्ञान प्रकाश करे–SSS
दुनियाँ ये मझधार अरे, विश्वासी हो पार तिरे–2
अंध विश्वास हो–3 खुद ही मिट जाये रे–SS।।5176।।

(379) गुरू सहारा मिल जाये, जगत किनारा मिल जाये–2
फूलों सा मन खिल जाये–SSS
गुरुवर का वात्सल्य जिसे, उसे प्रश्न के हल मिलते–2
गुरु ही भटके को हो–3 सद्राह दिखाएँ रे–SS।।5177।।

(380) दुनियाँ में सब जन झूठे, रिश्ता टूटे तो टूटे–2
मगर समर्पण ना छूटे–SSS
अपने रूठे तो रूठे, संग न गुरुवर का छूटे–2
गुरु ही अनूठे हो–3 हमको नजराएँ रे–SS।।5178।।

(381) मुनियों का मक्खन सा दिल, जिन्हें सदा चाहे महफिल–2
वंदन उन्हें करे हर दिल–SSS
सबका वो उपकार करें, सबसे सम व्यवहार धरें–2
मुनि की हर चर्या हो–3 में शास्त्र दिखाए रे–SS।।5179।।

(382) गुरु चलते जिन आगम हैं, गुरु ही संत समागम हैं–2
कोमल कर सिरहाना है–SSS
सच में संत सुवास है, देता दृढ़ विश्वास है–2
गुरु के बिन दुनियाँ हो–3 अंधी हो जाये रे–SS।।5180।।

(383) सभी संत में सुंदर हो, जिसका रूप दिगम्बर हो–2
छत और चादर अम्बर हो–SSS
दिल से स्वयं स्वयंवर हो, नहीं किसी का भी डर हो–2
ऐसा ही संत हो–3 अपना नजराये हो–SS।।5181।।

(384) खोटी नहीं प्रवृत्ति हो, दुर्वचनों पर चित्त न हो–2
पास परिग्रह वित्त न हो–SSS
वे साधु के पद चंदन, जिन्हें करे दुनियाँ वंदन–2
जिनके वचनों में हो–3 आधार दिखाये रे–SS।।5182।।

(385) जिन गुरु का सत्संग मिला, उसका ही दिल खिला–खिला–2
सही सोच का ढंग मिला–SSS
गुरु ज्योतिर्मय पुंज कहा, बिन गुरु मन ये धुंध अहा–2
गुरु ही जीने की हो–3 हर कला बताएँ रे–SS।।5183।।

(386) दया–दान की शरण करो, इन्द्रिय विष को दमन करो–2
जिन–गुरु को तुम नमन करो–SS
गुरु चरणों की शरण करो, मुक्ति रमा को वरन करो–2
वरना ये नैया हो–3 अब पार न जाये रे–SS।।5184।।

(387) गुरु चरणों की शरण मिले, उसकी किस्मत यहाँ खुले–2
अंतस् में इक दीप जले–SS
मंजिल की वह ओर चले, सम्यग्दर्शन ज्ञान खिले–2
उसका जीवन ही हो–3 मंगल बन जाये रे–SS।।5185।।

(388) गुरु में ताप बढ़ाते हैं, तृष्णा को सुलगाते हैं–2
विषय भोग दुख लाते हैं–SSS
मुश्किल से तज पाते हैं, ऐसा गुरू बताते हैं–2
कौन सुधी फिर हो–3 इनको अपनाये रे–SS।।5186।।

(389) शुद्ध–अशुद्ध करे ये तन, नश्वर कहते हैं ऋषिजन–2
तन से दीन बनें क्यों हम–SS
नश्वर नाश करे नहिं गम, नश्वर नाश करे जीवन–2
तन धन की सेवा हो–3 ऋषि व्यर्थ बतायें रे–SS।।5187।।

(390) गुरु प्रेरणा देते हैं, जीवन खुश कर देते हैं–2
फिर भी कुछ नहिं लेते हैं–SS
भव्यों को उपकारी हैं, राग–द्वेष निरवारी हैं–2
गुरुवर की महिमा हो–3 सब वेद सुनाएँ रे–SS।।5188।।

(391) सँभल-सँभलकर चलता जा, ज्ञान दीप सा जलता जा-2
रवि सा तेज निकलता जा-ऽऽऽ
बुझे दीप जब आयेंगे, देख तुझे जल जायेंगे-2
जलने की संतति हो-3 यूँ चलती जाये रे-ऽऽ।।5189।।

(392) चिंतामणि सा रत्न मिला, दिल में नहिं शुभ यत्न खिला-2
करो स्वयं से यहाँ गिला -ऽऽ
रंजोगम में रहा सिला, ज्ञानदीप नहिं कभी जला -2
अनुपम ये जीवन हो -3 क्यों क्षुद्र बनाये रे -ऽऽ।।5190।।

(393) ज्योति ज्ञान की जल जाती, भव की भटकन गल जाती-2
बुद्धि गमों का हल पाती-ऽऽऽ
उलझन में फँस गये स्वयं, नहीं इरादा छूटें गम-2
ऐसी हालत में हो-3 क्यूँ अक्ल गँवाए रे-ऽऽ।।5191।।

(394) बगुला हंस सफेद कहें, कैसे इनमें भेद करें?-2
एक युक्ति से पता करें-ऽऽऽ
फर्क तभी हो पायेगा, दूध सामने आयेगा-2
दूध का दूध हो-3 जल-जल हो जाये रे-ऽऽ।।5192।।

(395) ज्यों-ज्यों निज का ज्ञान मिले, त्यों-त्यों पर से मोह हटे-2
विषय भोग विष रूप लगे-ऽऽऽ
खुद में खुद का रूप दिखे, अपना शुद्ध स्वरूप दिखे-2
अनुभव-अनुभव को हो-3 फिर और बढ़ाए रे-ऽऽ।।5193।।

(396) थोड़ा ज्ञान उचकता है, खुद को खुदा समझता है-2
अधजल घड़ा छलकता है-ऽऽऽ
विसंवाद करता रहता, अहंकार भरता रहता-2
ज्ञान अधूरा हो-3 कचरा बन जाये रे-ऽऽ।।5194।।

(397) माटी का तू पिण्ड यहाँ, क्यूँ होता उद्दण्ड यहाँ-2
तुझे मिलेगा दण्ड यहाँ-ऽऽऽ
इसे तपा तप करके तू, ज्ञान हृदय में भरके तू-2
ये ही माटी से हो-3, अमृत मिल जाये रे-ऽऽ।।5195।।

(398) सबको जलन जलाती है, ये ईर्ष्या कहलाती है-2
सारा ज्ञान मिटाती है-ऽऽऽ
ये अँधियारी आग समझ, जिसमें जलते जाते सब-2
इससे बच जाये हो-3 ज्ञानी बन जाये रे-ऽऽ।।5196।।

(399) ध्यान सुगम करता चिंतन, ज्ञान सिद्ध करता मंथन-2
अनुभव से आनंद सघन-ऽऽऽ
चिंतन ज्ञान बढ़ाता है, प्रश्न सभी सुलझाता है-2
तर्कों की शैली हो-3 चिंतन दिलवाये रे-ऽऽ।।5197।।

(400) जो चिंतन नहिं कर पाते, मूर्ख यहाँ समझे जाते-2
वे पिछलग्गू कहलाते-ऽऽऽ
पराधीनता को सहते, दीन हीन बनकर रहते-2
खुद का भी काम हो-3 खुद नहिं कर पायें रे-ऽऽ।।5198।।

(401) चिंतन मंथन खूब करे, उसके अनुभव बहुत खरे–2
जीवन में वो नया लिखे–ऽऽऽ
श्रद्धा को मजबूत करे, अनुभव स्वयं सबूत अरे–2
अनुभव से बढ़कर हो–3 कुछ नहीं बतायें रे–ऽऽ।।5199।।

(402) इन्द्रिय सुख की चाह रखे, नहीं ज्ञान की आश रखे–2
ऋषियों ने ये वचन कहे–ऽऽऽ
इन्द्रिय सुख में ज्ञान कहाँ, ज्ञानी को हैं भोग कहाँ–2
भोगों की दुनियाँ हो–3 गमगीन दिखाये रे–ऽऽ।।5200।।

(403) कितनी भी पुस्तक पढ़ ले, सारे शब्दों को रट ले–2
अच्छे शब्दों को गढ़ ले–ऽऽऽ
दुराचारिणी गर्भ धरे, कहीं नहीं सम्मान वरे–2
गुरु संग की विद्या हो–3 सम्मान दिलाए रे–ऽऽ।।5201।।

(404) मरने को वो आते हैं, जो नहिं धर्म कमाते हैं–2
इच्छाएँ भर जाते हैं–ऽऽऽ
पर जो अमृत पान करें, सम्यग्दर्शन ज्ञान वरें–2
वे ही इंसान हो–3 विद्वान् बतायें रे–ऽऽ।।5202।।

(405) ज्ञान नहीं कर पाएगा, जीवन भर पछताएगा–2
राह नहीं सच पाएगा–ऽऽऽ
संस्कार शुभ लाएगा, खुशियों से भर जाएगा–2
जीवन के रथ को हो–3, शुभ राह चलाओ रे–ऽऽ।।5203।।

(406) पैसा कुछ हो सकता है, सबकुछ नहिं हो सकता है–2
कुछ–कुछ तो हो सकता है–ऽऽऽ
सब कुछ है वो ज्ञान है, बहुत कुछ है वो ध्यान है–2
कुछ–कुछ वो धन है हो–3, कुछ वस्तु बतायें रे–ऽऽ।।5204।।

(407) ज्ञान की शुद्धि सम्यक् से, ज्ञान की सिद्धि चारित से–2
ज्ञान की वृद्धि चारित से–ऽऽऽ
कोरा ज्ञान न शुद्ध करे, चारित, दर्शन शुद्ध करे–3
सच क्या? ये ज्ञान हो–3, तुमको दिखलाए रे–ऽऽ।।5205।।

(408) जहाँ स्वयं का ज्ञान है, वहीं भेद विज्ञान है–2
ज्ञान मुनि का प्राण है–ऽऽऽ
सम्यग्दर्श प्रधान है, इससे ही निर्वाण है–2
अपने अनुभव से हो–3, निज दीप जलाओ रे–ऽऽ।।5206।।

(409) ज्ञान वही कहलाता है, जो कर्त्तव्य कराता है–2
हित औ अहित दिखाता है–ऽऽऽ
इन्द्रिय मन को हाथ रखे, जीव दया को साथ रखे–2
ऐसा ही संयम हो–3, सन्मार्ग दिखाए रे–ऽऽ।।5207।।

(410) ज्ञान बहुत कर्त्तव्य नहीं, समझ ज्ञान को भव्य नहीं–2
ऐसा पंडित सभ्य नहीं–ऽऽऽ
तप ज्यादा पर ज्ञान हो कम, चारित्र में उसके दमखम–2
उसको इस भव से हो–3, मुक्ति मिल जाये रे–ऽऽ।।5208।।

(411) तप होता है इस तन से, ध्यान हमें होता मन से–2
प्रेम बने अपनेपन से–SSS
ज्ञान सभी दिखलाता है, सही गलत बतलाता है–2
ज्ञानी की बातें हो–3, ये समझ में आयें रे–SS।।5209।।

(412) खुद के घर को जाँचा कर, पर घर को मत आँचा कर–2
अपनी तू मत हाँका कर–SSS
थोड़ा सा है ज्ञान अरे, क्यूँ इतना अभिमान धरे–2
गैरों को देखे हो–3 वो भ्रमण बढ़ाए रे–SS।।5210।।

(413) जिनकी प्रज्ञा रही प्रखर, वो पाता सम्मेद शिखर–2
होता इक दिन अजर–अमर–SSS
प्रज्ञा खुद को पहिचाने, गैरों के मन की जाने–2
प्रज्ञा बिन प्राणी हो–3 पीछे पछताये रे–SS।।5211।।

(414) ज्ञान नहीं जो धरता है, वो ही धन पर मरता है–2
जी चाहे वो करता है–SSS
गम से रोज गुज़रता है, बोझ दुखों का भरता है–2
गम को गम माने हो–3 वो ज्ञान बढ़ाए रे–SS।।5212।।

(415) कितना भी तन सहला लो, अच्छे जल से नहला लो–2
भोग में इन्द्रिय बहला लो –SSS
मन रहता हरदम खाली, मन की सब हुण्डी जाली –2
अपने कण–कण में हो–3 सद्ज्ञान दिखाए रे–SS।।5213।।

(416) काँटों पर गुजरें गर दिन, जीना मत फूलों के बिन –2
यही गुजारिश है हर दिन –SSS
ज्ञान बिना भव व्यर्थ कहो, कम से कम ये ज्ञान रखो –2
जीवन सुख–दुख का हो–3 संयोग बताएँ रे–SS।।5214।।

(417) ज्ञान और चारित्र मिले, अंतस् बहता इत्र मिले –2
दिल हो स्वयं पवित्र खिले –SSS
पण्डिताई का ज्ञान यहाँ, दिखलाता अभिमान यहाँ –2
ज्ञान–फल पाकर हो–3 तन–तरु झुक जाये रे –SS।।5215।।

(418) खुद का सुख–दुख जान रहे, पर का नहिं पहिचान रहे –2
कैसे सच्चा ज्ञान रहे ?–SSS
सबका, खुद सा दर्द समझ, तब तू खुद को मर्द समझ–2
अपने सुख दुख को हो–3 पशु अपना जानें रे –SS।।5216।।

(419) ठोकर खा, नहिं गिर पाये, वो इंसान सुधर जाये –2
आगे वहीं सँभल पाये –SSS
ठोकर से अनुभव आये, अनुभव, ज्ञान बढ़ा जाये –2
ज्ञानी का अनुभव हो–3 सिद्धांत दिखाए रे –SS।।5217।।

(420) ज्ञानी को आराम कहाँ? अज्ञानी को राम कहाँ?
प्रभु के दिल में शाम कहाँ ?
आलसियों को काम कहाँ? राही को विश्राम कहाँ?
मिल जाये राम हो–3 तो सब काम बनाएँ रे –SS।।5218।।

(421) पंचमकाल महादुखमय, जिसमें चिंता मृत्यु भय -2
रंचमात्र नहिं कभी अभय -SSS
सब ही हैं बेहाल यहाँ, सता रहा है काल यहाँ -2
मज़हब ही यारो हो-3 भय काल मिटाये रे -SS||5219||

(422) बोलो भीतर हूँ मैं कौन ? क्यों सदियों से तू है मौन? -2
देख बदलकर अपनी टोंन -SSS
होगी खुद पहचान तुझे, होगा भीतर ज्ञान तुझे -2
भीतर का ज्ञान हो-3 अज्ञान हटाये रे -SS||5220||

(423) स्वयं परीक्षा कर देखो, जरा समीक्षा कर देखो -2
धैर्य प्रतीक्षा कर देखो -SSS
एक बार खुश हो दिल से, स्वयं यहाँ हँसकर देखो -2
पाओगे ऐसा हो-3 जो कहीं न पाये रे -SS||5221||

(424) चंद दिनों की मेहमानी, इसमें कैसी नादानी -2
भूला खुद को, बेमानी -SSS
या फिर बुद्धि अंजानी, या फिर तू है अभिमानी -2
ज्ञानी बनने का हो-3 अरमान बनाओ रे -SS||5220||

(425) जीने का कुछ अर्थ नहीं, समझो जीना व्यर्थ वहीं -2
जीना कोई शर्त नहीं -SSS
पूर्ण ज्ञान है अर्थ सही, ज्ञान बिना है गर्त सभी -2
पूरा हो ज्ञान हो-3 ऐसा भाव बनाओ रे -SS||5223||

(426) इस दुनियाँ की चमक दमक, मन में पैदा करे सनक -2
नष्ट करे दिल की रौनक -SSS
चमक दमक ने ज्ञान छला, संयम की मिट गई कला -2
ज्ञान के बिन हम हो-3 दुख अंत न पायें रे -SS||5224||

(427) खुद नहिं बुद्धि लगाएगा, शास्त्र न आँख दिखाएगा -2
सूरज नहीं दिखाएगा -SSS
अंतस् की जब आँख खुले, तब ही जीवन सार मिले -2
ज्ञान की आँखें हो-3 हर चीज दिखाये रे -SS||5225||

(428) कोई नहीं जब है अपना, फिर क्यों पापों में खपना -2
घुट-घुटकर आकर मरना -SSS
तिरने का साहस कर ले, एक बार खुद पर हँस ले -2
खुद पर जो हँसता हो-3 वो खुश हो पाए रे -SS||5226||

(429) जड़ जितनी गहरी जाये, फल उतना ऊपर आये -2
तूफां हिला नहीं पाये -SSS
जितना गहरा चिंतन हो, उतना अच्छा मंथन हो -2
लाखों तर्कों से हो-3 वो हिल नहिं पाये रे -SS||5227||

(430) उसको भूल न जाना रे, ज्ञान जो एक अक्षर का दे -2
भूले-पापी मूढ अरे -SSS
फिर जो गुरु को भूलेगा, महापाप को छू लेगा -2
दुख की हालत में हो-3 गम खुद बढ़ जाये रे -SS||5228||

(431) करते छोटे काम यहाँ, वे छोटे इंसान यहाँ -2
उनमें ऊँचा ज्ञान कहाँ ?-SSS
जो भी उत्तम काम करें, उनमें खुद ही ज्ञान यहाँ -2
ईश्वर बिन ज्ञान हो-3 नहिं कहीं दिखाए रे -SS।।5229।।

(432) राग द्वेष में जीते हैं, धर्म-कर्म से रीते हैं -2
मोही मदिरा पीते हैं -2
सही ज्ञान अब पाना है, मन में उमंग लाना है -2
वरना जीवन का हो-3 रंग कोइ न आये रे -SS।।5230।।

(433) भव प्राणी को भाता है, मोही जाल बिछाता है -2
कर्म उसे लिपटाता है -SS
ज्ञानी ज्ञान बढ़ाता है, भव जंजाल जलाता है -2
ज्ञानी दुनियाँ में - हो-3 सद्राह दिखाये रे -SS।।5231।।

(434) लाख बात की बात अरे, सुख उसको, जो धर्म करे-2
धर्म नहीं तो फिरे मरे-SSS
धर्म सभी कुछ दाता है, सच्चा ज्ञान प्रदाता है-2
ज्ञानी इस जग में हो-3 नहिं दुखी दिखाए रे-SS।।5232।।

(435) जब तक जलता नहीं दिया, तब तक फलती नहीं क्रिया-2
मिलती कभी न मुक्ति प्रिया-SSS
पत्थर से मत फोड़ दिया, पुण्य उदय से मिला दिया-2
ज्ञानी क्रिया से हो-3, सच्चा फल पाये रे-SS।।5233।।

(436) हँसना अच्छी आदत है, जिसमें छिपी इबादत है-2
खुशियों भरी नज़ाकत है-SSS
हँस सकते इंसान यहाँ, नहीं गधों का काम यहाँ-2
तन, मन हो स्वस्थ हो-3 ये सभी बताएँ रे-SS।।5234।।

(437) हँसते, खाकर चोट यहाँ, हो जाता कम खोट यहाँ-2
प्रभु की उसको ओट यहाँ-SSS
हँसना, कला है जीने की, गम, पानी सा पीने की-2
हँसते, तन मन की हो-3 व्याधि मिट जाये रे-SS।।5235।।

(438) ज्ञान गुलाल उड़ाएँ रंग, होली खेलें मुनि के संग-2
ऐसा यहाँ बनाएँ ढंग-SSS
करके दिल में धरम करम, पाप कर्म का करें दहन-2
होली पर अपना हो-3 दीपक जल जाये रे-SS।।5236।।

(439) होली पर हो दीवाली, ज्ञान रंग भर पिचकारी-2
जीवन में है हितकारी-SSS
होली पर गर ज्ञान उड़े, तो फिर घर-घर दीप जले-2
दीपों के जलते हो-3 उजियारा आये रे-SS।।5237।।

(440) आवश्यकता पेट है इच्छा मन की पेटी है-2
भोगाकांक्षा बैठी है-SSS
पेट यहाँ भर सकता है, पेटी कब भर पाई है-2
दुनियाँ की दौलत हो-3 नहिं पेट भराये रे-SS।।5238।।

(441) तुम्हें ढूँढती हैं आँखें, फैला-फैलाकर पाँखें -2
नज़र ताकती हैं राहें -SSS
आश यही तू आयेगा, आकर रूप दिखायेगा -2
चाहत की आशा हो-3 ये उम्र ढलाए रे -SS।।5239।।

(442) चलते फिरते रहो सदा, जय जिनेन्द्र तुम कहो सदा -2
बुरे भाव नहिं करो कदा -SSS
हँस करके अलविदा कहो, गम से हरदम जुदा रहो-2
ऐसा हि सोच हो-3 सद्ज्ञान बढ़ाए रे -SS।।5240।।

(443) इच्छाएँ दुःख लाती हैं, सबको यहाँ भ्रमाती हैं -2
अंतस् ज्ञान मिटाती हैं -SS
दिले भावना सुख लाती, जिनवाणी यह बतलाती -2
भावों की तह पर हो-3 सुख दुख नजराये रे -SS।।5241।।

(444) भूख न मन की मिट पायी, इच्छा-आशा भरमायी -2
संतोषी मन कैसे हो ?-SS
पाक न दिल ये बन पाया, पर को पाने भरमाया-2
कैसे जीवन में हो-3 सुख शांति समाये रे -SS।।5242।।

(445) जीने की तहजीब नहीं, मरने की तरकीब नहीं-2
अच्छा दिले नसीब नहीं-SSS
खुद का जिसे यकीन नहीं, उसके खुदा करीब नहीं-2
तेरी ये आदत हो-3 तुमको नीच बनाए रे-SS।।5243।।

(446) तुझे खुदा की कसम यहाँ, थोड़ी कर तू शरम यहाँ-2
दिखा नहीं तू अहम् यहाँ-SSS
इक पल में हो सभी खतम, बदनसीब जब आता गम-2
तेरी ही दम में हो-3 दीमक लग जाये रे-SS।।5244।।

(447) ऊँचे हैं जज़्बात दिले, उनके ही हालात खिले-2
फूलों का इक बाग मिले-SSS
ठोकर को मारे ठोकर, बनता वो ही तीर्थंकर-2
ऊँचे ख्वाबों को हो-3 तुम दिल में लाओ रे-SS।।5245।।

(448) हँस कर जीना सीख लिया, उसने मन को जीत लिया-2
खुद को यहाँ करीब किया-SSS
गम में भी जो हँस लेता, वही मुक्ति पथ का नेता-2
हँसकर के हँसना हो-3 सत्कर्म बताएँ रे-SS।।5246।।

(449) नीम लगाया आँगन में, आम देखते हैं उसमें-2
जीवन भर नहिं आम दिखें-SSS
आम का पेड़ लगाओगे, तभी आम तुम खाओगे-2
गम के दरिया में हो-3 नहिं चैन दिखाए रे-SS।।5247।।

(450) किले बनाते बातों में, जान नहीं है हाथों में-2
जज़्बा नहिं जज़्बातों में-SSS
कुछ करके तो दिखलाओ, तब कुछ कहने को आओ-2
कोरी फाँके वो हो-3 फाँकू कहलाए रे-SS।।5248।।

(451) राग-द्वेष की छाया में, मिट्टी की इस काया में-2
दुनियाँ की इस माया में-SSS
भूल गया तू आकर सब, क्या करना था तुझको कब-2
उसको गर भूला हो-3 वो तुझे भुलाए रे-SS।।5249।।

(452) रहता जो सोया सोया, आगे वो निश्चित रोया-2
गम इतने दिन क्यूँ ढोया-SSS
बीज गमों का क्यों बोया, जीवन व्यर्थ यहाँ खोया-2
गुजरा जो वक्त हो-3 वह लौट न आये रे-SS।।5250।।

(453) खुद को यहाँ भुलाएगा, कब तक दौड़ लगाएगा-2
थक कर तू गिर जाएगा-SSS
नहीं लहर वो पाने की, दौड़ न तू मर जाएगा-2
जैसे मृग मरता हो-3 तू भी मर जाये रे-SS।।5251।।

(454) थामे लोभ का पल्लू जो, समझो इंसां उल्लू वो-2
दुनियाँ में सिलबिल्लू वो-SSS
कीचड़ में वह केलि करे, कीड़े जैसा यहाँ मरे-2
कोल्हू का बैल हो-3 कुछ देख न पाये रे-SS।।5252।।

(455) ईश्वर का वरदान है, हर इंसां में ज्ञान है-2
ईश्वर तभी महान है-SSS
आओ हम इंसान बनें, ईश्वर का सामान बनें-2
तब ही हम प्यारे हो-3 सबके बन पायें रे-SS।।5253।।

(456) हो प्रसन्न हँसता रहता, मीठा मीठा वह कहता-2
कभी न उसको दुख रहता-SSS
दुख को हँस करके सहता, मगन हो अपने में रहता-2
ऐसा इंसां ही हो-3 जीना सिखलाए रे-SS।।5254।।

(457) होता यहाँ यकीन नहीं, फिर भी तू आसीन यहीं-2
बनो कभी भी दीन नहीं-SSS
जो गैरों का दर्द पिये, इंसां वैसा कहीं नहीं-2
फिर भी खुशियों का हो-3 क्यूँ ख्वाब सजाये रे-SS।।5255।।

(458) काँटों में तू फूल खिला, अँधियारे में दीप जला-2
पैदा कर तू दिले कला-SSS
कर दे मन की दूर बला, तब हो पाये यहाँ भला-2
गम में जो हँसता हो-3 वो फूल खिलाये रे-SS।।5256।।

(459) आलस ने बरबाद किया, इंसां को नाशाद किया-
उजला होने नहीं दिया-SSS
जला न दिल का कभी दिया, ठोकर खाता यहाँ जिया-2
चेतो अब चेतन हो-3, चेतनता लाओ रे-SS।।5257।।

(460) कई परेशां खाने से, कई परेशां खाने को-2
कई परेशां पाने को-SSS
कई परेशां जाने से, कई परेशां जाने को-2
सब ही परेशां हो-3, हमको नजरायें रे-SS।।5258।।

(461) अच्छे से अच्छा दिखता, सच्चा सा रस्ता दिखता-2
सबसे ही रिस्ता दिखता-ऽऽऽ
बुरा आँख का अंधा है, भटकेगा वो वंदा है-2
अच्छे बनने में हो-3, सब लाभ बताएँ रे-ऽऽ।।5259।।

(462) बंदर की संतान यहाँ, ये सारे इंसान यहाँ-2
कहता है विज्ञान यहाँ-ऽऽऽ
बंदर का बेटा मानव, फिर बंदर क्यों है दानव-2
मानव को मनु की हो-3, संतान बताएँ रे-ऽऽ।।5260।।

(463) जो इंसां डर जाएगा, वो समझो मर जायेगा-2
कैसे वो तिर पाएगा-ऽऽऽ
गलती यहाँ करेगा जो, सच में यहाँ डरेगा वो-2
डरकर जो भागे हो-3 डरपोक कहाये रे-ऽऽ।।5261।।

(464) मद यौवन में झूले हैं, भूले, फिर भी फूले हैं-2
पागलपन में झूले हैं-ऽऽऽ
जग डेरा है झूलों का, अच्छे बुरे उसूलों का-2
भूलों के पथ पर हो-3 मत भूल बढ़ाओ रे-ऽऽ।।5262।।

(465) मौका मिलता मुश्किल से, स्वागत करना तुम दिल से-2
प्रेम करो तुम साहिल से-ऽऽऽ
मिले यहाँ फिर क्या मालुम, योग बना लो आकर तुम-2
मौका है चोखा हो-2 नहिं इसे गँवाओ रे-ऽऽ।।5263।।

(466) आये हम परदेश में, इस मानव के भेष में-2
जाना अगले देश में-ऽऽऽ
यहाँ वहाँ का ख्याल रखें, अपने को खुशहाल रखें-2
खुशियों का जीवन हो-3 खुद खुशियाँ लाये रे-ऽऽ।।5264।।

(467) जो कानों के कच्चे हैं, समझो वो ही बच्चे हैं-
कौन कहे वो अच्छे हैं?-ऽऽऽ
देव-शास्त्र गुरु सच्चे हैं, उनकी माने पक्के हैं-2
माने गैरों की हो-3 वह धोखा खाये रे-ऽऽ।।5265।।

(468) मानवता जब आती है, इंसां तुझे बनाती है-2
मज़हब को दिखलाती है-ऽऽऽ
राह नई दिख जाती है, सेवा प्रेम बढ़ाती है-2
इंसां इसके बिन हो-3 बेजान कहाए रे-ऽऽ।।5266।।

(469) झूठी-झूठी बात नहीं, अपने कोई साथ नहीं-2
हूँ अनाथ, मैं नाथ नहीं-ऽऽऽ
शरण नाथ पा जाऊँगा, नहिं अनाथ रह पाऊँगा-2
भगवन् का साथ हो-3 मुझको नाथ! बनाए रे-ऽऽ।।5267।।

(470) जिसका दिल ही छोटा हो, अंदर से भी खोटा हो-2
साँप अहं का लोटा हो-ऽऽऽ
वो दिल नहिं, बिल वाले हैं, अंदर मन से काले हैं-2
ऐसों की संगति हो-3 नहिं कोइ बनाए रे-ऽऽ।।5268।।

(471) वो आकर क्या पाएगा? जो पुरुषार्थ न लाएगा–2
खा–पीकर मर जायेगा–ऽऽऽ
खुद में खुदा न ढूंढे जो, जी न सकेगा आकर वो–2
जीता जो इंसां हो–3 वो जीता जाये रे–ऽऽ।।5269।।

(472) जिसका दिल छोटा यारो, उसका खोटा दिल यारो–2
सुन लो सारे दिल वालो–ऽऽऽ
अश्क न आँखों से लाओ, गम भी हँसकर पी जाओ–2
हँसकर जो जीता हो–3 जीवित कहलाए रे–ऽऽ।।5270।।

(473) जो सच का अमृत पीता, वो खुद बन जाता गीता–2
हँसते हुए वही जीता–ऽऽऽ
धर्म कर्म से जो रीते, वक्त यहाँ गम में बीते–2
बंजर सा जीवन हो–3 उसका हो जाये रे–ऽऽ।।5271।।

(474) डालो कल पर काम नहीं, तभी मिले सम्मान यहीं–2
पुरुषारथ है नाम यही–ऽऽऽ
स्वयं जो अपना काम करें, फिर जाकर आराम करे–2
ऐसे ही इंसां हो–3 ऊँचाई पायें रे–ऽऽ।।5272।।

(475) बचपन निकला खेलों में, गई जवानी धेलों में –2
उम्र है गुजरी जेलों में –ऽऽऽ
आया यहाँ बुढ़ापा जब, याद आ जाएँ प्रभुवर तब–2
जिसमें हो शक्ति हो–3 वह ईश्वर पाये रे –ऽऽ।।5273।।

(476) कितनी चादर ओढ़ी हैं, कितनी मटकी फोड़ी हैं –2
कितनी माला तोड़ी हैं –ऽऽऽ
कितनी देहरी छोड़ी हैं, फिर भी लगती थोड़ी हैं –2
जब भी जानेगा हो–3 तब खुद पछताए रे –ऽऽ।।5274।।

(477) गैरों का हो दर्द जिसे, समझो जग में मर्द उसे –2
मूर्ख न माने फर्ज इसे –ऽऽऽ
दर्द बढ़ाता खुद इंसां, कर करके ये दिल नादां –2
छोड़े नादानी हो–3 वो ही फर्ज़ निभाए रे –ऽऽ।।5275।।

(478) तू ऊँचा उड़ सकता है, आसमान छू सकता है –2
हर सीढ़ी चढ़ सकता है –ऽऽ
जरा यहाँ अरमान करो, हिम्मत से तुम काम करो –2
जीतेगा वो जो हो–3 हिम्मत दिखलाए रे –ऽऽ।।5276।।

(479) किस–किसको तू याद करे, किससे यहाँ विवाद करे –2
जीवन क्यों बरबाद करे–ऽऽऽ
मन में यहाँ विषाद करे, दिल को क्यूँ नाशाद करे –2
दो पल का रहना हो–3 गम क्यूँ उपजाये रे –ऽऽ।।5277।।

(480) क्या सोना क्या चाँदी है, क्यूँ तू इसका आदी है –2
इसमें तो बरबादी है –ऽऽ
धन्धे सारे फंदे हैं, रमने वाले अंधे हैं –2
चिंता पैदा कर हो–3 क्यूँ दुःख बढ़ाए रे –ऽऽ।।5278।।

(481) भीतर कितना सुन्दर है, बाहर से क्यूँ बंदर है –2
ईश्वर तेरे अन्दर है –ऽऽ
तू ही यहाँ सिकन्दर है, सही राह का मंजर है –2
अपनी क्यूँ दौलत हो–3 निज हाथ मिटाये रे–ऽऽ।।5279।।

(482) मतलब के सब यार यहाँ, झूठा सब व्यापार यहाँ –2
दिखा न सच्चा प्यार यहाँ –ऽऽऽ
रिश्तों में सब रिसते हैं, अज्ञानी बन पिसते हैं –2
खुद को पाने की हो–3 अब अर्ज लगाओ रे–ऽऽ।।5280।।

(483) बड़े–बड़े हों जब धन्धे, भाव तभी ज्यादा गंदे –2
आँखें होते भी अंधे –ऽऽ
रोटी दो ही खाओगे, ज्यादा क्या कुछ पाओगे? –2
तेरा ये पाप हो–3 बस तुझे भ्रमाये रे –ऽऽ।।5281।।

(484) पर में हो आसक्ति जहाँ, मिटती अपनी शक्ति वहाँ –2
मिले न कोई युक्ति वहाँ –ऽऽ
मुक्ति न दुख से मिल पाए, सुख की कली न खिल पाए –2
ऐसा भवि प्राणी हो–3 घर त्याग न पाए रे –ऽऽ।।5282।।

(485) राग–द्वेष में धँसा हुआ, मोह जाल में फँसा हुआ –2
विषय भोग में रचा हुआ –ऽऽ
जीता है ज्यों मरा हुआ, रहता है ज्यों डरा हुआ –2
गम में यूँ जीकर हो–3 गम और बढ़ाये रे –ऽऽ।।5283।।

(486) गम को ढोता यहाँ जिया, रोते रोते जन्म लिया –2
चीख चीखकर मरण किया –ऽऽ
रिश्ते कई बनाये हैं, काम न कोई आये हैं –2
मातम सा जीवन हो –3 मायूस बनाये रे –ऽऽ।।5284।।

(487) कैसी कैसी बेला है, चारों ओर झमेला है –2
अजनबियों का मेला है –ऽऽ
खुशी गमों का खेला है, रहना तुझे अकेला है –2
कब तक दुनियाँ में हो–3 तू जान गँवाए रे –ऽऽ।।5285।।

(488) जीवन बहता पानी है, एक पड़ाव जवानी है –2
इसमें जात दिखानी है –ऽऽ
भूल करे तो हानि है, खुद में अमर कहानी है –2
पल में ही क्या से हो–3 क्या क्या हो जाये रे–ऽऽ।।5286।।

(489) क्यों इतना इतराते हो, मिट्टी पर इठलाते हो –2
अपना इसे बताते हो –ऽऽ
दुनियाँ के इस आँगन से, खाक सुपुर्देकरें तुझे –2
उस दिन पर तेरा हो–3 क्यूँ ध्यान न जाये रे –ऽऽ।।5287।।

(490) मिट्टी की इस काया को, दुनियाँ की इस माया को –2
तूने गले लगाया जो –ऽऽ
इक दिन ऐसा आयेगा, पिंजरे से उड़ जायेगा –2
कोई फिर तुझको हो–3 नहिं हाथ लगाये रे–ऽऽ।।5288।।

(491) जाना तुझे अकेला है, चंद दिनों का मेला है –2
गम का यहाँ झमेला है –ऽऽ
चलाचली का रेला है, पुण्य पाप का खेला है –2
इसमें फँस करके हो–3 क्यूँ जान गँवाए रे –ऽऽ।।5289।।

(492) आया था तब तू रोया, जाते जाते भी रोया –2
सारी उमर बोझ ढोया –ऽऽ
रिश्तों में खोया–खोया, क्या सोचा पर क्या बोया –2
पत्नि–पति–पोते हो–3 ये काम न आयें रे –ऽऽ।।5290।।

(493) दुनियाँ रैन बसेरा है, क्या तेरा क्या मेरा है –2
चंद दिनों का डेरा है –ऽऽ
जिसको कहते मेरा है, तुझको वही लुटेरा है –2
हर पल को जीकर हो–3 खुशहाल बनाओ रे –ऽऽ।।5291।।

(494) ओ इस तन के रखवाले, मरघट पर जाने वाले –2
चाहे जितना इठला ले –ऽऽ
क्यूँ इतना इतराते हो, भूल यहाँ क्यों जाते हो –2
कुछ भी नहिं जाये हो–3 बस धर्म हि जाये रे–ऽऽ।।5292।।

(495) दो दिन का मेहमान अरे, कितने हैं अरमान तेरे –2
क्यूँ बनता नादान अरे –ऽऽऽ
इक ना इक दिन जाना है, क्यूँ इससे अंजाना है –2
दुनियाँदारी ये हो–3 दुनियाँ भटकाये रे –ऽऽ।।5293।।

(496) दुख संताप महाभारी, सहता है ये संसारी –2
भव भव में बारी–बारी –ऽऽ
जिसको तू दिल देता है, वही तुझे छल लेता है –2
अपने ही गुण में – हो–3 अब लगन लगाओ रे –ऽऽ।।5294।।

(497) जलने वाले जलते हैं, चलने वाले चलते हैं –2
मलने वाले मलते हैं –ऽऽ
कई देख हर्षाते हैं, कई देख मुर्झाते हैं –2
होता जो भव में हो–3 चेहरे पर आये रे –ऽ।।5295।।

(498) अपना घर हम भूले हैं, पर को पाकर फूले हैं –2
मिथ्या मत में झूले है–ऽऽऽ
मिटते रहे अँधेरों में, इन पुद्गल के डेरों में –2
हमको ही अपनी हो–3 नहिं गंध सुहाये रे –ऽऽ।।5296।।

(499) जीवन बूँद समंदर है, दरिया–नाला मंजर है –2
लहर शांत अब अंदर है –ऽऽ
इसको तीर्थ बनाओ तुम, तीर्थंकर बन जाओ तुम –2
वरना जीवन में हो–3 दुर्गंध समाये रे –ऽऽ।।5297।।

(500) काबलियत तू पाएगा, कादिर दिल हो जाएगा –2
रब को दिल में पाएगा –ऽऽऽ
मिलनसार बन जाएगा, गम सारे दफनाएगा –2
खुशियों का तोहफा हो–3 तू खुद बन जाये रे –ऽऽ।।5298।।

(501) मज़हब में शर्मिंदा है, वो इंसां कब ज़िन्दा है ? -2
दिखने में बाजिन्दा (धूर्त) है -ऽऽ
अंजामे गम पायेगा, किस्मत नहिं चमकाएगा -2
जिंदादिली का हो-3 क्यूँ ख्वाब बनाए रे -ऽऽ॥5299॥

(502) सब पाना आसान है, कुदरत का वरदान है -2
दिले खुदा ईमान है -ऽऽ
जो खुद से अंजान है, इंसां वो नादान है -2
अपने को भूला हो-3 वो भूसा पाये रे -ऽऽ॥5300॥

(503) कोरी कापी लाये हो, लिखने को तुम आये हो-2
लिखो वही जो अच्छा हो-ऽऽ
जो भी तुम लख जाओगे, उसको ही लिख पाओगे -2
लखना और लिखना हो-3 जल्दी कर जाओ रे-ऽऽ॥5301॥

(504) शूल हटाके फूल वरो, जीवन की सब भूल तजो -2
दिल से प्रभु को रोज भजो-ऽऽ
महके महके रहो यहीं, बहके बहके रहो नहीं -2
चलती ये गाड़ी हो-3 कब ठप्प हो जाये रे -ऽऽ॥5302॥

(505) पर को पाकर भूले हैं, भूल भूलकर झूले हैं -2
भूले फिर भी फूले हैं -ऽऽ
अनुकूलों को सुख माना, प्रतिकूलों में दुख जाना-2
कैसे जीवन की हो-3 सच राह दिखाए रे -ऽऽ॥5303॥

(506) सूरत अपनी दिखी नहीं, मूरत अपनी मिली नहीं -2
गम ही गम में रहे यहीं -ऽऽऽ
अब ऐसा कुछ काम करें, जिससे कुछ अंजाम वरें -2
अपने दर्पण में हो-3 क्यूँ धूल लगाये रे -ऽऽ॥5304॥

(507) कुछ दिन का मेहमान अरे, क्यों दिल में अरमान भरे -2
तज दे पर अभिमान अरे -ऽऽ
दुनियाँ गोरख धंधा है, क्यों तू इसमें अंधा है -2
गैरों की खातिर हो-3 तू पाप कमाये रे -ऽऽ॥5305॥

(508) बचपन खेलकूद खोया, आई जवानी में सोया -2
गई जवानी तो रोया -ऽऽ
यूँ ही बीता भव सारा, मिला न जो लगता प्यारा -2
मरने के वक्त हो-3 जी बहु पछताए रे -ऽऽ॥5306॥

(509) यहाँ साथ में लाया क्या?, तूने यहाँ कमाया क्या -2
आकर तूने पाया क्या -ऽऽ
इसका जरा विचार करें, जो सच लगे उसे वर लें -2
फिर जो दिल बोले हो-3 उसको अपनाए रे-ऽऽ॥5307॥

(510) अपने में नहिं रह पाये, पर पुद्गल में भरमाए -2
पर को अपना-अपनाकर -ऽऽऽ
निज में गर रम जाओगे, खुद ही ज्ञान बढाओगे -2
वरना जीवन की हो-3 शांति मिट जाये रे -ऽऽ॥5308॥

(511) आओ ईश्वर जानें हम, उसकी सत्ता मानें हम–2
कभी न अपनी तानें हम–SSS
ईश्वर से सब मिलता है, मन फूलों सा खिलता है–2
ईश्वर बिन जीवन हो–3, को भार बताएँ रे–SS।।5309।।

(512) जम–जमकर जमते जाना, जमीं जमा करते जाना–2
यही जमाना है जाना–SSS
रहो जमाने में आकर, जमना नहीं यहाँ पलभर–2
जमने वाले को हो–3 यमराज बुलाएँ रे–SS।।5310।।

(513) अपना ढूँढ़ ठिकाना रे, क्यूँ बनता अंजाना रे –2
कर दे दूर बहाना रे –SSS
दर दर की मत ठोकर खा, अपने अंदर में तू जा –2
अपने ही घर में हो–3 हर चीज दिखाए रे –SS।।5311।।

(514) कर लो आकर हठखेली, विषय भोग में रंगरेली –2
मौत सभी के संग खेली –SSS
हतप्रभ सा रह जायेगा, तेरा बुलावा आयेगा –2
कोई फिर तेरा हो–3 नहिं साथ निभाये रे –SS।।5312।।

(515) वक्त नहीं रुकता इकपल, उम्र घटे अपनी पल–पल –2
फिर भी चेती नहीं अकल –SSS
फँसता जाता तू दलदल, अच्छा कैसे पाए फल –2
माटी को पाकर हो–3 तू क्यों इठलाए रे –SS।।5313।।

(516) आकर क्यूँ इतराया तू, मिट्टी में बौराया तू –2
समझ न पाया माया तू –SSS
ये सब खेल खिलौने हैं, दिखते बड़े सलौने हैं –2
खुद को जो भूला हो–3 इसमें फँस जाये रे –SS।।5314।।

(517) इक–दो पल का मेला है, चलना तुझे अकेला है –2
ये संसार झमेला है –SSS
मोह बहुत अलबेला है, सबको यहाँ धकेला है –2
इसकी बातों से हो–3 मन दूर हटाओ रे –SS।।5315।।

(518) डूबो निज आनंद में, अपने ही गुलकंद में –2
स्वयं स्वभाव सुगंध में –SSS
शुद्धातम के छंद में, रहो सदा निर्बन्ध में –2
इक दिन दिल में ही हो–3 सूरज उग आये रे –SS।।5316।।

(519) किसकी खातिर खाता तू, बनें बैंक में खाता क्यूँ –2
कमा रहा किस खातिर तू –SSS
तन–धन सब रह जायेगा, तेरा बुलावा आयेगा –2
माँगेगा उत्तर हो–3 तब क्या बतलाए रे –SS।।5317।।

(520) सभी जनों की कल्याणी, हित–मित–प्रिय है जिनवाणी–2
पाये, तिर, जाता प्राणी –SSS
जिनवाणी का श्रवण मिले, उसके सारे कर्म धुले –2
प्रभुवर की वाणी हो–3 सौभाग्य बनाए रे –SS।।5318।।

(521) भीख माँगकर लाये हम, चार दिनों का ये नर तन–2
कर ले तू इसको पावन–SSS
नौन तेल आटा साबुन, इसमें ही क्या गुजरें दिन?–2
इनमें ये जीवन हो–3 क्यूँ व्यर्थ गँवाये रे–SS।।5319।।

(522) पैर दबाएगा बेटा, वंश चलाएगा पोता–2
खुद ही सोच रहा लेटा–SSS
करता रहता ख्वाब अरे, मिलते इनसे दुक्ख निरे–2
ऐसे ही जीवन हो–3 इंसान बिताएँ रे–SS।।5320।।

(523) मन मंदिर ये मेला है, जीवन चलता ठेला है–2
गम ही गम की वेला है–SS
दिल पापों का थैला है, मन से बना करेला है–2
हम ही कड़वे तो हो–3, सब कड़वा पायें रे–SS।।5321।।

(524) जीवन नया बनाना है, तो कर्त्तव्य सजाना है–2
संस्कार अपनाना है–SSS
महका–महका जीवन हो, स्वर्गों का घर उपवन हो–2
तब ही जीवन का हो–3, आधार दिखाये रे–SS।।5322।।

(525) खुद से ही अनुराग करो, तीर्थक्षेत्र पर त्याग करो–2
जीवन अपना पाक करो–SSS
गम का कम परिपाक करो, अपना पथ ईजाद करो–2
तब ही जीवन में हो–3, शुभ राह दिखाए रे–SS।।5323।।

(526) जीवन की हो प्यास यहाँ, हरदम रहे प्रयास यहाँ–2
निश्चित होंगे पास यहाँ–SSS
ऐसा कर विश्वास दिले, खुद का स्वयं निवास मिले–2
तब ही ये जीवन हो–3, कुछ समझ में आये रे–SS।।5324।।

(527) गुलशन जीस्त बनाएँगे, सुन्दर फूल लगायेंगे–2
सारा जग महकाएँगे–SS
अपने छोटे जीवन को, रौशनमय कर जायेंगे–2
तब ही जीवन में हो–3, निज सार समाये रे–SS।।5325।।

(528) मन पर चढ़ती जंग है, होती नहीं उमंग है–2
धरम करम सब भंग है–SSS
चढ़े न मजहब रंग है, देख हृदय ये दंग है–2
जीवन के रंग में हो–3, कैसे रंग पाये रे–SS।।5326।।

(529) गैरों का उपकार करें, सबको यह इज़हार करें–2
जीवन को गुलजार करें–SSS
मुजरिम बनकर नहीं जियें, हम गुनाह से यहाँ बचें–2
जीवन को जीवन हो–3, की राह दिखाएँ रे–SS।।5327।।

(530) वही माँगना भला अरे, जहाँ निजी जलजला दिखे–2
जीवन की हर कला दिखे–SSS
सारे रोग मिटाएँगे, यही भावना लायेंगे–2
दुनियाँ को चाहे हो–3, क्यूँ भार बढ़ाए रे–SS।।5328।।

(531) क्यूँ बनता है बौर यहाँ, तू खुद है सिरमौर यहाँ–2
कितना रहना और यहाँ–SSS
किसका कितना ठौर यहाँ, जन्म–मरण का दौर यहाँ–2
पलभर का जीवन हो–3, क्यों व्यर्थ गँवाये रे–SS।।5329।।

(532) गम से जीवन भरा खचित, ज्ञान बढ़ाना सदा उचित–2
जीवन जैसे सूत्र गणित–SSS
हल करना है सरल यहाँ, हाल बदलना कठिन यहाँ–2
रक्षित कर जीवन हो–3, ऊपर उठ जाये रे–SS।।5330।।

(533) सार मिले इस जीवन में, नहीं जरूरी भव वन में–2
अर्थी मिले जरूर तुम्हें–SSS
गर आना जब निश्चित था, तो जाना भी निश्चित है
अर्थी के पहिले हो–3, तू खुद जल जाये रे–SS।।5331।।

(534) पाया, उसको खोना है, खाक सुपुर्देहोना है –2
बीज सुखों का बोना है –SSS
जीवन बहुत सलौना है, सुंदर एक खिलौना है –2
अपने इस तन को–3 शुभ खेल खिलाओ रे –SS।।5332।।

(535) भोगों के बदहालों में, कोई गम के ख्यालों में –2
कोई जिये सवालों में –SSS
दुनिया के जंजालों में, संकट में बेहालों में –2
इनमें दुखदायी हो–3 संसार दिखाए रे –SS।।5333।।

(536) इन्द्रिय, रूप, बुद्धि, यौवन, तेज, शयन, आसन जीवन –2
घर बल धन सारे वर्तन –SSS
ये सब क्षण भंगुर ऐसे, इन्द्रधनुष आये जैसे –2
इनमें ध्रुवता का हो–3 क्यूँ भाव बनाये रे –SS।।5334।।

(537) करो गुनाहों का गालन, इस जीवन का संचालन –2
कर्त्तव्यों का परिपालन –SSS
तब जीवन संजीवन हो, मन का मंदिर उपवन हो,
फूलों की बगिया हो–3 ये दिल बन जाये रे –SS।।5335।।

(538) जी जिसका नहिं जी जाए, जीवन भर जी दुख पाये –2
जी को समझ भी जी पाये –SSS
जी की जी में रखा नहीं, जीकर जी को दिखा यहीं –2
जी की नहिं माने हो–3 तो जी घबराये रे –SS।।5336।।

(539) जिसके शब्द बनें खंजर, उसका दिल समझो बंजर –2
हो जाये खुद ही जर जर –SSS
नहीं बना ऐसे मंजर, पैदा कर तू दिले सहर –2
वरना इक पल में हो–3 जीवन ढल जाये रे –SS।।5337।।

(540) जीवन यहाँ अधूरा है, जिसमें भरा धतूरा है –2
काल का पिण्डखजूरा है –SSS
हे प्रभु तू ही भर पाये, तभी तुम्हारे दर आये –2
तेरे बिन जीवन हो–3 खाली रह जाये रे –SS।।5338।।

(541) तू जब आया दिले निकट, तभी हुआ है दूर कपट –2
मन की दूर हुई खटपट –ऽऽऽ
मिले उसी से ज्ञान सघन, वही दिलाता मोक्ष सघन –2
वो ही हम सबके हो–3 दुर्भाव मिटाए रे –ऽऽ।।5339।।

(542) साँसों का हो खेल खतम, पंछी उड़ जाये इकदम–2
बचा सके नहिं कोई करम –ऽऽऽ
कर ले अच्छा जतन यहाँ, वरना होगा पतन यहाँ –2
मेहमां दो पल का हो–3 पल हरपल जाये रे –ऽऽ।।5340।।

(543) दीपक जैसे रोज जलो, फूलों जैसे यहाँ खिलो –2
मिलो तो हँसकर यहाँ मिलो –ऽऽऽ
तरु में फल से यहाँ फलो, सूरज सा प्रतिदिन निकलो –2
ऐसा ही जीवन हो–3 वरदान कहाये रे –ऽऽ।।5341।।

(544) राह–राह पर काँटे हैं, धर्मी ने सब कांटे हैं –2
पुण्य फलों को बाँटे हैं –ऽऽऽ
आओ राहें साफ करें, दिल में स्वच्छ विचार करें –2
तब ही जीवन में हो–3 अस्तित्व दिखाये रे –ऽऽ।।5342।।

(545) ये पतवार चलाई रे, तूने नाव धकाई रे –2
नाव नहीं बढ़ पाई रे –ऽऽऽ
मूरख बना रहा भोला, लंगर उसका नहिं खोला –2
ऐसा ही जीवन हो–3 तेरा नजराए रे –ऽऽ।।5343।।

(546) धन में पागल तिष्ठा है, वेदी यहाँ प्रतिष्ठा है –2
कर जो दिल में इच्छा है –ऽऽऽ
मंगल दीप जलाएँ हम, भगवन् को पधराएँ हम –2
तब ही जीवन का हो–3 हम फल पा जायें रे –ऽऽ।।5344।।

(547) तन के लिये जिये कोई, मन के लिये जिये कोई –2
खुद के लिये जिये कोई –ऽऽ
उम्र मिली मजबूरी है, जीना बहुत जरूरी है –2
जीने जीने में हो–3 कई फर्क दिखाए रे –ऽऽ।।5345।।

(548) गिनती की हैं साँस यहाँ, निज पर करि विश्वास यहाँ–2
कोइ नहीं है खास यहाँ –ऽऽ
जीवन कारावास यहाँ, दुनियाँ में आवास कहाँ –2
जाने जीवन की –हो–3 कब शाम हो जाये रे –ऽऽ।।5346।।

(549) जिस पर नजर गढ़ाएगा, वो अंदर आ जाएगा –2
फिर वो सोच बनाएगा –ऽऽऽ
सोच चरित्र बन जायेगा, पाप पुण्य वह लाएगा –2
अपनी दृष्टि ने हो–3 सब दृश्य बनाए रे –ऽऽ।।5347।।

(550) जीवन खिलता फूल है, जाने नहिं ये भूल है –2
दुनियाँ भूल भुलैया है –ऽऽ
भूल मिटाओ जीवन में, भाव बनाओ निज मन में –2
जाने कब जग मे हो–3 अर्थी उठ जाये रे –ऽऽ।।5348।।

(551) काल सर्प का योग कहाँ, दिलवाता है मौत यहाँ –2
मुश्किल से ये टले यहाँ –SSS
जाप विधान करोगे जब, ऐसा योग टलेगा तब –2
ईश्वर की भक्ति हो–3 हर पाप मिटाये रे –SS।।5349।।

(552) खुश नसीब सी हसरत हो, दिल मे कभी न नफरत हो –2
पापों में नहिं सिरकत हो –SSS
तब ये दिल होता दर्पण, मन खुद को करता अर्पण –2
खुशियों के मंजर हो–खुद ही बन जायें रे –SS।।5350।।

(553) बीज दुखों के बोएँ क्यों? आज का दिन हम खोएँ क्यों?
भूल स्वयं को सोएँ क्यों? –SSS
जिन घड़ियों में हँस सकते, उन घड़ियों में रोएँ क्यों?–2
कल की चिन्ता में हो–3 क्यूँ आज मिटाए रे –SS।।5351।।

(554) कल की जो चिंता करता, वो जिन्दा होकर मरता–2
कभी नहीं ऊपर उठता–SSS
चिन्ता छोड़ अरे कल की, सोचो चिन्ता के फल की –2
कल की जो सोचे हो–3 वो अकल न पाए रे–SS।।5352।।

(555) एक बीज हम बोते हैं, लाखों बीज संजोते हैं –2
तब खुशियों में होते हैं –SSS
वैसा ही तू धर्म समझ, ईश्वर की सेवा में लग–2
आज का बीज हो–3 कल फल दिखलाए रे –SS।।5353।।

(556) आज न छोड़ो कल पर तुम, कलकल कल को समझो तुम
थोड़ी अकल लगाओ तुम–SS
कर ले आज प्रयास यहाँ, होगा दिले प्रकाश यहाँ –2
आलस अपनाकर – हो–3 क्यूँ समय गँवाए रे–SS।।5354।।

(557) सोने को जीवन भर है, जगने में ये पलभर है –2
वक्त समझना तिलभर है –SSS
अभी बहुत दिन जीना है, ऐसा लगता अक्सर है –2
छोड़ो ये भूलें –हो–3 कुछ ज्ञान जगाओ रे –SS।।5355।।

(558) दो ही कला काम की हैं, बाँकी सभी नाम की हैं–2
बहत्तर कला पुरुष की हैं–SSS
एक जीविका पार करे, एक जीव उद्धार करे–2
दोनों कलाएँ हो–3, भव पार करायें रे–SS।।5356।।

(559) क्यों तू बंध बढ़ाता है, बंधन ही भ्रमवाता है–2
फिर भी समझ न पाता है–SSS
आओ बंध समझ लें हम, बंधन से कुछ हट लें हम–2
बंधन जाने बिन हो–3 निर्बन्ध न पाये रे–SS।।5357।।

(560) भावों से ही कर्म कटें, भावों से ही कर्म बंधे–2
भावों से ही स्वप्न सजें–SSS
मन के सारे रंग बनें, भावों के ही संग चलें–2
भावों के बिन मन हो–2 कुछ नहिं कर पाये रे–SS।।5358।।

(561) गुल मिलने पर इठलाये, वो काँटों में मुरझाये-2
दिले नहीं समता लाये-SSS
ये सब हैं संयोग अरे, क्यों तू हर्ष विषाद करे-2
कर्मों से छाया हो-3 कहीं धूप दिखाए रे-SS।।5359।।

(562) जितना भी कर जाओगे, उतना ही फल पाओगे-2
दिये बिना नहिं मिलता है-SSS
जैसा भी कर जाओगे, वैसा ही फल पाओगे-2
नीम के तरु में हो-3, नहिं आम दिखाएँ रे-SS।।5360।।

(563) मिला वही तकदीर है, किया वही तद्वीर है-2
दिल में इक अक्सीर है-SSS
अंतस् की जब आँख खुले, तब ही जीवन द्वार मिले-2
करते ही जाना हो-3, पुरुषार्थ कहाये रे-SS।।5361।।

(564) कर्मों का फल नहिं चाहे, कर्म सदा करता जाये-2
संत पुरुष वो कहलाए-SSS
सभी द्वन्द्व से उठ जाता, शीघ्र मुक्ति फल को पाता-2
भगवद् गीता में हो-3, प्रभु यही बताएँ रे-SS।।5362।।

(565) भक्तिभाव से कर्म करे, वश में इन्द्रिय मन करे-2
वही सभी को प्रिय लगे-SSS
कर्म यहाँ सारे करता, लेकिन कभी नहीं बँधता-2
भगवद् गीता में हो-3, प्रभु यही बताएँ रे-SS।।5363।।

(566) कर्म फलों का त्याग करें, अनासक्त हो कर्म करे-2
उसको दिल में ब्रह्म दिखे-SSS
जैसा कमल रहे जल में, वैसा भक्त रहे फल में-2
गीता में हमको हो-3, श्रीकृष्ण बताएँ रे-SS।।5364।।

(567) कर्म-कर्म का हितकारी, जीव-जीव का हितकारी-2
नहिं जाने दुनियाँ सारी-SSS
कौन न अपना हित चाहे, अपना-अपना अवगाहे-2
चेतन सुन तू भी हो-3, अपना हित चाहो रे-SS।।5365।।

(568) पुण्य फलों में फूलो मत, ईश्वर-गुरु को भूलो मत-2
पाप कर्म में झूलो मत-SS
इतराना मिट जाना है, झुकने में गुण पाना है-2
कर्मों की कश्ती हो-3, नहिं पार कराये रे-SS।।5366।।

(569) कर्म उदय में आता है, दुःख-सुखों को लाता है-2
राग-द्वेष बनाता है-SS
ज्ञान करें पुरुषार्थ करें, समता के हम भाव धरें-2
तब ही ये कर्म हो-3, जाये नहिं आये रे-SS।।5367।।

(570) अंतस् गुण का बाना है, भीतर रूप सुहाना है-2
इक सम्यक्त्व निशाना है-SS
तुझको गर सुख पाना है, तो सब कर्म नशाना है-2
कर्मों के नशते हो-3, अपना मिल जाये रे-SS।।5368।।

(571) दिल को गुल सा खिला–खिला, राग–द्वेष तू भुला–भुला–2
आतम का रस पिला–पिला–ऽऽऽ
कर्मों की जड़ हिला–हिला, छोड़ सभी तू यहाँ गिला–2
दिल के गुलशन में हो–3, खुद गुल खिल जाये रे–ऽऽ।।5369।।

(572) जमता वही जमाने में, जिसकी चाह खजाने में–2
गम पाता अज्जाने में–ऽऽऽ
मिटता कर्म कमाने में, अच्छा बुरा बनाने में–2
जम–जमके जग में हो–3, क्यूँ ठोकर खाये रे–ऽऽ।।5370।।

(573) चंद दिनों का डेरा है, करता मेरा–तेरा है–2
गफ़लत का ये फेरा है–ऽऽऽ
कर्मों ने ही घेरा है, कर्मों ने ही पेरा है–2
कर्मों की लीला हो–3 कोइ जान न पाए रे–ऽऽ।।5371।।

(574) एक जिन्दगी तो कम है, क्यूँ तेरी आँखें नम हैं–2
इसका क्यूँ करता गम है–2
आज बीज डल जायेगा, कल फल से फल जायेगा–2
अपनी धरती को हो–3 उपजाऊ बनाओ रे–ऽऽ।।5372।।

(575) बेड़ी पहनो सोने की, या फिर पहनो लोहे की–2
बेड़ी तो है बेड़ी ही–ऽऽऽ
बेड़ी, बेड़ा गर्क करे, समय स्वयं का व्यर्थ करे–2
कर्मों का बंधन हो–3 परतंत्र बनाए रे–ऽऽ।।5373।।

(576) मेरा ही अपराध यहाँ, देता कारागार यहाँ –2
दिखलाता संसार यहाँ –ऽऽऽ
हो गुनाह जैसे मेरे, वैसा गम मन को घेरे –2
गम ही कर्मों की हो–3 गुरु सजा बताएँ रे –ऽऽ।।5374।।

(577) हमको भी चलना होगा, तुमको भी चलना होगा –2
साँचे में ढलना होगा –ऽऽऽ
अर्थी पर चढ़ना होगा, दुनियाँ से उठना होगा –2
तेरे ही कर्म हो–3 तेरा साथ निभाए रे –ऽऽ।।5375।।

(578) धू–धू कर जल जायेगा, मिट्टी में मिल जायेगा –2
जब अंतिम दिन आयेगा –ऽऽऽ
कोई न साथ निभाएगा, धरा सभी रह जाएगा –2
तेरा ही कर्म हो–3 तेरे साथ में जाए रे –ऽऽ।।5376।।

(579) भाग्यहीन भय खाता है, गम में जीस्त बिताता है –2
कर्तव स्वयं भुलाता है –ऽऽऽ
बदकिस्मत का मारा जो, उसका कौन सहारा हो –2
ईश्वर भी उसका हो–3 नहिं साथ निभाए रे –ऽऽ।।5377।।

(580) धर्म हृदय खिलवाता है, दिल का मैल धुलाता है –2
अपने सभी बनाता है –ऽऽऽ
सबको गले लगाता है, सारे बैर मिटाता है –2
धर्म के मिलते ही हो–3 दुनियाँ जल जाये रे –ऽऽ।।5378।।

(581) आलीशान मकान तेरे, रह जायेंगे सभी धरे –2
जब आयें यमराज अरे –SSS
क्यूँ तुझको परवाह नहीं, क्या परभव सुख चाह नहीं –2
तेरा ही कर्म हो–3 तेरा साथ निभाए रे–SS।।5379।।

(582) किस्मत जिनकी चोखी है, उसकी धाख अनोखी है –2
रहता सदा निरोगी है –SSS
जो भी इंसां भोगी है, समझो वो ही रोगी है –2
अच्छे कर्मों से हो–3 किस्मत बन जाये रे –SS।।5380।।

(583) किस्मत को रोने वाले, हो जाते हैं मतवाले –2
रह नहिं पाते दिलवाले –SSS
मेहनत में मन से काले, पाते कभी न उजियारे –2
अपनी वो नैया हो–3 अपने हाथ डुबोएँ रे –SS।।5381।।

(584) करो न कर्म कभी खोटा, जिससे हो ये दिल छोटा –2
ज्ञान का घट जाये कोटा –SSS
ज्ञान मिले तो सब पाये, ज्ञान बिना कुछ नहिं भाये –2
अच्छा हो कर्म हो–3 तो धर्म दिलाए रे –SS।।5382।।

(585) जो भी मौके को चूके, उसको सारे जन थूके –2
उसके जीवन में धोखे –SSS
मौके पर हो काम सफल, आज करो या करना कल –2
तेरी इच्छा ही हो–3 सब कर्म बनाए रे –SS।।5383।।

(586) दिलको तू कोमल कर ले, मन अपना निर्मल कर ले –2
भला कर्म प्रतिदिन कर ले –SSS
जमीं उर्वरा तू कर ले, जीवन योग्य अभी कर ले –2
ईश्वर क्या मालुम हो–3 कब बीज गिराये रे –SS।।5384।।

(587) बंधन के सामान निरे, जिधर देखता उधर धरे –2
यहाँ सँभलकर देख अरे –SSS
नज़र छलावा कर जाये, फिर तू खुद ही बँध जाये –2
कर्मों के बंधन हो–3 फिर हमें भ्रमायें रे –SS।।5385।।

(588) पुण्य उदय जब हो अपना, गैर भी बन जाये अपना –2
सुख आता अपने अँगना –SSS
पाप उदय जब अपना हो, दुश्मन बेटा अपना हो –2
अपना ही कर्म हो–3 आगे राह बनाये रे –SS।।5386।।

(589) मकां खड़े रह जायेंगे, कोइ न साथ निभायेंगे –2
सिर्फ कर्म रह जायेंगे –SSS
किसको अपना मान रहा, खुद को नहिं पहिचान रहा –2
पंछी तू अपने हो–3 क्यूँ पंख कटाये रे –SS।।5387।।

(590) कई साफ करते नाली, धोते बर्तन कोइ थाली –2
कोई बाग के हैं माली –SS
रहे धर्म से हैं खाली, मन की परिणति है काली –2
कर्मों की ताकत हो–3 क्या खेल दिखाएँ रे –SS।।5388।।

(591) कोई हमें रुलाता है, कोई हमें फँसाता है –2
कोई हमें हँसाता है –ऽऽ
सभी नज़ारे मिलते हैं, कर्म यहाँ जब चलते हैं –2
कर्मों के फल से हो–3 कब कौन बचाये रे –ऽऽ।।5389।।

(592) जिसका होता दिल छोटा, करता कर्म वही खोटा –2
लाभ न हो, होता टोटा –ऽऽ
सागर सा दिल लेकर भी, दिल का भरे नहीं लोटा –2
किस्मत ही सबको हो–3 सब खेल दिखाए रे–ऽऽ।।5390।।

(593) तन इक दिन जल जायेगा, मिट्टी में मिल जायेगा –2
कर्म साथ न जायेगा –ऽऽऽ
संस्कार संग जायेंगे, भावी क्रिया करायेंगे –2
भावों की बगिया हो–3 तू कब महकाये रे –ऽऽ।।5391।।

(594) सब कर्मों के मारे हैं, लिये दिले– अंधियारे हैं –2
इसीलिये दुखियारे हैं –ऽऽऽ
ऐसा अब कुछ काम करो, सच्चा–सच्चा ज्ञान वरो –2
वरना इस दिल में हो–3 कचरा भर जाये रे –ऽऽ।।5392।।

(595) दुख में सुख में समता हो, बन्धु वर्ग में ममता हो –2
मन में नहीं विषमता हो –ऽऽऽ
योग–वियोग भवन, वन में– रहें हमेशा चेतन में –2
भावों में भव के हो–3 सब कर्म नशाये रे –ऽऽ।।5393।।

(596) अंधकार ने घेरा है, दीपक तले अँधेरा है –2
दिखता नहीं सबेरा है –ऽऽऽ
जग अंधों का डेरा है, हमें कर्म ने घेरा है –2
जल्दी इस जग में हो–3 सच ज़ान उपाएँ रे –ऽऽ।।5394।।

(597) जीवन कल का मत सोचो, अच्छाई पहिले खोजो –2
खोजोगे वह पाओगे –ऽऽऽ
जैसा यहाँ लुटाओगे, वैसा घर में पाओगे –2
पीतल के बदले हो–3 नहिं स्वर्ण दिखाए रे–ऽऽ।।5395।।

(598) कर ले जो कुछ करना है, आज नहीं कल मरना है–2
करनी का फल भरना है –ऽऽऽ
कर्म सही जो करते हैं, धर्म सही वो वरते हैं –2
जितना कर लोगे हो–3 उतना मिल पाये रे –ऽऽ।।5396।।

(599) जिसका हो संयोग यहाँ, गंदा हो उपयोग यहाँ–2
रहे अपावन योग कहाँ–ऽऽऽ
उस पर तन गर चाहें हम, मूर्ख कहे ही जायें हम–2
तन धन की पूजा हो–3, सब व्यर्थ बताएँ रे–ऽऽ।।5397।।

(600) राग–द्वेष जब करता है, तब कर्मों से बँधता है–2
समता निर्बन्धनता है–ऽऽऽ
पर में मस्ती लायेगा, निज हस्ती खो जायेगा–2
कर्मों की सरिता हो–3, में खूब नहाए रे–ऽऽ।।5398।।

(601) राग–द्वेष की चिंगारी, कर्मों की है फुलवारी–2
खत्म करे गुण की क्यारी–SSS
मजहब की महिमा न्यारी, हर इंसा को सुखकारी–2
खुशियों की आहट हो–3, गम–खुशी बनाये रे–SS।।5399।।

(602) ममता मन की तजता है, वह समता में रमता है–2
कर्मों को वह नशता है–SSS
निज में स्वयं सँवरता है, ज्ञान स्वयं का वरता है–2
मोह की मति को हो–3, जो दूर हटाएँ रे–SS।।5400।।

(603) अन्य जगह पर पाप किये, धर्मस्थल पर नाश किये–2
ऋषियों ने बतलाया हैं–SSS
धर्मस्थल पर पाप हुए, बिन भोगे नहिं नाश हुए–2
ऐसे कर्मों से हो–3, भगवान बचाएँ रे–SS।।5401।।

(604) चाह से बनती राह यहाँ, कौन बताए राह यहाँ–2
आह बनाये चाह यहाँ–SSS
खुद की कर परवाह यहाँ, दूर करो सब डाह यहाँ–2
विषयों की चाहत हो–2 भव राह डुबोये रे–SS।।5402।।

(605) कर पालन कर्त्तव्यों का, काम समझ ये भव्यों का–2
समझो नहीं अभव्यों का–SSS
इनसे ही अघक्षालन हो, खुद का ही संचालन हो–2
ये ही कर्तव्य हो–3 सद्ज्ञान बढ़ाएँ रे–SS।।5403।।

(606) जो कर्त्तव्य निभाता है, वही सभी कुछ पाता है –2
दोनों हाथ लुटाता है –SSS
गम को शीघ्र मिटाता है, दिल में फूल खिलाता है –2
सम्यग्दर्शन का हो–3 वो रत्न सजाये रे –SS।।5404।।

(607) आदत का रंग चढ़ जाये, मुश्किल से वह धुल पाये–2
कई दिनों वह दुख पाये –SSS
संस्कार की चादर लो, कर्त्तव्यों का रंग घोलो –2
धीरे–धीरे सब हो–3 आदत मिट जाये रे –SS।।5405।।

(608) किसको देगा दोष अरे, जब खुद तू मदहोश अरे –2
अर्द्ध मरे, बेहोश जिये –SSS
अपना भूले कर्म यहाँ, कौन बताए धर्म यहाँ –2
अपने कर्त्तव्य में हो–3 निजधर्म दिखाए रे –SS।।5406।।

(609) क्षणभंगुर जग माया है, नश्वर अपनी काया है –2
क्यूँ इस पर ललचाया है –SSS
इसमें सुख–दुख छाया है, तृण से इसे बनाया है –2
इसमें ध्रुव पा ले हो–3 यह समझ कहाये रे –SS।।5407।।

(610) धर्म–कर्म से दूर रहा, पापों में मगरूर रहा –2
क्रोध मान में चूर रहा –SSS
रहा मेरा मन मनमौजी हित की बात नहीं सोची –2
मिट्टी का तन ये हो–3 क्षण में गल जाये रे –SS।।5408।।

(611) गुल में नहीं सुवास हो, फल में नहीं मिठास हो–2
भोजन में नहिं स्वाद हो–ऽऽऽ
तो फिर सब बेकार है, जहाँ नहिं कुछ सार है–2
खुशबू से गुल की हो–3 शोभा बढ़ जाये रे–ऽऽ।।5409।।

(612) हँसने से आँखें खुलतीं, रोने से आँखें, धुलतीं –2
गाने से बगिया खिलती –ऽऽऽ
चिंता–जल्प–विकल्प नहीं, हँस सकते हैं सिर्फ वही –2
हँसने वाला तो हो–3 इक देव कहाये रे –ऽऽ।।5410।।

(613) खुशियों में रहना हरदम, पसंद खुशियाँ करते तुम –2
हम पसंद करते हैं गम –ऽऽऽ
खुशी–किसी को गम पसंद, कहो है किसका दिल बुलंद–2
गम को जो चाहे हो–3 गम गुल बन जाये रे –ऽऽ।।5411।।

(614) हो विचारधारा जाली, किस्मत हो जाये काली–2
राह न हो मंजिल वाली–ऽऽऽ
सोच में सुन्दर समता हो, सदाचार में रमता हो–2
उसकी बदकिस्मत हो–3 किस्मत बन जाये रे–ऽऽ।।5412।।

(615) किस्मत को अजमायेंगे, खुश किरदार बनाएँगे–2
दिले चिराग जलायेंगे ?–ऽऽऽ
साहिल है नजदीक तेरे, हो पाँवों में सफर तेरे–2
चलने से मंजिल हो–3, भी पास आ जाये रे–ऽऽ।।5413।।

(616) गुरु अक्सीर दिलाते हैं, नयी तकदीर बनाते हैं–2
नरक से यहाँ बचाते हैं–ऽऽ
इक तद्वीर बना करके, दुख सब यहाँ मिटाते हैं–2
गुरुवर की महिमा हो–3 ये दुनियां गाये रे–ऽऽ।।5414।।

(617) कोई पाकर खोता है, कोई खोकर पाता है–2
होना है सो होता है–ऽऽऽ
सब किस्मत का खेल है, कर्म प्रकृति का मेल है–ऽऽ
अपना ही कर्म हो–3, हर राह बनाए रे–ऽऽ।।5415।।

(618) खुद को सब कुर्बानी हो, दिल हो जैसा पानी हो–2
ऐसी जीस्त कहानी हो–ऽऽऽ
किस्मत भले पुरानी हो, खिदमत भरी जवानी हो–2
साहिल को पाकर हो–3, क्यों नाव डुबोये रे–ऽऽ।।5416।।

(619) कैसे–कैसे धन जोड़ा, अपनों का भी दिल तोड़ा –2
मोही बनकर सिर फोड़ा –ऽऽऽ
पोता बेटे करें मज़ा, फूटी किस्मत मिले सज़ा –2
मोही का मन ये हो–3 धन में बौराये रे –ऽऽ।।5417।।

(620) उगता सूरज देखे जो, लिखे भाग्य की रेखा वो –2
जाने सही सलीका वो –ऽऽऽ
सूरज जिसे न दिख पाये, किस्मत में कालिख आये –2
देखो सूरज को हो–3 तो रज मिट जाये रे –ऽऽ।।5418।।

(621) कई भूख से रोते हैं, मरकर जीवन खोते हैं –2
कई दु:खों को ढोते हैं –SSS
देखो दोनों खेल यहाँ, कैसे कैसे मेल यहाँ –2
करनी का फल ही हो–3 सब खुद ही पायें रे–SS।।5419।।

(622) सपने हों साकार यहाँ, वो ही इज्जतदार यहाँ –2
वो इंसां बेकार कहाँ?–SSS
ये किस्मत की बात अरे, कहीं कहीं यह काम करे –2
मेहनत से कोई हो–3 साकार बनाएँ रे –SS।।5420।।

(623) जो गैरों को बुरा कहे, वो ही खुद को बुरा कहे –2
भला बुरा नहिं जान सके –SSS
गुण देखे जो गैरों में, मिलें उसे गुण ही सबमें –2
अपनी किस्मत को हो–3 इंसां स्वयं बनाये रे–SS।।5421।।

(624) किस्मत में हो जब भूसा, मन तब ये रूखा रूखा –2
जीवन हो सूखा सूखा –SS
कोइ न तब सम्मान करे, संकट में हों प्राण अरे –2
तुमको तब भगवन् हो–3 भी याद न आये रे–SS।।5422।।

(625) सोया भाग्य जगाना है, संस्कार शुभ लाना है –2
राह सही अपनाना है –SS
जीवन गर महकाना है, तो फिर पाप हटाना है –2
गम के साये में हो–3 नहिं राह दिखाये रे –SS।।5423।।

(626) देने में है प्यार जिसे, लेने का अधिकार उसे –2
होता ऐसा भाव किसे ?–SS
किस्मत यहाँ बनाएगा, इह पर भव में पायेगा –2
वरना हो देना हो–3 फिर लेना आये रे –SS।।5424।।

(627) किस्मत का जो खेल है, वही जिन्दगी जेल है –2
भाव ज्ञानमय तेल है –SS
जो पुरुषार्थ रचाओगे, संस्कार वह पाओगे –2
वरना ये जीवन हो–3 कैदी बन जाये रे –SS।।5425।।

(628) फूट, हवा है जहरीली, जैसे माचिस की तीली–2
लेश्या हो काली नीली–SSS
ऐसा भाव रहे दिल में, जाकर गिरे नरक बिल में–2
फल को जब पाये हो–3, दुख में चिल्लाये रे–SS।।5426।।

(629) दिल में दया धर्म नहिं है, गैरों के वश में नहिं है–2
गमन सुगति जिसका नहिं है–SSS
गैरों को दुख देता है, दुख देकर खुश होता है–2
लेश्या उसकी तो हो–3, ऋषि कृष्ण बताएँ रे–SS।।5427।।

(630) गैरों पर जो क्रोध करे, खुद पर कभी न शोध करे–2
दिल में कभी न बोध करे–SSS
गैरों का सुख सह न सके, ईर्ष्या करके बैर धरे–2
उनकी तब लेश्या हो–3, कापोत दिखाएँ रे–SS।।5428।।

(631) दिले क्रोध जो तीव्र रखे, बैर कभी भी नहिं छोड़े–2
लड़ने को सरपट दौड़े–ऽऽऽ
दुष्टों जैसा मन रखता, हरदम पापों में रमता–2
लेश्या उसकी तो हो–3, मुनि कृष्ण बताएँ रे–ऽऽ।।5429।।

(632) क्रोध भुजंगम साँप है, क्रोध धर्म में श्राप है–2
देता पश्चाताप है–ऽऽ
जीवन में अभिशाप है, दुर्बुद्धि की थाप है–2
क्रोध जीवन में हो–3, बहु पाप कराये रे–ऽऽ।।5430।।

(633) उसका सारा क्रोध नशे, जिसके दिल में ज्ञान बसे–2
वही जगत में नहीं फँसे–ऽऽऽ
ज्ञान ज्योति सुलगाये जो, पूर्णज्ञान को पाये जो–2
सेवा गुरुजन की हो–3, सब दुःख मिटाये रे–ऽऽ।।5431।।

(634) क्रोध, आग फैलाता है, तन–मन ज्ञान जलाता है–2
धर्म–स्वभाव मिटाता है–ऽऽऽ
इसी क्रोध पर शोध करें, क्षमा धर्म का बोध धरें–2
वरना ये जीवन हो–3 खुद ही जल जाये रे–ऽऽ।।5432।।

(635) कर्म निमित्त मिलाता है, बुद्धि–क्रोध मिटाता है–2
अंधकार फैलाता है–ऽऽऽ
जप से क्षमा महान कही, क्षमा धरम की कुची कही–2
क्रोध गर आये हो–3 तो धर्म मिटाएँ रे–ऽऽ।।5433।।

(636) क्रोध करो नहिं आकर तुम, शोध करो प्रभु पाकर तुम–2
क्रोध जहर है जीवन का –ऽऽ
क्षमा धर्म अपना करके, अपना निज में पा करके –2
जीवन को पाकर हो–3 तुम धन्य बनाओ रे –ऽऽ।।5434।।

(637) हो कषाय से अनुरंजित, योग क्रिया हो संबंधित–2
राग–द्वेष के भाव सहित–ऽऽऽ
प्राण जहाँ पर रहते हैं, इसको ओरा कहते हैं–2
आगम भाषा में हो–3, लेश्या कहलाए रे–ऽऽ।।5435।।

(638) उदय कषायों का गर हो, योगों में अनुरक्त अहो–2
उसको लेश्या यहाँ कहो–ऽऽऽ
जो परिणाम निकलता है, आभामण्डल बनता है–2
भावों से ओरा हो–3, सबमें बन जाये रे–ऽऽ।।5436।।

(639) राग–द्वेष की थैली में, परिणति मन की मैली में–2
दुनियाँ की इस रैली में–ऽऽऽ
योग कषाय मिलें जब ही, लेश्या यहाँ बने तब ही–2
आभामण्डल ही हो–3, लेश्या कहलाए रे–ऽऽ।।5437।।

(640) केवल वस्तु नहीं छोड़ो, उसकी स्मृति भी छोड़ो –2
आसक्ति दिल से तोड़ो –ऽऽऽ
वस्तु छोड़ना बाहर है, स्मृति मन के अंदर है –2
आसक्ति भव में हो–3 अनुबंध कराये रे –ऽऽ।।5438।।

(641) इच्छाओं का अंत नहीं, इच्छाओं में संत नहीं -2
संत बिना भगवंत नहीं -SS
इच्छाओं का राग तजो, सबको ये इज़हार करो -2
छोड़ो, पर छोड़ो - हो-3 निज को अपनाओ रे -SS।।5439।।

(642) मान करे तो मिलेगा क्या ?, दिल का फूल खिलेगा क्या ? -2
मन का दीप जलेगा क्या ? -SSS
कौन तुझे समझाएगा ?, दर्पण कौन दिखाएगा? -2
खुद ही जो देखे हो-3 तो कुछ दिख जाए रे -SS।5440।।

(643) तन-धन-बल कुल जाति पर, ऋद्धि ज्ञान सुंदरता पर-2
किया बहुत ही मद आकर -SSS
मद किस्मत को बद करता, अपना छोटा कद करता -2
मद के मिटते ही हो-3 दिल में दम आ जाये रे -SS।।5441।।

(644) उठकर आँखों को खोलो, पहले महामंत्र बोलो-2
जीवन में अमृत घोलो-SSS
मन मंदिर में जाओ तुम, ध्यान दो घड़ी लाओ तुम-2
अपने ही अन्दर हो-3 सब कुछ दिख जाये रे-SS।।5442।।

(645) मन से हो जा मौन यहाँ, जानो, है तू कौन यहाँ?
भटका है तू कहाँ-कहाँ-SSS
पैदा कर दिल में हलचल, सही निकल आयेगा हल-2
हल के आते ही हो-3 सब हल हो जाये रे-SS।।5443।।

(646) दीप जलाने की हलचल, हमें जगाती है पलपल-2
दूर करा देती दलदल-SSS
देकर के मन में संबल, मजहब का अमृत सा जल-2
पीता है मन से हो-3 जीवंत कहाये रे-SS।।5444।।

(647) जिनने वाद-विवाद किया, समय स्वयं बर्बाद किया-2
सुन्दर जीवन नहीं जिया-SSS
जो खुद में संवाद करे, उससे ईश्वर बात करे-2
अच्छा हो मन तो हो-3 ईश्वर मिल जाये रे-SS।।5445।।

(648) मन को मार उलझाएगा, समझ नहीं कुछ पायेगा-2
भ्रम में तू फँस जायेगा-SSS
मन को हरदम सुलझाओ, सारे उत्तर खुद पाओ-2
मन तो है दर्पण हो-3 सब साफ दिखाए रे-SS।।5446।।

(649) जिसके मन पर पहरा हो, ज्ञान उसी का गहरा हो-2
सद्बुद्धि का सेहरा हो-SSS
मन काबू में आ जाये, ज्ञान स्वयं बढ़ता जाये-2
मन के मनते ही हो-3 मंजिल दिख जाये रे-SS।।5447।।

(650) सुख-दुख की हुण्डी जाली, दोनों में मन है खाली-2
अपनी कर तू रखवाली-SSS
सुख-दुख में हैं खार निरे, इनमें हैं संसार अरे-2
मन को हो भरना हो-3 वो ज्ञान बढ़ाए रे-SS।।5448।।

(651) क्षणभर की जो माया है, इन्द्रिय सुख की छाया है–2
कौन जान ये पाया है–ऽऽऽ
सुख–दुःख में हैं खार निरे, इनमें है संसार अरे–2
मन को हो भरना हो–3 वो ज्ञान बढ़ाए रे–ऽऽ।।5449।।

(652) ऊँचे किले बनाता मन, ठोकर खा गिर जाता मन–2
पैदा करता यहाँ तपन–ऽऽऽ
मन की करता है ये मन, फिर भी भरता कभी न मन
मन के ही कारण हो–3 त्रयरत्न गँवाए रे–ऽऽ।।5450।।

(653) खूब उड़ानें भरता मन, चलता है नहिं एक कदम–2
बना नपुंसक भरता दम–ऽऽऽ
इस मन के संग जो चलता, दुख वो खुद पैदा करता–2
मन की चंचलता हो–3 ही चपल बनाये रे–ऽऽ।।5451।।

(654) नज़रों की निर्मलता हो, मन में नहीं चपलता हो–2
दीप ध्यान का जलता हो–ऽऽऽ
मिल जायेंगे रत्न सभी, सफल रहेगा यत्न सभी–2
तब ये मन तेरा हो–3 दर्पण बन जाये रे–ऽऽ।।5452।।

(655) जिनके मन काले काले, वे मानव हैं मतवाले–2
उनकी किस्मत में जाले–ऽऽऽ
उनके दिल छाले छाले, बंद रहें डर के ताले–2
मन में उजाला हो–3 वो तुझे भुलाएँ रे–ऽऽ।।5453।।

(656) दुनियाँ इक जंजाल है, तुझे ढूँढ़ता काल है–2
काल बहुत विकराल है–ऽऽऽ
काल जीतना हो तुमको, तो पहले जीतो मन को–2
मन को जीता तो हो–3 सब शीश झुकाएँ रे–ऽऽ।।5454।।

(657) मन का हो व्यापार अगर, तार–तार हो जाये जिगर–2
होने लगती यहाँ फिकर–ऽऽऽ
हरदम मन में वही जिकर, तन हो जाता घन चक्कर–2
मन का व्यापार हो–3, संकल्प हटाये रे–ऽऽ।।5455।।

(658) तन में मन इक यंत्र है, इसे समझना मंत्र है–2
चेतन यहाँ स्वतंत्र है–ऽऽऽ
मन पर का दीवाना है, चेतन से अंजाना है–2
दिल की माने तो–3, मन समझ में आये रे–ऽऽ।।5456।।

(659) मन के हारे हार है, मन के जीते पार है–2
मन दिखलाता सार है–ऽऽ
मन का सब व्यापार है, मन फूलों का हार है–2
मन की मानो तो हो–3, मन शांति न पाये रे–ऽऽ।।5457।।

(660) दिल गर बिल बन जायेगा, दरियादिली न पाएगा–2
इक दीवार बनाएगा–ऽऽ
डूबा और डुबाएगा, मति भ्रष्ट कर जाएगा–2
मेंढक कुएँ का हो–3, नहिं सागर पाए रे–ऽऽ।।5458।।

(661) मन की चाहत हरियाली, लेकिन रहे सदा खाली–2
दिखे भले ही दीवाली–ऽऽऽ
मन की बात न मानो तुम, बात हृदय की ध्या लो तुम–2
तब ही ये जीवन हो–3, मंगल बन जाये रे–ऽऽ।।5459।।

(662) मन भरने की चीज नहीं, इसका कोई बीज नहीं–2
दिखती है तरकीब नहीं–ऽऽऽ
हृदय ज्ञान से भरता है, काम सभी मन करता है–2
ज्ञान को पाओ हो–3, मन चुप हो जाये रे–ऽऽ।।5460।।

(663) हृदय धरम से सुन्दर हो, सच से वाणी सुन्दर हो–2
हाथ दान से सुन्दर हों–ऽऽऽ
पाँव तीर्थ से सुन्दर हों, आँख दर्श से सुन्दर हों–2
सुन्दर हो मंजर हो–3, तो मन हर्षाये रे–ऽऽ।।5461।।

(664) हो भविष्य उसका उज्ज्वल, जिसके मन में भाव विमल–2
मिलता आसन स्वर्णकमल–ऽऽ
पाता है वह वस्तु सकल, होते उसके कार्य सफल–2
वो ही निज घर में हो–3, आवास बनाए रे–ऽऽ।।5462।।

(665) मन में नहीं उमंग है, उज्ज्वल नहीं तरंग है–2
पर परिचय के संग है–ऽऽऽ
दिल उज्ज्वल पर तंग है, कर्मों की ये जंग है–2
हालत यह देख हो–3, ये दिल घबराये रे–ऽऽ।।5463।।

(666) मन प्रभु पर नहिं जाता है, मन पर–पर ही जाता है–2
मन ही कर्म बढ़ाता है–ऽऽऽ
मन की गर तुम मानोगे, खुद को नहिं पहिचानोगे–2
मन ही भव वन में हो–3, सबको भटकाये रे–ऽऽ।।5464।।

(667) मन टिकता पर पैर नहीं, उसको समझो संत यहीं–2
वह राजा है, रंक नहीं–ऽऽऽ
पैर टिके मन भगता है, वही गृही सा लगता है–2
मन के टिकने पर हो–3, सब कुछ टिक जाये रे–ऽऽ।।5465।।

(668) मन में तुम उल्लास भरो, जी भर खूब प्रयास करो–2
दिल–मन नहीं निराश करो–ऽऽऽ
मन ही मोक्ष दिलाता है, मन ही जहर पिलाता है–2
मन को जो जीते हो–3 वह मोह मिटाये रे–ऽऽ।।5466।।

(669) जब मन में निर्मलता हो, प्रतिभा में सुन्दरता हो–2
वीतरागता दिखे अहो–ऽऽऽ
मंदिर में रोते आयें, तो प्रतिमा रोती पायें–2
मन का ही दर्पण हो–3 प्रतिमा बन जाये रे–ऽऽ।।5467।।

(670) मन मंदिर में जाया कर, झाड़ू रोज लगाया कर –2
मन की धूल हटाया कर –ऽऽऽ
मन होगा जब साफ यहाँ, सुख हो अपने आप यहाँ –2
मन के मनते ही हो–3 मिन्नत मिट जाये रे –ऽऽ।।5468।।

(671) अपने दिल में अहम धरे, कोइ न उस पर रहम करे –2
कितना भी वो करम करे –SSS
दिल में भरा हुआ दल दल, उसको अच्छा मिले न फल –2
मन की निर्मलता हो–3 ऊँचाई दिखाये रे –SS।।5469।।

(672) मन को दिल से जोड़ोगे, राज ज़िगर के खोलोगे –2
तब खुद ही सच बोलोगे –SSS
तत्त्व समझ में आयेगा, सच क्या है, दिख जायेगा –2
दिल की गहराई हो–3 में गुण दिख जाएँ रे –SS।।5470।।

(673) गम से हो जितना खाली, उतनी मन में खुशहाली –2
रिश्तों की हुण्डी जाली –SSS
हटा पर्त मन की काली, जल जाये खुद दीवाली –2
मन के खिलते ही हो–3 दुनियाँ खिल जाये रे –SS।।5471।।

(674) मन से श्रेष्ठ करो चिंतन, शक्ति लगाकर करो यतन–2
वरना होगा यहाँ पतन –SSS
मन में हो जब परिवर्तन, दिल पा जाये विद्याधन –2
जिनवर की महिमा हो–3 नरतन दिखलाए रे –SS।।5472।।

(675) बाह्य वस्तु का आकर्षण, मन पर करता संघर्षण –2
दिल ही है सच्चा दर्पण –SSS
मन ही वस्तु पकड़ता है, जब मन में चंचलता है –2
मन की चंचलता हो–3 बस हृदय मिटाये रे –SS।।5773।।

(676) व्यक्ति का व्यक्तित्व चमक, सब्जी में है सार नमक –2
फूलों का है प्यार महक –SSS
पहले खुद को स्वयं परख, तब गैरों पर नजरें रख –2
दिल को दर्पणवत् हो–3 ये मन दिखलाए रे –SS।।5474।।

(677) मालिक वो हो सकता है, जो कुछ भी कर सकता है –2
जिसको नहीं विकलता है –SSS
जिसको याद सफलता है, जिससे सबकुछ मिलता है –2
मालिक की मन में हो–3 तस्वीर लगाओ रे–SS।।5475।।

(678) मंद करे मन काम जभी, खाओ तुम बादाम तभी –2
आ जाये अंजाम अभी –SSS
सेहत मन को मिल जाये, कली हृदय की खिल जाये –2
मन का खुश होना हो–3 शुभ फूल खिलाए रे –SS।।5476।।

(79) राग द्वेष जब चलता है, दिल को भारी खलता है –2
मन ये तपन में जलता है –SSS
वीतराग की हो दमकल, राग द्वेष हो तभी विफल –2
ईश्वर की छाया हो–3 आराम दिलाये रे–SS।।5477।।

(680) चाहत में निश्छलता हो, तभी दिले निश्चलता हो–2
कभी नहीं असफलता हो –SSS
मन के कभी विकल्प मिटें, जब दिल से संकल्प हटें –2
कृत के हटते ही हो–3 कारित मिट जाये रे –SS।।5478।।

(681) दौलत खूब कमा भी ली, फिर भी मति है मतवाली –2
मन दिखता खाली खाली –ऽऽऽ
कब ये मन भर पायेगा? कैसे कौन बताएगा –2
मन ये भर जाये हो–3 तो दुख मिट जाये रे –ऽऽ।।5479।।

(682) पास गुणी के जायें हम, सेवा में मन लाएँ हम –2
उनसे प्रेम बढ़ाएँ हम –ऽऽऽ
द्रोह कृतघ्न न हो मन में, गुण पाने के भाव रहें –2
तब ही जीवन का हो–3 अंतिम फल पाये रे –ऽऽ।।5480।।

(683) मन में अहं भरा मल हो, कैसे फिर मन निर्मल हो –2
ध्यान नहीं फिर निश्छल हो –ऽऽऽ
जल जैसा मन हो जाये, कर्मों के मल धो जाये –2
मन की निर्मलता हो–3 मुनिपद दिलवाये रे –ऽऽ।।5481।।

(684) निजघट को जब जानेगा, मन की खटपट जानेगा –2
झटपट उसे मिटाएगा –ऽऽऽ
चटपट हो तब काम तेरा, भूल जाये तेरा मेरा –2
फिर तो ये दुनियाँ हो–3 जंजाल दिखाये रे –ऽऽ।।5482।।

(685) कौन तुम्हारे दुख टाले, करते हो तुम घोटाले –2
दिल में भरे हुए छाले –ऽऽऽ
लगा लिये मन पर ताले, पर के हो तुम रखवाले –2
मन में उजाला हो–3 कैसे भर पाये रे –ऽऽ।।5483।।

(686) हे प्रभु! मुझको सद्गति दे, मन को तू अच्छी मति दे –2
सद्गुण में मन को रति दे –ऽऽऽ
दिले गुनाहों की क्षति दे, सदा मुनि की संगति दे –2
अंतिम क्षण में तू हो–3 दिल में आ जाये रे –ऽऽ।।5484।।

(687) क्यूँ करता है रंग रेली, पापों की भरता थैली –2
मन की चादर हो मैली –ऽऽऽ
सुख–दुख दोनों में खेली, यही आतमा अलबेली –2
पापों की गठरी हो–3 नहिं सुख दिलवाए रे –ऽऽ।।5485।।

(688) दिल का आँगन आँझ जरा, कई गुलों से यहाँ भरा –2
बोल तेरा मन कहाँ धरा –ऽऽऽ
सेवा से मन हरा–भरा, सच से हो मन खरा–खरा –2
तेरा ही मकसद हो–3 तेरा भाग्य बनाए रे –ऽऽ।।5486।।

(689) राग–द्वेष की भंग पिये, पाप कर्म के संग जिये –2
नीचकर्म का रंग लिये –ऽऽऽ
कैसे बने सहारा वो, गम से किये किनारा जो –2
उसकी खिदमत में हो–3 मन रोज लगाओ रे –ऽऽ।।5487।।

(690) अच्छा बुरा बताता मन, सही दिशा दिखलाता मन –2
हर व्यापार कराता मन –ऽऽ
मन को तू पहिचान अरे, मन के हैं आयाम निरे –2
समझो इस मन को हो–3 ये सब दिलवाये रे –ऽऽ।।5488।।

(691) कहते मन मतवाला है, सब कुछ करने वाला है –2
दुनियाँ ने मन पाला है –SS
मन ही हमें भ्रमाता है, नई जगह ले जाता है –2
मन की मानें तो हो–3 मन समझ न आये रे –SS।।5489।।

(692) दिल तेरा खिल जाता है, मन उमंग भर लाता है –2
वरना मन मुरझाया है –SS
मन दर्पण कहलाता है, सब कुछ तुझे दिखाता है –2
मन ही बोझिल हो हो–3 तो दुख बढ़ जाये रे –SS।।5490।।

(693) दुनियाँ सब अपनी कर लो, करना हो तो सब कर लो –2
सोना धन वैभव भर लो –SS
फिर भी रहता मन खाली, नज़र न आये दीवाली –2
कैसे मन भरता हो–3 ये कौन बताए रे –SS।।5491।।

(694) भाव यहाँ है उच्छृंखल, तो मन रहता है चंचल –2
मन पागल हो रहे विकल –SS
गर मन में संसार भरा, तो मन पैदा करे जरा –2
मन को भरना हो हो–3 तो ज्ञान को पाओ रे –SS।।5492।।

(695) प्रभु गुण मन में लायेगा, शक्ति खुद पा जायेगा –2
मन खुद ही खिल जायेगा –SS
अवगुण दिले दिखाएगा, तो मन खुद मिट जायेगा –2
मन गर हर्षाये हो–3 तो जीत दिलाए रे –SS।।5493।।

(696) आओ दिले सवाल करें–कोई नहीं बवाल करें –2
मन में मन का ख्याल करें –SS
मन कैसे रुक पायेगा, कौन हमें बतलाएगा –2
जिसने मन जीता हो–3 ये वही बताए रे –SS।।5494।।

(697) तन में मन एक यंत्र है, इसे समझना मंत्र है –2
चेतन यहाँ स्वतंत्र है –SS
मन पर का दीवाना है, चेतन से अंजाना है –2
मन को जाने बिन हो–3 कुछ समझ न आये रे –SS।।5495।।

(698) दिल में तुम उल्लास भरो, मन का सदा विकास करो –2
दिल में ये विश्वास करो –SSS
आशा हमें उठाती है, मंजिल तक ले जाती है –2
मन में निराशा हो– नहिं कभी बनाओ रे –SS।।5496।।

(699) मन उमंग भर जाएगा, तन तरंग भर लाएगा –2
हृदय कमल खिल जाएगा –SSS
ज्ञान रंग चढ़ जाएगा, जीवन खिल खिल जाएगा –2
ज्ञान की मन में हो–3 अब ललक जगाओ रे –SS।।5497।।

(700) रोता भी हँसता आकर, तेरी प्रतिमा को पाकर –2
हँसता, हंस बने जाकर –SSS
तू ही हँसना सिखलाये, बिगड़ी सारी बनवाये –2
तू हो गर साथी हो–3 रस्ता कट जाये रे –SS।।5498।।

(701) मंदिर से मन सुन्दर है, जो मेरे ही अंदर है –2
जिसमें रखा समंदर है –ऽऽऽ
मंदिर प्रभु के मत जाओ, मन मंदिर में आ जाओ –2
उसके आने से हो–3 दिल खिल जाये रे –ऽऽ।।5499।।

(702) सती अंजना या अंजन, तूने दुःख किये अंजन –2
तुड़ा दिये भव के बंधन –ऽऽऽ
मेरा भी उपकार करो, मुझको भी स्वीकार करो –2
भटकन से मेरा हो–3 नहिं समय गँवाओ रे –ऽऽ।।5500।।

(703) मन को मंदिर बना लिया, दिल का दीपक जला लिया –2
अंधकार सब मिटा दिया –ऽऽ
मन मन्दिर बन जायेगा, सभी जगह प्रभु पायेगा –2
तब ही ये जीवन हो–3 गुलशन बन जाये रे –ऽऽ।।5501।।

(704) श्रद्धामय आचार यहाँ, देता सम्यक् सार यहाँ–2
मंजिल का आधार यहाँ–ऽऽऽ
श्रद्धा सुन्दर बीज यहाँ, चारित सुन्दर चीज यहाँ–2
मंजिल पाये जो हो–3 श्रद्धान बनाएँ रे–ऽऽ।।5502।।

(705) हार गया वो बंदर है, जीता वही सिकन्दर है–2
मौसम अपने अंदर है–ऽऽऽ
तू ही ज्ञान समंदर है, सच का तू खुद मंजर है–2
मंजिल पाने की हो–3 अब ललक जगाओ रे–ऽऽ।।5503।।

(706) दिल को अमृत पिला पिला, दीपक दिल का जला जला–2
खुद को ही तू खिला खिला–ऽऽऽ
गम–गुनाह से करो गिला, पैदा कर तू यही सिला–2
मंजिल का रस्ता हो–3 खुद ही नजराये रे–ऽऽ।।5504।।

(707) हम मंज़िल से दूर सही, मंज़िल हमसे दूर नहीं–2
गैरों में निज रूह नहीं–ऽऽऽ
हिम्मत हार के बैठे हम, ये कोई दस्तूर नहीं–2
हिकमत दिखलाएँ हो–3 हिम्मत बन जाये रे–ऽऽ।।5505।।

(708) खुद में जो भगवान् लखे, सबमें ही भगवान दिखे–2
किस्मत अपनी नई लिखे–ऽऽऽ
कठिन नहीं कुछ काम उसे, इक दिन मिले विराग उसे–2
मंजिल को पाकर हो–3, भवभ्रमण मिटाए रे–ऽऽ।।5506।।

(709) राग–द्वेष से बँधता है, समता से भव तजता है–2
चेतनता ही समता है–ऽऽ
चेतनता में यत्न करें, सम्यग्दर्शन–ज्ञान वरें–2
तब ही मंजिल का हो–3, रस्ता दिख पाये रे–ऽऽ।।5507।।

(710) तेल ज्ञान का लाना है, दिले–चिराग जलाना है–2
रोशनमय हो जाना है–ऽऽ
ठोकर अब नहिं खाना है, मंजिल अपनी पाना है–2
मंजिल पर जाकर हो–3, विश्राम दिखाये रे–ऽऽ।।5508।।

(711) मन नहिं धर्म लगाता है, उसको कर्म सताता है–2
दोजख राह दिखाता है–ऽऽ
मजहब खुशियाँ लाता है, मंजिल राह बताता है–2
दिल के गुलशन को हो–3, तुम खुद महकाओ रे–ऽऽ।।5509।।

(712) फूल तुम्हें भटकाते हैं, काँटे राह दिखाते हैं –2
अनुभव तुम्हें कराते हैं –ऽऽऽ
काँटे पथ पर नहीं अगर, तो नहिं होती मुक्ति डगर –2
काँटों पे चलता हो–3 वो मंजिल पाये रे –ऽऽ।।5510।।

(713) पथ पर मैं बढ़ता जाऊँ, कर्मों से लड़ता जाऊँ –2
सीढ़ी पर चढ़ता जाऊँ –ऽऽऽ
लक्ष्य बनाया जो हमने, उसे यहाँ मैं पा जाऊँ –2
मरने से पहले हो–3 मंजिल मिल जाये रे –ऽऽ।।5511।।

(714) मौके जब नहिं मिलते हैं, तब तक हम नहिं जलते हैं –2
गम ही गम में पलते हैं –ऽऽऽ
आओ करें तलाश यहाँ, वरना हम इक लाश यहाँ –2
मंजिल पर राही हो–3 सद्राह दिखाए रे –ऽऽ।।5512।।

(715) राग–द्वेष से बँधता है, समता से भव तजता है –2
चेतनता ही समता है –ऽऽऽ
चेतनता में यत्न करें, सम्यग्दर्शन–ज्ञान वरें –2
तब ही मंजिल का हो–3 रस्ता दिख पाये रे –ऽऽ।।5513।।

(716) दिल का दीपक जल जाता, तो फिर भाग्य बदल जाता –2
तीर्थंकर पदवी पाता –ऽऽ
संशय सारा मिट जाता, श्रद्धा से दिल भर जाता –2
मंजिल का रस्ता हो–3 खुद ही नजराये रे –ऽऽ।।5514।।

(717) साधन में है शांति कहाँ?, सच्चाई में भ्रांति कहाँ ?–2
मुर्दों में है क्रांति कहाँ –ऽऽ
लक्ष्य बनाकर दशा बदल, दशा बनाती दिशा सफल –2
मंजिल की राहें हो–3 सच्चाई दिखाए रे –ऽऽ।।5515।।

(718) अहंकार को खलता है, जब इक दीपक जलता है–2
मिलती तभी सफलता है–ऽऽ
ज्ञान रोशनी लायें हम, सच्ची राह बनाएँ हम–2
राहें राही को हो–3 मंजिल दिलवाएँ रे–ऽऽ।।5516।।

(719) पुण्य फलों की माया है, जिसमें तू भरमाया है–2
मानव गति चौराहा है–ऽऽऽ
विषय न अंतस् भाव है, मंजिल न ये पड़ाव है–2
पत्थर की कश्ती हो–3, क्या नहीं डुबोये रे–ऽऽ।।5517।।

(720) नर का नरम–नरम दिल हो, उसको जनम ये साहिल हो–2
करम करम से निर्मल हो–ऽऽ
न रम–न रम के भाव करो, कदम–कदम पर भरम तजो–2
भ्रम से जीवन में हो–2, फिर कर्म समाये रे–ऽऽ।।5518।।

(721) ये मानव की काया है, चतुर्गति चौराहा है–2
क्यूँ इंसां बौराया है–SSS
इसने भ्रमण बढ़ाया है, इसने भ्रमण मिटाया है–2
कहता जो दिल वो हो–3, जल्दी कर जाओ रे–SS॥5519॥

(722) चन्द दिनों का गाँव यहाँ, अपना एक पड़ाव यहाँ–2
कही नहीं ठहराव यहाँ–SSS
क्यूँ खुद को तू भूला है, इतना किसमें फूला है?–2
इक पल में यारो हो–3, क्या से क्या हो जाये रे–SS॥5520॥

(723) सुना नहीं जिन वचनों को, नहीं निहारा जिनवर को–2
कभी न चाहा मुनिवर को–SSS
प्रभु गुण का नहिं गान किया, धन दौलत पर मान किया–2
ऐसे ये मानव हो–3, सब पशु कहलायें रे–SS॥5521॥

(724) देश–दिशा से आते हैं, पेड़ों पर रुक जाते हैं–2
पक्षी समय बिताते हैं–SSS
सुबह सभी उड़ जाते हैं, अपना कार्य बनाते हैं–SSS
ऐसे ही मानव हो–3, का चक्र दिखाए रे–SS॥5522॥

(725) नर में ही है नारायण, प्रकट करे वह पारायण –2
उसका जीवन रामायण –SSS
देखो लक्ष्मण–राम यहाँ, आदर्शों के धाम यहाँ –2
उनके आदर्श हो–3 अब हम अपनाएँ रे –SS॥5523॥

(726) नर जब हो जाता नरवस, शादी करके जाता फँस –2
फिर करता रहता सर्कस –SSS
पर में इतना जाता कस, कई बार कहता उफ् बस –2
पंछी पिंजरे से हो–3 फिर निकल न पाये रे –SS॥5524॥

(727) अच्छा हो व्यक्तित्व दिले, अपना ही अस्तित्व खिले –2
गुरुओं से अपनत्व मिले –SSS
इस दुनियाँ का सत्व दिखे, अंतस में निज तत्त्व लखे–2
व्यक्ति के लक्षण हो–3 व्यक्तित्व बताएँ रे –SS॥5525॥

(728) मान सरोवर बन जाता, हंस जहाँ पर रुक जाता–2
कला सभी को सिखलाता–SSS
हंस जहाँ पर नहीं रहे, मानसरोवर कौन कहे–2
लाओ मानवता हो–3 तब हंस दिखाए रे–SS॥5526॥

(729) अंतिम चलने की बेला, दुनियाँ से उठता मेला–2
गिरता ये तन का ठेला–SSS
तिकड़म लाख लगा ले भी, रोक न पाये कोई भी–2
चलना तो होगा हो–3 जब यम आ जाये रे–SS॥5527॥

(730) आयेगा जब काल अरे, कर देगा कंगाल अरे–2
गल नहिं पाये दाल अरे–SSS
माटी के सब रूप यहाँ, क्यों बनते हो मूर्ख यहाँ–2
माटी की चाहत हो–3 माटी दिखलाये रे–SS॥5528॥

(731) नहीं यहाँ रह पाओगे, आये हो तो जाओगे–2
भव की रीति निभाओगे–ऽऽ
नदिया बहती जाती है, सागर में मिल जाती है–2
पानी रुक जाये हो–3, तो खुद सड़ जाये रे–ऽऽ।।5529।।

(732) घर तेरा नहिं गाँव है, शहर नहीं ठहराव है–2
ये तो एक पड़ाव है–ऽऽऽ
पलभर हमको रहना है, कर ले जो कुछ करना है–2
हरपल ही हमको हो–3, वह मौत बुलाए रे–ऽऽ।।5530।।

(733) मज़मा करता रहता है, सहमा–सहमा रहता है–2
दुनिया के गम सहता है–ऽऽऽ
दिल में अच्छी रज़ा बना, भव की सारी सजा मिटा–2
हरदम हम सबको हो–3, वह मौत डराये रे–ऽऽ।।5531।।

(734) दिल से जिसको पाला है, कहते हो मम लाला है–2
वह बेटा ही हाला है–ऽऽऽ
अर्थी वही बनाएगा, मरघट पर ले जाएगा–2
तेरा ही बेटा हो–3, तुझमें आग लगाए रे–ऽऽ।।5532।।

(735) सुबह हमारा बचपन है, समझ दोपहर यौवन है –2
शाम बुढ़ापे सा मन है –ऽऽऽ
सोना छोटा मरण अरे, जग जाना है जन्म अरे –2
मरने का प्रतिदिन हो–3 अभ्यास बनाये रे –ऽऽ।।5533।।

(736) लम्बा हो चादर जितना, पाँव पसारो तुम उतना –2
वरना अंग दिखे अपना –ऽऽऽ
रहो दायरे में अपने, देखो मत कोरे सपने –2
सपनों में अपना हो–3 नहिं कभी दिखाए रे –ऽऽ।।5534।।

(737) साँसों के थम जाने पर, जीवन में गम आने पर –2
आँखें नम हो जाने पर –ऽऽऽ
गम का बन जाता मंजर, कभी न मिलता सही सफर –2
गम के थमने पर हो–3 सद्मार्ग दिखाए रे –ऽऽ।।5535।।

(738) महिलाओं में ज्ञान है कम, समझ व अनुभव में दमखम–2
भले ही हो उनमें दम कम–ऽऽऽ
ज्ञान है ज्यादा पुरुषों में, समझ न ज्यादा है उनमें–2
महिला झुकती हैं हो–3 इंसां अकड़ दिखाए रे–ऽऽ।।5536।।

(739) अपने ही नहिं खास हुए, अकड़ के मारे बाँस हुए–2
वो कर्मों के दास हुए–ऽऽऽ
बीज नम्रता का डालो, अपना गुलशन महका लो–2
कोमल इस दिल में हो–3 निर्मलता पाए रे–ऽऽ।।5537।।

(740) भले, भलाई करते हैं, बुरे, बुराई करते हैं–2
खाते, वहीं उगलते हैं–ऽऽऽ
मीठा सोच बनाते जो, मीठे बोल सुनाते वो–2
मीठी बातों से हो–3 सब प्रेम बनाएँ रे–ऽऽ।।5538।।

(741) प्रभु की रीति निभाएगा, सबसे प्रेम बढ़ाएगा –2
मन का दंभ मिटाएगा –SSS
जो दुखियों से प्रेम करे, प्रभु भी उसका क्षेम करे –2
उसको जीवन का हो–3 वैभव मिल जाये रे –SS।।5539।।

(742) फूलों सा व्यवहार यहाँ, सबको देता प्यार यहाँ –2
जीवन का आधार यहाँ –SSS
मित्र बनाता, प्रेम यहाँ, अच्छा सच्चा गेम यहाँ –2
मीठे वचनों से हो–3 सब खुश हो जायें रे –SS।।5540।।

(743) मीठे तुम हो जाओगे, मीठा तुम्हें चढ़ाएँगे –2
मीठे बोल सुनाएँगे –SSS
मीठा–मीठा सोच यहाँ, मीठे बोलो बोल यहाँ –2
देखो फिर दिल में हो–3 प्रभु खुद आ जाएँ रे –SS।।5541।।

(744) कंकड़ घास हटाओगे, अच्छी खाद मिलाओगे–2
भूमि उर्वरा पाओगे–
फिर जो बीज उगाओगे, फले–फूलता पाओगे–2
ऐसे ही मृदुता हो–3 जीवन में लाएँ रे–SS।।5542।।

(745) मिट्टी में रमने वाले, ओ मिट्टी के रखवाले–2
थोड़े दिन तू इठला ले–SSS
पंछी जब उड़ जायेगा, ये पिंजरा ढह जायेगा–2
मृत्यु के हाथों हो–3 सब ही छिन जाये रे–SS।।5543।।

(746) आयेंगे यमराज जभी, धरे रहेंगे काज सभी–2
कोइ न देंगे साथ कभी–SSS
खुद को अगर भुलाएगा, यम से मारा जायेगा–2
खुद को जो जाने हो–3 यम नहीं सताए रे–SS।।5544।।

(747) क्या कर लेगी रामकली, जब आयेगा काल बली –2
अन्तिम होगी चला चली –SSS
मिल जायेगी राह भली, खिल खिल जाये हृदय कली –2
तब ही जीवन में हो–3 सद्‌राह दिखाये रे –SS।।5545।।

(748) नटखट नट बन रहता है, खट पट दिनभर करता है –2
घट–घट में तू मरता है –SSS
झटपट कर ले धर्म अरे, पा ले तट पर मर्म अरे –2
वरना जग माया हो–3 तुझको चट जाये रे –SS।।5546।।

(749) इक दिन सभी छोड़ना है, रिश्ते सभी तोड़ना है –2
खुद को स्वयं मोड़ना है –SS
पर को तू पर जान अरे, खुद में कर विश्राम अरे –2
दिल की ये धड़कन हो–3 कब थम सी जाये रे –SS।।5547।।

(750) कंधों पर ले जायेंगे, मरघट तक सब जायेंगे –2
तेरा कफन हटायेंगे –SS
धू–धू करके देह जले, भला, बुरे का भाव चले –2
मिट्टी की काया हो–3 मिट्टी बन जाये रे –SS।।5548।।

(751) ख्वाबों में अरमानों में, गतियों के मेहमानों में -2
मन व्यापार मकानों में -SS
अपनायी रिश्तेदारी, मतलब की दुनियादारी -2
खोया ये जीवन हो-3 खोता ही जाये रे -SS।।5549।।

(752) आँखों के मिच जाने पर, साँसों के रुक जाने पर -2
कालबली के आने पर -SS
होगी अपनी चलाचली, मुरझायेगी हृदय कली -2
उन पल में तुमको हो-3 बस याद वो आये रे -SS।।5550।।

(753) सिर पर सेहरा लगवाया, घिसकर चेहरा चमकाया -2
तन खुश्बू से महकाया -SS
तन मिट्टी बन जायेगा, जब तू मरघट जायेगा -2
तन मन की करनी हो-3 तेरे संग में जाये रे -SS।।5551।।

(754) मन काला बाहर उजले, कैसे ये जीवन सुधरे-2
बगुला जैसा भेष धरे-SSS
अंदर बाहर एक है, कौआ तुमसे नेक है-2
मायाचारी ये हो-3 दुख ही उपजाये रे-SS।।5552।।

(755) गैरों को मत ताँक यहाँ, अपने अन्दर झाँक यहाँ-2
कोरी तू मत फाँक यहाँ-SSS
फाँकेगा-फुक जायेगा, ये जीवन चुक जाएगा-2
खुद में ही देखो हो-3 खुद खुदा दिखाऐ रे-SS।।5553।।

(756) मन में कपट धरेगा गर, लाखों बार मरेगा फिर-2
भटकेगा तन धर-धर कर-SSS
शांति कभी नहिं पायेगा, चिंता में मर जायेगा-2
चिंता जीवन को हो-3 इक चिता बनाए रे-SS।।5554।।

(757) माया-छल कर जायेगा, तू खुद से छल जायेगा-2
शनैः शनैः गल जायेगा-SSS
अपना हृदय सरल कर ले, धरम सरलता का वर ले-2
दिल गर हो साफ हो-3 तो छल नहिं आये रे-SS।।5555।।

(758) दिल में जिसके भरा कपट, उसका दिल जानो मरघट-2
भ्रमता वो जैसे अरहट-SSS
करता जो गैरों से छल, घुटता रहता वो पल पल-2
छल ही इस दिल को हो-3 कमजोर बनाएँ रे-SS।।5556।।

(759) मिट्टी की ये माया है, कंचन जैसी काया है-2
सबको यहाँ लुभाया है-SSS
इसकी जो पहिचान करें, उसका यहाँ चिराग जलें-2
अपनी वो नैया हो-3 भव पार लगाए रे-SS।।5557।।

(760) माया कितनी प्यारी है, तू खुद बना पुजारी है -2
क्यूँ ऐसी लाचारी है -SS
मज़हब से तू प्यार करे, हो जाये भव पार अरे -2
तेरा ही अनुभव हो-3 तुझको राह दिखाए रे -SS।।5558।।

(761) पुण्य–पाप जग माया है, सुख–दुख इसकी काया है –2
स्वर्ग–नर्क तो छाया है –ऽऽ
इसने धर्म भुलाया है, सबको यहाँ भ्रमाया है –2
माया में फँसकर हो–3 क्यूँ भ्रम उपजाये रे –ऽऽ।।5559।।

(762) मानो, माया तजो अभी, प्रभु की छाया वरो अभी –2
माया – मायावी जग में –ऽऽ
इसमें जो फँस जायेगा, वह जग में मिट जायेगा –2
माया का मोह हो–3 भव भ्रमण कराये रे –ऽऽ।।5560।।

(763) गुरु से कुछ कहकर जाते, बाहर लोग मुकर जाते–2
ये सब कपटी कहलाते–ऽऽऽ
जिनका हो विश्वास नहीं, उन्हें बिठाओ पास नहीं–2
ऐसे खुजैले हो–3, खुजली फैलाएँ रे–ऽऽ।।5561।।

(764) गलत यहाँ सच माना है, सच को नहिं पहिचाना है–2
मिथ्या का दीवाना है–ऽऽऽ
पक्षपात सब तजना है, सम्यक् सम्यक् भजना है–2
अर्थी अहं की हो–3, निज हाथ उठाओ रे–ऽऽ।।5562।।

(765) अंतिम हिचकी आयेगी, नींद तुझे आ जायेगी –2
फिर खुल कभी न पायेगी –ऽऽऽ
हिचकी किससे हिचकी है, याद करें तो हिचकी है –2
हिचकी बतलाए हो–3 कोई तुझे बुलाए रे –ऽऽ।।5563।।

(766) कर लो आकर हठखेली, विषय भोग में रंगरेली –2
मौत सभी के संग खेली –ऽऽऽ
हतप्रभ सा रह जायेगा, तेरा बुलावा आयेगा –2
कोई फिर तेरा हो–3 नहिं साथ निभाये रे –ऽऽ।।5564।।

(767) तजना है संताप सभी, णमोकार जप करो अभी–2
शूल बनेंगे फूल सभी–ऽऽऽ
महामंत्र की ताकत जान, जपकर तू इसको पहिचान–2
ये ही अग्नि को हो–3 जलकुण्ड बनाए रे–ऽऽ।।5565।।

(768) शैय्या पर सोने जाओ, णमोकार पहले ध्याओ–2
सीख हमेशा तुम लाओ–ऽऽऽ
धन्यवाद दें सोने पर, करो प्रार्थना जगने पर–2
ऐसा करने पर हो–3 रब खुश हो जाये रे–ऽऽ।।5566।।

(769) अब तुम मत नादान बनो, दिल से पूजन दान करो–2
नरभव का सम्मान करो–ऽऽऽ
ऐसा नहिं कर जायेगा, अंजामे गम पाएगा–2
छोड़ो नादानी हो–3, सद्ज्ञान बढ़ाओ रे–ऽऽ।।5567।।

(770) हम निगोद से आये हैं, चारों गति भरमाये हैं–2
मुश्किल नर तन पाये हैं–ऽऽ
अब सम्यक्त्व सजाना है, नरभव सफल बनाना है–2
वरना ये नरतन हो–3, फिर नहिं मिल पाये रे–ऽऽ।।5568।।

(771) जगत सत्य पहिचाने ना, बात गुरु की माने ना–2
गिरेबान खुद झाँके ना–SS
पर निंदा रस भजते हैं, खुद को सही समझते हैं–2
तेरी यह चर्या हो–3, तुझको नरक दिखाये रे–SS।।5569।।

(772) लड़ते हैं भाई, भाई हो देवर या भौजाई–2
उन्हें नरक गति दुखदाई–SS
कुत्तों जैसे लड़ते हैं, हरदम यहाँ झगड़ते हैं–2
उनके जीवन में हो–3, नहिं शांति समाए रे–SS।।5570।।

(773) करें दिखावा बढ़ चढ़के, रहते हैं जो लड़–लड़के –2
ऐसे होते हैं लड़के –SS
हिल मिल करके रहो यहाँ, पलभर के मेहमान यहाँ –2
झगड़े हों घर में हो–3 तो नर्क कहाये रे –SS।।5571।।

(774) बहुत परिग्रह ध्याओगे, तो खुद पाप कमाओगे –2
अघ आरंभ बढ़ाओगे –SS
त्याग नहीं कर पाओगे, साथ न कुछ ले जाओगे –2
पापों में जमकर हो–3 नहिं नर्क कमाओ रे –SS।।5572।।

(775) जितनी लम्बी चाहत हो, उतना ही दिल आहत हो –2
त्याग करें तब राहत हो –SS
त्यागी ही सुख पाएगा, पापों से बच जायेगा –2
संचय की इच्छा हो–3 खुद गर्त बनाएँ रे –SS।।5573।।

(776) अच्छी शिक्षा पायें हम, ऊपर उठते जायें हम –2
जीवन सफल बनायें हम –SS
जीवन में है गम ही गम, संस्कार से कर ले कम–2
थोड़ा सा जीवन हो–3 गुलजार बनाएँ रे –SS।।5574।।

(777) दृष्टि में नहिं खुशी जिसे, खुशियाँ मिलती कहाँ उसे?–2
वो गम में ही यहाँ घुटे–SSS
नजरों में ही सुख–दुःख है, सुखी है जो अन्तर्मुख है–2
अपना नजरिया हो–3 उत्कृष्ट बनाओ रे–SS।।5575।।

(778) नज़र ज़िगर बन जायेगी, ज़िगर नज़र बन जायेगी–2
सच खुद ही मिल जायेगा–SSS
फ़िकर नज़र बनवाएगी, सही जिकर करवाएगी–2
दिल की नजरों से हो–3 सब खुद नजराए रे–SS।।5576।।

(779) नजर नजाकत बनती है, नजर इनायत बनती है–2
नजर शरारत बनती है–SSS
नजरों का ही खेल यहाँ, नजर–नजर में जेल यहाँ–2
नजरें नजरों में हो–3, सब कुछ कह जायें रे–SS।।5577।।

(780) भीतर नजर गड़ाएगा, नया–नया नित पाएगा–2
खुद में सब दिख जायेगा–SSS
नजर सभी जब आएगा, तृप्त तभी हो पाएगा–2
तृप्ति ही मन की हो–3, सब क्लांति मिटाए रे–SS।।5578।।

(781) तेरे जैसी नजर मिले, तेरे जैसा सफर मिले -2
तेरा ही अब शहर मिले -SSS
चाह यही मन में मेरे, साथ रहूँ हरदम तेरे -2
तेरी छाया में हो-3 शीतलता पाये रे -SS।।5579।।

(782) फूलों में नहिं इठलाऊँ, काँटों में नहिं घबराऊँ -2
समता की क्षमता पाऊँ-SSS
इतनी देना शक्ति हमें, हर पल तुमको याद रखें -2
तेरी ही शक्ति हो-3 संबल बन जाये रे -SS।।5580।।

(783) जैसी दिल में नज़र बने, वैसा मंजर सफर बने -2
उसे न कोई बदल सके -SSS
मंजर तुझे बदलना है, पहले नज़र बदलना है-2
दिल की नजरों में हो-3 सब कुछ नजराए रे-SS।।5581।।

(784) फूले-फूले फूल यहाँ, फूल रहा कर भूल यहाँ-2
पैदा करता शूल यहाँ-SSS
मिलता नहिं भवकूल यहाँ, चढ़ जाती गम धूल यहाँ-2
अपने ही घर में हो-3, क्यूँ आग लगाएँ रे-SS।।5582।।

(785) गुरु निंदा घर नाश करे, प्रभु निंदा दारिद्र करे-2
स्वामी निंदा कोढ़ करे-SSS
पर की निंदा नीच करे, अपनी निंदा पुण्य करे-2
पापों की निंदा हो-3 मन आनंद कराये रे-SS।।5583।।

(786) लीन पाप में अंधा है, गूँगा करे जो निंदा है-2
हरदम वो शर्मिन्दा है-SSS
निंदा सुनता, बहरा है, जाये न मंदिर, लंगड़ा है-2
कुछ भी नहिं पाया हो-3, फिर भी इतराए रे-SS।।5584।।

(787) गुरु निंदा मुख लायेगा, वो जिंदा मर जायेगा-2
कभी नहीं उठ पाएगा-SSS
निंदा वो इंसान करे, जो खुद में अभिमान धरे-2
गुरु का आशीष हो-3, भव पार लगाए रे-SS।।5585।।

(788) निंदा पर की करता है, वो जिंदा ही मरता है-2
गम ही गम को भरता है-SSS
निंदा खुद की करो यहाँ, सुख अंतस् का वरो यहाँ-2
खुद की निंदा में हो-3, खुद, खुदा दिखाये रे-SS।।5586।।

(789) निंदा दिल पर दाग है, क्रोध भाव का झाग है-2
दिले सुलगती आग है-SSS
परनिंदा तो कचरा है, निंदक गाड़ी ढचरा है-2
आतम की निंदा हो-3, बेदाग बनाएँ रे-SS।।5587।।

(790) गर कषाय में राग है, ईर्ष्या बनती बाग है-2
निंदा उसकी आग है-SSS
राग-द्वेष की झाग है, निंदक कब बे-दाग है-2
निंदा से प्राणी हो-3, दागी बन जाये रे-SS।।5588।।

(791) निज निंदा में नंदपना, पर निंदा में निंदपना–2
निंदा में है फर्क घना–ऽऽऽ
इक निंदा में आग है, निंदा एक चिराग है–2
निंदा सुख–दुख में हो–3, परिपाक घटाये रे–ऽऽ।।5589।।

(792) गैरों की निंदा करते, खुद ही वो जिंदा मरते –2
उनके पुण्य सभी गलते –ऽऽऽ
निंदा खुद की करो अगर, मंजिल की खुद मिले डगर–2
आतम निंदा में हो–3 आनंद समाए रे –ऽऽ।।5590।।

(793) अपनी निंदा करता जो, जिंदा होता प्राणी वो –2
पाता है गुण खुद ही वो –ऽऽऽ
खुद की निंदा गुण लाये, ईश्वर से वह मिलवाये –2
गुण के मिलते ही हो–3 मन खिल–खिल जाये रे–ऽऽ।।5591।।

(794) धन दौलत में सार नहीं, जीने का आधार नहीं –2
इसमें भ्रम का पार नहीं –ऽऽऽ
इसमें सिमट रहें हैं हम, क्षण क्षण में मिट रहे हैं हम –2
इससे ऊपर का हो–3 अब भाव बनाये रे –ऽऽ।।5592।।

(795) अनेकांत का धर्म मिले, अनुभव में स्वानुभव मिले–2
जिन वच में शंका न रहे–ऽऽऽ
तब जानो नि:शंक यहाँ, सम्यग्दर्शन अंग यहाँ–2
पहला ये अंग हो–3 दृग नींव कहाये रे–ऽऽ।।5593।।

(796) आज नियम हम डालेंगे, धीरे–धीरे पालेंगे–2
इक दिन फल को पा लेंगे–ऽऽऽ
लगे बीज में अल्प समय, फल में लगता बहुत समय–2
बीज था कैसा हो–3, ये फल बतलाए रे–ऽऽ।।5594।।

(797) नया दिवस तब होता है, ज्ञान हृदय जब होता है–2
पुण्यकर्म वह बोता है–ऽऽ
जिसमें कुछ भी नया नहीं, वही साल भर रोता है–2
अच्छे भावों से हो–3 सब कुछ मिल जाए रे–ऽऽ।।5595।।

(798) नया सोच हम लाते हैं, भाव नया अपनाते हैं–2
तब नव वर्ष मनाते हैं–ऽऽ
नया भाव संजीवन है, खुशहाली का जीवन है–2
खुशियों का जीवन हो–3 खुशहाल बनाए रे–ऽऽ।।5596।।

(799) औषधि दान जो दिल लाया, वह निरोग पाता काया –2
फल औषधि का बतलाया –ऽऽ
बहुत पुण्य से मिलता है, सेवा से मन खिलता है –2
अवसर मिल जाये हो–3 तो नहीं गँवाओ रे –ऽऽ।।5597।।

(800) जिसने औषधि दान किया, उसने रोग निदान किया –2
मुनियों का सम्मान किया –ऽऽ
सुंदर उसको रूप मिले, कामदेव सा तीर्थ बने –2
नीरोगी प्राणी हो–3 भव से तिर जाये रे –ऽऽ।।5598।।

(801) मंगलमय अरहंत हैं, सिद्ध प्रभु भगवंत हैं–2
त्यागी मुनि सब संत हैं–SSS
उसका ही भव अंत है, जो दिल से निर्ग्रन्थ है–2
दंगल हटाकर हो–3 मंगल बन जाओ रे–SS।।5599।।

(802) मंगलमय आचार्य हैं, मंगलमय सब जिनवर हैं–
मंगलमय ऋषि मुनिवर हैं–SSS
मंगलमय जिनवाणी है, मंगल सुखमय प्राणी है–2
दुनियाँ के जंगल में हो–3 मंगल पाओ रे–SS।।5600।।

(803) पंथवाद झगड़े की जड़, इसमें दिखती बहुत अकड़–2
अज्ञानी को रखे जकड़–SSS
संतों ने भी लिया पकड़, राग–द्वेष की जहाँ रगड़–2
पंथी तो सबको हो–3, पथ से भटकाये रे–SS।।5601।।

(804) पंथों का अनुराग लिये, सभी परिग्रह त्याग किये–2
राग–द्वेष का झाग लिये–SSS
पंथ, ग्रंथि से क्या कम है? हठ रखना मिथ्यातम है–2
पंथों में फँसकर हो–3 मुनि धर्म लजाएँ रे–SS।।5602।।

(805) कोई तेरा बीस दिखे, कोई हमें रईश दिखे–2
कोई जादू यहाँ करे–SSS
झूठ प्रचार कराते हैं, चमत्कार बतलाते हैं–2
धमकी दे साधु हो–3 वे ढोंग रचाएँ रे–SS।।5603।।

(806) तेरा–बीस हुए पंथी, इनमें उलझ गई ग्रन्थि –2
दोनों हुए न शिवपन्थि –SSS
मंत्र–तंत्र कोई जादू, कोई अहं धरे साधु –2
जिनवर का भेष हो–3 और पक्ष दिखाए रे –SS।।5604।।

(807) हठाग्रही अनुरागी हैं, नहीं पंथ के त्यागी हैं –2
ऐसे संत हि दागी हैं–SSS
इन्हें न सच्चा मार्ग मिले, धर्म न इनके दिले खिले –2
पंथों का चक्कर हो–3 सद्ज्ञान मिटाए रे –SS।।5605।।

(808) पंथों की है गंध जहाँ, फिर भव का हो अंत कहाँ –2
भले संत, वो संत कहाँ –SSS
पंथ, ग्रंथि बन जाता है, दिल में शल्य बनाता है –2
पंथों के रागी हो–3 नहिं संत कहाएँ रे –SS।।5606।।

(809) पक्ष दिलों में होता है, पन्थ वहीं पर होता है –2
राग–द्वेष में रोता है –SSS
पंथों से जो उठा यहाँ, वो होता निर्ग्रंथ यहाँ –2
निर्ग्रंथ साधु हो–3 केवल पद पाये रे –SS।।5607।।

(810) साधु गढ़ता पंथ नहीं, गढ़े तो फिर निर्ग्रंथ नहीं –2
पंथवाद में संत नहीं –SSS
वीतराग पथ गढ़ता है, संत वही हो सकता है –2
अरहंत, सच्चा हो–3 साधु बन पाये रे –SS।।5608।।

(811) जिन गुरु के गुणगाता है, वह गुण को पा जाता है–2
सारे विघ्न मिटाता है–SSS
प्रभु दिल में नहिं पायेगा, वो जीवन व्यर्थ गँवाएगा–2
प्रभु की भक्ति में हो–3 वरदान समाये रे–SS।।5609।।

(812) आत्मशक्ति में भक्ति मिले, अंतस् की अभिव्यक्ति खिले–2
तभी धरम का दीप जले–SSS
प्रभुभक्ति में राह दिखे, इक दिन दिले मुकाम दिखे–2
भक्ति में युक्ति हो–3, स्वयमेव दिखाये रे–SS।।5610।।

(813) हो कषाय गर वाणी में, प्रीति हो कैसे प्राणी में –2
यही कहा प्रभुवाणी में –SSS
फूल झरें निज वाणी में, अमृत घुले कहानी में –2
वाणी व्यक्ति का हो–3 व्यक्तित्व बताए रे –SS।।5611।।

(814) प्रभु के दर पे जाओगे, तब ही तुम कुछ पाओगे–2
जब उसके गुण गाओगे–SS
दामन गर फैलाओगे, झोली भरकर आओगे–2
ईश्वर ही जग के हो–3 सब काम बनाए रे–SS।।5612।।

(815) राम कहो आराम मिले, सुबह नहीं तो शाम मिले–2
नाम लिया तो हृदय खिले–SSS
हर घर में सम्मान मिले, सच्चा तुझे मुकाम मिले–2
राम का नाम हो–3 भव पार लगाये रे–SS।।5613।।

(816) जो पसंद भगवान् को, उस पर धरना ध्यान को–2
पायेगा तू ज्ञान को–SSS
प्रभु की इच्छा पर तू चल, उसको भूल नहीं इक पल–2
अर्पण ही दिल में हो–3 अरमान बनाए रे–SS।।5614।।

(817) जब तक है जीवन अपना, रात और दिन खपना खपना–2
देख रहा कोरा सपना–SSS
थोड़ा समय निकालें हम, प्रीति करें प्रभुवर से हम–2
थोड़ी सी प्रीति से हो–3 वैभव मिल जाये रे–SS।।5615।।

(818) चोखा काम किया कब है? कब तूने ध्याया रब है?–2
पहले था वो ही अब है–SSS
जब तक चोखा काम नहीं, घणा मिलेगा दाम नहीं–2
आम के तरु में हो–3 ही आम दिखाएँ रे–SS।।5616।।

(819) रब का हो दीदार दिले, दिल गुल जैसा स्वयं खिले–2
रौशनमय इक दीप जले–SSS
जिसमें अपना रूप दिखे, दुनियाँ दुख का कूप दिखे–2
ईश्वर का दर्शन हो–3 तब हमें दिखाए रे–SS।।5617।।

(820) पढ़ते हैं जो रामायण, वही ज्ञान में पारायण–2
नर से होते नारायण–SSS
राम प्रभू का नाम अरे, रुके हुए सब काम करे–2
उनकी कथा ही हो–3 बैकुण्ठ दिलाये रे–SS।।5618।।

(821) तीन बार समता धर ले, अपनी कम ममता कर ले–2
डूब रहा थोड़ा तिर ले–SSS
प्रभू भजन में चित्त लगा, क्यों तू प्रभु से करे दगा–2
उसकी नजरों से हो–3 कैसे बच पायें रे–SS।।5619।।

(822) पहचानोगे प्रभु को कब? अर्थी पर चढ़ जाओ तब–2
मरकर के जाओगे जब–SSS
इंतजार में है यारब, तुमको अकल आयेगी कब?–2
दुख में भी जीकर हो–3 क्यूँ जश्न मनाएँ रे–SS।।5620।।

(823) दिल में अगर समर्पण है, तो दिल तेरा दर्पण है–2
जहाँ सभी कुछ अर्पण है–SSS
भोग विषय में रोग भरे–त्याग करे नीरोग अरे–2
प्रभु के अर्चन में हो–3 सब कुछ दिख जाये रे–SS।।5621।।

(824) पुण्य–पाप का सर्जन हो, सभी गुनाह विसर्जन हो–2
जीवन का सच अर्जन हो–SSS
संयम की सिंह गर्जन हो, वीर प्रभु का अर्चन हो–2
मन का हो मर्दन हो–3 तो राह दिखाये रे–SS।।5622।।

(825) कितना भी तू इतरा ले, मिट्टी को तू अपना ले–2
ओ पुद्गल के रखवाले–SSS
क्यों होते वो मतवाले, बुद्धि पर डाले ताले–2
पर पे इठलाना हो–3 दुर्बुद्धि बढ़ाए रे–SS।।5623।।

(826) जन्म तेरी जिंदगानी है, अंतिम मृत्यु निशानी है–2
जीवन तेरी कहानी है–SSS
पर्यय आनी–जानी है, इनमें रमना हानि है–2
मरने से पहले हो–3 प्रभु ध्यान लगाओ रे–SS।।5624।।

(827) बुझा हुआ दिल जल जाये, जो भगवन् के गुण गाये–2
अंतस् का तम मिट जाये–SSS
प्रभु खुद ही रौशनमय है, अंधकार का नहिं भय है–2
गुण को पाने से हो–3 गुण ही भर जायें रे–SS।।5625।।

(828) तूने यहाँ कमाया क्या? इस दुनियाँ में पाया क्या?–2
दिल से प्रभु को ध्याया क्या?–SSS
क्या लेकर तू जायेगा, मरकर क्या ले जाएगा–2
अपने गुण पाओ हो–3 जो सहज दिखाए रे–SS।।5626।।

(829) होगा नहिं आनंद परम, होगा कैसे दिले धरम–2
धिक्कारेगा तुझे करम–SSS
सुंदरता तू गुण में ला, सदा विनम्र स्वभाव दिखा–2
तेरे ही दिल में हो–3 ईश्वर दिख जाये रे–SS।।5627।।

(830) कितनी बात अजीब है, प्रभु के यही करीब है–2
जो ही बहुत गरीब है–SSS
दूर अमीरों से ईश्वर, पास गरीबों के प्रभुवर–2
जिससे सब पाया हो–3 नहिं उसे भुलाओ रे–SS।।5628।।

(831) ईश्वर में विश्वास करो, दिल में प्रभु अहसास करो–2
तब मन में उल्लास भरो–SSS
दिल में भगवन् दिखे नहीं, उसका भव वन मिटे नहीं–2
खुद में खुद देखो हो–3 रब ही नजराये रे–SS।।5629।।

(832) सच में हीरे पाता वो, दिल का दीप जलाता जो–2
दिल से प्रभु गुण गाता जो–SSS
गाने से वो पायेगा, जो भी मन में भायेगा–2
प्रभु का आराधन हो–3 हर काम बनाए रे–SS।।5630।।

(833) माँगेगा वो हिसाब जब, तुम क्या दोगे जवाब तब?–2
देगा तुम्हें सबक तब रब–SSS
ऐंठ निकल जायेगी सब, याद आयेगा तब यारब–2
उसका इक झापड़ हो–3 तू झेल न पाये रे–SS।।5631।।

(834) दिनभर दिखता दाम तुझे, याद न आता राम तुझे–2
वो नहिं दे आराम तुझे–SSS
याद, विवाद मिटाता है, दिल दिलशाद बनाता है–2
प्रभु की यादों में हो–3 हम सब गुण पायें रे–SS।।5632।।

(835) नई रौशनी पायेंगे, महावीर को ध्यायेंगे–2
अंधकार तज जायेंगे–SSS
प्रभु का ध्यान लगा पलपल, होगा जीवन यहाँ सफल–2
जन्म जयंती हो–3, सब जन्म मिटाये रे–SS।।5633।।

(836) पानी, पृथ्वी, पेड़, पवन, पावक में भी है भगवन्–2
देख जरा तू अन्तरमन–SSS
व्यर्थ इन्हें नहिं करो हवन, कहते वेदों में ऋषिगण–2
करते प्रभू रक्षा हो–3, उसपे कृपा दिखाए रे–SS।।5634।।

(837) तू सागर तो लहर हूँ मैं, तेरी ही इक नजर हूँ मैं–2
तेरे बिन पत्थर हूँ मैं–SS
तेरा ही इक असर हूँ मैं, तेरा ही इक सफर हूँ मैं–2
तेरी सज्दा ही हो–3, शुभ राह बनाये रे–SS।।5635।।

(838) धन पाकर जो अंधा है, वो प्रभु का नहिं बंदा है–2
दिखने में बाजिंदा है–SSS
दुनिया गोरख धंधा है, इसमें रमना गंदा है–2
खुद में रम जाओ हो–3, तो गुण मिल जायें रे–SS।।5636।।

(839) भक्ति हृदय में आ जाये, श्रद्धा तब खुद दिख जाये–2
चेतन शक्ति बढ़ जाये–SSS
प्रभु गुण में तन्मय हो लो, खोकर सब प्रभु के हो लो–2
भक्ति की शक्ति हो–3, सब काम बनाए रे–SS।।5637।।

(840) उसका ध्यान लगाओगे, गर दिल में अपनाओगे–2
ऊपर उठते जाओगे–SSS
उसके अगर खिलाफ चले, तो फिर गिरते फिरे रहे–2
पत्ता उसके बिन हो–3, भी नहिं हिल पाए रे–SS।।5638।।

(841) जब हम खुद को चाहेंगे, तभी याद प्रभु आयेंगे-2
दिल से तब हम गायेंगे-ऽऽऽ
खुद की जब परवाह नहीं, बनती हैं तब राह नहीं-2
भटकन तब मेरे हो-3, हाथों में आये रे-ऽऽ।।5639।।

(842) अपना हम सम्मान करें, पहले प्रभु गुणगान करें-2
तब ही भोजन पान करें-ऽऽऽ
ऐसा तू कर जाएगा, कहीं नहीं दुख पायेगा-2
गुरु का आशीष हो-3, फिर हरदम पाये रे-ऽऽ।।5640।।

(843) जिन प्रभु का गुणगान किया, सबसे अच्छा काम किया-2
तेरा ही जल सके दिया-ऽऽऽ
जले दीप में दिखे सभी, कर ले ऐसा काम अभी-2
कल का क्या मालुम हो-3, आये न आये रे-ऽऽ।।5641।।

(844) प्रभु के दर पर आयेगा, जब तू प्रभु गुण गायेगा-2
सच में सब पा जायेगा-ऽऽऽ
न माने तो देख जरा, डालो सिर पर कलश भरा-2
खुश होके मन ये हो-3, खुद नृत्य दिखाये रे-ऽऽ।।5642।।

(845) जिसने दीपक जला लिया, उसने जीवन खिला दिया-2
खुद को प्रभु से मिला लिया-ऽऽऽ
उसे न कोई अब भय है, मिट जाये जो संशय है-2
वो ही जीवन को हो-3, खुद धन्य बनाये रे-ऽऽ।।5643।।

(846) गीत प्रभु के गायेगा, जीवन में रस पायेगा-2
आनन्दित हो जायेगा-ऽऽऽ
प्रभु गुण में आनन्द भरा, खा मीठा गुलकंद जरा-2
जीवन का रस ही हो-3, मीठा कर जाये रे-ऽऽ।।5644।।

(847) प्रभु की जिसे इनायत हो, उसकी सदा हिफाजत हो-2
गम में उसे किफायत हो-ऽऽऽ
रोज-रोज मत रोजाकर, खुद में खुद को खोजाकर-2
खुद में खुदा की हो-3, सूरत नजराए रे-ऽऽ।।5645।।

(848) सूर्य उदय जब भी होता, जग प्रकाशमय हो जाता-2
कमलों सा उर खिल जाता-ऽऽऽ
रवि समप्रभु कृपालू हैं, भवि को सदा दयालू है-2
भव्यों को भगवन् हो-3, भव पार लगाये रें-ऽ।।5646।।

(849) खुद में खुद से करो अमल, दिल को प्रभु सा करो सरल-2
बन जाओगे तुम्हीं गजल-ऽऽ
सब जायें तव देख दहल, कर ले तू इक बार पहल-2
गुण की फसलों में हो-3, निज महल दिखाए रे-ऽऽ।।5647।।

(850) अपनी लख तासीर अरे, खिल जाये तद्वीर अरे-2
मिले तुझे तकदीर अरे-ऽऽ
तुझमें है अक्सीर अरे, तुझमें प्रभु तस्वीर अरे-2
खुद को ही लख ले हो-3, सब कुछ दिख जाये रे-ऽऽ।।5648।।

(851) प्रभु को जरा न ध्यायेगा, तू जर-जर हो जायेगा-2
जरा अंत में पाएगा-SSS
जरा जरा सी भूल यहाँ, जरा करे प्रतिकूल यहाँ-2
हरदम जरा ने हो-3, बहु दुःख बढ़ाए रे-SS।।5649।।

(852) जिनके यहाँ उजाले हैं, उनके प्रभु रखवाले हैं-2
वे सच्चे दिल वाले हैं-SSS
जो विष भोग से काले हैं, उनके दिल में छाले हैं-2
अपने ही गम में हो-3, वे खुद मर जायें रे-SS।।5650।।

(853) मंदिर झूठी मिन्नत है, मन नहिं पाता उन्नत है-2
नहीं मिले जो जन्नत है-SSS
रब की रहमत पाना है, रिश्ता नया बनाना है-2
यारब ही सबको हो-3, सच राह दिखाए रे-SS।।5651।।

(854) सोच बुरा तो बुरा मिले, लोगों की बद्दुआ मिले-2
उसे न रस्ता कोइ मिले-SSS
अच्छों की जब दुआ मिले, रहे प्रभू की कृपा उसे-2
प्रभु की कृपा से हो-3, सब ही मिल जाये रे-SS।।5652।।

(855) पाने को कुछ किया करें, गुण गाने हम जिया करें-2
धर्मामृत को पिया करें-SSS
यही सफर कर जाता है, वही अमर पद पाता है-2
गुण को गाता वो हो-3 गुण से भर जाये रे-SS।।5653।।

(856) सारी दुनियाँ चमन करें, रवि तारे शशि गमन करें-2
प्रभु को सारे नमन करें-SSS
सूरज चंदा इन्द्र हैं, प्रभु इन्द्रों के इन्द्र हैं-2
सारे ही इन्द्र हो-3 प्रभु को शीश झुकाएँ रे-SS।।5654।।

(857) तेरे गीत सुनाऊँ मैं, तुझसे प्रीत बढ़ाऊँ मैं -2
इक संगीत दिखाऊँ मैं -SSS
लोग ढूँढते मंदिर में, हमें दिखे मन मंदिर में -2
दिल की धुन पर ही हो-3 प्रभु स्वयं सुनाएँ रे -SS।।5655।।

(858) दिखे भिखारी गर दर पर, उसको दे मुट्ठी भर कर -2
देगी उसकी दुआ असर -SSS
प्रभु किस रूप में आयेगा, तुमको कौन बताएगा -2
भिक्षु में सचमुच हो-3 भगवान् दिखाये रे -SS।।5656।।

(859) जिसका नाम सुबह ले ले, वो दिन भर फिर ध्यान रखे-2
इंतजाम वो सभी करे -SSS
उठकर उसका नाम जपो, उसका अपने नाम करो -2
उसको देखें तो हो-3 सब कुछ दिख जाये रे -SS।।5657।।

(860) दिल गुल एक गुलाब यहाँ, इसमें हुस्न शबाब यहाँ -2
देता सभी जवाब यहाँ -SSS
दिल की हर आवाज सुनो, उसका हर आगाज़ सुनो -2
दिल ही दिलवर को हो-3 दिलशाद बनाए रे -SS।।5658।।

(861) ज्यादा तन को सहलाए, तन फिर बार-बार आए -2
कौन नहीं आदर चाहे -ऽऽऽ
जिस्म जिगर नहिं चाहेगा, आदर बिन मर जायेगा -2
तन जो नहिं चाहे हो-3 उसको प्रभु बुलाए रे -ऽऽ||5659||

(862) मन का दर खुल जायेगा, प्रभु का दर्शन पाएगा -2
दिल गुलशन बन जायेगा -ऽऽऽ
गुण के फूल खिलाएगा, पद अनंत दिख जायेगा -2
सिद्धों की श्रेणी हो-3 में तू आ जाये रे-ऽऽ||5660||

(863) चक्री-शेर-इन्द्र सारे, अथवा सूरज शशि-तारे -2
नमन करें प्रभु के द्वारे -ऽऽऽ
जब ये सब सम्मान करें, तो हम क्यों नहीं ध्यान करें -2
प्रभु को जो ध्याये हो-3 वो सबको भाये रे -ऽऽ||5661||

(864) हो प्रभु का गर आराधन, घर में ला देता है धन -2
गुणमय कर देता जीवन -ऽऽऽ
गुल सा करे प्रफुल्लित मन, पूजन है इक संजीवन् -2
गुणमय हो जाये हो-3 जो प्रभुगुण गाये रे -ऽऽ||5662||

(865) यहाँ सभी ईश्वर मानें, कोई न ईश्वर की मानें -2
कैसे वो खुद को जानें -ऽऽऽ
बात कहें सब ईश्वर की, करते हैं अपने मन की -2
ऐसी करतूतें हो-3 मझधार डुबोये रे -ऽऽ||5663||

(866) ये दुनियाँ अंजानों की, बदनसीब अरमानों की -2
गम रंजित परवानों की -ऽऽऽ
याद करें इंसानों की, यज्ञ करें भगवानों की -2
गम का जंजाल हो-3 प्रभु नाम मिटाये रे -ऽऽ||5664||

(867) ईश्वर की जप ले माला, मिट जाये भव जंजाला-2
मन का मैल मिटे काला -ऽऽऽ
भक्ति का पीकर प्याला, छोड़ो भटकन का चाला -2
ईश्वर बिन कोई हो-3 नहिं काम बनाए रे -ऽऽ||5665||

(868) रब से जो भी वाद करे, वो उसमें संवाद करे -2
विसंवाद का नाश करे -ऽऽऽ
वो दुनियाँ आबाद करे, नई राह ईजाद करें -2
उसका प्रसाद हो-3 दिलशाद बनाए रे -ऽऽ||5666||

(869) आ जाती तब तरुणाई, दिखने लगती गहराई -2
पट जाती गम की खाई -ऽऽऽ
मजहब में तुम तरुण बनो, रौशनमय इक अरुण बनो -2
शक्ति वो पाए हो-3 जो शक्ति दिखाए रे -ऽऽ||5667||

(870) याद करो हर साँसों में, देखो दिल की आँखों में -2
भीतर गहरी यादों में -ऽऽऽ
दिखे स्वप्न में भी सूरत, जिसमें हो तेरी मूरत -2
भीतर तो देखो हो-3 वो खुद दिख जाये रे -ऽऽ||5668||

(871) कहते साथ जियेंगे हम, जीकर साथ मरेंगे हम -2
खाते रहे कसम हरदम -ऽऽऽ
सरेआम यह कहते हैं, साथ न कोई मरते हैं -2
ऐसी ही रश्में हो-3 विश्वास मिटायें रें -ऽऽ॥5669॥

(872) श्रद्धा से दर पे आया, दीप समर्पण का लाया -2
तुमको दिल में बिठलाया -ऽऽऽ
तुम ही भगवन् निकट मेरे, हरो सभी संकट मेरे -2
ऐसा संयोग हो-3 फिर नहिं मिल पाये रे -ऽऽ॥5670॥

(873) तेरे दर का फूल बनूँ, दर पे बनकर दीप जलूँ -2
तेरे पथ पर सदा चलूँ -ऽऽऽ
तुझे देखकर खिला करूँ, ऐसा ही सिलसिला करूँ -2
तेरा अहसास हो-3 विश्वास दिलाए रे -ऽऽ॥5671॥

(874) प्रभु की छाँव बड़ी शीतल, जैसे हो गंगा का जल -2
दूर करे पापों का मल -ऽऽऽ
मन में देती है संबल, कर दे मानव जन्म सफल -2
कर ले तू सुमिरन हो-3 वरना पछताए रे -ऽऽ॥5672॥

(875) श्रद्धा जब मन को भाये, तो प्रभु दिल में आ जाये -2
जो सौभाग्य जगा जाये -ऽऽऽ
ईश्वर तब अपना लगता, सभी ओर सपना दिखता -2
प्रभु के मिलते ही हो-3 सबकुछ मिल जाये रे -ऽऽ॥5673॥

(876) श्रद्धा से पहले पाऊँ, फिर तेरे घर पर आऊँ -2
ऐसा ही मैं कर जाऊँ -ऽऽऽ
तू रहता सिद्धालय में, पर मेरे श्रद्धालय में -2
तेरा अहसास हो-3 हर साँस कराये रे -ऽऽ॥5674॥

(877) पैदा गहरी प्यास करो, दर्द दिले अहसास करो -2
तभी खुदा से बात करो -ऽऽऽ
छिपा वो बाहर आयेगा, अनुभव नया कराएगा -2
सच्चा प्रयास हो-3 प्रभु को पास बुलाएँ रे -ऽऽ॥5675॥

(878) राहें मंजिल पाऊँगा रिश्ता एक बनाऊँगा -2
गीत प्रभु के गाऊँगा -ऽऽऽ
अपनी मंजिल पाने को, सारी रस्म निभाऊँगा -2
तब ही जन्मों का हो-3 सारा दुख जाये रे -ऽऽ॥5676॥

(879) मजहब का हो रक्त जहाँ, स्वयं बदलता वक्त वहाँ -2
गम का पलटे तख्त वहाँ -ऽऽऽ
कौन है मजहब से बढ़कर, सारी दुनियां में भू-पर -2
अर्पण हो प्रतिक्षण हो-3 तो सबकुछ पाये रे -ऽऽ॥5677॥

(880) खुद से ही जो प्यार करे, दुनियाँ को इज़हार करे -2
उसका बेड़ा पार अरे -ऽऽऽ
रब उसका उद्धार करे, खुशियों का आधार वरे -2
रब को जो चाहे हो-3 उसको दुनियाँ चाहे रे -ऽऽ॥5678॥

(881) प्रभु का इकपल आ जाना, सचमुच सच दिखता जाना–2
कैसा अद्‌भुत सुख लाना –ऽऽऽ
प्रभु की जगह निराली है, उस दिल में जो खाली है –2
उसको इस दिल में हो–3 तुम रोज बुलाओ रे –ऽऽ।।5679।।

(882) हे प्रभु तुम अंतर्यामी, तीनों लोकों के स्वामी –2
जगनामी हे अभिरामी! –ऽऽऽ
मेरा अब उद्धार करो, जग से बेड़ा पार करो –2
दो दिन की उम्र हो–3 वो भी अब जाये रे –ऽऽ।।5680।।

(883) प्रभु गुण में अनुराग जभी, दिल में जले चिराग तभी –2
होता ऐसा कभी–कभी –ऽऽऽ
मिलता जीवन पराग जब, हो जाता खुद विराग तब –2
रौशन हो दिल तो हो–3 पथ खुद दिख जाये रे –ऽऽ।।5681।।

(884) गम से लड़ना सिखलाया, आगे बढ़ना बतलाया –2
हरदम हँसना सिखलाया –ऽऽऽ
कदम–कदम पर हे भगवन्, तुमने चलकर दिखलाया–2
तेरा ही साथ हो–3 इस दिल को भाये रे –ऽऽ।।5682।।

(885) जब उगता सूरज आये, फूलों सा मन खिल जाये –2
नई ऊर्जा मन पाये –ऽऽऽ
उगते सूरज की पूजा, हर प्राणी करने जाये –2
दिल का ये सूरज हो–3 प्रभु से उग आये रे –ऽऽ।।5683।।

(886) खुद के लिये जिया है जो, जलता हुआ दिया है वो –2
फिर वो चाहे कोई हो –ऽऽऽ
तीर्थंकर ऐसे ही हैं, हम भी ऐसे यहाँ बनें –2
खुद को जो जीते हो–3 वो मरण मिटाये रे –ऽऽ।।5684।।

(887) रब ने मेरा भला किया, हमने रब को भुला दिया –2
कैसा ना इंसाफ किया –ऽऽऽ
उसे भूलना कब अच्छा, कहता ये बच्चा–बच्चा –2
उसके गुण गायें हो–3 तो सब मिल जाये रे –ऽऽ।।5685।।

(888) प्रभु का आये ख्याल जभी, यहाँ सुधरते हाल तभी –2
होता ऐसा कभी–कभी–ऽऽऽ
भूला प्रभु तो काल मिले, हरपल ही विकराल मिले –2
प्रभु का ही ख्याल हो–3 जंजाल मिटाए रे –ऽऽ।।5686।।

(889) जीकर अब क्या करें यहाँ, जीते हैं जब मरे यहाँ–2
पर कोई अधमरे यहाँ –ऽऽऽ
जीने का है भाव नहीं, दिल में कोई ताव नहीं –2
ऐसे लोगों को हो–3 कुछ नहीं दिखाए रे –ऽऽ।।5687।।

(890) होती सुबह शाम यारो, इसमें नहीं विराम कहो –2
दिल से प्रभु का नाम जपो –ऽऽऽ
दिन सारे ढल जायेंगे, हमें बुढ़ापा लायेंगे –2
करना वो कर ले हो–3 कल कभी न आये रे –ऽऽ।।5688।।

(891) दिल में ही प्रभु राम दिखें, दिल में ही घनश्याम दिखें –2
महावीर भगवान् दिखें –ऽऽऽ
नहीं किसी का दिल तोड़ो, सबसे खुश होकर बोलो –2
प्रभु का मुकाम हो–3 ये दिल बतलाए रे –ऽऽ।।5689।।

(892) बंधन में मन नंदन हो, तब पर का अभिनंदन हो –2
भीतर–भीतर वंदन हो –ऽऽऽ
खुद में प्रभु का वंदन हो, तब ये मन खुद चंदन हो –2
चंदन सा मन ही हो–3 गुण से महकाएँ रे –ऽऽ।।5690।।

(893) लाभ हो अथवा हानि हो, सुख–दुख कोइ निशानी हो –2
मरण हो या जिंदगानी हो –ऽऽऽ
मित्र या कोइ दुश्मन हो, मिलन या कोई बिछुड़न हो –2
सबसे सम भाव हो–3 प्रभु से मिलवाये रे –ऽऽ।।5691।।

(894) प्रभु की मन में है माला, उनका प्रभु है रखवाला –2
नहीं रहे फिर मन काला –ऽऽ
माला शीश बनाती है, जग के मील चलाती है –2
मालिक की माला हो–3 सब माल दिलाए रे –ऽऽ।।5692।।

(895) माला से प्रभु खास बने, मज़हब पर विश्वास बने –2
मुक्ति महल का पास बने –ऽऽ
माला में सब माल छिपा, मालिक का सब हाल छिपा –2
मन से हो माला हो–3 तो मालिक मिल जाये रे –ऽऽ।।5693।।

(896) प्रभु गुण से सब मिल जाता, हृदय कमल सा खिल जाता–2
दिल का दीपक जल जाता –ऽऽ
गुरु गुण से सम्मान मिले, सच्चा सच्चा ज्ञान मिले –2
धर्मी पापी को हो–3 भव पार लगाये रे –ऽऽ।।5694।।

(897) पूजन व्रत उपवास करे, पर कोई उपहास करे –2
कोई ज्ञान विनाश करे –ऽऽ
खुद का नहिं अहसास करे, वो प्रभु का नहिं खास अरे –2
प्रभु को पाना तो हो–3 निज ज्ञान बढ़ाओ रे –ऽऽ।।5695।।

(898) श्रद्धा खुद दिख जाती है, भक्ति दिले समाती है –2
शक्ति बढ़ती जाती है –ऽऽ
युक्ति निकल के आती है, मुक्ति महल ले जाती है –2
प्रभु की भक्ति ही हो–3 आराम दिलाए रे –ऽऽ।।5696।।

(899) दिले आस्था सच्ची हो, तो प्रभु भक्ति अच्छी हो –2
वरना कच्ची कच्ची हो –ऽऽ
श्रद्धा ही रस लाती है, राह सही दिखलाती है –2
सच्चा दर्शन ही हो–3 भव भ्रमण मिटाये रे –ऽऽ।।5697।।

(900) छोड़ो काम करोड़ों तुम, प्रभु से मन को जोड़ो तुम–2
पाप विचार मरोड़ो तुम –ऽऽ
गुरु से लाखों काम बनें, प्रभु से सारे काम बनें –2
पहिले पूजन का हो–3 अभियान रचाओ रे –ऽऽ।।5698।।

(901) दिल का दीपक यहाँ जले, तब ही जीवन कला बने–2
यह जीवन का सार अरे –ऽऽ
अंत भला तो सभी भला, अंत भला तो पाप टला–2
अंतिम साँसों में हो–3 प्रभु ध्यान लगाओ रे–ऽऽ।।5699।।

(902) दिल छोटा क्यों करते हो, डबरे में क्यों मरते हो–2
अपराधी क्यों बनते हो –ऽऽ
अपना ज़िगर विशाल करो, गुण से मालामाल करो–2
छोटे से दिल में हो–3 प्रभु नहिं बन पायें रे –ऽऽ।।5700।।

(903) सरिता जैसे बहती है, बहती ही ये जगती है –2
इसमें अपनी कश्ती है –ऽऽ
आओ उसे तिरा लें हम, ईश्वर के गुण गा लें हम –2
पल भर का जीवन हो–3 क्यूँ व्यर्थ गँवाए रे –ऽऽ।।5701।।

(904) चरणों की मैं धूल हूँ, चढ़ा हुआ इक फूल हूँ –2
जीवन की इक भूल हूँ –ऽऽ
सारी भूल मिटायें हम, भगवन् के गुण गायें हम –2
तब ही जीवन में हो–3 सद्ज्ञान दिखाए रे –ऽऽ।।5702।।

(905) राम नाम नहिं ध्याया है, निज आराम न पाया है–2
क्षण भर बैठ न पाया है–ऽऽऽ
मुक्तिपथ में चलो यहीं, अपने गुण में ढलो यहीं –2
अपने ही गुण में– हो–3 अब लगन लगाओ रे –ऽऽ।।5703।।

(906) हो भविष्य उसका उज्ज्वल, जिसके मन में भाव विमल–2
मिलता आसन स्वर्णकमल –ऽऽ
पाता है वह वस्तु सकल, होते उसके कार्य सफल –2
वो ही निज घर में हो–3 आवास बनाएँ रे –ऽऽ।।5704।।

(907) इस दिल को दिलशाद करो, नई चीज ईज़ाद करो –2
जीस्त स्वयं आबाद करो –ऽऽऽ
निज प्रभु से संवाद करो, बंधन से आज़ाद करो –2
तेरा अब जीवन हो–3 गुलशन बन जाए रे –ऽऽ।।5705।।

(908) सूरज चाँद प्रकाशी हैं, दीपक तिमिर विनाशी है –2
निज प्रकाश अविनाशी है –ऽऽऽ
अपना दीप जलाओ तुम, प्रभु को दिले मिलाओ तुम –2
उसकी इनायत हो–3 तुझपे हर्षाये रे –ऽऽ।।5706।।

(909) वीतरागता प्यारी है, सबको ही हितकारी है –2
जिसकी महिमा न्यारी है –ऽऽ
राग द्वेष निवारी है, गुणमय सुन्दर क्यारी है –2
भव की भटकन को हो–3 सम्पूर्ण मिटाये रे –ऽऽ।।5707।।

(910) थोड़ा राग मिटा लें हम, दिल–ए चिराग जला लें हम –2
जीवन धन्य बना लें हम –ऽऽ
ज्योतिर्मय को पा लें हम, प्रभु को दिले बसा लें हम –
खुशियों का सावन हो–3 घर में आ जाये रे –ऽऽ।।5708।।

(911) वही रिहाई पायेगा, जो रब का हो जायेगा -2
रंजो गम तज जायेगा -ऽऽ
रहबर सच्चा मिला नहीं, रहबर से गम मिटा नहीं -2
रूहानी ताकत हो हो-3 निज रूह दिखाये रे-ऽऽ।।5709।।

(912) सच रुझान दिल लाओगे, नेक इंसान कहाओगे -2
रहमत खूब लुटाओगे -ऽऽ
शस्तबाज-शासिख बन जा, तू प्रभु का आशिक बन जा-2
आहत से राहत हो-3 तू खुद पा जाये रे-ऽऽ।।5710।।

(913) कतरा-कतरा गम-ए यहाँ, खतरा पग-पग उसे यहाँ-2
सकरा दिल और गम-ए-जहाँ-ऽऽऽ
जीता है पर मरा यहाँ, मरा न तो अधमरा यहाँ-2
दिल में सदाकत हो-3 कैसे नजराए रे -ऽऽ।।5711।।

(914) बुरा किसी का मत सोचो, पहले अच्छाई खोजो -2
खोजोगे वह पाओगे -ऽऽ
ढूँढें ढूँढें प्रभु मिलें, ह्रदय खिले दो नयन खिलें -2
जैसा कर लोगे हो-3 वैसा ही पाओ रे -ऽऽ।।5712।।

(915) अंधी दौड़ लगाएगा, कई ठोकरें खाएगा -2
थककर चूर हो जायेगा -ऽऽ
प्रभु गुण में तू लगन लगा, फूटी किस्मत स्वयं जगा -2
अच्छी किस्मत ही-हो-3 सब काम बनाए रे -ऽऽ।।5713।।

(916) ईश्वर का जो ध्यान करे, लंबी उम्र प्रयाण करे-2
जल्दी-जल्दी नहीं मरे-ऽऽ
ज्ञान मोह से दूर करे, अंधकार अज्ञान हरे-2
ज्ञानी ही भव में हो-3 अज्ञान मिटाए रे-ऽऽ।।5714।।

(917) प्रभु भक्ति को लाएगा, इस भव से तिर जाएगा-2
ज्ञान बढाता जाएगा-ऽऽ
सारे दुःख मिटा करके, मंजिल अपनी पाएगा-2
भक्ति हम सबको हो-3 भव पार कराए रे-ऽऽ।।5715।।

(918) वीतरागता हो प्यारी, उसे न कोई बीमारी -2
बन जाता वो गुणधारी -ऽऽऽ
स्वस्थ वही कहलाता है, जो शिवराह बनाता है -2
वीरों का बाना हो-3 बस वीर दिखाए रे -ऽऽ।।5716।।

(919) वो ही रस्ता दिखलाए, जगमग दिल को कर जाए -2
मन को प्रमुदित करवाए -ऽऽऽ
वो सबको चलवाता है, सबको जीवन दाता है -2
काँटे राहों के हो-3 वो फूल बनाए रे -ऽऽ।।5717।।

(920) होता है परिवार जहाँ, चाहत होती कार वहाँ-2
गम की मारामार वहाँ-ऽऽऽ
ढोता सबका भार अरे, मतलब का सब प्यार अरे-2
मूढी को अपना हो-3 नहिं सार दिखाए रे-ऽऽ।।5718।।

(921) जब दो से हों चार यहाँ, आते कई विचार यहाँ–2
इंतजाम अधिकार यहाँ–SSS
चिंता कई सताती है, भटकन और बढ़ाती हैं–2
दो से हों चार हो–3 परिवार कहाए रे–SS।।5719।।

(922) किसके लिए कमाता तू, अपना किसे बताता तू–2
दिल का चैन गँवाता तू–SSS
पत्नि की चिंता करता, अपना ध्यान नहीं धरता–2
दरवाजे तक ही हो–3, वो साथ निभाए रे–SS।।5720।।

(923) बेटा होता न्यारा क्यों? पोता होता प्यारा क्यों? –2
बहुएँ करें किनारा क्यों? –SSS
दादा को बचपन प्यारा, बेटा को है धन प्यारा –2
दिल को जो प्यारा हो–3 उससे प्यार जताएँ रे –SS।।5721।।

(924) पिता पालकर बड़ा करे, चार पुत्र को खड़ा करे –2
पढ़ें लिखें सब दुआ करे –SSS
बेटा फिर भी ध्यान न दे, देना वो सम्मान न दे –2
सारा जंजाल हो–3 ये मोह बनाए रे –SS।।5722।।

(925) छोड़ो सभी प्रमाद यहाँ, दिल कर तू दिलशाद यहाँ–2
होगा तब आज़ाद यहाँ–SSS
जिगर न कर नाशाद अरे, खुद को कर ईज़ाद अरे–2
तुझमें ही तेरी हो–3, खुश्बू नज़राये रे–SS।।5723।।

(926) हार जायें तो रोती हैं, थक जाएँ तो सोती हैं–2
ऐसी नारी होती हैं–SSS
लड़कर जब ये थक जायें, अंतिम धमकी देती हैं–2
मानो वरना मैं हो–3 पीहर चली जाऊँ रे–SS।।5724।।

(927) क्या रखा पर द्रव्यों में, झूठे इन मन्तव्यों में–2
पाप रूप कर्त्तव्यों में–SSS
पर को तू अपनाएगा, रो–रोकर तू जायेगा–2
फूलों सा जीवन हो–3, क्यों शूल बनाए रे–SS।।5725।।

(928) चारों गति का चक्कर है, इसमें कहीं न शक्कर है–2
घूम रहा घनचक्कर है–SSS
पर से पर की टक्कर है, सुख का कहीं न मंजर है–2
अपने में झाँको हो–3 सच्चा सफर दिखाये रे–SS।।5726।।

(929) पर पर परिणति बैठी है, फिर भी इतनी ऐंठी है–2
लगती बात अनूठी है–SS
अपने को हम भूले हैं, पर को पाकर फूले हैं–2
खुद को अब समझो हो–3, तब समझ दिखाए रे–SS।।5727।।

(930) पर से तू आसक्ति हटा, सिर से अपना बोझ घटा–2
अंतस् को तू देख जरा–SSS
राग–द्वेष का भाव मिटा, वीतराग का करो पता–2
पर की परिणति में हो–3, नहिं राह दिखाए रे–SS।।5728।।

(931) तन–घर–धन अपनी नारी, शत्रु–मित्र सुत संसारी–2
पर स्वभावमय हैं क्यारी–SSS
मूढ़ी इन्हें पकड़ते हैं, अपना इन्हें समझते हैं–2
पर को निज माने हो–3, वो खुद मिट जाये रे–SS।।5729।।

(932) क्यूँ पर को अपनाया है, भ्रम का जाल बढ़ाया है –2
खुद को यहाँ भुलाया है –SS
पराधीन पर यहाँ करे, पर पर को ईजाद करे –2
पर की मजबूरी हो–3 मजदूर बनाये रे –SS।।5730।।

(933) पर को पाकर भूले हैं, भूल भूलकर झूले हैं –2
भूले फिर भी फूले हैं –SS
अनुकूलों को सुख माना, प्रतिकूलों में दुख जाना –2
कैसे जीवन की हो–3 सच राह दिखाए रे –SS।।5731।।

(934) पर से कर्म उपजता है, निज से मर्म निकलता है
स्व–पर दीप जब जलता है –SS
पर में परम न मिलता है, पर में हृदय न खिलता है –2
पर से पर्दा कर –हो–3 पर दूर हटाओ रे –SS।।5732।।

(935) पर को पर नहिं माना है, पर में ही बेगाना है –2
परम–परम पर जाना है –SS
पर का ज्ञान पुराना है, अब निज को अपनाना है –2
परखो अब पर को–हो–3 पर तज, निज पाओ रे –SS।।5733।।

(936) दुनियाँ में कैसी मस्ती, ये जग अंधों की बस्ती –2
रह न सकी कोई हस्ती –SSS
डुबा नहीं अपनी कश्ती, ज्ञान से ही कश्ती तिरती –2
पर में फँस–फँसकर–हो–3 क्यूँ गम उपजाये रे –SS।।5734।।

(937) तम को लेकर आये हैं, तम में ही भरमाए हैं –2
तम को गले लगाए हैं–SSS
तमसो ज्योतिर्गमयः हम, तब हो दूर हृदय से तम –2
तम के बादल में – हो–3 नहिं ज्योति दिखाए रे –SS।।5735।।

(938) गम में गम नहिं किया यहाँ, गम ही गम में जिया यहाँ
गम को गम नहिं कहा यहाँ –SS
गम ये गम नहिं गम जाना, गम को ही हमदम माना–2
गम को जाने बिन–हो–3 गम गमन न पाये रे –SS।।5736।।

(939) दुख को दुख नहिं जाना है, दुख में ही दीवाना है –2
दुख को ही सुख माना है –SS
दुःख ही जीस्त तराना है, निज सुख से अंजाना है –2
दुःख को जाने बिन हो–3 नहिं सुख मिल पाये रे –SS।।5737।।

(940) आना जाना लगा यहाँ, खाना पीना लगा यहाँ –2
और कमाना लगा यहाँ –SS
इनसे ये तन चलता है, जीवन कभी न खिलता है –2
खुद में रहने की हो–3 अब ललक जगाओ रे–SS।।5738।।

(941) इन्द्रधनुष सा तन–धन है, मिटता जाता क्षण–क्षण है–2
बिजली जैसा यौवन है–ऽऽ
इस पर करे गुमान यहाँ, क्यों बनता नादान यहाँ –2
तपकर तू तन से–हो–3 भगवन बन जाये रे –ऽऽ।।5739।।

(942) हो मिठास गर वाणी में, प्रीति बढ़े हर प्राणी में –2
यही कहा जिनवाणी में –ऽऽ
हो उमंग जिंदगानी में, अमृत घुले कहानी में –2
वाणी व्यक्ति का –हो–3 व्यक्तित्व बताए रे–ऽऽ।।5740।।

(943) चंद दिनों का जीवन है, इसमें देखो सुख कम है–2
गम ही गम नज़राता है–ऽऽऽ
जन्म सभी को है मालूम–मृत्यु किसी को नहिं मालूम–2
जाने कब पंछी हो–3 तन से उड़ जाये रे –ऽऽ।।5741।।

(944) खुद को नहीं तलाशा है, खुद में नहीं तराशा है–2
आकर बने तमाशा है –ऽऽऽ
आपा–पर नहिं भासा है, ज्ञान नहीं परकाशा है–2
जग में जगने की –हो–3 अब ललक जगाओ रे –ऽऽ।।5742।।

(945) पूजा तुम कर जाओगे, सम्यग्दर्शन पाओगे–2
शुद्धातम लख जाओगे–ऽऽऽ
समयसार है पूजन में, पाओगे सब प्रभु गुण में–2
जिनवर की पूजा हो–3, हर काम बनाए रे–ऽऽ।।5743।।

(946) क्या तुम द्रव्य चढ़ाते हो, तुच्छ फलों को पाते हो–2
फिर भी तुम हर्षाते हो–ऽऽऽ
व्यंजन आदि चढ़ाते हो, खूब तभी तुम खाते हो–2
खुद को चढ़ाओ हो–3, तो खुदा को पाओ रे–ऽऽ।।5744।।

(947) पात्र यहाँ बन जायेगा, फल तेरा लिख जायेगा–2
जगह स्वर्ग में पायेगा–ऽऽऽ
पात्र पात्रता दिलवाये, दिल को पात्र बना जाये–2
पूजन की किस्मत हो–3, हर कोई न पाये रे–ऽऽ।।5745।।

(948) प्रभु का जब दर्शन पाओ, अंतर मन से हर्षाओ–2
तन्मयता तुम दिखलाओ–ऽऽऽ
भक्ति छलकती जायेगी, शक्ति खुद आ जायेगी–2
भक्ति बिन शक्ति हो–3 तू कभी न पाए रे–ऽऽ।।5746।।

(949) आँखों में नज़रें डालें, नज़रों से सच को पा लें–2
सच्चाई के गुण गा लें–ऽऽऽ
नज़र प्रभु से मिल जाये, मुरझाया दिल खिल जाये–2
नज़रें मिलते ही हो–3 दिल में सच नजराये रे–ऽऽ।।5747।।

(950) पूजा खूब रचाओगे, बाटी खूब उड़ाओगे–2
संग चूरमा पाओगे–ऽऽऽ
खाता वही चूरमा है, जो इंसान सूरमा है–2
मौजां की मौजां हो–3 पूजन दिलवाए रे–ऽऽ।।5748।।

(951) कामचोर जो बने यहाँ, होते है कमजोर यहाँ–2
दुःख पाते घनघोर यहाँ–ऽऽऽ
पूजन करते दिल वाले, मन उज्ज्वल करने वाले–2
प्रभु का आराधन हो–3 निज शक्ति दिलाए रे–ऽऽ।।5749।।

(952) पूजन कर ले यहाँ विमल, आज नहीं तो कल हो फल –2
राह मिलेगी खुद मंजिल –ऽऽऽ
मात–पिता–गुरु की सेवा, इसी जन्म में इसका फल –2
गुरु की सेवा का हो–3 फल तत्काल दिखाए रे –ऽऽ।।5750।।

(395) भले भिखारी को मत दो, तिरस्कार नहिं कभी करो –2
उसको एक अतिथि समझो –ऽऽऽ
जहाँ अतिथि का आदर हो, वहीं पुण्य का सागर हो –2
ऋषियों से बढ़कर हो–3 नहिं अतिथि दिखाए रे– ऽऽ।।5751।।

(954) मर्द कोई मर्दाना है, कोई मर्द जनाना है –2
जाने उसे ज़माना है –ऽऽऽ
जो नहिं पूजा दान करे, कैसे वो इंसान अरे –2
पूजा बिन मर्द हो–3 मुर्दा कहलाए रे –ऽऽ।।5752।।

(955) पूजन को जन–जन करते, अपना निर्मल मन करते –2
जिनप्रभु का वंदन करते –ऽऽऽ
पापों का प्रक्षालन है, पूजन ही विद्याधन है –2
पूजन ही तुझको हो–3 इक दिन पूज्य बनाए रे –ऽऽ।।5753।।

(956) जब भी आँखें खुल जायें, जिन प्रभु को मन में ध्यायें –2
उठकर प्रभुगुण को गायें –ऽऽऽ
शुद्धि कर मन्दिर आयें, दर्शन करके हर्षायें –2
पूजन प्रभुवर की हो–3 दिन को धन्य बनाये रे –ऽऽ।।5754।।

(957) पैदा कर तू नया अमल, कर देती है भाव विमल –2
पूजन से हो त्याग सफल –ऽऽऽ
दिल से इसकी करे पहल, मिल जायेगा मोक्ष महल –2
पूजन से जीवन हो–3 गुलशन बन जाये रे–ऽऽ।।5755।।

(958) पुण्य नहीं गर सत्ता में, इष्ट वस्तु नहिं बस्ता में–2
गुजरे हालत खस्ता में–ऽऽऽ
कर ले लाख जतन आकर, पुण्य बिना नौकर चाकर–2
पुण्य के फल में हो–3 सब कुछ मिल जाये रे–ऽऽ।।5756।।

(959) रोते हैं धन पाने को, अपना चैन मिटाने को–2
भय–चिंता अपनाने को–ऽऽऽ
पुण्य नहीं अपनाते हैं, आम नीम से चाहते हैं–2
अण्टी में पुण्य हो–3 तो धन मिल जाये रे–ऽऽ।।5757।।

(960) जिसमें मुक्ति भाव बने, वो ही असली पुण्य कहे–2
सम्यग्दृष्टि उसे करे–ऽऽऽ
मिथ्यादृष्टि पुण्य करे, लेकिन उसमें स्वर्ग मिले–2
ये ही तो पुण्य हो–3, नकली कहलाये रे–ऽऽ।।5758।।

(961) सोने वाला रोता है, पाया उसको खोता है–2
बीज दु:खों का बोता है–ऽऽऽ
पुरुषार्थ जब होता है, फिर होना वो होता है–2
जागो अब जागो हो–3, मत नींद बढ़ाओ रे–ऽऽ।।5759।।

(962) बीज डले वो फलता है, मेहनत का फल मिलता है–2
पाप पुण्य संग चलता है–ऽऽऽ
पाप भीख मँगवाता है, पुण्य संत बनवाता है–2
दुनियाँ में ये सब हो–3 स्पष्ट दिखाये रे–ऽऽ।।5760

(963) भाग्य बनाए योग सभी, पुरुषारथ उपयोग तभी–2
ऐसा होता कभी–कभी–ऽऽऽ
जो पुरुषारथ करता है, भाग्य उसी का जगता है–2
पुरुषारथ के बिन हो–3 किस्मत अश्क बहाए रे–ऽऽ।।5761।।

(964) कोई राजा–रंक यहाँ, कोई श्रावक–संत यहाँ –2
पद कोई अरहंत यहाँ –ऽऽऽ
खेल सभी ये किस्मत के, ज्ञान सहित पुरुषारथ के –2
सच्चा पुरुषारथ हो–3 भगवान् बनाए रे–ऽऽ।।5762।।

(965) सती अंजना या सीता, चंदनबाला की गीता –2
जिनने अपना मन जीता –ऽऽऽ
स्त्री पर्यय को छेदा, सम्यग्दर्शन कर पैदा –2
ऐसा पुरुषारथ हो–3 अच्छा पुरुष बनाए रे –ऽऽ।।5763।।

(966) हाथ पाँव तू फैला ले, तीन पाँच कितनी कर ले –2
दम जितनी पूरी भर ले –ऽऽऽ
किस्मत है तो पायेगा, वरना यहाँ गँवाएगा –2
किस्मत ही तेरा हो–3 पुरुषार्थ बनाए रे –ऽऽ।।5764।।

(967) ज्ञान दर्श में नंद करो, श्रद्धा का अनुबंध करो –2
चारित्र का संबंध करो –ऽऽऽ
तीन रत्न गर मिल जायें, गुण सारे ही खिल जाये –2
रत्नों के रत्न हो–3 ये तीन बताए रे –ऽऽ।।5765।।

(968) अच्छा भोजन करो सभी, स्वस्थ हमेशा रहो सभी–2
रोग नहीं छू सके कभी–ऽऽऽ
अटरम शटरम खाते हैं, वो रोगी कहलाते हैं–2
तन को रोगों का हो–3 स्थान बनाए रे–ऽऽ।।5766।।

(969) रात में भोजन कभी न कर, करके मत नरकों में मर–2
सफर न कर रोगी बनकर–ऽऽऽ
दिन में हरदम भोजन कर, तब ही धर्म पले अंदर–2
जैसा खाओगे हो–3 वैसा मन पाये रे–ऽऽ।।5767।।

(970) अजब अनूठे रिश्ते हैं, जिसमें प्राणी पिसते हैं –2
जीवन भर वो रिसते हैं –ऽऽ
राग–द्वेष से घिसते हैं, बनते नहीं फरिश्ते हैं –2
रिश्तों में रमना हो–3 हरदम दुखदायी रे –ऽऽ।।5768।।

(971) होकर खरा नहीं मरता, मरकर राख नहीं बनता–2
उलटा राख, खरा बनता–ऽऽऽ
खरा बनो तो लो संयम, हाथ जोड़ खुद भागें गम–2
सच की ताकत को हो–3 नहिं झूठ दबाए रे–ऽऽ।।5769।।

(972) क्या देखें कैसे देखें, देखा वो हम क्यों देखें–2
ये पहले निश्चित कर लें–ऽऽ
दिल जब सब को पायेगा, तब दर्शन हो पाएगा–2
दर्शन बिन यारो हो–3 सच नहिं दिख पाए रे–ऽऽ।।5770।।

(973) जीने की हो कला जभी, अंतभला तो भला सभी–2
सोच यही सिलसिला अभी–ऽऽऽ
पा सकता सम्मान यहाँ, जो पाता सद्ज्ञान यहाँ–2
उसको इस जग में हो–3 बस भला दिखाये रे–ऽऽ।।5771।।

(974) कब तक तुम झुठलाओगे, पर में मन बहलाओगे–2
इक दिन ठोकर खाओगे–ऽऽऽ
अपना समय गँवा करके, पीछे तुम पछताओगे–2
जागो खुद जागो हो–3 फिर वक्त न आये रे–ऽऽ।।5772।।

(975) सबको समय नचाता है, सब कुछ समय दिखाता है–2
समय बड़ा बलवान है–ऽऽऽ
रावण रामचन्द्र सीता, कौन समय से था जीता–2
सारी दुनियाँ को हो–3 ये समय नचाये रे–ऽऽ।।5773।।

(976) समय समझ में आयेगा, समयसार जब पायेगा–2
ईश्वर खुद मिल जायेगा–ऽऽऽ
दुनियाँ ने उसको गाया, जिसने समयसार पाया–2
मृत्यु वह जीते हो–3 जो समय को पाये रे–ऽऽ।।5774।।

(977) साथ न कोइ निभाता है, बुरा वक्त जब आता है–2
तभी समझ में आता है–ऽऽऽ
कतराते हैं अपने भी, जिन पर तू इतराता है–2
रिश्तों में स्वारथ हो–3, सब जगह दिखाए रे–ऽऽ।।5775।।

(978) घड़ी–घड़ी देखें घड़ी, फिर भी समझे नहीं घड़ी–2
गई न आये कभी घड़ी–ऽऽ
घड़ी बदलती हर घड़ी, रहे न निश्चित कभी खड़ी–2
रुककर हम रोकें हो–3, पर रुक नहिं पाये रे–ऽऽ।।5776।।

(979) जितनी हमको मिली घड़ी, उतनी चलती जीस्त घड़ी–2
व्यर्थ करो नहिं कोई घड़ी–ऽऽ
सही घड़ी जब आयेगी, घड़ी सही दिख जायेगी–2
अपनी घड़ी में हो–3, नहिं समय दिखाये रे–ऽऽ।।5777।।

(980) आने की थी एक घड़ी, जाने की है एक घड़ी–2
मरे आदमी घड़ी–घड़ी–ऽऽऽ
जान न पाया सही घड़ी, कैसी–कैसी दिखी घड़ी–2
हर पल घड़ी में हो–3, हर पल नजराये रे–ऽऽ।।5778।।

(981) समय निकलता जाता है, जीवन ढलता जाता है–2
पता नहीं चल पाता है–ऽऽ
सुबह हुआ और शाम ढली, बची जिन्दगी चला चली–2
दल–दल में रहकर हो–3, क्यूँ धर्म दबाए रे–ऽऽ॥5779॥

(982) बुरा वक्त जब आयेगा, कोई न साथ निभाएगा–2
समझ तभी सब आएगा–ऽऽ
गर तू पुण्य कमाएगा, बदल बुरा सब जायेगा–2
अपने समय पर हो–3, सब काम सुहाय रे–ऽऽ॥57780॥

(983) बेश कीमती है क्षण–क्षण, जीवन कर ले तू अर्पण–2
ईश्वर दिखता है कण–कण–ऽऽऽ
जागोगे तो सफल जनम, वरना हो कइ बार मरण–2
सच्चाई पाकर हो–3, दर्पण बन जाओ रे–ऽऽ॥5781॥

(984) मर्ज दवा को खाने में, संयम को अपनाने में–2
सर्दी में नहाने में–ऽऽऽ
पहले दुख फिर सुख मिलता, विषयों में उल्टा दिखता–2
करना वो कर लो हो–3, जो तुम्हें सुहाये रे–ऽऽ॥5782॥

(985) अपना–अपना माना है, पर को पर ही जाना है –2
पाता वो प्रभु बाना है –ऽऽ
भेदज्ञान विज्ञान है, इससे ही शिवधाम है –2
ऐसा सद्राही हो–3 शिवराह दिखाये रे –ऽऽ॥5783॥

(986) संयम बिन जिनभेष धरे, सम्यक् बिन तप खूब करे–2
क्रिया बिना जो ज्ञान भरे–ऽऽऽ
व्यर्थ हैं इनके काम सभी, मिले नहीं विश्राम कभी–2
ऐसे ही लोग हो–3, मुनिभेष लजाएँ रे–ऽऽ॥5784॥

(987) ज्यादा मत तुम यकीं करो, ना ज्यादा ही हसीं बनो–2
जमीर पा हमनसीं बनो–ऽऽऽ
धोखा देते वही हमें, जो अपने नजदीक रहें–
अपने ही अपना हो–3, सब भेद बताएँ रे–ऽऽ॥5785॥

(988) सुबह समझ अपना बचपन, चढ़ता सूरज है यौवन–2
साँझ समय है बूढ़ापन–ऽऽऽ
सोना छोटी मौत यहाँ, जगना नया जीवन यहाँ–2
मरने जीने को हो–3 अभ्यास बनाये रे–ऽऽ॥5786॥

(989) लोहे के संग आग पिटे, सोना लोहे संग तुले–2
दोनों बिल्कुल शुद्ध रहे–ऽऽऽ
ये सब संगति का फल है, सोना तो गंगाजल है–2
नीच की संगति हो–3 जूते पड़वाये रे–ऽऽ॥5787॥

(990) पाप कर्म जो करते हैं, वो जल्दी ही मरते हैं –2
कभी नहीं वो तिरते हैं –ऽऽ
डूबे और डुबाते हैं, दुर्गति में दुख पाते हैं –2
ऐसों की संगति हो–3 दुख ही उपजाये रे –ऽऽ॥5788॥

(991) मन से मिट जाये शंका, तभी बजा सकते डंका -2
जीत सके इन्द्रिय लंका -ऽऽऽ
शंका से श्रद्धा जाये, धर्म न श्रद्धा बिन आये -2
शंका का विष ही हो-3 मेरा मरण कराये रे -ऽऽ।।5789।।

(992) होता दृढ़ संकल्प जहाँ, शिखर चूमते पाँव वहाँ-2
असफलता का काम कहाँ?-ऽऽऽ
दे संकल्प हमें शक्ति, युक्ति में देता भक्ति-2
मन की दृढ़ता को हो-3 संकल्प बनाये रे-ऽऽ।।5790।।

(993) चलो इरादे अटल करें, फिर इस दिल को सरल करें-2
ऐसी मन में पहल करें-ऽऽऽ
थोड़ी प्रभु की नकल करें, खुद से खुद में अमल करें-2
कोरी बातें ही हो-3, नहिं काम बनाएँ रे-ऽऽ।।5791।।

(994) जंजालों में जाले हैं, खोटे मन ने पाले हैं-2
राग रोग के छाले हैं-ऽऽऽ
घर में जहाँ उजाले हैं, सच में किस्मत वाले हैं-2
जग को दे ठोकर हो-3 ठोकर नहिं खाये रे-ऽऽ।।5792।।

(995) ये अंधों की बस्ती है, कैसी इसमें मस्ती है-2
बची न कोई हस्ती है-ऽऽऽ
फँस जाये जब ये कश्ती, मिट जाए सारी मस्ती-2
गम की बस्ती में हो-3 नहिं जश्न मनाओ रे-ऽऽ।।5793।।

(996) एक अंजलि का जल है तू, दो मुट्ठी की राख है तू-2
भूल गया ये आकर तू-ऽऽऽ
दो दिन का ये मेला है, चला चली का खेला है-2
जाने किस खातिर हो-3 तू पाप कमाए रे-ऽऽ।।5794।।

(997) किस देहरी से आया है, किस देहरी पर जाना है-2
तेरा कोई ठिकाना है-ऽऽऽ
बिना ठिया के दुखी जिया, जैसा पत्नि बिना पिया-2
अपने आँगन की हो-3 तुम नींव धराओ रे-ऽऽ।।5795।।

(998) शादी होकर आयेगी, पत्नि मुझे मनाएगी-2
चाय बनाकर लायेगी-ऽऽऽ
सपने सब टूटे सारे, ताने पत्नि ने मारे-2
अब घर आते ही हो-3, चक्कर आ जायें रे-ऽऽ।।5796।।

(999) पति-पत्नि का योग यहाँ, पहले का संयोग कहा-2
ये दुनियाँ का रोग महा-ऽऽऽ
तोड़ दिया संयोग यहाँ, फिर नहिं होगा योग यहाँ-2
उसको मुक्ति का हो-3, पथ झट मिल जाये रे-ऽऽ।।5797।।

(1000) दर्देदिली दवा क्या है? पूछो दिले हुआ क्या है?-2
दिल से कहो खुदा क्या है?-ऽऽऽ
बाहर के अब ख्वाब तजो, अंतर्दीप प्रकाश करो-2
भव में ये नैया हो-3, अब पार लगाओ रे-ऽऽ।।5798।।

(1001) दिल में उपजे होश यहाँ, तब होगा संतोष यहाँ–2
होश नहीं है रोष वहाँ–ऽऽ
गम ही गम का कोश वहाँ, हो जाता बेहोश यहाँ–2
जागें दुनियाँ में हो–3, तो जग मिट जाये रे–ऽऽ।।5799।।

(1002) जग में जो जग जाएगा, उसका जग मिट जायेगा–2
ज्ञान दीप जल जायेगा–ऽऽऽ
जो जग में सो जाता है, वो जग में खो जाता है–2
सोने में सोना हो–3, नहिं कभी दिखाए रे–ऽऽ।।5800।।

(1003) पर में जब रम जाते हैं, पाँव स्वयं थम जाते हैं –2
दुनियाँ में जम जाते हैं –ऽऽऽ
मंजिल पर नहिं बढ़ पाते, अंतस में नहिं जल पाते –2
पर का संसर्ग हो–3 संसार बढ़ाए रे –ऽऽ।।5801।।

(1004) क्यों संसार ये बनता है? क्यों संसार उपजता है?–2
कौन समझ ये सकता है–ऽऽऽ
ये प्रारम्भ कहाँ से है? इसका अंत कहाँ पे है –2
इन सबका ज्ञान हो–3 बस इंसां पाये रे –ऽऽ।।5802।।

(1005) पुत्री माँ हो जाती है, सास, बहु बन जाती है –2
माँ, स्त्री बन जाती है –ऽऽऽ
पुरुष कभी स्त्री होता है, कभी नपुंसक सा रोता –2
दुनियाँ का ये सब हो–3 मुनि चक्र बताएँ रे –ऽऽ।।5803।।

(1006) ये संसार निराला है, हर इंसां बदहाला है –2
जिसमें भ्रम का चाला है –ऽऽऽ
चारों ओर दिवाला है, गम का बहता नाला है –2
इसमें तू अपना हो–3 क्यूँ नूर गँवाए रे –ऽऽ।।5804।।

(1007) भाई चाचा पिता स्वजन, दासी दास मित्र परिजन –2
करता इनमें जीव रमण –ऽऽऽ
खुद असहाय अकेला है, चारों ओर झमेला है –2
इनसे हटकर तू हो–3 खुद में रम जाये रे –ऽऽ।।5805।।

(1008) बँध जाती है गाँठ जभी, होते बाराबाट तभी–2
मुश्किल होते काम सभी –ऽऽऽ
गठ–बंधन में गम ही गम, बँधते, जिनमें बुद्धि कम –2
बंधने का रस्ता हो–3 संसार दिखाए रे –ऽऽ।।5806।।

(1009) सार कभी नहिं पाया है, ये संसार बढ़ाया है –2
गम का योग बनाया है –ऽऽ
चलो असार हटा लें हम, रौशन कर लें नव जीवन –2
वरना जीवन में हो–3 संसार दिखाए रे –ऽऽ।।5807।।

(1010) दुनियाँ के सब झंझट में, हर प्राणी है संकट में –2
राग द्वेष के कंटक में –ऽऽऽ
जग जी का जंजाल है, फँसे तो मिलता काल है –2
सोना अब छोड़ो हो–3 जल्दी जग जाओ रे –ऽऽ।।5808।।

(1011) घर में संस्कार लाना, साधु को घर दिखलाना–2
खुद विनम्रता को पाना–SSS
चौका यहाँ लगाओ तुम, मुनि को गृह में लाओ तुम–2
मुनि घर में आये हो–3 दारिद्र मिटाये रे–SS।।5809।।

(1012) दिल में मेरे मंगल हो, तो आँसू गंगा जल हो –2
निज भविष्य खुद उज्ज्वल हो –SSS
संस्कार गर सुंदर हो, तो मन स्वयं समंदर हो –2
ऐसा ही मन ये हो–3 हर पाप मिटाए रे –SS।।5810।।

(1013) संत यहाँ मिल जायेंगे, हृदय सभी खिल जायेंगे–2
फूल गगन वर्षायेंगे–SS
संत संत मिल जाते हैं, सबके मन हर्षाते हैं–2
ये पल यादों के हो–3 सब याद करायें रे–SS।।5811।।

(1014) संत–संत मिल जाते हैं, नयन कमल खिल जाते हैं–2
नई राह दिखलाते हैं–SSS
संत खजाना लाता है, तुम्हें बाँटकर जाता है–2
संतों के आगे हो–3, झोली फैलाओ रे–SS।।5812।।

(1015) मिल जाएँगे नयन यहाँ, खिल जायेंगे हृदय वहाँ–2
महके सारा चमन यहाँ–SSS
संत–संत मिल जाते हैं, कई नयन खिल जाते हैं–2
ये पल यादों के हो–3 सब याद कराये रे–SS।।5813।।

(1016) संगति बुरी गिराती है, निंदा नीच बनाती है–2
वृत्ति स्वार्थ मिटाती है–SSS
संत समागम सुखकर है, गुणदायी सब दुख हर है–2
गुण को पाने की हो–3 अब ललक दिखाओ रे–SS।।5814।।

(1017) पुण्य उदय जब आएगा, संत समागम पायेगा–2
अनुभव नये बनाएगा–SSS
जब तक साधु न मिल पाये, तब तक जीस्त न खिल पाये–2
संत इस जग में हो–3, सच राह दिखाये रे–SS।।5815।।

(1018) गुलशन में गुल खिलें वहाँ, संतों का आगमन जहाँ–2
चैन शरण हो अमन वहाँ–SSS
संत गुणों की खान हैं, इंसां में भगवान हैं–2
संतों को पाकर हो–3, इक दिया जलाओ रे–SS।।5816।।

(1019) संत जहाँ आ जाते हैं, अमृत वहाँ पिलाते हैं–2
श्रावक जन हर्षाते हैं–SSS
चौका खूब लगाते हैं, जीवन धन्य बनाते हैं–2
साधु बिन जीवन हो–3, नहिं धन्य कहाये रे–SS।।5817।।

(1020) ईश्वर बैठा संत है, चले साधु भगवंत है–2
जाना ज्ञान अनंत है–SSS
साधु से हम प्रेम करें, सेवा में हम लगे रहें–2
मालुम क्या तुझको हो–3, साधु कब चल जाये रे–SS।।5818।।

(1021) अपना हम सम्मान करें, पहले प्रभु गुणगान करें–2
तब ही भोजन पान करें–SSS
ऐसा तू कर जाएगा, कहीं नहीं दुख पायेगा–2
गुरु का आशीष हो–3, फिर हरदम पाये रे–SS।।5819।।

(1022) ज्ञान–साधना साथ रहे, इसका सुख से हाथ रहे–2
समयसार की बात कहे–SSS
व्याधि–उपाधि दूर रहे, तभी सुखों का साथ रहे–2
हँसकर जो मरता हो–2 वो संत कहाये रे–SS।।5820।।

(1023) हँस करके जो जीता है, उसकी चर्या गीता है–2
जीवन रस वो पीता है–SSS
हँसकर जो मर जायेगा, वही समाधि पायेगा–2
उसको सब वैभव हो–3 खुद ही मिल जाये रे–SS।।5821।।

(1024) सुनते हुए नहीं सुनता, चलते हुए नहीं चलता –2
खाते हुए नहीं खाता –SSS
बोले, पर अनबोले सा, वह साधु निज रमने सा –2
ऐसे ही संत हो–3 चेतन रस पाये रे –SS।।5822।।

(1025) तन की खुराक भोजन है, मन की संत समागम है –2
वचनों की है शान भजन–SSS
तीनों भूखे रहें बुझे, भूख मिटे तो खिले–खिले –2
चेतन का ध्यान हो–3 सब भूख मिटाये रे –SS।।5823।।

(1026) गैरों के दुख में दुख हो, गैरों के सुख में सुख हो–2
सबको सुख हो दुख नहिं हो–SSS
ऐसा दिल से भाव करे, उसको दुनियाँ संत कहे –2
ये ही भावों में हो–3 निज धर्म दिखाये रे –SS।।5824।।

(1027) सात व्यसन पापों के घर, भीख माँगते हैं दर–दर–2
यहाँ खिलाते हैं ठोकर–SSS
कभी बनाते हैं नौकर, कभी बनाते हैं जोकर–2
पापों के कारण हो–3 दुर्गति में जाये रे–SS।।5825।।

(1028) घोड़ा, हाथी, रथ, वाहन, मंत्र यंत्र औषधि परिजन –2
मान रहा तू इन्हें शरण–SSS
ये खुद ही दिखते अशरण, देंगे कैसे तुझे शरण?
गुरुवर और ईश्वर हो–3 ही शरण बताए रे –SS।।5826।।

(1029) जैसा तू वैसा हूँ मैं, तू ही दिखता है मुझमें –2
मेरे जैसा ही तुझमें –SSS
तुमने सब कुछ दिखा दिया, हमने अपना दबा लिया –2
तुमको जब देखें हो–3 अपना दिख जाये रे –SS।।5827।।

(1030) करता है तू मनमानी–बन करके यूँ अभिमानी –2
पढ़े नहीं तू जिनवाणी –SS
खाक जिंदगी भर छानी, बना कभी नहिं तू ज्ञानी –2
उसका बुलावा हो–3 कब घर आ जाये रे –SS।।5828।।

(1031) सोने में ताँबा मिलता, सोने के संग में तुलता–2
जेवर बन तन पर चढ़ता–SSS
ताँबा संगति फल पाये, सोना भी क्या कर पाये–2
अच्छी संगति से हो–3 हम श्रेष्ठ कहाएँ रे–SS।।5829।।

(1032) कैसे मिले प्रकाश वहाँ, सम्यक्दर्शन नाश जहाँ–2
जीवन सत्यानाश वहाँ–SSS
प्राणी रहे उदास वहाँ, श्रद्धा नहिं विश्वास जहाँ–2
सच्ची श्रद्धा ही हो–3, सबको सत्य दिलाए रे–SS।।5830।।

(1033) झूठे से मन जोड़ेगा, वो सच्चे को छोड़ेगा–2
मज़हब से मुख मोड़ेगा–SSS
सत्य समां है मित्र कहाँ, सच जैसा है इत्र कहाँ?–2
खुद को पहिचाने हो–3 तो सच नज़राये रे–SS।।5831।।

(1034) दुनियाँ एक झरोखा है, दिखता सच वह धोखा है–2
लगता बड़ा अनोखा है–SSS
इन्द्रजाल सा नज़राता, सत्य नज़र हमको आता–2
भ्रम की लहरों में हो–3, भ्रम बढता जाये रे–SS।।5832।।

(1035) कभी न सोच जमाने की, गुजरे वक्त पुराने की–2
बुरे कर्म अपनाने की–SSS
सोच गुनाह मिटाने की, अंतस् रखे खजाने की–2
सच में सच हो–3, तुझको दिख पाये रे–SS।।5833।।

(1036) दिल में सच अफसाने हैं, दर्श ज्ञान तहखाने हैं–2
सत्य दृष्टि ने जाने हैं–SSS
माने वो दीवाने हैं, नहिं माने वीराने हैं–2
अपने ही घर में हो–3, हर चीज दिखाये रे–SS।।5834।।

(1037) श्रद्धा सच्ची होती है, तब अच्छी अनुभूति है–2
जले ज्ञान की ज्योति है–SSS
पक्षपात हट जायेगा, धर्म समझ तब आयेगा–2
राग–द्वेषों में हो–3, नहिं सत्य दिखाये रे–SS।।5835।।

(1038) इधर–उधर की चिंता छोड़, मन को तू मजहब से जोड़–2
मन को थोड़ा खुद में मोड़–SSS
इक दिन सच आ जायेगा, बदल स्वयं तू जायेगा–2
खुशियों का सावन हो–3, खुद में लहराये रे–SS।।5836।।

(1039) अनुभव में गर सत्य नहीं, ईश्वर का अस्तित्व नहीं–2
नहीं मिलेगा तत्त्व कहीं–SSS
होगा ध्यान स्वयं अपना, टूट जायेगा खुद सपना–2
अपना संवेदन हो–3 अनुभूति दिलाए रे–SS।।5837।।

(1040) सभी लोग जो सत्य कहें, उसे यहाँ अस्तित्व कहें–2
मुनि उसको निजतत्व कहें–SSS
निर्मल मन से ध्यायेगा, तब ही सत्य समायेगा–2
सत्य की धारा हो–3 निर्भीक बनाएँ रे–SS।।5838।।

(1041) संत, सत्य को जीता है, प्रभु का अमृत पीता है–2
कहता है वो गीता है–SSS
सत्य अखण्ड बनाता है, अजर–अमर कर जाता है–2
जीवन को सच ही हो–3 शिवधाम दिखाए रे–SS।।5839।।

(1042) सच तुझको नजरायेगा, ईश्वर दिल में पायेगा–2
भटकन स्वयं मिटाएगा–SSS
पर को क्यूँ सच मान रहा, खुद का सच तू भूल रहा–2
दर्पण सा दिल हो हो–3 तब सत्य दिखाए रे–SS।।5840।।

(1043) सत्य पता चल जाएगा, रोना तुझको आएगा –2
व्यर्थ किया बतलाएगा –SSS
अनुभव साथ निभाएगा, सच का भान कराएगा–2
सच के आते ही हो–3 हँसना रह जाये रे –SS।।5841।।

(1044) झूठ दिले बढ़ जायेगा, तभी झूठ अपनायेगा –2
सभी जगह गम पायेगा –SSS
ईश्वर की तस्वीर दिले, नहीं मिले तो नहीं खिले –2
झूठे को झूठा हो–3 ही सत्य दिखाये रे –SS।।5842।।

(1045) सच अनुभव का पाये फल, खुशियों में गुजरे हर पल –2
सच में होती नहीं नकल –SSS
दिल में पाये सही अकल, तो फिर सच की दिखे शकल–2
दिल हो गर रौशन हो–3 तो दीप जलाये रे –SS।।5843।।

(1046) राग–द्वेष जब हट जाये, मोह स्वयं ही घट जाये –2
सत्य निकल बाहर आये –SSS
सत्य तुझे मिल जायेगा, प्रभु खुद में दिख जायेगा –2
सच के गुलशन में हो–3 सच्चे गुल खिल जाएँ रे –SS।।5844।।

(1047) दिल में जहां प्रमाण नहीं, उसके जीवित प्राण नहीं –2
उसको कोई त्राण नहीं –SSS
इक प्रमाण मिल जायेगा, शिवपुर तक पहुँचायेगा –2
मन हो प्रामाणिक हो–3 तो सत्य दिखाए रे –SS।।5845।।

(1048) जो प्रबुद्ध हो जाता है, सहज शुद्ध हो जाता है –2
तब विशुद्ध हो पाता है –SSS
ऐसा होना सरल नहीं, एक जनम में सफल नहीं –2
सच में सच पाकर हो–3 ये फल पा जाये रे –SS।।5846।।

(1049) डूबे को तुम हाथ बनो, लंगड़े को तुम पाँव बनो –2
अंधे की तुम आँख बनो –SSS
थाम ले हाथों में गिरता, ऐसा शख्स यहाँ तिरता –2
ऐसे गुण पाओ हो–3 नहिं देर लगाओ रे –SS।।5847।।

(1050) जानेगा सिद्धांत नहीं, पा न सकेगा अंत कहीं –2
गहरायेंगे पंथ वहीं –SSS
सच सिद्धांत दिखाएगा, अनुभव सिद्ध कराएगा –2
इसके जाने बिन हो–3 कुछ समझ न आये रे –SS।।5848।।

(1051) सत्य, गलत को पीटेगा, सत्य यहाँ पर जीतेगा -2
अहं, अंधेरा हारेगा -SSS
देर भले ही हो जाये, पर अंधेर न हो पाये -2
सच की ध्वज हरदम हो-3 जग में फहराये रे -SS||5849||

(1052) नहीं हुआ सच ज्ञान यहाँ, तुम कैसे इंसान यहाँ? -2
कैसे मिले निदान यहाँ -SSS
होता सच में दान नहीं, मिलता कभी निदान नहीं -2
ज्ञानी को वैभव हो-3 सारा मिल जाये रे -SS||5850||

(1053) प्रभु का हर अहसास दिले, सब कुछ दिल के पास मिले -2
अंतस् सच का दीप जले-SS
हृदय कमल का फूल खिले, जग में जग का कूल मिले -2
तब ही जीवन का हो-3 सच साफ दिखाए रे-SS||5851||

(1054) किससे तूने पाया क्या?, आकर यहाँ कमाया क्या? -2
दुनियाँ में तू लाया क्या? -SS
तुझको अब तक भाया क्या?, सच पर मन ललचाया क्या?-2
खोजो खुद खोजो हो-3 सच खुद दिख जाये रे -SS||5852||

(1055) सभी जगह हमने देखा, मिली नहीं सुख की रेखा -2
लेकिन दिल है अनदेखा -SS
दिल में नज़र गढ़ाएगा, जो चाहेगा पायेगा -2
खुद में ही देखो हो-3 सब कुछ दिख जाये रे -SS||5853||

(1056) दृष्टि नहीं मिल पाएगी, कैसे ज्योति आयेगी?-2
ज्योति बिना नहिं सत्य मिले-SS
सत्य न जो लख पाएगा, गुण से नहिं भर पायेगा -2
जीवन का सच वो - हो-2 कैसे लख पाये रे -SS||5854||

(1057) सत्य नहीं दिख पाया है, डबरे में भरमाया है -2
मिथ्या चारित छाया है -SS
दरिया बन जो जिये नहीं, सागर में वो मिले नहीं -2
गम के डबरे में- हो-3 क्यूँ रूह डुबाए रे -SS||5855||

(1058) संतों का सत्संग मिले, दिल में सुन्दर फूल खिले-2
ज्ञानमयी इक दीप जले-SSS
लाखों बार यहाँ आओ, तब संयोग वहाँ पाओ-2
पुण्य का योग हो-3 सब काम बनाए रे-SS||5856||

(1059) जो भी त्यागा जाता है, जिसको छोड़ा जाता है-2
वो विभाव कहलाता है-SSS
जिसको पाया जाता है, या जो निकल के आता है-2
वो ही स्वभाव हो-3 भव पार कराये रे-SS||5857||

(1060) भव सागर को तिरना है, तो संयम ले मरना है-2
ऐसा गुरु का कहना है-SSS
संयम बिना अधूरा है, सारा जीवन घूरा है-2
संयम ही जीवन हो-3 को सफल बनाए रे-SS||5858||

(1061) संयम का अभ्यास करो, सच्चा ज्ञान प्रकाश करो–2
थोड़ा बहुत विकास करो–SSS
अरे असंयम में जीना, इससे तो अच्छा मरना–2
संयम हम सबको हो–3 सद्गति दिलवाये रे–SS।।5859।।

(1062) ज्यादा पाप रचाओगे, खुद संताप बढ़ाओगे–2
चीखोगे चिल्लाओगे–SSS
पाप, श्राप बन जाता है, दुख के योग बनाता है–2
करके गुनाह हो–3 गम क्यों उपजाये रे–SS।।5860।।

(1063) मोह बनाता नट हमको, खुद कर जाता चट हमको–2
नहीं छोड़ता झट हमको–SSS
राग रंग फैलाता है, सच को झूठ बताता है–2
संयम को पाकर हो–3 इससे बच पाएँ रे–SS।।5861।।

(1064) भोजन बिन प्राणी भूखा, जल के बिना वृक्ष सूखा–2
पूजन बिन जीवन रूखा–SSS
संयम से जीवन चोखा, भाव असंयम है धोखा–2
धर्मी बन करके हो–3 रत्नत्रय पाओ रे–SS।।5862।।

(1065) जुआ खेलने जाते हैं, पहले दाव लगाते हैं–2
फिर किस्मत अजमाते हैं–SSS
दाव लगा वैसे जीवन, संयम सच में संजीवन–2
भोगों के बदले हो–3 वैभव मिल जाये रे–SS।।5863।।

(1066) जन्म हजारों मिलते हैं, फूल किसी में खिलते हैं–2
कोई बाग महकते हैं–SSS
संयम गर आ जायेगा, यम खुद शीश झुकाएगा–2
संयम जीवन को हो–3 खुद ही महकाए रे–SS।।5864।।

(1067) होगा सद्चारित्र जहाँ, आ जायेगा इत्र वहाँ–2
मन, व्रत बिना पवित्र कहाँ–SSS
दिल में दीपक जलते हैं, गुलशन में गुल खिलते हैं–2
संयम का इत्र हो–3 खुश्बू महकाए रे–SS।।5865।।

(1068) जन्म सभी जन पाते हैं, धर्मी हृदय खिलाते हैं–2
जीवन सफल बनाते हैं–SSS
संयम गर अपनाएगा, जन्म कभी नहिं पाएगा–2
मंजिल को पाकर हो–3 सब दुख मिट जाये रे–SS।।5866।।

(1069) मन निर्मल बन जायेगा, मैल सभी धुल जायेगा–2
दिल तेरा खिल जायेगा–SSS
रत्नत्रय धन आयेगा, फूला नहीं समाएगा–2
ऐसे त्रयरत्न हो–3 बहुमूल्य बताए रे–SS।।5867।।

(1070) जोड़ो नानारत्न यहाँ, रत्नत्रय के तुल्य कहाँ?–2
खूब देख ले यहाँ–वहाँ–SSS
मिल पायें या नहीं मिलें, सफल भावना रोज करें–2
इकना इकदिन ये हो–3 निश्चित मिल जाये रे–SS।।5868।।

(1071) जिसने पूजन दान किया, सर्व त्याग का भाव किया–2
गुरु सेवा में लगा जिया–SSS
रत्नत्रय की शान खिले, उसको ये वरदान मिले–2
भव–भव को भाया हो–3 इक भव फल पाये रे–SS।।5869।।

(1072) जिनमें होती है दम कम, वे क्या दिखलाएँ दमखम –2
धारण कर न सकें संयम –SSS
अनुभव की अभिव्यक्ति है, संयम खुद ही शक्ति है –2
संयम तो खुद ही हो–3 यमराज बुलाए रे– SS।।5870।।

(1073) खुद ही राह बनाता है, मंजिल वो ही पाता है –2
सबको राह दिखाता है –SSS
राह चले गैरों की जो, खुद का नहिं संवेदन हो –2
संयम भी पाकर हो–3 वो मुक्ति न पाये रे –SS।।5871।।

(1074) तिरने की हो कला जहाँ, संयम मिलता भला यहाँ –2
अनुभव का जलजला वहाँ –SSS
इस रथ पर जो बैठा है, चेतन ज्ञान अनूठा है –2
संयम की रक्षा हो–3 सब पाप मिटाये रे –SS।।5872।।

(1075) संयम स्वयं हि ज्वाला है, जीवन का रखवाला है –2
अमृत रूपी प्याला है –SSS
होता मन जिसका हाला, असंयमी वो मतवाला –2
संयम से जीवन हो–3 खुद ही महकाए रे –SS।।5873।।

(1076) संयम ईंधन लाता है, अनुभव आग लगाता है –2
पाप कर्म जल जाता है –SSS
संयम से नहिं प्यार यहाँ, बिना ब्रेक की कार यहाँ –2
जाने किस खाई हो–3 में कब गिर जाये रे –SS।।5874।।

(1077) संयम तो अंतस् बल है, जिसमें अनुभव सम्बल है –2
स्वर्ग–मोक्ष जिसका फल है –SSS
असंयमी में कम बल है, दुनियां में वो पागल है –2
संयम आ जाये हो–3 सूरज उग आये रे –SS।।5875।।

(1078) संयम सुंदर बाना है, जिसका मोक्ष निशाना है –2
क्यूँ इससे अंजाना है –SSS
असंयमी दीवाना तू, संयम को अपनाना तू –2
संयम बिन नौका हो–3 नहिं साहिल पाये रे –SS।।5876।।

(1079) लक्ष्य भेद कर पाना है, जहाँ अनंत खज़ाना है –2
संयम कवच बनाना है –SSS
वीतरागता ध्याना है, खुद में खुद को पाना है –2
संयम को रस्ता हो–3 रहमान बनाये रे– SS।।5877।।

(1080) खुद का अनुसंधान है, तब जिनधर्म महान् है –2
नींव तो पूजा दान है –SSS
संयम तुम्हें चलाता है, मंजिल तक ले जाता है –2
खुद में ही खोजो हो–3 उत्तर मिल जाये रे –SS।।5878।।

(1081) इन्द्रिय सारी बाँध रहा, संयम वो ही जान रहा –2
विषय भोग को लाँघ रहा –SSS
कीमत तब बढ़ जाती है, जब अनुभूति समाती है –2
मन हो काबू में हो–3 तब संयम आये रे –SS।।5879।।

(1082) पाँचो इन्द्रिय के घोड़े, दौड़े तब संयम तोड़े –2
निजानुभव से मुख मोड़े –SSS
मन, घोड़ों की लगाम है, ज्ञान सही अध्यात्म है –2
ज्ञानी जो चाहे हो–3 अंजाम दिलाए रे –SS।।5880।।

(1083) आदत बन–बन जाती हैं, संयम से मिट पाती हैं –2
जब सत संगति पाती हैं –SSS
भव्यों को जो प्यारा है, संस्कार की धारा है –2
जीवन ही जिससे हो–3 मंगल बन जाये रे –SS।।5881।।

(1084) दुनियाँ में क्यूँ पिसता है, संयम, प्रभु से रिश्ता है –2
धारे वही फरिश्ता है –SSS
संयम तो संजीवन है, खुश्बूमय जो गुलशन है –2
इन्द्रिय कषायें हो–3 जड़मूल नशाये रे– SS।।5882।।

(1085) आधि–व्याधि मिटाना है, मरण समाधि पाना है –2
तो संयम अपनाना है –SSS
शेरों का यह चोला है, धरे वही अनमोल है –2
इसको पाये तो हो–3 शक्ति भर आये रे –SS।।5883।।

(1086) जो परिग्रह को हनन करें, भोग–विषय में नियम धरे –2
सच्चा वो आचरण धरे –SSS
सभी कषायें शमन करे, इन्द्रिय का जो दमन करे –2
वो ही संयम का हो–3 संकल्प बनाये रे –SS।।5884।।

(1087) छू न सके जिसको दल जल, कीचड़ में ज्यों रहे कमल –2
उसी तरह संयम निर्मल –SSS
पाप पुण्य से रहे अमल, जिसका स्वर्ग–मोक्ष है फल –2
उसको ऋषि सारे हो–3 संयम बतलाएँ रे –SS।।5885।।

(1088) इक लड़का है अरबपति, इक लड़का है करोड़पति –2
पर इक है बस लखपति –SSS
अरबपति नहिं लखपति, हमें चाहिए एक पति –2
लड़के की बातें हो–3 सुन सब मुस्काएँ रे –SS।।5886।।

(1089) ऊपर दिखा न स्वर्ग हमें, नीचे दिखा न नर्क हमें –2
दोनों दिखते यहीं हमें –SSS
दिखने का ही फर्क है, सुन्दर सा ये तर्क है –2
नज़रों से मंज़र हो–3 खुद ही बन जाये रे –SS।।5887।।

(1090) किस किसको हम याद करे?, किससे यहाँ विवाद करें?–2
किससे हम संवाद करें?–SSS
खुद से हो संवाद अगर, चढ़ जाये संयम चादर –2
खुद से बतियाते हो–3 वो ज्ञान बढ़ाए रे –SS।।5888।।

(1091) तुझमें है जितनी शक्ति, उतनी करो प्रभु भक्ति -2
तभी मिलेगी सच युक्ति -SSS
भक्ति हम कर जायेंगे, ताकतवर हो जायेंगे -2
भक्ति से शक्ति हो-3 खुद ही मिल जाये रे -SS।।5889।।

(1092) मोह जाल इतना फैला, रिश्तों का देखो खेला -2
मंजर दिखता अलबेला -SSS
दुनियाँ भोगों का मेला, जहाँ पापियों का रेला -2
मोही बन फँसकर हो-3 तू क्यों इठलाए रे -SS।।5890।।

(1093) आयेंगे यमराज जभी, उतर जायेंगे ताज सभी -2
बन जा तू जाँबाज अभी -SSS
देख स्वयं का राज दिले, गम का तभी इलाज मिले -2
संयम के मारे हो-3 मृत्यु मर जाये रे -SS।।5891।।

(1094) ये दुनियाँ जैसे अरहट, तेरा घर जैसे मरघट -2
फिर भी तू करता खटपट -SSS
संयम को धर ले झटपट, पी ले ज्ञानामृत का घट -2
तब ही तू सरपट हो-3 शिवपुर को जाये रे -SS।।5892।।

(1095) राग नहीं तुम करते हो, पर विरागता भरते हो -2
वीतराग सा करते हो -SSS
बड़ी अनोखी बात लगे, सारी दुनिया यही कहे -2
बनकर के रागी हो-3 नहिं समय गँवाओ रे -SS।।5893।।

(1096) सेवा बिना नहीं मेवा, कहते हैं जिनवर देवा-2
गुरु ही पार लगा देवा-SSS
बड़े सभी से मात-पिता, कर सेवा मिटती चिंता-2
इनको दुख देकर हो-3 सुख कहीं न पाये रे-SS।।5894।।

(1097) जो खुद का उपकार करे, व तन का अपकार करे-2
बात धरम की जान अरे-SS
तन का जो उपकार करे, वह खुद का अपकार करे-2
सेवा हो जिसकी हो-3, उसका गुण आये रे-SS।।5895।।

(1098) हाथों से नहिं दान दिया, नहीं वेद का ज्ञान किया-2
हरदम धन पर ध्यान किया-SSS
गुरुसेवा में नहीं गया, तीरथ करना भूल गया-2
ऐसे नर-नारी हो-3, अति निंद बताये रे-SS।।5896।।

(1099) पुत्र, पिता से मुख मोड़े, बेटी अपना घर छोड़े -2
मात-पिता तब ही रोवे -SSS
मात-पिता गर नहिं होते, कैसे हम पैदा होते -2
इनकी तन मन से हो-3 सेवा मन लाओ रे -SS।।5897।।

(1100) पिता समझता फर्ज जिसे, बेटा समझे कर्ज उसे -2
कितना इसमें फर्क दिखे -SSS
मात-पिता को खुश रखना, ऐसा फर्ज़ अदा करना -2
तब ही खुशहाली हो-3 घर में आ जाये रे-SS।।5898।।

(1101) जब किरदार निभाएगा, आँधी तूफां आएगा–2
जमींदोज करवाएगा–SSS
अगर न तू घबराएगा, तो हर चीज को पाएगा–2
जलवा क्यूँ अपना हो–3, तू यहाँ छिपाए रे–SS।।5899।।

(1102) जमीं में सारा विश्व जमा, जमीं है जैसे दिले क्षमा–2
क्षमा बिना, है धर्म कहाँ –SSS
ज़िगर, जमीं जैसा कर ले, धर्म हृदय संचित कर ले–2
भक्ति से दिल में हो–3 भगवान् दिखाए रे –SS।।5900।।

(1103) बाहर करते क्षमा–क्षमा, भीतर में अधमा–अधमा –2
मिट पाता नहिं दिले गुमां –SSS
अंतस् दिल से माँग क्षमा, जल जायेगी दिले शमां –2
दिल केजलतेही हो–3 दिल खिल–खिल जायेरे–SS।।5901।।

(1104) अहंकार जब पिघलेगा, क्षमा भाव तब निकलेगा –2
जीवन खुद ही उजलेगा –SSS
क्षमा चाँदनी इन्दु की, ईश्वर के शुभ बिन्दु की –2
दिल में क्षमा हो हो–3 तो गम मिट जाये रे –SS।।5902।।

(1105) क्षमा भाव चंदन जैसा, गुरुवर को वंदन जैसा –2
अपना अभिनंदन जैसा –SSS
क्रोध अकारण बैर बने, क्षमा स्वर्ग की सैर बने –2
दिल की क्षमा ही हो–3 दिल को स्वर्ग बनाए रे –SS।।5903।।

(1106) चार मिलें चौसठ खिलते, हाथ जोड़कर मन मिलते –2
हृदय कमल जैसे खिलते –SSS
ज्ञानी से ज्ञानी मिलते, रोम करोड़ों खुद खिलते –2
माँगो क्षमा तब हो–3 सद्धर्म समाये रे–SS।।5904।।

(1107) बैर विरोध मिटाता है, क्षमा धर्म कहलाता है –2
प्रेम का दीप जलाता है –SS
मैत्री भाव बढ़ाता है, शिवपुर राह दिखाता है –2
होता मन निर्मल हो–3 तब धर्म सुहाये रे –SS।5905।।

(1108) सबको करता क्षमा हूँ मैं, सारे मुझको क्षमा करें –2
धर्मी बन अनुसरण करें –SS
यहाँ मित्रता सबसे हो, वैर किसी से कभी न हो –2
निर्मल भावों में हो–3 परिणाम रमाए रे –SS।।5906।।

(1109) क्षमा धर्म अति प्यारा है, सबको पुण्य सहारा है –2
यही ज्ञान फव्वारा है –SS
क्षमा भाव धर जाओ तुम, भव के पाप हटाओ तुम –2
ऐसे भावों में – हो–3 गुण धर्म समाए रे –SS।।5907।।

(1110) सच्ची श्रद्धा पायेगा, सदाचरण अपनाएगा–2
सही ज्ञान तब पायेगा–SSS
खूब शास्त्र पढ़कर रट ले, सभी खोपड़ी में भर ले–2
कोरा ज्ञानी क्या ? हो–3, ज्ञानी कहलाए रे–SS।।5908।।

(1111) श्रद्धा सच्ची बनती है, तब सच राह निकलती है–2
भक्ति अच्छी लगती है–ऽऽऽ
श्रद्धा से जब जाप किया, तब कर्मों को साफ किया–2
मंजिल का रस्ता हो–3, श्रद्धान बताये रे–ऽऽ।।5909।।

(1112) तेरा गीत बहाना है, तुझको दिल में पाना है–2
इसीलिए दर आना है–ऽऽऽ
अपना शीश झुकाना है, श्रद्धा हमें बनाना है–2
ये ही परिणाम हो–3, भव पार कराये रे–ऽऽ।।5910।।

(1113) आँख हिये की फूटी है, दिल में विष अनुभूति है–2
टाँग उसी की टूटी है–ऽऽऽ
पक्षपात जो लायेगा, अपना धर्म मिटाएगा–2
सच्ची श्रद्धा में हो–3, पग आँख समाए रे–ऽऽ।।5911।।

(1114) श्रद्धा कभी नहीं तोड़ो, मजहब से मत मुख मोड़ो –2
साथ न ईश्वर का छोड़ो –ऽऽऽ
इसमें छिपी भलाई हे, संतों ने बतलाई है –2
श्रद्धा की नींव हो–3 शिवमहल बनाए रे –ऽऽ।।5912।।

(1115) है विश्वास मिलोगे तुम, कभी न कभी खिलोगे तुम –2
दिल में ही निकलोगे तुम –ऽऽऽ
इसी खोज में रहता हूँ, इंतजार मैं करता हूँ –2
कब तुम आओगे हो–3 ये कौन बताए रे –ऽऽ।।5913।।

(1116) श्रद्धा हो निश्छल मन में, चारित निश्चल चेतन में –2
ज्ञान हमेशा रहे हमें –ऽऽऽ
रोज भावना दिले करो, नहीं यहाँ नादान बनो –2
दिल की नादानी हो–3 नहिं दान कराये रे –ऽऽ।।5914।।

(1117) फूल नहीं गर पाओगे, शूल दिले भर जाओगे –2
कैसे बूँद बने सागर –ऽऽ
श्रद्धा जीवन प्राण है, मिथ्या विषमय वाण है –2
श्रद्धा को लाकर हो–3 भव धन्य बनाओ रे –ऽऽ।।5915।।

(1118) सपनों जैसा मिला भवन, इसमें ही हो गये मगन–2
गुरु आदर भूले भगवन्–ऽऽऽ
समझ नहीं ये सुख साधन, इसमें जीवन कर न हवन–2
तन ही नहिं अपना हो–3 क्यों भवन कहाये रे–ऽऽ।।5916।।

(1119) जग मेले में मेले हैं, कितने यहाँ झमेले हैं–2
फिर भी सभी अकेले हैं–ऽऽऽ
कर ले दूर अकेलापन, दोस्त बना ले तू भगवन्–2
ईश्वर हर भव में हो–3 तेरा साथ निभाए रे–ऽऽ।।5917।।

(1120) कभी नहीं हिम्मत हारो, चिंतन से गम को मारो–2
मार–मारकर पुचकारो–ऽऽऽ
गम पिटने के लायक है, कहते हैं नालायक है–2
इसको आदर से हो–3 नहिं कभी बिठाओ रे–ऽऽ।।5918।।

(1121) खुद की नहीं सँभाल जहाँ, वे समझो कंगाल यहाँ–2
खुद का उनको ख्याल कहाँ–SSS
ख्याल, सँभाल कराता है, सही राह दिखलाता है–2
गम के ख्यालों में हो–3 गम ही नजराये रे–SS।।5919।।

(1122) जो अपना खो जाता है, उसको खोजा जाता है–2
खोजा, भोगा जाता है–SSS
जिसको भूल गये हों तुम, उसको पाया जाता है–2
खोकर खुद भूले हो–3 वो खोज के पाये रे–SS।।5920।।

(1123) हम कहते हैं टन टनभर, मगर सोचते हैं मनभर–2
करते हम बस हैं कणभर–SSS
करें अधिक और बोलें कम, यही सीख अपनाएँ हम–2
तब ही जीवन में हो–3 गुल खिलते जायें रे–SS।।5921।।

(1124) हम जब तुमसे मिलते हैं, तुम जैसा मन करते हैं–2
थोड़ी देर सुधरते हैं–SSS
तुममें कुछ मेरा दिखता, इसलिये तुमको लिखता–2
मुझमें ही इकदिन हो–3, तेरा दिख जाये रे–SS।।5922।।

(1125) पढ़ा, न उसे विचारा है, दिल में नहीं उतारा है–2
खुद को नहीं निखारा है–SSS
इसीलिये अंधियारा है, ये जीवन बहु न्यारा है–2
खुद को ही पढ़ लो हो–3, सब कुछ पढ़ जाये रे–SS।।5923।।

(1126) शिष्य न हो स्वेच्छाचारी, गुरु का हो आज्ञाकारी –2
बुद्धि –विवेक–विनयधारी –SSS
वही गुणों से भर जाता, मंत्र सिद्धि वह कर पाता –2
ईश्वर का वैभव हो–3 उसको मिल जाये रे –SS।।5924।।

(1127) जैसा सोच विचार रहे, वैसा ही आचार बने–2
फिर हमको संसार मिले–SSS
फल के सब संयोग मिलें, सुख–दुःख दोनों योग मिलें–2
अच्छा सोचोगे हो–3 तो दुःख नहिं पाये रे–SS।।5925।।

(1128) दिल में गर संतोष नहीं, पैदा होता, रोष वहीं –2
रह पाता फिर होश नहीं –SSS
संतोषी, सुख पाता है, जल्प–विकल्प हटाता है –2
सुख का आनन्द हो–3 ऋषिजन यही बताएँ रे –SS।।5926।।

(1129) जितना हो संतोष यहाँ, मन उतना निर्दोष यहाँ –2
होता दिल में होश वहाँ –SSS
संतोषी सुख पाता है, हर इंसान् बताता है –2
विषयों की ज्वाला हो–3 मदहोश बनाए रे –SS।।5927।।

(1130) जिसको समझा यहाँ मजा, वह है तेरी एक सजा–2
भूला है तू यहाँ कज़ा–SS
अच्छी कर ले यहाँ रजा, खुद को तू मत यहाँ लजा–2
सच्चा सुख भूला हो–3, गम सुख बतलाए रे–SS।।5928।।

(1131) सुख को हरदम चाहा है, दुख में दिल घबराया है–2
सुख को सदा सराहा है–ऽऽऽ
दुख को ही अपनाया है, अपने गले लगाया है–2
दुख को जाने बिन हो–3, सुख समझ न आये रे–ऽऽ।।5929।।

(1132) दिल में सच्चा प्यार नहीं, होती है तकरार वहीं–2
बिगड़ें सब व्यवहार वहीं–ऽऽऽ
सुख की मिलती नहीं लहर, झगड़े की जड़ हो घर पर–2
नरकों सा जीवन हो–3 खुद ही बन जाये रे–ऽऽ।।5930।।

(1133) लाकर लॉकर खूब भरे, यहाँ हिफाजत रोज करें–2
रह जायेंगे सभी धरे–ऽऽऽ
जिनका तू उपयोग करे, वो ही तेरे साथ चले–2
खोने से अच्छा हो–3 गुरु त्याग बताएँ रे–ऽऽ।।5931।।

(1134) भूखा, विष खा नहिं जीता, प्यासा जहर नहीं पीता –2
जला कुएँ में नहिं गिरता –ऽऽऽ
धर्मी, धर्म नहीं तजता, पापी, धर्म नहीं करता –2
सुख की चाहत हो हो–3 तो पाप न लाओ रे–ऽऽ।।5932।।

(1135) भूला प्रभु का आराधन, जोड़े इन्द्रिय सुख साधन –2
क्षणिक सुखों में पागल मन –ऽऽ
लाल तुझे नहिं नजराया, भ्रम में ही तू भरमाया –2
फूलों की बगिया हो–3 इक दिन मुरझाए रे –ऽऽ।।5933।।

(1136) 'ख' से बनता सुक्ख यहाँ, 'ख' से बनता दुक्ख यहाँ–2
'ख' से बनता खार यहाँ–ऽऽऽ
'ख' कहता अनुकूल यहाँ, 'ख' कहता प्रतिकूल यहाँ–2
उसको गुण अपने हो–3 नहिं कभी दिखाएँ रे–ऽऽ।।5934।।

(1137) पहिने गम का बाना है, फिर भी तू अंजाना है–2
दुख तूने सुख जाना है–ऽऽऽ
सुख का दिले खज़ाना है, कभी न ये पहिचाना है–2
गम को जाने बिन हो–3, गम कभी न जाये रे–ऽऽ।।5935।।

(1138) खुद की नहीं तलाश यहाँ, तो हम जिंदा लाश यहाँ–2
ऐसा हो अहसास यहाँ–ऽऽऽ
मजहब की हो प्यास यहाँ, हरदम रहे प्रयास यहाँ–2
तब ही जीवन का हो–3, निजसार दिखाए रे–ऽऽ।।5936।।

(1139) अंधकार में आते हैं, तम में ही मर जाते हैं–2
कुछ जल करके जाते हैं–ऽऽऽ
कोई उजाले में आते, और अंधेरे में जाते–2
आने–जाने की हो–3, ये दशा बतायें रे–ऽऽ।।5937।।

(1140) तन रोगों की खान है, नहिं माने अंजान है–2
तन से वे नादान है–ऽऽऽ
तन को जो भी सहलाये, बुद्धिमान नहिं कहलाए–2
नर तन को पाकर हो–3 तप खूब कराओ रे–ऽऽ।।5938।।

(1141) तन को खूब खिलाता है, धोकर उसे सुलाता है–2
सेवा खूब रचाता है–ऽऽ
जनम जनम तन साथ रहे, साथ न छूटे ऋषि कहें–2
ऐसे प्राणी का हो–3, तन साथ निभाये रे–ऽऽ॥5939॥

(1142) इस तन पर मत इठलाओ, धन पाकर मत इतराओ–2
करो धरम, नहिं शरमाओ–ऽऽऽ
पाप को तन नहिं मिला यहाँ, क्यों भूला ये बात यहाँ–2
इक दिन पंछी ये हो–3, तन से उड़ जाये रे–ऽऽ॥5940॥

(1143) इच्छा करके तप कर ले, जो चाहे वश में कर ले–2
तप सच्चे मन से कर ले–ऽऽऽ
दुनियाँ में वो चीज नहीं, तप से जो मिल सके नहीं–2
तप से नहिं उत्तम हो–3 कुछ कार्य बताएँ रे–ऽऽ॥5941॥

(1144) तपता–घिसता–कटता है, और बाद में पिटता है–2
तब ही स्वर्ण निखरता है–ऽऽऽ
वैसे ही हम तपें यहाँ, घिस–पिट–तपकर जियें यहाँ–2
सोने से बढ़कर हो–3 जीवन बन जाये रे–ऽऽ॥5942॥

(1145) तपन पकाती है फल को, तपन मिटाती है मल को–2
प्रासुक करती है जल को–ऽऽऽ
तप से ही सब शुद्ध बने, आतम परम विशुद्ध बने–2
तप का ही ताप हो–3, संताप मिटाये रे–ऽऽ॥5943॥

(1146) तप भयभीत कराता है, कहर यहाँ बरसाता है –2
सारे कर्म जलाता है –ऽऽऽ
तप है नहीं देह–दण्डन, तप है सही आत्मशोधन –2
तप से तपा जो हो–3 वह तपन् मिटाये रे –ऽऽ॥5944॥

(1147) दर्शन–ज्ञान समाता है, स्वयं आचरण आता है –2
राह सही दिखलाता है –ऽऽऽ
जहाँ न सच्चा ज्ञान अरे, वो कैसे तप ध्यान करे –2
मिथ्या तप यारो हो–3 भव नहीं मिटाये रे –ऽऽ॥5945॥

(1148) तपकर स्वर्ण हुआ चंदन, साधु हुआ तपकर चंदन –2
देव करें तप को वंदन –ऽऽऽ
तप ही कर्म पकाता है, जल्दी उन्हें गिराता है –2
तप को अपनाये हो–3 वो संत कहाए रे –ऽऽ॥5946॥

(1149) तप सबको मजबूत है धन, कर्म शिलाएँ करे क्षरन् –2
मौत इसी से करे मरन् –ऽऽऽ
तप से बढ़कर धर्म नहीं, मिट जाते सब कर्म यही –2
तप की महिमा को हो–3 सब लोग सुनाएँ रे–ऽऽ॥5947॥

(1150) चमत्कार है तप प्यारा, इससे मिटता अँधियारा –2
करे प्रशंसा जग सारा –ऽऽऽ
मन का कचरा साफ करे, सारे गुण को पाक करे –2
दर्पण सा मन ये हो–3 तप से हो जाये रे –ऽऽ॥5948॥

(1151) कम खाना और गम खाना, तप जीवन में अपनाना –2
स्वस्थ भाव मन में लाना –ऽऽऽ
तप नहिं करो, तपन होती, आँख हमेशा नम होती –2
तप से ही तृष्णा हो–3 जड़ से मिट जाये रे –ऽऽ।।5949।।

(1152) तप का निकले झाग जभी, कर्म काँपते स्वयं सभी –2
दिल हो जाता पाक तभी –ऽऽऽ
तप के हैं आयाम निरे, साहस शक्ति धाम अरे –2
तप की अग्नि ही हो–3 संताप मिटाए रे –ऽऽ।।5950।।

(1153) तप बिन, संयम ज्ञान कहाँ, अनुभव वाला ध्यान कहाँ?–2
तप जैसी है शान कहाँ –ऽऽऽ
तप तो एक साधना है, मन को यहाँ साधना है –2
मन के रुकते ही हो–3 तप खुद महकाए रे –ऽऽ।।5951।।

(1154) तप, तकदीर बनाता है, इक अक्सीर जगाता है –2
दिल गंभीर बनाता है –ऽऽऽ
तप से मिलती ऋद्धि यहाँ, होती सारी सिद्धि यहाँ –2
तप को अपनाये हो–3 तो तपन न पाये रे –ऽऽ।।5952।।

(1155) गैरों को काँटे बोता, दुनियाँ में वो खुद रोता –2
अपना चैन अमन खोता –ऽऽऽ
फूलों का तुम बाग बनो, गैरों को नहिं आग बनो –2
काँटों के वन में हो–3 नहिं फूल दिखाएँ रे –ऽऽ।।5953।।

(1156) दुनियाँ का रंग चढ़ जाये, वो इंसां भटकन पाये –2
हरदम खुद में पछताए –ऽऽऽ
रंग–संग सब छोड़ो तुम, खुद से नाता जोड़ो तुम –2
अंतस् के रंग में हो–3 कुछ छिप नहिं पाये रे– ऽऽ।।5954।।

(1157) घूमे सारे तीर्थ अरे, खुद को तीर्थ नहीं समझे–2
तीर्थों पर क्या धर्म करे–ऽऽऽ
मन बहलाने जाते हैं, धर्म, चित्त नहिं लाते हैं–2
तीरथ का रथ ही हो–3 भव पार लगाए रे–ऽऽ।।5955।।

(1158) तीर्थों पर सब जाते हैं, बच्चों को ले जाते हैं–2
पिकनिक खूब मनाते हैं–ऽऽऽ
धर्म भूलकर जिये यहाँ, शूल तभी भर लिये यहाँ–2
सब ही तीरथ पर हो–3 नहिं शुद्धि दिखाये रे–ऽऽ।।5956।।

(1159) तीरथ करने गये सभी, पाप न त्यागा वहाँ कभी–2
तभी न फल मिल सका कभी–ऽऽऽ
तीरथ तीर्थंकर कर दे, मजहब के रथ पर धर दे–2
तीरथ जो जाये हो–3 भव से तिर जाये रे–ऽऽ।।5957।।

(1160) दृढ़ विश्वास दिले लाते, पास वही होकर जाते–2
वो ही कुछ बनकर जाते–ऽऽऽ
मन विकसित खुद हो जाता, सम्बल बलमय हो जाता–2
भीतर की ऊर्जा हो–3 बाहर आ जाये रे–ऽऽ।।5958।।

(1161) वही शक्तियाँ पाता है, जो जीवन विकसाता है–2
आगे बढ़ता जाता है–SSS
आशावादी बन करके, ऊँचा लक्ष्य बनाता है–2
जैसा जो भाये हो–3 वो वैसा पाये रे–SS॥5959॥

(1162) जोड़ोगे, जुड़ जाओगे, छोड़ोगे, निज पाओगे–2
तोड़ोगे, मिट जाओगे–SSS
जोड़ तोड़ में माया है, माया काली छाया है–2
छोड़ो पर छोड़ो हो–3 अपना मिल जाये रे–SS॥5960॥

(1163) त्याग नहीं कर पाओगे, धर्म नहीं वर पाओगे –2
मंगल दिले न पाओगे –SSS
खुशी–खुशी तज जाओगे, कई गुना तुम पाओगे –2
लोभी को जग में हो–3 कुछ नहिं मिल पाये रे –SS॥5961॥

(1164) भूल गया है जो रोना, उसको कैसा दुख होना?–2
उसको क्या लेना देना–SSS
घोल हँसी का घोल यहाँ, निष्ठ वचन अनमोल यहाँ–2
खुशियाँ वो देता हो–3 जो खुश नजराये रे–SS॥5962॥

(1165) मीठा–मीठा बोल यहाँ, अमृत दिल में घोल यहाँ–2
जीवन है अनमोल यहाँ–SSS
दिल दुखता वो बोल न बोल, घावों पर मरहम से बोल–2
तब ही सद्ज्ञानी हो–3 तू खुद कहलाए रे–SS॥5963॥

(1166) वाणी जिसकी पावन हो, मन की शुद्धि सावन हो–2
मुक्ति मिले यह भावन हो–SS
प्रभुवर के गुण गायेगा, दिल में ज्ञान सजाएगा–2
वाणी ही प्राणी हो–3, का भाव बताए रे–SS॥5964॥

(1167) दुर्वचनों का हो खंजर, बड़ा भयानक हो मंजर–2
जीवन हो जाता बंजर–SSS
जहाँ वचन अच्छे मिलते, वहीं प्रेम के गुल खिलते–2
वचनों के घाव हो–3, गहरे तक जाएँ रे–SS॥5965॥

(1168) यौवन सुन्दर रूप मिले, उत्तम कुल सम्पन्न मिले–2
विद्या बिन, नहिं हृदय खिले–SSS
गुलशन में ज्यों फूल खिले, पर नहिं उसे सुगंध मिले–2
विद्या बिन जीवन हो–3 बिन बू गुल पाये रे–SS॥5966॥

(1169) दूध न दे नहिं गर्भ धरे लेकर वो क्या गाय करे–2
क्या उससे है लाभ अरे–SSS
विद्या ईश्वर भक्ति न हो, उस सुत से क्या लाभ कहो–2
विद्या बिन मानव हो–3 नहिं इज्ज़त पाये रे–SS॥5967॥

(1170) विद्या बिन इंसान यहाँ, बिल्कुल है बेजान यहाँ–2
कुत्ते की ज्यों पूछ यहाँ–SSS
गुप्त अंग ढक सके नहीं, मक्खी भी उड़ सके नहीं–2
विद्याहीनों को हो–3 श्वान की पूँछ बताए रे–SS॥5968॥

(1171) धनी-नहीं, धन से होते, नहिं निर्धन, धन बिन होते-2
फिर धन में क्यूँ दम खोते-ऽऽऽ
जिस पर विद्या धन यारो, सबसे बड़ा धनी यारो-2
विद्या बिन सारा हो-3 धन भार बतायें रे-ऽऽ।।5969।।

(1172) कच्चे फल तरु आते हैं, भारी उसे बनाते हैं-2
लेकिन नहीं झुकाते हैं-ऽऽऽ
जब वे फल पक जाते हैं, पेड़ स्वयं झुक जाते हैं-2
बुद्धि पक जाये हो-3 तो खुद झुक जाओ रे-ऽऽ।।5970।।

(1173) दिल गुमान कर लाएगा, लहलुहान हो जाएगा-2
निज मकान जल जाएगा-ऽऽऽ
नाम निशान न पाएगा, तू जहान बन जाएगा-2
पाना कुछ दिल में हो-3, तो झुक-झुक जाओ रे-ऽऽ।।5971।।

(1174) पहले खुद ही अपनाना, तब सबसे कहने जाना-2
पूछे तब ही बतलाना-ऽऽऽ
प्रासंगिक गर बात नहीं, उसकी कीमत कभी नहीं-2
वक्त की बात हो-3, कुछ बात बनाए रे-ऽऽ।।5972।।

(1175) ईश्वर का जो ध्यान करे, लंबी उम्र प्रयाण करे-2
जल्दी-जल्दी नहीं मरे-ऽऽ
ज्ञान मोह से दूर करे, अंधकार, अज्ञान भरे-2
ज्ञानी ही भव में हो-3 अज्ञान मिटाए रे-ऽऽ।।5973।।

(1176) अहंकार को खलता है, जब इक दीपक जलता है-2
मिलती तभी सफलता है-ऽऽ
नई रोशनी लायें हम, सच्ची राह बनाएँ हम-2
राहें राही को हो-3 मंजिल दिखलाए रे-ऽऽ।।5974।।

(1177) नया दिवस तब होता है, ज्ञान हृदय जब होता है-2
पुण्यकर्म वह बोता है-ऽऽ
जिसमें कुछ भी नया नहीं, वही साल भर रोता है-2
अच्छे भावों से हो-3 सब कुछ मिल जाए रे-ऽऽ।।5975।।

(1178) नया सोच हम लाते हैं, भाव नया अपनाते हैं-2
तब नव वर्ष मनाते हैं-ऽऽऽ
नया भाव संजीवन है, खुशहाली का जीवन है-2
खुशियों का जीवन, हो-3 खुशहाल बनाए रे-ऽऽ।।5976।।

(1179) क्या देखें कैसे देखें, देखा वो हम क्यों देखें-2
ये पहले निश्चित कर लें-ऽऽ
दिल जब सब को पायेगा तब दर्शन हो पाएगा-2
दर्शन बिन यारो हो-3 सच नहिं दिख पाए रे -ऽऽ।।5977।।

(1180) प्रभु भक्ति को लाएगा, इस भव से तिर जाएगा-2
ज्ञान बढ़ाता जाएगा-ऽऽ
सारे दुःख मिटाकर के, मंजिल अपनी पाएगा-2
भक्ति हम सबको हो-3 भव पार कराए रे-ऽऽ।।5978।।

(1181) ज्ञान दिखाने से आता, ज्ञान पढ़ाने से आता–2
चिंतन–मंथन उपजाता–ऽऽऽ
अनुभव में जब जब आये, तब–तब चारित बन जाये–2
ज्ञानी ही सबको हो–3 सद्‌राह दिखाए रे–ऽऽ।।5979।।

(1182) दुनिया में गर ज्ञान नहीं, तो जीता इंसान नहीं–2
निज इंसा भगवान नहीं–ऽऽऽ
जग को वही चलाता है जो भगवन् कहलाता है–2
ज्ञानी को दुनिया हो–3 सब समझ में आए रे–ऽऽ।।5980।।

(1183) ज्ञान सुखों को लाता है, अज्ञानी दुख पाता है–2
अंधकार भर जाता है–ऽऽऽ
ज्ञानी भव तिर जाता है, सबको खुशी दिलाता है–2
ज्ञानी की संगत हो–3 जन्नत दिखलाए रे–ऽऽ।।5981।।

(1184) देने से बढ़ जाता है, नहिं दे तो सड़ जाता है–2
अनुभव से गढ़ जाता है–ऽऽऽ
धन हो या फिर ज्ञान कहो, कहता अंतस ज्ञान अहो–2
ज्ञानी गम में भी हो–3 खुशियाँ दिखलाए रे–ऽऽ।।5982।।

(1185) अज्ञानों के काम यहाँ, दे सकता नहिं ज्ञान यहाँ–2
लोगों से सम्मान कहाँ–ऽऽऽ
कारण जब अपनाएँगे, कार्य तभी हो पायेंगे–2
ज्ञानी दुख में से हो–3 सुख ही उपजाए रे–ऽऽ।।5983।।

(1186) दुनिया में आवास कहाँ, जीवन कारावास यहाँ–2
ऐसा कर विश्वास यहाँ–ऽऽऽ
गिनती की है साँस यहाँ, खुद पर कर विश्वास यहाँ–2
जाने जीवन की हो–3 कब शाम हो जाये रे–ऽऽ।।5984।।

(1187) इंसां क्रोध दिखाता है, नारी पर अजमाता है–2
शहंशाह बन जाता है–ऽऽऽ
प्रेम की देवी नारी है, मानव पे वो भारी है–2
क्रोधी मरियल ही हो–3 मर–मरके जाए रे–ऽऽ।।5985।।

(1188) मनमर्जी जो करता है, खुदगर्जी में मरता है–2
खुशी न पैदा करता है–ऽऽऽ
कब तक क्रोध दिखाओगे, गम का बोझ उठाओगे–2
क्रोधी के दिल में हो–3 सुख शांति न आए रे–ऽऽ।।5986।।

(1189) क्रोध बड़ी दुर्गंध यहाँ, बुद्धि होती मंद जहाँ–2
मन की आँखें बंद वहाँ–ऽऽऽ
तन मन में बीमारी दे, कर देता स्वच्छंद यहाँ–2
क्रोधी का ये तन हो–3 मरघट कहलाए रे–ऽऽ।।5987।।

(1190) क्रोध जलाता अपना घर, भटकाता है जो दर–दर –2
क्रोध यहाँ तू रंच न कर–ऽऽऽ
क्रोधी है बीमारी का घर, होने देता नहीं अमर–2
क्रोध विषधर सा हो–3 सबको नजराए रे–ऽऽ।।5988।।

(1191) सिकुड़न क्रोध दिलाता है, मन काला कर जाता है–2
राहें रुद्ध कराता है–SSS
जीवन की सुख समृद्धि, क्षण में चटकर जाता है–2
क्रोधी के सब जन हो–3 बैरी बन जाए रे–SS।।5989।।

(1192) कब करना कैसे करना, क्रोध यहाँ कितना करना–2
क्या करके किससे करना–SSS
किस–किस पे हम क्रोध करें, किसका यहाँ विरोध करें–2
ऐसा जाने बिन हो–3 नहिं क्रोध बढ़ाओ रे–SS।।5990।।

(1193) क्रोध अंधेरा लाता है, अंधकार में आता है–2
तब जीवित कर जाता है–SSS
उजियारा ज्यों आता है, क्रोध स्वयं भग जाता है–2
उजला सा जीवन हो–3 सब साफ दिखाए रे–SS।।5991।।

(1194) हुकूमतें दिखलाता है, कीमत यहाँ गिराता है–2
सुन्दरता मिटवाता है–SSS
बाल सफेद करा करके, जल्द बुढ़ापा लाता है–2
क्रोधी बचपन में हो–3 बूढ़ा हो जाए रे–SS।।5992।।

(1195) ब्याज पे ब्याज चढ़ाता है, रौद्र रूप दिखलाता है–2
क्रोध बौखला जाता है–SSS
मालिक क्रोध न बन पाए, नौकर क्रोध ही रह जाए–2
क्रोधी अपने को हो–3 ऊँचा बतलाए रे–SS।।5993।।

(1196) मातम क्रोध बनाता है, मौत पास में लाता है–2
कई उपद्रव ढाता है–SSS
भव में यही भ्रमाता है, मुर्दा यही बनाता है–2
मुर्दों के दिल में हो–3 दिलवर नहिं आये रे–SS।।5994।।

(1197) क्रोध करे गुणहानि हमें, इस जग में बदनाम हमें–2
कभी न दे आराम हमें–SSS
दिल से राम भगाता है, क्रोध काम कर जाता है–2
क्रोधी मरघट का हो–3 एक जिंद बताएँ रे–SS।।5995।।

(1198) क्रोधी घट घट मरता है, मरघट पैदा करता है–2
गम ही गम को भरता है–SSS
मालिकपन तब मिट जाए, दिल में क्रोध उभर आए–2
हमको कषाई ये हो–3 क्रोध बनाए रे–SS।।5996।।

(1199) तन मन क्रोध करे गंदा, खुद ही होकर के अंधा–2
करता जो गोरखधंधा–SSS
क्रोधी रहता शांत कहाँ, हर इक पल वो क्लांत यहाँ–2
प्रेम जीवन में हो–3 सुख शांति दिलाए रे–SS।।5997।।

(1200) प्रेम क्रोध पर भारी है, प्रेम भले की क्यारी है–2
क्रोधी की मति मारी है–SSS
क्रोध एक बीमारी है, प्रेम दवा उपकारी है–2
प्रेम की शक्कर हो–3 स्वादिष्ट बताएँ रे–SS।।5998।।

(1201) स्वार्थपन भर जाता है, अहंकार तब आता है–2
क्रोध उगलता जाता है–SSS
जहर बनाता जीवन को, खिले हुए इस उपवन को–2
क्रोधी को कोई हो–3 नहिं यार बनाए रे–SS।।5999।।

(1202) सच का हो संकल्प जहाँ, होती कायाकल्प वहाँ–2
उम्र रहे फिर अल्प कहाँ–SSS
मिटते सभी विकल्प वहाँ, होता अन्तर्जल्प वहाँ–2
तब ही जीवन का हो–3 सच साफ दिखाए रे–SS।।6000।।

(1203) दिल दरिया बन जाएगा, सत्य समझ में आएगा–2
राह सही दिखलाएगा–SSS
सत्य नहीं कड़वा होता, कभी नहीं अंधा होता–2
सत्य पाते ही हो–3 ईश्वर मिल जाए रे–SS।।6001।।

(1204) क्षमा भाव जो धरते हैं, क्षमा वही तो करते हैं–2
भव से वही उभरते हैं–SSS
क्षमा नहीं जो करते हैं, वो जिंदा ही मरते हैं–2
जीने वाले ही हो–3 यादों में आयें रे–SS।।6002।।

(1205) क्षमा भाव जब आयेगा, दिल गुल सा खिल जाएगा–2
ईश्वर से मिल जायेगा–SSS
ताकत क्रोध मिटाता है, जिंदा यहाँ जलाता है–2
वाणी हो मीठी तो हो–3 गुण भर जाए रे–SS।।6003।।

(1206) मिट्टी में खुशियाँ ढूँढे, मिट्टी में ही जियें मरे–2
उसको ही अपना समझे–SSS
अपना वैभव भूले है, मिट्टी पाकर फूले हैं–2
मिट्टी को अमृत हो–3 ये धर्म बनाए रे–SS।।6004।।

(1207) वक्त कीमती होता है, खो देता वो रोता है–2
बीज दुखों के बोता है–SSS
एक बार मिल पाता है, कोई धन्य बनाता है–2
गुजरा जो वक्त हो–3 वो लौट न आये रे–SS।।6005।।

(1208) होती मौत अकाल यहाँ, बिना समय के काल यहाँ–2
भव का ये जंजाल कहाँ–SSS
किसी–किसी की होती है, पापों की अनुभूति है–2
जीवन जो पाए हो–3 वो ही जी पाए रे–SS।।6006।।

(1209) लिया–लिया पर दिया नहीं, दिया दिया पर लिया नहीं–2
करना है वो किया नहीं –SSS
नहिं करना वो करते हैं, सुख की चाहत रखते हैं–2
ऐसे लोगों को हो–3 सुख नजर न आये रे–SS।।6007।।

(1210) अंधकार में आते हैं, अंधकार में जीते हैं–2
आकर के विष पीते हैं–SSS
दिया जला नहिं पाते जो, कई ठोकरें खाते वो–2
रोशन होते ही हो–3 राहें मिल जाएँ रे–SS।।6008।।

(1211) देता उसको मिलता है, मिलने पर मन खिलता है–2
लेना, देना पड़ता है–SSS
लेना–देना नहीं करे, भव से इंसां वही तिरे–2
अपने में रहकर हो–3 वो शिवपुर पाएँ रे–SS।।6009।।

(1212) जितने ज्यादा मित्र यहाँ, उतना हृदय पवित्र यहाँ–2
मन में महके इत्र यहाँ–SSS
मित्र बिना, ठोकर खाते, दुख जीवन में भर जाते–2
मजहब से बढ़कर हो–3 नहिं मित्र दिखाए रे–SS।।6010।।

(1213) अहंकार जब धरते हैं, तब नरकों में पड़ते हैं–2
दुख को दुख से सहते हैं–SSS
अधिक परिग्रह दुखदायी–भोगी की मति भरमाई–2
ज्यादा की चाहत हो–3 बस नर्क दिखाए रे–SS।।6011।।

(1214) अच्छा कर्म हँसाता है, बुरा कर्म पिटवाता है–2
कर्म भ्रमण करवाता है–SSS
दिल में शुद्ध भाव आयें, वो ही कर्म मिटा पाएँ–2
कर्म इंसां को हो–3 सुख दुख दिखलाए रे–SS।।6012।।

(1215) अंधकार लेकर आये, दीप जला करके जायें–2
वो ही जीवित कहलाएँ–SSS
जिसके दिल का दीप जले, उसको सब ही संत कहें–2
परभव में वो ही हो–3 निजज्ञान बढ़ाए रे –SS।।6013।।

(1216) दीप जलाकर जो आये – दीप जला करके जाये–2
महापुरुष वो कहलाए–SSS
कभी नहीं वो दुख पाये, सुख में ही जीकर जाये–2
वे ही तीर्थंकर हो–3 जग में कहलाएँ रे–SS।।6014।।

(1217) उजियारा लेकर आता जग में प्रकाश फैलाता–2
रोशनमय जग से जीता–SSS
उसको सारा जग चाहे, वो सारे जग को भाये–2
उसकी महिमा से हो–3 ये जग महकाए रे–SS।।6015।।

(1218) आया उजियारा लेकर – गया तो अंधियारा लेकर–2
पापों की गठरी लेकर–SSS
पायेगा परभव में दुख, दुख का फल मिलता है दुख–2
दीपक बुझते ही हो–3 अंधा हो जाए रे–SS।।6016।।

(1219) दिल को ज्ञान खिलाता है, जिनवर से मिलवाता है–2
नई राह दिखलाता है–SSS
ज्ञान बिना हम भटके हैं, इस दुनियाँ में अटके हैं–2
ज्ञानी उठता है हो–3 उठता ही जाए रे–SS।।6017।।

(1220) तन में जी घबराता है, अंधापन ले आता है–2
सबको ही दुखदाता है–SSS
रोशनमय दिल जो करता, वही अंधेरा कम करता–2
दिल में अंधियारा हो–3 गम खूब बढ़ाए रे–SS।।6018।।

(1221) किस्मत जब जब खिलती है, तभी सफलता मिलती है–2
ज्योति ज्ञान की जलती है–SSS
खुद में ही जो जीते हैं, वे ही अमृत पीते हैं–2
अमृत पीते ही हो–3 भव भ्रम मिट जाए रे–SS।।6019।।

(1222) जब पदार्थ हम पाते हैं, पापों में फँस जाते हैं–2
भव का भ्रमण बढ़ाते हैं–SSS
पर पर जब चाहेंगे तब, दिल में प्रभु नहिं आते हैं–2
प्रभु के आते ही हो–3 सब कुछ पा जाये रे–SS।।6020।।

(1223) सच में दोष लगाता है, सत्य नहीं दर्शाता है–2
वो खुद ज्ञान घटाता है–SSS
सच की करे प्रशंसा जो, जीवों पर अनुकम्पा हो–2
उसका ही ज्ञान हो–3 नित बढ़ता जाए रे–SS।।6021।।

(1224) ईर्ष्याभाव रखे मन में, वचनों में अपने तन में–2
विष घोले वो जीवन में–SSS
इससे बुद्धि घट जाये दाग स्वयं पर लग जाये–2
प्रेम ही ईर्ष्या का हो–3 भाव मिटाए रे–SS।।6022।।

(1225) पढ़ने में डाले बाधा, इंसां वो पागल आधा–2
खुद को समझ रहा दादा–SSS
अंतराय जो डालेगा, ज्ञान स्वयं का ढाँकेगा–2
ऐसे ही भाव हो–3 अज्ञान बढ़ाए रे–SS।।6023।।

(1226) स्वाभिमान बहुमान करो, दुरभिमान अभिमान तजो–2
खुद का ही सम्मान करे–SSS
मर्यादा में सदा रहो, निरभिमान का लक्ष्य रखो–2
उत्तम मार्दव का हो–3 तब धर्म समाए रे–SS।।6024।।

(1227) शब्द ज्ञान कर लिया यहाँ, वेदों को रट लिया यहाँ–2
उत्तर सब चट लिए यहाँ–SSS
समझ रहे खुद को ज्ञानी, बने स्वयं ही अभिमानी–2
ऐसा वो मानी हो–3 दुर्गति में जाए रे–SS।।6025।।

(1228) कोई पुत्र करे सेवा, कोई होता दुख देवा–2
कोई धर्म करे सेवा–SSS
होता लेनदार कोई, कोई होता गुण मेवा–2
पाप और पुण्य हो–3 ये दृश्य दिखाएँ रे –SS।।6026।।

(1229) यहाँ जनमते मरते हैं, कर्ज उतारा करते हैं–2
फर्ज निभाया करते हैं–SSS
जो लेकर के आता है, देना भी पड़ जाता है–2
देकर जो आये हो–3 वो आकर पाए रे–SS।।6027।।

(1230) ज्यों ही सच्चा ज्ञान मिले – त्यों ही सम्यक् द्वार खुले–2
जीवों का आधार मिले–SSS
दिल में सच्चे फूल खिलें, राग–द्वेष के भाव मिटें–2
ज्ञानी ही सच्ची हो–3 राहें दिखलाए रे–SS।।6028।।

(1231) ज्ञान जिसे भी मिल जाये, राह उसे ही मिल पाये-2
दीपक उसका जल जाये-SSS
ज्ञान बिना कुछ नहीं मिले, मिले न उससे हृदय खिले-2
ज्ञानी जो पाये हो-3 वो कोई न पाये रे-SS।।6029।।

(1232) जब भी धर्मोत्थान हुआ, तब जीवन में ज्ञान हुआ-2
अपना ही सम्मान हुआ-SSS
श्रुत की सेवा लाता जो, श्रुत पंचमी मनाता वो-2
उसको जीवन में हो-3 सब समझ में आये रे-SS।।6030।।

(1233) जिनवाणी सेवा कर ले, सच्चा ज्ञान स्वयं वर ले-2
थोड़ा यत्न यहाँ कर ले-SSS
सच-सच में दिख जाएगा, जीवन अमृत पाएगा-2
सच को पाते ही हो-3 प्रभु दर्श दिखाए रे-SS।।6031।।

(1234) दुख का है रहना अच्छा, कहने से सहना अच्छा-2
रुकने से बहना अच्छा-SSS
दुख जब बाहर निकलेगा, सुख का सागर मचलेगा-2
दुख के जाये बिन हो-3 सुख कभी न आये रे-SS।।6032।।

(1235) जो ज्यादा गम सहता है, वही सुखों में रहता है-2
पुण्य कर्म में बहता है-SSS
दर्द भले दुख लाता है, पीछे सुख दिखलाता है-2
सुख ही जीवन में हो-3 निज शांति दिलाए रे-SS।।6033।।

(1236) कठिन परीषह सहते हैं, फिर भी हँसते रहते हैं-2
दुख को कभी न कहते हैं-SSS
मिला कभी नहिं करते हैं, सबके मन को हरते हैं-2
ऐसे ही साधु हो-3 निज धर्म बढ़ाए रे-SS।।6034।।

(1237) सत्य वही जन पाता है, जो सच में सत् ध्याता है-2
जिनवर के गुण गाता है-SSS
सत्य बिना भगवान नहीं, प्रभु बिन नहिं इंसान कहीं-2
सच में ये सत् ही हो-3 संसार मिटाए रे-SS।।6035।।

(1238) ज्ञान बिना सब अंधे हैं, सबके गोरखधन्धे हैं-2
भोग विषय के बंदे हैं-SSS
ज्ञान दुखों को दूर करे, सुख सागर मजबूत करे-2
ज्ञान में ज्ञानी हो - 3 आनंद मनाए रे-SS।।6036।।

(1239) दुख की जड़ अज्ञान अरे, ज्ञान सुखों की खान अरे-2
ज्ञान नहीं तो मरे फिरे-SSS
अज्ञानी को दुख ही दुख, ज्ञानी को है कभी न दुख-2
ज्ञानी सुख दुख में हो-3 समभाव दिखाये रे-SS।।6037।।

(1240) देने से जो बढ़ जाये, नहिं देने से सड़ जाये-2
अहं तिरोहित कर जाये-SSS
अहंकार ज्यों मिटता है, दीपक जिनका जलता है-2
ज्ञानी की महिमा हो-3 बढ़ती ही जाये रे-SS।।6038।।

(1241) ज्ञान कमल खिल सकता है, सार हमें मिल सकता है–2
ईश्वर भी दिख सकता है–ऽऽऽ
ज्ञानी सभी कर सकता है, अज्ञानी मर सकता है–2
ज्ञान पा करके हो–3 सब कुछ हथियाओ रे–ऽऽ।।6039।।

(1242) भीतर से बाहर आए, बाहर खुशबू बिखराए–2
ज्ञान यही तो कहलाए–ऽऽऽ
बाहर से भीतर जाए, ज्ञान नहीं वो कहलाए–2
ज्ञान भीतर का हो–3 सब कुछ दिखलाये रे–ऽऽ।।6040।।

(1243) उत्तम तीर्थों का वंदन, प्रभु की पूजा आराधन–2
शास्त्रों का होवे अध्ययन–ऽऽऽ
मंत्र–जाप और तपश्चरण, पूर्ण ज्ञान हो प्रकट सघन–2
इन सबसे ज्ञान हो–3 बढ़ता ही जाए रे–ऽऽ।।6041।।

(1244) खाते हुए नहीं खाता, जाते हुए नहीं जाता–2
सोते हुए नहीं सोता–ऽऽऽ
बोले फिर भी न बोले, ज्ञानी भव में न डोले–2
अज्ञानी इनमें हो–3 रमता ही जाए रे–ऽऽ।।6042।।

(1245) ज्ञान कमाल दिखाता है, दिल में लाल दिखाता है–2
हमें विशाल बनाता है–ऽऽऽ
ज्ञान बिना घर में अंधे, करते हैं गोरखधंधे–2
ज्ञानी खुद भव में हो–3 अचरज बन जाये रे–ऽऽ।।6043।।

(1246) ज्ञान बिना भव की भटकन, भटकन में भी दुख सघन–2
हरदम होता यहाँ पतन–ऽऽऽ
जतन करें तो ज्ञान मिले, फूलों का उद्यान खिले–2
ज्ञानी इस भव में हो–3 दुख कहीं न पाये रे–ऽऽ।।6044।।

(1247) ज्ञान विनम्र बनाता है, खुशियों के गुल लाता है–2
सच्चाई दिखलाता है–ऽऽऽ
ज्ञानी सेवक कर जाये, तभी समाधि कर पाये–2
ज्ञानी को सुख का हो–3 वैभव मिल जाये रे–ऽऽ।।6045।।

(1248) धन वैभव दिलवाता है, सच्ची राह दिखाता है–2
ईश्वर दर्श कराता है–ऽऽऽ
आँख तीसरी लाता है, ज्ञान वही कहलाता है–2
ज्ञान बिन इंसां हो–3 पशु ही कहलाए रे–ऽऽ।।6046।।

(1249) मंजिल ज्ञान दिखाता है, रस्ता वही बताता है–2
खुशियों के गुल लाता है–ऽऽ
ज्ञान बिना भटके प्राणी, ऐसा कहती जिनवाणी–2
आओ अब हम सब हो–3 वह ज्ञान सजाएँ रे–ऽऽ।।6047।।

(1250) जीवित करना धर्म हमें, तो हम पैदा ज्ञान करें–32
जिन गुरु का सम्मान करें–ऽऽऽ
परंपरा तब धर्म चले, सच्चाई का दीप जले–2
निज के अनुभव में हो–3 वह ज्ञान दिखाए रे – ऽऽऽ।।6048।।

(1251) मानव जीवन सार यहाँ, शिवपुर का आधार यहाँ – 2
इसके बिन संसार यहाँ–SSS
सार करे भव पार यहाँ, धर्म सभी का सार यहाँ –
सार बिन इंसां हो–3 भव भ्रमण बढ़ाए रे –SS।।6049।।

(1252) अज्ञानी दुख बोता है, बोझ दुखों का ढोता है,
जीवन अपना खोता है–SSS
दीपक ज्ञान जलाता है, खुशियाँ दिले खिलाता है
ज्ञान बिना इंसां हो–3 जग ठोकर खाए रे – SSS।।6050।।

(1253) ज्ञान जिसे नहिं हो पाये, कहीं नहीं वह सुख पाए–2
दुख से उभर नहीं पाए–SSS
ज्ञान करे भव पार यहाँ, धर्म सार का सार यहाँ–2
ज्ञान की महिमा हो–3 सब वेद सुनाएँ रे – SSS।।6051।।

(1254) अंधकार भटकाता है, राह नहीं दिखलाता है–2
सबको ही दुखदाता है–SSS
ज्ञानावरण जब होता है, सही आचरण खोता है–2
ज्ञानी इस जग में हो–3 सब पूज्य बताए रे – SSS।।6052।।

(1255) तत्त्वज्ञान जब होता है, कर्म कालिमा धोता है–2
परम उजाला होता है–SSS
धर्मबुद्धि हो जाती है, दिल का दीप जलाती है–2
ज्ञानी को जग में हो–3 सब ही मिल जाये रे – SSS।।6053।।

(1256) ज्ञान नेत्र खुल जाता है, दिखने में सब आता है–2
अदृश भी नजर आता है–SSS
ज्ञान कमल दिखाता है, अपना लाल खिलाता है–2
ज्ञानी इस जग में हो–3 करतब दिखलाए रे –SS।।6054।।

(1257) भाग्यवान् है मूल्य यहाँ, जीवन दिखा अमूल्य यहाँ–2
कुछ होता बहुमूल्य यहाँ–SSS
किस्मत से जीवन जोड़ो, भाग्य पे जीवन मत छोड़ो – 2
वरना ये जीवन हो–3, मंजिल नहिं पाये रे –SS।।6055।।

(1258) भटके रहे अंधरों में, चौरासी लख फेरों में–2
इन पुद्गल के डेरों में –SS
दुख ही दुख नजर आता है – सुख पल भर रह पाता है–2
ज्ञान जीवन में हो–3 सुख लहर दिखाए रे – SS।।6056।।

(1259) ईश्वर को दिखलाती है, पूजन पूज्य बनाती है–2
सच्ची राह दिखाती है–SSS
भाव सहित पूजन होवे, रत्नत्रय दिलवाती है–2
पूजन से प्राणी हो–3 सब पाप मिटाए रे – SS।।6057।।

(1260) श्रावक क्यूँ करता पूजन, भक्ति भाव से भाता गुण–2
क्यूँ करता प्रभु का दर्शन–SSS
ये सब पुण्य बढ़ाते हैं, हमें सफलता लाते हैं,
पावन हो पूजन हो–3 तो पूज्य बनाए रे – SS।।6058।।

(1261) अधर्म को जो व्रत समझे, अदेव को जो देव कहे–2
अगुरु को गुरु समझे–SSS
अधर्म जिसको धर्म लगे, तत्त्वों को जो नहिं समझे,
उसकी बुद्धि में हो–3 मिथ्यात्व समाये रे – SS।।6059।।

(1262) गलत कर्म जब आता है, गलत सही बतलाता है–2
समझ नहीं कुछ आता है–SSS
सच्चा जिसको गलत लगे, उसको कड़वा दूध लगे,
मन हो जब अच्छा हो–3 तब ही सब भाये रे– SS।।6060।।

(1263) अंकुर–बीज बिना कैसा, वर्षा मेघ बिना कैसी–2
छाया छत्र बिना कैसी–SSS
धर्म बिना है दुख ही दुख, धर्म दिलाता सच्चा सुख–2
धर्मी ही जग की हो–3 सम्पत्ति पाये रे –SS।।6061।।

(1264) दयाशील दिल को कर दे, मन में प्रेम धरम भर दे–2
सत्य अहिंसा मय कर दे–SSS
चिंतामणि है धर्म यहाँ, ऐसा कोई धर्म कहाँ?–2
धर्म इंसा को हो–3 ईश्वर दिखलाए रे –SS।।6062।।

(1265) अग्नि को पानी कर दे, मूरख को ज्ञानी कर दे–2
लोभी को दानी कर दे–SSS
भावों में शक्ति भर दे, धर्म सही युक्ति भर दे–2
धर्म से ऊँचा हो–3 कोई नहीं दिखाए रे –SS।।6063।।

(1266) इक मुर्दा चलकर जाये, इक मुर्दा लेटा आये–2
दोनों मुर्दे कहलाए–SSS
मुर्दा धर्म रहित इंसां, जीता धर्म रहित इंसा–2
धर्म भटके को हो–3 नई राह दिखाए रे–SS।।6064।।

(1267) दुख में हो तो धर्म करो, सुख में हो तो धर्म करो–2
धर्म किये बिन नहीं रहो–SSS
दुखियों को सुख दाता है, सुख में प्रभु मिलवाता है–2
धर्म जीवन को हो–3 खुशहाल बनाए रे–SS।।6065।।

(1268) उल्लू को नहिं सूर्य दिखे, मेंढक को नहिं हंस दिखे–2
कौए को नहिं चाँद दिखे–SSS
भवसुख हो या शिवसुख तो, धर्म बिना कुछ भी नहिं हो–2
धर्म इंसां को हो–3 सब कुछ दिलवाए रे–SS।।6066।।

(1269) उच्च कुलीन बनाता है, तन को शक्ति दिलाता है–2
विद्या बल यश लाता है–SSS
लंबी उम्र दिला करके, सारे रोग मिटाता है–2
धर्मी को धर्म हो–3 सौभाग्य दिलाए रे–SS।।6067।।

(1270) तीर्थंकर जब आते हैं, धरती स्वर्ग बनाते हैं–2
सबको धर्म दिखाते हैं–SSS
जीवित करके धर्म यहाँ, अजर अमर पद पाते हैं–2
उनकी महिमा को हो–3 सारा जग गाये रे–SS।।6068।।

(1271) लेकर आते धर्म यहाँ, समझाते हैं मर्म यहाँ–2
दिखलाते हैं कर्म यहाँ–ऽऽऽ
तीर्थंकर कहलाते हैं, शिवपुर राह दिखाते हैं–2
उनसे ही जग में हो–3 तीरथ बन जाए रे–ऽऽ।।6069।।

(1272) तीरथ करने जाता है, वो ही पाप मिटाता है–2
खुद को स्वस्थ बनाता है–ऽऽऽ
तीरथ यहाँ तिराता है, प्रभु के दर्श कराता है–2
तीरथ की यात्रा हो–3 सब दुक्ख मिटाए रे – ऽऽ।।6070।।

(1273) गर्भ में जब प्रभु आते हैं, देवरत्न वर्षाते हैं–2
सभी देव हर्षाते हैं–ऽऽऽ
खुशियाँ खूब मनाकर के, गर्भ कल्याण मनाते हैं–2
ऐसा करने से हो–3 बहु पुण्य बढ़ाएँ रे–ऽऽ।।6071।।

(1274) प्रभु जब गर्भ में आते हैं, सपने कई दिखाते हैं–2
निज भविष्य समझाते हैं–
ये हीरे वर्षायेंगे, तभी रत्न वर्षाते हैं,–2
इनकी महिमा को हो–3 ये दुनियाँ गाये रे–ऽऽ।।6072।।

(1275) लेते प्रभुवर जन्म यहाँ, हर्षाये सब देव यहाँ–2
चारों ओर हुई खुशियाँ–ऽऽऽ
लेकर गये सुमेरु पर, जल से नहलाए प्रभुवर–2
देव यूँ जन्म हो–3 कल्याण मनाएँ रे –ऽऽ।।6073।।

(1276) हुआ जन्म जब धरती पर, स्वर्ग उतर आया भू–पर–2
धर्म यहाँ पर हुआ प्रखर–ऽऽऽ
शची खूब ही हर्षाई, भक्ति मन में ले आई–2
भक्ति से देवी हो–3 भव से तर जाए रे –ऽऽ।।6074।।

(1277) जन्म सभी जन पाते हैं, मरण सभी कर जाते हैं–2
कोई मरण मिटाते हैं–ऽऽऽ
जो भी मरण मिटाते हैं, तीर्थंकर कहलाते हैं–2
प्रभुवर का जन्म हो–3 सुख शांति दिलाए रे–ऽऽ।।6075।।

(1278) जब वैराग्य उभरता है, संयम तभी उपजता है–2
दीप ज्ञान का जलता है–ऽऽऽ
देव लौकांतिक आते हैं, खूब यहाँ हर्षाते हैं–2
संयम के भाव हो–3 वे मन में लाए रे–ऽऽ।।6076।।

(1279) दीक्षा प्रभु जब लेते हैं, त्याग सभी कर देते हैं–2
चार ज्ञान वर लेते हैं–ऽऽऽ
संयम ध्यान दिलाता है, दिल में ज्ञान खिलाता है–2
संयम ही ज्ञान हो–3 सम्पूर्ण बनाए रे –ऽऽ।।6077।।

(1280) संयम के बिन ज्ञान कहाँ, ध्यान बिना है ज्ञान कहाँ–2
ज्ञान बिना भगवान कहाँ–ऽऽऽ
ज्ञान को पूर्ण बनाना है, तो संयम अपनाना है–2
संयम ज्ञानी की हो–3 ताकत बतलाए रे–ऽऽ।।6078।।

(1281) शुद्ध ध्यान जब आता है, पाप कर्म मिट जाता है–2
केवल ज्ञान समाता है–ऽऽऽ
लोकालोक नजर आए, दर्पणवत् सब दिख जाए–2
प्रभु की सेवा ही हो–3 नव ज्ञान दिलाए रे – ऽऽ।।6079।।

(1282) ध्यान हृदय में आता है, शुद्ध भाव हो जाता है–2
पूर्ण ज्ञान तब पाता है–ऽऽऽ
जो अनंत पर्यायों को, दर्पणवत् दिखलाता है–2
ऐसा ही ज्ञान हो–3 भव पार कराए रे – ऽऽ।।6080।।

(1283) निर्मल गुण को जाना है, समझो वही खजाना है–2
गुरु का यही बताना है–ऽऽऽ
जो अनंत पयार्यों को, दर्पणवत् दिखलाता है–2
ऐसा ही ज्ञान हो–3 भव पार लगाए रे – ऽऽ।।6081।।

(1284) शुक्ल ध्यान लगाते हैं, आठों कर्म मिटाते हैं–2
तभी सिद्धपद पाते हैं–ऽऽऽ
सिद्ध भूमि में जाकर के, कभी न भव में आते हैं–2
ऐसे सिद्धों को हो–3 हम शीश झुकाएँ रे–ऽऽ।।6082।।

(1285) आठों कर्म मिटाते हैं, तब सिद्धालय पाते हैं–2
ऐसा ऋषि बताते हैं–ऽऽऽ
गुण अनंत को पाकर के, कभी न भव में आते हैं–2
उनके गुण गाकर हो–3 हम कर्म नशाएँ रे –ऽऽ।।6083।।

(1286) दिल को ज्ञान खिलाता है, जिनवर से मिलवाता है–2
नई राह दिखलाता है–ऽऽऽ
ज्ञान बिना हम भटके हैं, इस दुनियाँ में अटके हैं–2
ज्ञानी उठता है हो–3 उठता ही जाए रे –ऽऽ।।6084।।

(1287) तू ऊँचा उड़ सकता है, आसमान छू सकता है–2
हर सीढ़ी चढ़ सकता है–ऽऽऽ
जरा यहाँ अरमान करो, हिम्मत से तुम काम करो–2
जीतेगा वो जो हो–3 हिम्मत दिखलाए रे–ऽऽ।।6085।।

(1288) तम में जी घबराता है, अंधापन ले आता है–2
सबको ही दुखदाता है–ऽऽऽ
रौशनमय दिल जो करता, वही अंधेरा कम करता–2
दिल में अंधियारा हो–3 गम खूब बढ़ाये रे–ऽऽ।।6086।।

(1289) किस्मत जब–जब खिलती है, तभी सफलता मिलती है–2
ज्योति ज्ञान की जलती है–ऽऽऽ
खुद में ही जो जीते हैं – वे ही अमृत पीते हैं–2
अमृत पीते ही हो–3 भव भ्रमण मिटाए रे–ऽऽ।।6087।।

(1290) जल्दी उठ प्रभु नाम जपो, सोते–सोते नहीं जियो–2
अपना धर्म विचार करो–ऽऽऽ
समय कीमती समझ यहाँ, सोने में है समय कहाँ–2
जल्दी उठ जाये हो–3 प्रभु दर्शन पाये रे–ऽऽ।।6088।।

(1291) आदत भव भटकाती है दुख का मार्ग दिखाती है-2
जीना नहीं सिखाती है-SSS
अच्छे होते भाव जभी, ये आदत मिट जाती है-2
तब ही इस मन में हो-3 शुभ भाव समाए रे-SS।।6089।।

(1292) उसने हमको बहुत दिया, हमने कुछ भी नहीं किया-2
जला न पाया दिले दिया-SSS
अच्छा कभी न ज्ञान लिया, दुख में हरदम रहा जिया-2
ऐसे जीकर के हो-3 कुछ कहीं न पाए रे-SS।।6090।।

(1293) वो हमको सब देता है, मुझसे वो ले लेता है-2
अवसर सबको देता है-SSS
मानव जीवन अवसर है, इसमें ज्ञान सरोवर है-2
इसमें नहिं पाया हो-3 तो कहीं न पाए रे-SS।।6091।।

(1294) सोचे वैसा हो जाए, जैसा चाहे मिल जाए-2
देर नहीं लगने पाए-SSS
चाहते ऐसा यहाँ सभी, होता ऐसा कभी-कभी-2
किस्मत हो अच्छी तो हो-3 झट हो जाए रे -SS।।6092।।

(1295) कोई भी तुम काम करो, उसका सच्चा ज्ञान करो-2
फल पर खूब विचार करो-SSS
जो पहले नहिं सोचेगा, वही बाद में भोगेगा-2
बुद्धि का निर्णय हो-3 सद्भाव दिखाए रे-SS।।6093।।

(1296) बुद्धि लक्ष्य बनाती है, निर्णय वही कराती है-2
तब पथ पर चल पाती है-SSS
जब विवेक मन आता है, काम सही करवाता है-2
दोनों मिलकर के हो-3 मंजिल दिखलाए रे-SS।।6094।।

(1297) ये तन एक खिलौना है, बुद्धि ने पहचाना है-2
तब विवेक ने माना है-SSS
सार यहाँ जो पाता है, वो संसार मिटाता है-2
बुद्धि इंसां को हो-3 सद्बुद्ध बनाए रे-SS।।6095।।

(1298) बुद्धि के आयाम निरे, धन चिंता आराम अरे-2
दुख के सारे काम करे-SSS
सही तत्त्व जब पाती है, जीवन सफल बनाती है-2
बुद्धि बिन इंसां हो-3 हरदम दुख पाए रे-SS।।6096।।

(1299) जिसको अच्छी बुद्धि मिले, उसमें सारी सिद्धि दिखे-2
संत बने तो ऋषि मिले-SSS
केवलज्ञान दिलाती है, ये भगवान बनाती है-2
बुद्धि निज बल से हो-3 बहु काम बनाए रे-SS।।6097।।

(1300) बुद्धिमान सब पाते हैं, बुद्धु सभी गँवाते हैं-2
ऐसा सभी बताते हैं-SSS
बुद्धि पाकर तत्त्व लिखे, बस जीवन का सार बढ़े-2
ईश्वर मिलने पर हो-3 सब ही मिल जाए रे-SS।।6098।।

(1301) पूजन आराधन कर लो, सारे ग्रंथों को रट लो–2
सारे सवाल हल कर लो–SSS
बुद्धि विवेक नहीं होगा, तो फिर इनसे क्या होगा–2
बुद्धि बिन ये सब हो–3 सिर भार बताए रे–SS॥6099॥

(1302) करना पूजादान यहाँ, गुरुओं का सम्मान यहाँ–2
जिनवर का गुणगान यहाँ–SSS
इन सबसे मन पावन हो, हृदय साफ मन भावन हो–2
मन की निर्मलता हो–3 निज सार दिखाए रे–SS॥6100॥

(1303) करते व्रत उपवास यहाँ, गुरुओं पर विश्वास यहाँ–2
नहीं छोड़ते राग यहाँ–SSS
पावन मन नहिं हो पाये, पुण्य सार कैसे आये–2
जीवन का सार हो–3 संसार मिटाए रे–SS॥6101॥

(1304) सुख पाने की एक कला, आप भले तो जगत भला–2
दिल में प्रभु का दीप जला–SSS
हँसकर जीवन जिओ सदा, अंत भला तो सभी भला–2
ज्ञानी इस जग में हो–3 सच्चा सुख पाए रे–SS॥6102॥

(1305) पर को जब हम चाहेंगे, तब हम संभल पाएँगे–2
कभी न सच लख पायेंगे–SSS
सच की चाह रखें मन में, उसे मिले सच दर्शन में–2
प्रभु के बिन कोई हो–3 नहिं सच दिखलाए रे– SS॥6103॥

(1306) छोटी चाह रखे मन में, मुक्त न होवे भव वन में–2
दुखियारे इस जीवन में–SSS
ऊँची चाहत दिल में हो, उसको खुद ही मिलें प्रभो–2
प्रभु के मिलते ही हो–3 चाहत मिट जाए रे–SS॥6104॥

(1307) दिन में पूजन करते हैं, जीव रात में मरते हैं–2
ऐसा ऋषिजन कहते हैं–SSS
अष्ट दरब को लाते हैं, हम सब प्रभु गुण गाते हैं–2
गुण को गाने से हो–3 प्रभु गुण मिल जायें रे–SS॥6105॥

(1308) पूजन पूज्य बनाती है, जिनवर से मिलवाती है–2
दिल का फूल खिलाती है–SSS
समदर्शन का कारण है, भव्यों को भव तारण है–2
प्रभुवर की पूजन हो–3 प्रभु मिलन कराए रे–SS॥6106॥

(1309) नृत्य यहाँ करने आता, भूल वो सारा जग जाता–2
मन भक्ति से भर जाता–SSS
पूजन में गुण गाते हैं, भक्ति में गुण पाते हैं–2
भक्ति भव्यों को हो–3 भव पार कराए रे–SS॥6107॥

(1310) ठहरोगे सड़ जाओगे, काम कभी न आओगे–2
सड़ दुर्गन्ध बढ़ाओगे–SSS
संयम लेकर चलता जा, सारे काँटे दलता जा–2
तब ही निजघर की हो–3 सद्राह दिखाए रे–SS॥6108॥

(1311) आकर रुक मत जाना तुम, आगे बढ़ते जाना तुम–2
अपने कदम बढ़ाना तुम–ऽऽऽ
जब जब कदम बढ़ाओगे, नई विधा को पाओगे–2
बढ़ने वाले को हो–3 मंजिल मिल जाये रे–ऽऽ।।6109।।

(1312) रस्ते में रुक जाओगे, मंजिल कभी न पाओगे–2
कई ठोकरें खाओगे–ऽऽऽ
रुकने में सम्मान नहीं, अनुभव करके देख यहीं–2
बहता हो पानी हो–3 तो शुद्ध कहाए रे–ऽऽ।।6110।।

(1313) ज्ञान नहीं हो पाएगा, समाधान नहीं पाएगा–2
अज्ञानी रह जाएगा–2
ज्ञानी का सम्मान करो, ज्ञान हमेशा हृदय धरो–2
ज्ञान ही सबको हो–3 खुशहाल बनाये रे–ऽऽ।।6111।।

(1314) पिछी कमण्डल धारी हैं, वे सबको सुखकारी हैं–2
दुखियों को उपकारी हैं–ऽऽऽ
जहाँ–जहाँ वे रहते हैं, मंत्र सुखों के कहते हैं–2
गुरुवर की वाणी हो–3 निर्वाण दिलाए रे–ऽऽ।।6112।।

(1315) जिसको पिच्छी मिल जाती, उसकी किस्मत खिल जाती–2
ज्ञानमयी जलती बाती–ऽऽऽ
जीवों पर उपकार करें, पाप कर्म को साफ करे
पिच्छी वाला ही हो–3 प्रभु दिल में पाये रे–ऽऽ।।6113।।

(1316) छोटे जीव बचाती है, सबको धर्म सिखाती है–2
आशीर्वाद दिलाती है–ऽऽऽ
मुनियों की पहिचान यही, कुंद कुंद ने बात कही–2
इंसां को पिच्छी हो–3 भगवान बनाये रे–ऽऽ।।6114।।

(1317) पिच्छी जिसको मिल जाए, उसकी किस्मत खुल जाये–2
दीप ज्ञान का जल जाए–ऽऽऽ
पिच्छी धर्म दिलाती है, निर्मल भाव बनाती है–2
हाथों में आये हो–3 तो मुक्ति दिलाए रे–ऽऽ।।6115।।

(1318) पिच्छी सर पर रख जाए, उसका भाग्य बदल जाए–2
गुल सा जीवन खिल जाए–ऽऽऽ
तन–मन करे पवित्र यहाँ पैदा करे चरित्र यहाँ–2
पिच्छी संतों की हो–3 महिमा दिखलाए रे –ऽऽ।।6116।।

(1319) मेहनत जब रंग लाती है, किस्मत साथ निभाती है–2
काम सफल करवाती है–ऽऽऽ
किस्मत हो कमजोर यहाँ, तब मेहनत में जोर कहाँ–2
मेहनत और किस्मत हो–3 मंजिल दिखलाए रे–ऽऽ।।6117।।

(1320) कर्म कराता कर्म यहाँ, कर्म दिखाता धर्म यहाँ–2
कर्म मिटाता पाप यहाँ–ऽऽऽ
सुख–दुख दृश्य दिखाता है, वही दिखाता मर्म यहाँ – 2
धर्म की राहें हो–3 हो शुभ कर्म दिखाएँ रे–ऽऽ।।6118।।

(1321) कर्म साथ में जाएगा, अच्छा बुरा दिखाएगा–2
सब संयोग मिलाएगा–ऽऽऽ
कर्म बिछाता फूल यहाँ, वही बिछाता शूल यहाँ–2
कर्मों के आगे कुछ नहिं हो–3 चल पाए रे–ऽऽ॥6119॥

(1322) किस्मत से सब मिलता है, मिलते ही मन खिलता है–2
निज अनुभव तब दिखता है–ऽऽऽ
भाग्य मिला उपयोग करो, जिन गुरु का संयोग करो–2
गुरु केमिलते ही हो–3 मन खिल–खिल जायेरे–ऽऽ॥6120॥

(1323) जिनवर गुरु की सेवा कर, व्रत पूजा सामायिक कर–2
मन में इच्छाएँ मत धर–ऽऽऽ
गुण पाने की चाहत कर, ज्ञानी बन आराधन कर–2
तब ही इच्छाएँ हो–3 सब गुण बन जायें रे–ऽऽ॥6121॥

(1324) गुरु की भक्ति लाएगा, तन मन सुंदर पाएगा–2
तन के रोग मिटाएगा–ऽऽऽ
प्रभु की सेवा करता जो, वो सम्यक्त्व समाएगा–2
सम्यक् पाते ही हो–3 मन खिल–खिल जाए रे–ऽऽ॥6122॥

(1325) भक्तामर जो गायेगा, अपना ज्ञान बढ़ाएगा–2
सम्यग्दर्शन पाएगा–ऽऽऽ
अपने दुक्ख मिटाकर के, जीवन में सुख पाएगा–2
प्रभु की भक्ति से हो–3 किस्मत बन जाए रे–ऽऽ॥6123॥

(1326) शुद्ध नहीं पढ़ पाएगा, अर्थ समझ नहिं आएगा–2
भाव नहीं भर पाएगा–ऽऽऽ
भाव बिना हो धर्म क्रिया, अच्छा फल नहिं पाएगा–2
भावों से प्राणी हो–3 उत्तम फल पाये रे–ऽऽ॥6124॥

(1327) लघुता मन में लाएगा, जो चाहे वो पाएगा–2
ज्ञान स्वयं बढ़ जाएगा–ऽऽऽ
लघुता प्रभुता दिलवाये, इक दिन प्रभु से मिलवाये–2
लघुता से बुद्धि हो–3 शुद्धि हो जाये रे–ऽऽ॥6125॥

(1328) जब विनम्र मन हो जाए, ज्ञान स्वयं ही भर जाये–2
ज्ञानी ऐसा कर जाये–ऽऽऽ
अहंकार जब आता है, ज्ञान स्वयं जल जाता है–2
नम्र भावों में हो–3 खुश्बू महकाये रे–ऽऽ॥6126॥

(1329) हो कषाय जब भावों में, बुद्धि घटे हर ख्वाबों में–2
दम नहिं रहे जवाबों में–ऽऽऽ
होता जब मन शुद्ध यहाँ, बढ़ता ज्ञान विशुद्ध यहाँ–2
लघुता पाते ही हो–3 मन खिल–खिल जाये रे–ऽऽ॥6127॥

(1330) पल–पल जीवन में धोखा, मुश्किल से मिलता मौका–2
श्रावक करता है चौका–ऽऽ
मौके को इंसा चूके, उसको सारा जग थूके–2
मौका मिलते ही हो – 3, मन को सुलझाओ रे–ऽऽ॥6128॥

(1331) पहले तन को मंदिर ला, फिर इसको कुछ खिला पिला–2
दिल का दीपक जला भला–ऽऽ
दर–दर की ठोकर मत खा, एक बार प्रभु के गुण गा–2
दुनियाँ की जन्नत हो–3 खुद ही पा जाये रे–ऽऽ।।6129।।

(1332) कुत्ते की मत जात दिखा, अपना तू पुरुषार्थ दिखा–2
भय हो जाये रफा–दफा–ऽऽ
गुरु का संग हमेशा कर, इस दुनियाँ से कभी न डर–2
भय का भय यारो हो–3 भय और बढ़ाए रे–ऽऽ।।6130।।

(1333) सुख पाने को रोते हैं, बीज गमों के बोते हैं–2
ऊँचे ख्वाब संजोते हैं–ऽऽ
संयम के अरमान यहाँ, देता सम्यग्ज्ञान यहाँ–2
सुख को पाने की हो–3 मुनि राह बतायें रे–ऽऽ।।6131।।

(1334) पुण्य नहीं गर सत्ता में, इष्ट वस्तु नहिं बस्ता में–2
गुजरे हालत खस्ता में–ऽऽ
कर ले लाख जतन आकर, पुण्य बिना नौकर चाकर–2
पुण्य के फल में हो–3 सारे मिल जायें रे–ऽऽ।।6132।।

(1335) जग मेले में मेले हैं, कितने यहाँ झमेले हैं–2
फिर भी सभी अकेले हैं–ऽऽ
गंदे खाते बंद करो, गुरुओं से अनुबंध करो–2
तब ही जीवन में हो–3 इक गुल खिल पाये रे–ऽऽ।।6133।।

(1336) जहाँ–जहाँ मुनि जाते हैं, ज्ञान का धन वर्षाते हैं–2
खुशियों को बिखराते हैं –ऽऽ
जहाँ न हो मुनि का आदर, उसकी फटी हुई चादर–2
ऐसे ही लोग हो–3 सम्मान न पाएँ रे–ऽऽ।।6134।।

(1337) कोमल हमें बनाती है, दिल का दीप जलाती है–2
राह सही दिखलाती है–ऽऽ
हल्का हमें बना करके, अंतस् ज्ञान बढ़ाती है–2
पीछी ही भव से हो–3 पीछा छुड़वाए रे–ऽऽ।।6135।।

(1338) जीवन बहता पानी है, एक पड़ाव जवानी है–2
इसमें जात दिखानी है–ऽऽ
भूल करे तो हानि है, जीना एक कहानी है–2
पल में ही क्या से हो–3 क्या–क्या हो जाये रे–ऽऽ।।6136।।

(1339) जीवन नया बनाना है, तो कर्त्तव्य सजाना है–2
संस्कार अपनाना है–ऽऽ
महका–महका जीवन हो, स्वर्गों सा घर उपवन हो–2
तब ही जीवन का हो–3 आधार दिखाये रे–ऽऽ।।6137।।

(1340) छोड़ो सभी प्रमाद यहाँ, दिल करले दिलशाद यहाँ–2
होगा तब आबाद यहाँ–ऽऽ
दिल को मत नाशाद करो, खुद को ही ईजाद करो–2
खुद में खुदा की हो–3 खुशबू महकाए रे–ऽऽ।।6138।।

(1341) दुनियाँ का रंग चढ़ जाये, वो इंसां भटकन पाये-2
हरदम खुद में पछताए-SS
रंग संग सब छोड़ यहाँ, ढंग से नाता जोड़ यहाँ-2
अंतस् के रंग में हो-3 सब कुछ दिख जाए रे-SS।।6139।।

(1342) पाया-उसको खोना है, खाक सुपुर्दे होना है-2
ऐसा सोच सलौना है-SS
ये तन एक खिलौना है, सुख का बीज पिरोना है-2
अपने इस तन को हो-3 शुभ खेल खिलाओ रे-SS।।6140।।

(1343) आकर रुक मत जाना तुम, आगे बढ़ते जाना तुम-2
आगे कदम बढ़ाना तुम-SS
जब जब कदम बढ़ाओगे, नई विधा खुद पाओगे-2
बढ़ने वाले को हो-3 मंजिल मिल जाये रे-SS।।6141।।

(1344) ठहरोगे सड़ जाओगे, काम कभी ना आओगे-2
सड़, दुर्गन्ध बढ़ाओगे-SS
संयम लेकर चलता जा, सारे काँटे दलता जा-2
तब ही निज घर की हो-3 सद्राह दिखाये रे-SS।।6142।।

(1345) प्रभु भक्ति को लाएगा, इस भव से तिर जाएगा-2
ज्ञान बढ़ाता जाएगा - SSS
सारे दुःख मिटाकर के, मंजिल अपनी पाएगा-2
भक्ति हम सबको, हो-3 भव पार कराए रे - SS।।6143।।

(1346) स्वाभिमान का पान करें, अपना ही सम्मान करें-2
कभी नहीं अभिमान करें-SS
मृदुता सबको भाती है, दिल का कमल बनाती है-2
दिल गुल बनते ही हो-3 ईश्वर दिख जाये रे-SS।।6144।।

(1347) नये वर्ष का नया दिवस, आज के दिन खुश होकर हँस-2
पापों में तू कभी न फँस-SS
नया काम कुछ कर जाओ, जाओ उठ करके जाओ-2
धर्म से जीवन हो-3 ऊपर उठ जाये रे-SS।।6145।।

(1348) दुःख में ही सुख पलता है, फूल, शूल में खिलता है-2
मेहनत बिन क्या मिलता है-SS
संघर्षों के साये में, दिल का दीपक जलता है-2
दीपक जलते ही हो-3 तम खुद भग जाये रे-SS।।6146।।

(1349) तृष्णा चाट गई भोजन, चिंता ने चाटा ये तन-2
अपनों ने छोड़ा दामन-SS
माया के इन जालों में, लोभी मतवाला ये मन-2
मन की सब चाहत हो-3 बेकार दिखाए रे-SS।।6147।।

(1350) होती दिल में इच्छाएँ, चारों गति में भटकाएँ -2
चौरासी लख पर्यायें-SS
जितनी इच्छाएँ कम हों, उतने जन्म यहाँ कम हों - 2
धर्म की हत्या हो-3 इच्छा करवाये रें-SS।।6148।।

(1351) जल्दी पुण्य बढ़ा लें हम, गम को सभी मिटा लें हम–2
जीवन को कर लें शबनम–SS
जीवन चलती रेल यहाँ, कितने दिन का खेल यहाँ–2
चलती ये गाड़ी, हो–3 कब ठप्प हो जाये रे–SS।।6149।।

(1352) संतों का जब मेला हो, चारों ओर उजेला हो–2
दृश्य बड़ा अलबेला हो–SS
सारा दूर झमेला हो, अनुभव की शुभ बेला हो–2
साधु मिलते ही हो–3 मन खिल–खिल जाये रे–SS।।6150।।

(1353) मृदुता मन में आती है, सभी गुणों को लाती है–2
दिल में फूल खिलाती है–SS
जो दिल में अभिमान धरे, वो जीवन में रहे मरे–2
मानी मर–मरके हो–3 भव भ्रमण बढ़ाए रे–SS।।6151।।

(1354) समझ–समझ कर जीना है, ज्ञानामृत को पीना है–2
सच का दर्श नगीना है–SS
सुलग–सुलग कर जीता जो, जहर हमेशा पीता वो–2
ऐसे प्राणी को हो–3 नहिं सार दिखाये रे–SS।।6152।।

(1355) प्रश्न मरण का नहीं यहाँ, जीना ही इक प्रश्न यहाँ–2
कैसे जीकर रहे यहाँ–SS
शौकत–शान दिखाने में, चमक दमक को पाने में–2
भीतर का कोई हो–3 नहिं सार दिखाये रे–SS।।6153।।

(1356) चिंता चिता बनाती है, जिंदा यहाँ जलाती है–2
विषयों में दफनाती है–SS
चिंतन–चिंता दूर करें, सहनशक्ति मजबूत करे–2
चिंतन बिन कोई हो–3 नहिं राह दिखाए रे–SS।।6154।।

(1357) जब हम करते कर्म यहाँ, तब पाते हैं जन्म यहाँ–2
जन्म मरण के दु:ख यहाँ–SS
अच्छे होते कर्म अगर, अच्छी मिलती उसे डगर–2
जन्म को पाकर हो–3 ये जन्म मिटाओ रे–SS।।6155।।

(1358) श्रद्धा और विश्वास यहाँ, दोनों अपने पास यहाँ–2
लगते हैं ये खास यहाँ–SS
श्रद्धा ही गुणकारी है, पर विश्वास विचारी है–2
श्रद्धा को पाकर हो–3 मन शांत बनाओ रे– SS।।6156।।

(1359) संत समागम पाता है, पुण्यवान कहलाता है–2
थोड़ा सुख वो पाता है–SS
गुरुओं का नहिं संग मिले, कैसे उसका हृदय खिले–2
वाणी जीवन का हो – 3 अमृत पिलवाए रे–SS।।6157।।

(1360) गुरु के बिन नहिं दीप जले, कभी न दिल का फूल खिले–2
मुक्ति का नहिं दूत मिले–SS
अंधकार जब जाता है, तब दीपक जल जाता है–2
दिल ही जिनवर का हो–3 दीदार कराए रे–SS।।6158।।

(1361) मन को जो भर जाते हैं, वे ज्ञानी कहलाते हैं–2
जग में पूजे जाते हैं–ऽऽ
मन ही मन को जानेगा, जब खुद को पहिचानेगा–2
दिल को मन जाने हो – 3 दिलवर पा जाए रे–ऽऽ।।6159।।

(1362) क्रोधी जलता रहता है, सबको खलता रहता है–2
दु:ख में पलता रहता है–ऽऽ
सारा चैन मिटाता है, बैचेनी ही लाता है–2
क्रोध जब आये हो – 3 काला कर जाए रे–ऽऽ।।6160।।

(1363) गुस्सा चेहरे पर आये, बंदर सा मुँह कर जाए–ऽऽ
तन में आग लगा जाये–ऽऽ
अंतस् ज्ञान जलाता है, तन की ताकत खाता है–2
क्रोधी दुनिया में हो–3 कमजोर बताएँ रे–ऽऽ।।6161।।

(1364) क्रोध जलाता है तन को, अपने ही सुंदर मन को–2
गुणधारी इस चेतन को–ऽऽ
ऐसा ज्ञान उपायें हम, हो जाए सब क्रोध खतम–2
क्रोधी घर में भी हो–3 सुख शांति न पाए रे–ऽऽ।।6162।।

(1365) चिंता करते जीते हैं, चिंता में ही मरते हैं–2
चिंतन कभी न करते हैं–ऽऽ
आओ चिंता दूर करें, चिंतन हम भरपूर करें–2
चिंतन चिंता को हो–3 खुद दूर भगाए रे–ऽऽ।।6163।।

(1366) जो भी उसका ध्यान रखे, उसको उसका ध्यान रहे–2
सब उसका सम्मान करें–ऽऽ
जो प्रतिमा बनवाता है, वो प्रतिमा बन जाता है–2
भावों के बल पर हो–3 सब ही फल पाए रे–ऽऽ।।6164।।

(1367) धर्म ध्वजा फहराता है, धर्मी तब हर्षाता है–2
गीत खुशी के गाता है–ऽऽ
पूर्व दिशा का धन लाता, उत्तर का सब सुख दाता–2
धर्मी इस ध्वज से हो–3 अनुमान लगाए रे–ऽऽ।।6165।।

(1368) धर्मोत्सव में आता है, वो ही पुण्य बनाता है–2
जीवन नया बनाता है–ऽऽ
शांति सुखों को पाता वो, दिल में धर्म सजाता वो–2
प्रतिमा को लेकर हो–3 प्रतिभा जग जाये रे–ऽऽ।।6166।।

(1369) प्रभु जब गर्भ में आते हैं, धर्मी सब हर्षाते हैं–2
देव रत्न वर्षाते हैं–ऽऽऽ
सभी जीव सुखमय होते, तीर्थंकर दर्शन होते–2
ऐसे प्रभु को हम हो–3 कल्याण मनाएँ रे–ऽऽ।।6167।।

(1370) जीने का आधार मिले, हमें धर्म का सार मिले–2
जब तीर्थंकर द्वार मिले–ऽऽ
सबसे उत्तम प्राणी है, तीर्थंकर कल्याणी हैं–2
इनको जो ध्याये हो–3 वो सब कुछ पाये रे–ऽऽ।।6168।।

(1371) आयें तो मन हर्षाये, जाएँ तो मन हर्षाए–2
जहाँ रहें खुशियाँ आयें–ऽऽ
जिनका नाम तिराता है, खुशियों को दिखलाता है–2
उनका कल्याणक हो–3 हम सभी मनाएँ रे–ऽऽ।।6169।।

(1372) जीते और जिलाते हैं, सबके दीप जलाते हैं–2
नई रोशनी लाते हैं–ऽऽ
सम्यग्दर्श दिखाते हैं, सबके दु:ख मिटाते हैं–2
ऐसे तीर्थंकर हो–3 जग तीर्थ बनाएँ रे–ऽऽ।।6170।।

(1373) जन्म–मरण का दौर यहाँ, किसका कितना ठौर यहाँ–2
रहना कितना और यहाँ–ऽऽ
तन तो एक खिलौना है, इसको मिट्टी होना है–2
इसको पाकर के हो–3 निज ज्ञान बढ़ाओ रे–ऽऽ।।6171।।

(1374) जन्म सभी को मिलता है, दीप किसी का जलता है–2
मार्ग किसी को मिलता है–ऽऽ
जन्म मिला पर धर्म नहीं, तो फिर अच्छा कर्म नहीं–2
धर्म से जीवन हो–3 सब कुछ पा जाए रे–ऽऽ।।6172।।

(1375) भगवन् ने धरती देखी, धरती ने उसको देखा–2
बदली किस्मत की रेखा–ऽऽ
खुशहाली सब ओर हुई, धन वर्षा घनघोर हुई–2
भगवन् जब आये हो–3 सब देव पधारे रे–ऽऽ।।6173।।

(1376) जन्म सभी जन पाते हैं, कोई सफल बनाते हैं–2
ज्यादा व्यर्थ गँवाते हैं–ऽऽ
तीर्थंकर का जन्म यहाँ, दिखलाता है धर्म यहाँ–2
प्रभुवर आते ही हो–3 खुशियाँ छा जाएँ रे–ऽऽ।।6174।।

(1377) जब हम तप को तपते हैं, तब ही यारो पकते हैं–2
संयम धारण करते हैं–ऽऽ
बिन संयम कल्याण नहीं, तीर्थंकर ने कहा यही–2
संयम प्राणी को हो–3 भव पार कराये रे–ऽऽ।।6175।।

(1378) संयम सुंदर गहना है, गुणीजनों ने पहना है–2
तीर्थंकर का कहना है–ऽऽ
मन इंद्रिय का रोध करे, अंतर जीवन शोध करे–2
संयम सुंदर सा हो–3 निज ध्यान कराए रे–ऽऽ।।6176।।

(1379) प्रभु आहार को जाते हैं, श्रावक सभी बुलाते हैं–2
खुशियाँ सभी मनाते हैं–ऽऽ
होते हैं आहार जहाँ, इन्द्र रत्न वर्षाएँ वहाँ–2
देते आहार हो–3 वो भव्य कहाएँ रे–ऽऽ।।6177।।

(1380) दान नहीं आहार दिया, तो आकर के व्यर्थ जिया–2
उसने केवल कर्म किया–ऽऽ
देता है जो हँस करके, वो उसको दे हँसकर के–2
हँसकर मिल जाये हो–3 तो रब दिख जाये रे–ऽऽ।।6178।।

(1381) समवशरण महिमा न्यारी, ओंकार ध्वनि अति प्यारी–2
सब प्राणी को सुखकारी–ऽऽ
दिव्य ध्वनि को पाता है, शिवपुर वो पा जाता है–2
भगवन् की पूजा हो–3 सब लोग रचाएँ रे–ऽऽ।।6179।।

(1382) पाप नाशकर ध्यान किया, केवलज्ञान प्रकाश किया–2
तब सबने गुणगान किया–ऽऽ
आठ कर्म जब हुए खतम, तभी हुए प्रभु सिद्धातम–2
फिर वो दुनियाँ में हो–3 अब कभी न आए रे–ऽऽ।।6180।।

(1383) ज्ञान गुरु से मिलता है, हृदय कमल भी खिलता है–2
दिल का दीपक जलता है–ऽऽ
जब गुरु का आशीष मिले, मानो तब सब मिलता है–2
गुरु के चरणों में हो–3 जन्नत मिल जाए रे–ऽऽ।।6181।।

(1384) तिरते स्वयं तिराते हैं, गम से सुख को लाते हैं–2
वे गुरुवर कहलाते हैं–ऽऽ
आशीष देकर जाते हैं, खुशी वही बिखराते हैं–2
गुरु का आशीष हो–3 भव पार लगाए रे–ऽऽ।।6182।।

(1385) चरणों की रज मिल जाती, किस्मत खुद ही खिल जाती–2
उसकी गति सुधर जाती–ऽऽ
सभी समाया चरणों में, गुरुवर के आचरणों में–2
गुरुवर की महिमा हो–3 सब संत सुनाएँ रे–ऽऽ।।6183।।

(1386) गुरुवर आँख दिखाते हैं, शिष्य काँप से जाते हैं–2
आँख स्वयं पा जाते हैं–ऽऽ
गुरु की मिलती डाँट जभी, खुलती भीतर आँख तभी–2
खुलती जब आँख हो–3 तो सब दिख जाये रे–ऽऽ।।6184।।

(1387) मनी बिगाड़े इस मन को, स्वस्थ मयी सुन्दर तन को–2
बचपन और युवापन को–ऽऽ
मन में जब तक नहीं मनी, दिल है तब तक हनी–हनी–2
मन की जो माने हो–3 वो महल न पाये रे–ऽऽ।।6185।।

(1388) मनी बिगाड़े सारा मन, स्वस्थमयी सुंदर ये तन–2
यौवन बचपन बूढ़ापन–ऽऽ
मनी बिना मन महा रतन, मनी बिना मन करे जतन–2
मन हो गर मौनी, हो–3 तो मनी न पाये रे–ऽऽ।।6186।।

(1389) धन की खातिर जीता है, धर्म कर्म से रीता है–2
मोही मदिरा पीता है–ऽऽ
धर्म हृदय जो लाता है, वो जग में सब पाता है–2
धर्मी को यारो हो–3 सब कुछ मिल जाए रे–ऽऽ।।6187।।

(1390) धन की चाहत करता है, उसमें जीता मरता है–2
मन को दुःख से भरता है–ऽऽ
मन खुश हो जब धर्म करे, अच्छे–अच्छे कर्म करे–2
मन में हो खुशियाँ हो–3 तो प्रभु मिल जाएँ रे–ऽऽ।।6188।।

(1391) मन से दिल मिल जाता है, मन गुल सा खिल जाता है–2
नया प्रकाश दिखाता है–ऽऽ
मन को यंत्र समान कहा, दिल को मंत्र समान कहा–2
यंत्र पे मंत्र हो–3 सब काम बनाए रे–ऽऽ।।6189।।

(1392) मन ही मन अच्छा हो मन, मन ही मन में बुरा हो मन–2
मन को समझें ज्ञानी जन–ऽऽ
मन को शान्त कराता जो, पूर्णज्ञान भी पाता वो–2
मन की बेचैनी हो–3 अब दुक्ख बढ़ाए रे–ऽऽ।।6190।।

(1393) मन मिन्नत करवाता है, दिल दिलवर मिलवाता है–2
दिल ही सच कहलाता है–ऽऽ
झूठ बोलता सारे मन, सच बोले वो ही भगवन्–2
अपने इस मन को हो–3 दिल से मिलवाओ रे–ऽऽ।।6191।।

(1394) जो प्रभु भक्ति लाता है, जीवन को महकाता है–2
भगवन् के गुण गाता है–ऽऽ
जो गुरु भक्ति नहिं लाए, वो क्या आकर कर पाये–2
भक्ति पूजन से हो–3 जीवन खिल जाये रे–ऽऽ।।6192।।

(1395) क्या लाया क्या ले जाये, समझ न कुछ तेरे आये–2
पर को अपना बतलाए–ऽऽ
जिसको तू अपना कहता, भक्ति में वो दिख जाता–2
भक्ति से बढ़कर हो–3 कुछ नहीं दिखाए रे–ऽऽ।।6193।।

(1396) दु:ख के बाद मिलेगा सुख, पहले दु:ख में खोजो सुख–2
बदलो अपने दिल का रुख–ऽऽ
दु:ख सुख लेकर आता है, फिर भी तू घबराता है–2
दु.:ख के आँगन में हो–3 अच्छे गुल आएँ रे–ऽऽ।।6194।।

(1397) दु:ख में सुख की छाया है, ऋषियों ने बतलाया है–2
ये चिंतन की माया है–ऽऽ
दु:ख में से सुख निकलेगा, कभी न फिर दु:ख मचलेगा–2
सुख बिन ये जीवन हो–3 दु:ख दर्द बताएँ रे–ऽऽ।।6195।।

(1398) तन धन में कुछ सार नहीं, जीने का आधार नहीं–2
चेतनमय व्यापार नहीं–ऽऽ
प्रभु आराधन कर ले रे, अपने ही गुण भर ले रे–2
अपने ही गुण में हो–3, कुछ सार दिखाए रे–ऽऽ।।6196।।

(1399) संत चरण में आता है, वही आचरण पाता है–2
जीवन सफल बनाता है–ऽऽ
साधु सेवा कर जाये, वो सच का दर्पण पाये–2
संतों की सेवा हो –3 भव पार लगाए रे–ऽऽ।।6197।।

(1400) अतिशय क्षेत्र सुहाता है, जब संतों को पाता है–2
पावन मय हो जाता है–ऽऽ
संत साधना कर लेता, चमत्कार वह भर लेता–2
उसके वंदन में हो–3 सुख शांति समाए रे–ऽऽ।।6198।।

(1401) खिला-पिलाकर इस तन को, रमा दिया इसमें मन को-2
भूला खुशियों के ढंग को-SS
जिये जिंदगी भर लेकिन, समझ न पाये हैं इसको-2
मन को जो समझे हो-3 वो भ्रमण मिटाये रे-SS।।6199।।

(1402) मन तन को समझाता है, चाहे वो करवाता है-2
मन इन्द्रिय का राजा है-SS
मन चेतन से मिल जाये, तब ही चेतन खिल पाये-2
चेतन दर्पण है हो-3, सब कुछ दिखलाए रे-SS।।6200।।

(1403) ईश्वर से मन खिलता है, गुरु सेवा से जलता है-2
मुश्किल से यह मिलता है-SS
मन बिन ज्ञान नहीं होता, सच श्रद्धान नहीं होता-2
मन ही इंसां को हो-3 प्रभु तक ले जाये रे-SS।।6201।।

(1404) मन का राज नहीं जाने, जो निज आतम पहिचाने-2
अज्ञानी मन क्या जाने-SS
मन में जब अज्ञान भरे, मन तब तन का काम करे-2
मन की चाहत में, हो-3 फिर मन मर जाए रे-SS।।6202।।

(1405) गुलामियत में रहते हैं, खुशी-खुशी गम सहते हैं-2
गम को खुशियाँ कहते हैं-SS
घुटन गमों की सहते हैं, जिंदा मरते रहते हैं-2
ऐसे जीवन से हो-3 भगवान बचाए रे-SS।।6203।।

(1406) निज गुण में जो रमता है, मन को वही समझता है-2
वही सुखों को भजता है-SS
मन को जो नहिं जानेगा, वो मन क्या पहचानेगा-2
मन को जो जाने हो-3 वो सब पा जाए रे-SS।।6204।।

(1407) मन की जो पहिचान करे, वो खुद का सम्मान करे-2
दिल में मार्दव धर्म धरे-SS
मन ही सच का ज्ञान करे, मन मनते भगवान वरे-2
आओ इस मन में हो-3 प्रभु भक्ति सजाएँ रे-SS।।6205।।

(1408) खुद को यहाँ पसन्द करो, आँखों को मत बंद करो-2
मन को मत स्वच्छंद करो-SS
कुछ आँखों के अंधे हैं, फिर भी प्रभु के वंदे हैं-2
खुद की चाहत में हो-3 प्रभु खुद मिल जाये रे-SS।।6206।।

(1409) आयु लेकर आते हैं, जीवन नया बनाते हैं-2
कुछ बनकर हम जाते हैं-SS
कुछ भी बनकर नहीं जियें, उनका आना व्यर्थ कहें-2
अवसर वो अपना हो-3 खुद ही खो जाएँ रे-SS।।6207।।

(1410) दिल में होता दर्द जभी, रोती अपनी आँख तभी-2
सच लगती ये बात अभी - SS
दर्द दवा से मिटता है, नीरोगी मन खिलता है-2
पीड़ा जब जाये हो-3 तब जीवन पाये रे-SS।।6208।।

(1411) जीवन एक उजाला है, पाता हिम्मत वाला है-2
श्रेष्ठ गुणों का प्याला है -ऽऽ
इस पर हम विश्वास करें, कोई नया प्रयास करें-2
जीवन मिलते ही हो-3 दिल खिल खिल जाये रे-ऽऽ।।6209।।

(1412) लिखता है वो लखता है, लिखता है वो पाता है-2
पाकर हर्ष मनाता है-ऽऽ
लिखे बिना नहिं मिले यहाँ, मिले बिना दिल खिले कहाँ-2
पाने ही वाला हो-3 इक दिन प्रभु को पाये रे-ऽऽ।।6210।।

(1413) झूठ हमें भटकाता है, सच ही राह दिखाता है-2
सच प्रभु दर्श कराता है-ऽऽ
झूठ बिना संसार नहीं, सच बिन कोई सार नहीं-2
आओ जीवन में हो-3 हम सच को पाएँ रे-ऽऽ।।6211।।

(1414) रोते-रोते आये हम, रोते-रोते किये करम-2
रोते हुए मरे हैं हम-ऽऽ
जो जीता है हँसकर के, वो ही मरता हँसकर के-2
जैसा जीता जो हो-3 वैसा मर जाए रे-ऽऽ।।6212।।

(1415) तप को रोज सराहे जो, यहाँ तपस्वी ध्याये जो-2
उनके ही गुण गाये जो-ऽऽ
यश फैले उसका जग में, गुण पाता मुक्ति मग में-2
तप जो करता वो हो-3 यशकीर्ति बढ़ाए रे-ऽऽ।।6213।।

(1416) धन पाने को रोते हैं, वक्त स्वयं का खोते हैं-2
भय-दुख-रोग संजोते हैं-ऽऽऽ
धन आराम दिखाता है, पर कोहराम मचाता है-2
निज का धन पाएँ हो-3 तो धन्य कहाएँ रे-ऽऽ।।6214।।

(1417) नीची नजर हो ऊपर से, ऊपर नजर हो नीचे से-2
ऊँची नजर हो इस दिल से-ऽऽ
नजर खुदा से मिल जाए, बुझा दीप खुद जल जाये-2
नजरों की ज्योति हो-3 रौशन कर जाये रे-ऽऽ।।6215।।

(1418) नजरों का सिलसिला यहाँ, भावों का जलजला जहाँ-2
नजरों से दिल जला यहाँ-ऽऽऽ
नजरों में भगवान दिखे, तो फिर जीता मार्ग मिले-2
रब की नजरों में हो-3 जन्नत नजराए रे-ऽऽ।।6216।।

(1419) नजर जहन्नुम दिखलाए, जन्नत भी दिखला जाए-2
मन्नत पूर्ण करा जाए-ऽऽ
नजर तहे दिल साफ यहाँ, वो ही लगता पाक यहाँ-2
नजरें बिन बोले हो-3 सब ही कह जायें रे-ऽऽ।।6217।।

(1420) दिल का राज नजर खोले, जुबां बंद पर सब बोले-2
नजरों से उसका हो ले-ऽऽ
नजर बुराई पर डोले, तो हरपल उगले शोले-2
माँ की नजरों में हो-3 बस प्यार दिखाए रे-ऽऽ।।6218।।

(1421) एक नजर है जीने की, पर हजार हैं मरने की–2
एक स्वयं में रमने की–ऽऽ
नजर समझ में आयेगी, नफरत स्वयं मिटाएगी–2
दिल की नजरों से हो–3 दिलवर नजराए रे–ऽऽ।।6219।।

(1422) नजरों में संसार यहाँ, उसे मिले फिर सार कहाँ?–2
घटिया है व्यापार जहाँ–ऽऽ
सार नजर से दिख जाए, सभी जगह प्रभु नजराए–2
संतों के नगमे हो–3 भव सार दिखाएँ रे–ऽऽ।।6220।।

(1423) सार देख ले नजरों से, सभी कहे वो अधरों से–2
सागर जाने कतरों से–ऽऽ
दिल का दर्पण नजर कहे, हर धड़कन में नजर रहे–2
संतों की नजरें हो–3 संसार दिखाएँ रे–ऽऽ।।6221।।

(1424) नजर जभी झुक जाती है, अजर अमर पद पाती है–2
सिद्ध लोक तक जाती है–ऽऽ
सही नजरिया नजरों में, नजर पाँव के सफरों में–2
सच्ची नजरें ही हो–3 बद नजर मिटाए रे–ऽऽ।।6222।।

(1425) खुशी–खुशी जो देता है, खुश होकर वो देता है –2
न दे उसे न देता है–ऽऽऽ
गम हो जिसको देने में, गम देकर वो देता है–2
देते को रोके हो–3 उसका छिन जाए रे–ऽऽ।।6223।।

(1426) मिले गुरु का संग जहाँ, मन में खिले उमंग वहाँ–2
सुखदायी सत्संग यहाँ–ऽऽ
साधु जिसके घर जाता, घर में स्वर्ग उतर आता–2
साधु बिन घर ये हो–3 श्मशान बताए रे–ऽऽ।।6224।।

(1427) पर्व अष्टाह्निक आते हैं, जो विधान कर जाते हैं–2
अतिशय पुण्य कमाते हैं–ऽऽ
सही भावना भाते जो, देवगति को पाते वो–2
स्वर्गों में जाकर हो–3 वे चिर सुख पायें रे–ऽऽ।।6225।।

(1428) मन की अलग–अलग राहें, जैसी हैं दिल की चाहें–2
दु:ख में मन भरता आहें–ऽऽ
मन गमगीन तो मरते हैं, खुश हो तो हम तिरते हैं–2
मन ही हम सबको हो–3 खुशियाँ दिलवाये रे–ऽऽ।।6226।।

(1429) चार माह तक संत मिलें, नये–नये शुभ मंत्र मिलें–2
मन में जैसे फूल खिलें–ऽऽ
ज्ञान नेत्र खुल जाते हैं, संतों का संग पाते हैं–2
संतों की महिमा हो–3 सुखकर बतलाएँ रे–ऽऽ।।6227।।

(1430) मिले गुरु का संग जहाँ, मन में खिले उमंग वहाँ–2
सुखदायी सत्संग यहाँ–ऽऽ
साधु जिसके घर जाता, घर में स्वर्ग उतर आता–2
साधु बिन घर ये हो–3 ये शमशान बताएँ रे–ऽऽ।।6228।।

(1431) मन की अलग-अलग राहें, जैसी हैं दिल की चाहें-2
दुःख में मन भरता आहें-ऽऽ
मन गमगमीन तो मरते हैं, खुश हो तो हम तिरते हैं-2
मन ही हम सबको हो-3 खुशियाँ दिलवाए रे-ऽऽ।।6229।।

(1432) गुरु प्रेरणा देते हैं, जीवन खुश कर देते हैं-2
फिर भी कुछ नहिं लेते हैं-ऽऽ
भव्यों को उपकारी है, राग-द्वेष निवारी हैं-2
गुरुवर की महिमा हो-3 सब वेद सुनाएँ रे-ऽऽ।।6230।।

*****

प्रशस्ति

भरत क्षेत्र में आर्य खंड, भारत देश महान।
मध्यप्रदेश की भूमि पर, भिण्ड नगर एक शान।।
चैत्यालय मंदिर जहाँ, संस्कृति की पहिचान।
चौबीसों तीर्थेश संग, मूल आदि भगवान।।
मेला लगा विरागमय, विराग गुरु के पास।
वीर वाणी बहती जहाँ, बना उन्हीं का दास।।
छन्द सुना इक रोज यह, जीवन पानी बूँद।
मिली प्रेरणा मम हृदय, मत आँखे तू मूँद।।
गुरु कृपा से हो गया, शुरु कार्य यह नेक।
समय रहा था सन् तभी, दो हजार कम एक।।
अध्ययन लगन कवित्व की, चली त्रिवेणी संग।
सुनकर भव्यों के हृदय, जगी नई उमंग।।
काल चक्र चलता रहा, चलती रही कलम।
दो हजार सन् एक तक, लिखे सहस्रों छंद।।
काल कराल की थी दशा, कोरोना था खास।
नगर आगरा में रहा, पन्द्रह माह प्रवास।।
त्राहि त्राहि के काल में, किया समय उपयोग।
लेखन चलता ही रहा, बढ़ा छंद का योग।।
विधि वशात् मम देह में, हुए उपद्रव भार।
दर्द महा पैदा हुआ, हुआ महा दुख कारि।।

फिर भी आत्म शक्ति ने, संबल दिया अपार।
लेखनी चलती ही रही, चन्दाप्रभु के द्वार।।
श्रुत सागर में डूबकर, मुक्ता मिले शुमार।
माला सुंदर सी बनी, ''श्रुत मंथन'' तैयार।।
छंद बने सुन्दर यहाँ, साढ़े सात हजार।
गुरु कृपा ने रच दिया, एक नया इतिहास।।
गुरु विराग ने कर दिया, नव तीरथ निर्माण।
मुनिराज शतकों जहाँ, हुए पंच कल्याण।।
श्रमणों और विद्वान के, बीच हुआ यह काज।
''श्रुत मंथन महाकाव्य'' का, हुआ तभी आगाज।।
मेरा यह स्वाध्याय बस, रहे आपके साथ।
ग्रंथों का अध्ययन भी हो, मिले सुरों का साथ।।
अलंकार रस छंद का, नहीं अधिक मम ज्ञान।
एक प्रार्थना आपसे, शोध पढ़ें धीमान्।।
प्रभु गुरु अनुकम्पा रहे, चले लेखनी साथ।
लक्ष्य समाधि का रहे, ले मन में विश्वास।।
त्रय भक्ति युत नमन है, गुरुदेव द्वय पाद।
कृपा रहे मम शीश पर, ''विनम्र'' नवाऊँ माथ।।

श्री विरागोदय तीर्थ धर्मधाम
पथरिया जिला दमोह (म.प्र.)

।। वीतराग शासन जयवंत हो।।

प.पू. उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

वीतराग शासन जयवंत हो

प्रकाशन

श्रमण श्रुत संवर्द्धन ट्रस्ट